भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्

वार्षिक रिपोर्ट 2017-18

(अप्रैल 2017 – मार्च 2018)

दर्शन भवन

36, तुगलकाबाद इंस्टीट्यूशनल एरिया,

एम.बी. रोड, नई दिल्ली-110062

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद् वार्षिक रिपोर्ट
2017-2018

प्रकाशक
सदस्य सचिव
भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्
दर्शन भवन
36, तुगलकाबाद इंस्टीट्यूशनल एरिया
एम.बी. रोड, नई दिल्ली - 110062
फोन : 011-29901505, 011-29901506
Web : www.icpr.in

अध्यक्ष की कलम से

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद् के इस वार्षिक प्रतिवेदन में परिषद् की अकादमिक गतिविधियाँ 2017–2018 को प्रस्तुत करते हुए मुझे प्रसन्नता हो रही है। यह शैक्षणिक वर्ष में भा.दा.अ.प. द्वारा आयोजित विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम उत्साहवर्धक थे। मानव संसाधन विकास मंत्रालय की समीक्षा समिति जून 2018 की रिपोर्ट के अनुसार विविध अकादमिक कार्यक्रम आयोजित किए गए (पृष्ठ 18. 5.15) जिसमें 100 से अधिक सेमिनारों और कार्यशालाओं का आयोजन, जो विशेष रूप से देश के दूरस्थ कोनों पर्यंत एवं विविध सामाजिक अध्ययन और सामाजिक मुद्दों पर आधारित थे, किये गये। समीक्षा समिति ने आगे कहा कि भा.दा.अ.प. ने भारतीय दर्शन को दुनिया के अन्य देशों में संप्रेषित करने में सहयोग किया है। समीक्षा समिति ने आगे कहा कि ने भा.दा.अ.प. में भारतीय दर्शन को अपने विभिन्न रूपों में प्रचारित और प्रसारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसने अनुसंधान गतिविधियों (पृष्ठ 18.5.16) के प्रोत्साहन के लिए बहुत अच्छा कार्य किया है। समीक्षा समिति यह जानकर खुश थी कि परिषद् ने अपना कार्य समझदारी और संतोषप्रद तरीके से किया है (पृष्ठ 11. 4.4)। चूंकि भा.दा.अ.प. को विलय करने या समाप्त करने का एक दुष्प्रयास था, इसलिए समीक्षा समिति ने इस तरह की घटना की कड़ी निंदा की। इसमें लिखा गया है, ''क्या ऐसे संगठन को, जो विश्व के दार्शनिक पटल पर भारत को रखने का प्रमुख प्रस्तावक है, को विघटित होने दिया जाए?। **इसका स्पष्ट एवं निर्भीक उत्तर है– 'नहीं'!** (पृष्ठ 10.3.10)

समीक्षा समिति ने .... महीनों अवधि पर्यन्त तक समीक्षा का काम किया, कार्यालय की फाइलों का अवलोकन किया और कई गणमान्य व्यक्तियों से मुलाकात की, जिनमें से सभी ने कहा कि भा.दा.अ.प. ने विशेष रूप से सामान्य और भारतीय दर्शन में दर्शन को बढ़ावा देने के लिए अच्छा काम किया है। समीक्षा समिति ने सिफारिश की कि बजटीय समर्थन लगभग 200 करोड़ (पृष्ठ 4.5.19 और 4.5.20) होना चाहिए और सुझाव दिया कि सरकार को भा.दा.अ.प. का समर्थन करने का ठोस निर्णय लेना चाहिए ताकि ''भारत भारतीय दर्शन को विश्व में सार्वभौमिक दर्शन के शीर्ष पर स्थापित करने में सफल

हो, जो बहुत ही उत्साहवर्धक और ऊर्जावान होगा"। (पृष्ठ 13)

यह आशा की जाती है कि भा.दा.अ.प. देश के भीतर और विदेश में अपने शानदार कार्य को जारी रखेगा और लोगों को तत्त्वज्ञान और भारतीय दृष्टिकोण से जीवन के तरीकों को देखने के संबंध में मार्गदर्शन करेगा, जो कि इसका उद्देश्य है। यह कार्य भा.दा.अ.प. सहयोगी संगठनों के साथ सहयोग से बेहतर कार्य कर सकता है। यह हमारा अनुभव रहा है कि संसार नई अंतर्दृष्टि और नए दृष्टिकोण के लिए भारत की ओर देख रही है और भा.दा.अ.प. के पास इस कार्य को पूरा करने की जिम्मेदारियाँ हैं।

प्रो. एस.आर. भट्ट
अध्यक्ष, भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्
नई दिल्ली

प्रस्तावना

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद (भा.दा.अ.प.) की गतिविधियों के बारे मे 2017–18 की वार्षिक प्रतिवेदन को अग्रसारित करते हुए प्रसन्नता हो रहा है पूरे वर्ष, भा.दा.अ.प. ने दर्शनशास्त्र के मौलिक स्वरूप पुनः प्रचलित करने की दिशा में काम किया, विशेष रूप से भारतीय दर्शनशास्त्र, जो भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद के गठन का आधार था। उच्च शैक्षणिक गतिविधियाँ जैसे कार्यशालाएं मूल ग्रंथों के शास्त्रीय अध्ययन पर केंद्रित होती हैं ताकि युवा शोधकर्ताओं में मूल संस्कृत ग्रंथों से भारतीय दर्शन के प्रति उनकी रुचि और अध्ययन का विकास किया जा सके। भा.दा.अ.प. के उत्कृष्ट नियंत्रण विधियों के अंतर्गत, यह आवश्यक था कि सेमिनार में भाग लेने वाले अपने शोध–पत्र अग्रिम रूप से प्रस्तुत करें और अनुमोदन प्राप्त करें, जिस प्रकार केवल श्रेष्ठ पर्चा प्रस्तुत किए जाते हैं। शोधकर्ताओं को प्रेरणा और वित्तीय सहायता के तहत, भा.दा.अ.प. ने अपने फैलोशिप कार्यक्रम के माध्यम से अपना समर्थन जारी रखा। पत्राचार कार्रवाही को आसान बनाने और इस प्रक्रिया में तेजी लाने के लिए, भा.दा.अ.प. ने ऑन लाइन फॉर्म जमा करना शुरू कर दिया है और जूनियर रिसर्च फैलोशिप के लिए परीक्षा का भी ऑनलाइन संचालन शुरू किया है। भा.दा.अ.प. ने अपने शोध को आरंभ करने के लिए विद्वानों को शोध परियोजना अनुसंधान का भी समर्थन किया।

भा.दा.अ.प. के अकादमिक केंद्र में, जो दर्शनशास्त्र में पुस्तकों के बड़े संग्रहों में से एक है, कार्यशालाओं, सेमिनारों, अध्ययन मंडलों आदि जैसे कई गतिविधियों का संचालन किया गया और इस वार्षिक प्रतिवेदन में अलग से रिपोर्ट किया गया है।

भा.दा.अ.प. ने ज्ञान श्रृंखला के अपने प्रसार को पुनर्जीवित किया जिसका उद्देश्य दर्शन के विद्वानों और सामान्य पाठकों को लघु मोनोग्राफ आदि के माध्यम से दार्शनिक ज्ञान का परिचय कराना है। इस वर्ष भी रिपोर्ट के तहत भा.दा.अ.प. ने जर्नल ऑफ़ इंडियन काउंसिल ऑफ़ फ़िलासॉफ़िकल रिसर्च को प्रकाशित किया है। भा.दा.अ.प. एक त्रि–भाषी पत्रिका (हिंदी, अंग्रेजी और संस्कृत में) प्रकाशित करने की भी योजना बना रहा है।

कई वर्षों के पश्चात् भा.दा.अ.प. ने अपने स्थापना दिवस का आयोजन किया। अध्येता–मिलन, उन्मुखीकरण, ओरिएंटेशन प्रोग्राम, अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस और राष्ट्रीय शिक्षा दिवस जैसे अन्य कार्यक्रमों का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। आवधिक व्याख्यान, विश्व दर्शन दिवस जैसी योजनाएं आयोजित की गईं। विदेशी विजिटिंग प्रोफेसरों और भारतीय विजिटिंग प्रोफेसरों ने कुछ व्याख्यान दिए।

2017–18 में की गई गतिविधियों और कार्यक्रमों के आधार पर, इस वर्ष को सफल माना जा सकता है।

(प्रोफेसर रजनीश कुमार शुक्ल)
(सदस्य सचिव)

विषय-सूची

	अध्यक्ष की कलम से	III
	सदस्य–सचिव की ओर से प्रस्तावना	V
1.	लक्ष्य एवं उद्देश्य	1
2.	संगठनात्मक संरचना	4
3.	गोष्ठियां	5
4.	शोधवृत्तियां	5
5.	परिसंवाद / कार्यशाला / संगोष्ठी / सम्मेलन	19
6.	परियोजनाओं	51
7.	अध्येताओं की बैठक	55
8.	प्रकाशन	58
9.	भा.दा.अ.प. स्थापना दिवस समारोह	59
10.	भा.दा.अ.प. विजिटिंग प्रोफ़ेसरों (विदेशी) के व्याख्यान	60
11.	भा.दा.अ.प. विजिटिंग प्रोफ़ेसरों (भारतीय) व्याख्यान	64
12.	विश्व दर्शन दिवस	66
13.	आवधिक व्याख्यान	76
14.	पुस्तक अनुदान 2017–18	97
15.	अंतर्राष्ट्रीय सहयोग	99

16. भा.दा.अ.प. समग्र जीवनोपलब्धि सम्मान लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड 100

17. शैक्षणिक केंद्र, लखनऊ (कार्यक्रम और गतिविधियाँ) 103

18. हिन्दी पखवाड़ा 130

19. परिषद् के सदस्य 133

20. शासी निकाय 137

21. वित्त समिति 139

22. शोध परियोजना समिति 140

23. वार्षिक लेखा 143

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्
वार्षिक रिपोर्ट 2017–18

1. लक्ष्य एवं उद्देश्य

शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा स्थापित भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद् (भा.दा.अ.प.) को सोसायटीज एक्ट, 1860 के अंतर्गत मार्च 1977 में पंजीकृत किया गया था। वास्तविक रूप से इसका कामकाज जुलाई 1981 में शुरू हुआ था। परिषद् के लक्ष्य और उद्देश्य इस प्रकार हैं:

- दर्शनशास्त्र में शोध की प्रगति की समय–समय पर समीक्षा करना;
- दर्शनशास्त्र में शोध कार्यक्रमों या परियोजनाओं को प्रायोजित करना और सहायता प्रदान करना;
- दर्शनशास्त्र में अनुसंधान के आयोजन में लगे हुए संस्थानों और संगठनों को वित्तीय सहायता देना;
- व्यक्ति या संस्थानों के द्वारा, दर्शनशास्त्र में शोध परियोजनाओं एवं कार्यक्रमों के निर्माण के लिए तकनीकी सहायता अथवा मार्गदर्शन प्रदान करना, और/या शोध प्रविधियों में प्रशिक्षण के लिए सांस्थानिक व अन्य व्यवस्थाओं का आयोजन या उन्हें सहयोग प्रदान करना;
- सार्वधिक रूप से उन क्षेत्रों के बारे में बताना जिन क्षेत्रों में और जिन विषयों पर दर्शनशास्त्र में शोध को बढ़ावा दिया जाना चाहिए तथा दर्शनशास्त्र में उपेक्षित या विकासशील क्षेत्रों में शोध के विकास के लिए विशेष उपाय अपनाना;
- दर्शनशास्त्र में शोध गतिविधियों का समन्वय करना और अंतरविषयक शोध के कार्यक्रमों को प्रोत्साहित करना;
- दर्शनशास्त्र में शोध के बढ़ावा देने के लिए सेमिनारों, विशेष पाठ्यक्रमों, अध्ययन–मंडल, कार्य समूहों/इकाइयों और सम्मेलनों का आयोजन, प्रायोजन और सहयोग प्रदान करना और इसी उद्देश्य के लिए संस्थानों की स्थापना करना;
- दर्शनशास्त्र में शोध को समर्पित पत्रिकाओं, जर्नलों, सावधिक पत्रिकाओं और विद्वतापूर्ण कार्यों के

प्रकाशन के लिए अनुदान प्रदान करना और साथ ही उनका प्रकाशन करना;

- छात्रों, शिक्षकों व अन्य लोगों के द्वारा दर्शनशास्त्र में शोध के लिए अध्येतावृत्तियों, छात्रवृत्तियों और पुरस्कारों की शुरुआत और उनका संचालन करना;
- आंकड़ों के रख–रखाव व आपूर्ति करने, दर्शनशास्त्र में वर्तमान शोध की एक सूची तैयार करने और दार्शनिकों के लिए एक राष्ट्रीय रजिस्टर तैयार करने समेत प्रलेखन सेवाओं को विकसित करना और सहयोग देना;
- भारतीय दार्शनिकों और दार्शनिक संस्थानों तथा अन्य देशों के दार्शनिकों और संस्थानों के बीच शोध के लिए सहयोग को बढ़ावा देना;
- प्रतिभावान युवा दार्शनिकों का समूह विकसित करने के लिए विशेष कदम उठाना और विश्वविद्यालयों और अन्य संस्थानों में कार्यरत युवा दार्शनिकों द्वारा शोध को प्रोत्साहित करना;
- सरकार द्वारा समय–समय पर मांगे जाने वाले सुझावों के लिए दर्शनशास्त्र के शिक्षण और शोध से जुड़े सभी मुद्दों पर भारत सरकार को सलाह देना;
- दर्शनशास्त्र में शोध के विकास के लिए पारस्परिक रूप से सहमत हुए शर्तों पर अन्य संस्थानों, संगठनों और एजेंसियों के साथ सहयोगात्मक समझौता करना;
- दर्शनशास्त्र में अध्यापन और शोध को बढ़ावा देना;
- दर्शनशास्त्र में शोध को बढ़ावा देने के लिए आमतौर पर समय–समय पर जरूरी पाए जाने वाले ऐसे सभी उपाय करना, और
- नियम और विनियम के प्रावधानों के अनुसार परिषद् में अकादमिक, प्रशासनिक, तकनीकी, अनुसचिवीय और अन्य पदों का निर्माण करना और नियुक्तियां करना

ज़ोर दिए जाने वाले क्षेत्रः–

1. सत्य और ज्ञान के सिद्धांत
2. मूल्यपरक अन्वेषण – भारतीय संस्कृति में सन्निहित मूलभूत मूल्यों और राष्ट्रीय पुनर्निर्माण में उनकी प्रासंगिकता सहित नीतिशास्त्र, और सौंदर्यशास्त्र
3. कला और मानविकी के विविध पहलुओं पर अंतर्वैषयिक अन्वेषण
4. दार्शनिक प्रणालियों/आंदोलनों और धर्म में तुलनात्मक और समालोचनात्मक अध्ययन।

5. तर्क और तर्क का दर्शन शास्त्र
6. गणित का दर्शन शास्त्र
7. भाषा का दर्शन शास्त्र
8. दर्शन, विज्ञान और प्रौद्योगिकी
9. मानव का दर्शन और पर्यावरण
10. सामाजिक और राजनीतिक दर्शन
11. विधि दर्शन
12. तत्त्वमीमांसा
13. शिक्षा दर्शन
14. सामाजिक विज्ञान दर्शन
15. नारीवाद दर्शन

निधीयन / वित्त

परिषद् का निधीयन–वित्त मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा आवंटित और जारी किए गए अनुदान पर निर्भर करता है।

(क) वर्ष 2017–18 के दौरान, परिषद् ने गैर–योजनाबद्ध कार्यकलापों के लिए 1817.08 लाख रुपये का अनुदान प्राप्त किया।

योजना और गैर योजना मद में पिछले वित्तीय वर्ष का ओपनिंग बेलेंस	मा.स.वि.भ. द्वारा अनुदान की प्राप्ति	बजट / अनुदान की प्राप्ति	कुल प्राप्त के अनुदान साथ प्राप्तियां आदि	इस वर्ष के दौरान व्यय	वि. वर्ष (कॉलम 5–6) का आरम्भिक शेष
131.62	1817.08	1817.08	2000.86	1748.02	252.84

2. संगठनात्मक संरचना

परिषद् की सदस्यता व्यापक आधार पर है, जिसमें जाने–माने दार्शनिक, समाज विज्ञानी तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् (भा.सा.वि.अ.प.) भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद् (भा.इ.अ.प.) भारतीय राष्ट्रीय विज्ञान अकादमी, केंद्र सरकार और उत्तर प्रदेश के प्रतिनिधि शामिल हैं। परिषद् में मुख्य रूप से निर्णय लेने का अधिकार शासी निकाय और शोध परियोजना समिति को है। इन निकायों की सुपरिभाषित शक्तियां और कार्य हैं। शासी निकाय परिषद् के मामलों को प्रशासित, निर्देशित और नियंत्रित करता है, जिसमें अध्यक्ष, सदस्य सचिव, परिषद् द्वारा नियुक्त कम से कम तीन और अधिक से अधिक आठ सदस्यगण, मानव संसाधन विकास मंत्रालय और वित्त मंत्रालय से एक–एक प्रतिनिधि तथा उत्तर प्रदेश सरकार के दो नामित सदस्य होते हैं। शोध परियोजना समिति में अध्यक्ष, परिषद् द्वारा नियुक्त कम से कम पांच और अधिक से अधिक नौ सदस्यगण तथा सदस्य सचिव शामिल होते हैं। यह समिति परिषद् द्वारा प्राप्त अथवा नियोजित परियोजनाओं, परिसंवादों व अन्य प्रस्तावों के लिए अनुदानों की जांच करती है और मंजूरी देती है।

वित्त समिति निम्नलिखित से मिलकर बनती हैः– अध्यक्ष के रूप में सदस्य सचिव, शासी निकाय के सदस्यों द्वारा मनोनीत उसका एक सदस्य, सदस्यों के रूप में केंद्र सरकार के दो प्रतिनिधि, और सदस्य सचिव के रूप में निदेशक (प्रशासन एवं वित्त)। वित्त समिति बजट आकलनों तथा भा.दा.आ.प. द्वारा व्यय से संबंधित प्रस्तावों की जांच करती है और अनुमोदन करती है।

अध्यक्ष और सदस्य सचिव को केंद्र सरकार द्वारा नियुक्त किया जाता है जिनकी सुपरिभाषित शक्तियां और कर्तव्य होते हैं।

प्रतिवेदित वर्ष के दौरान, प्रोफेसर एस.आर. भट्ट परिषद् के अध्यक्ष पद पर बने रहे। प्रोफेसर रजनीश कुमार शुक्ला भा.दा.आ.प. के सदस्य सचिव बने रहे।

डॉ. पूजा व्यास भा.दा.आ.प. बतौर निदेशक (अकादमिक) बनी रही। श्री श्रीकुमारन एस. बतौर निदेशक (प्रशासन एवं वित्त) के पद पर बने रहे यद्यपि उनका पद विज्ञापित गया है। डॉ. सुशीम दुबे और डॉ. सरोज कांता कार भी क्रमशः नई दिल्ली स्थित भा.दा.आ.प. में और लखनऊ स्थित अकादमिक केंद्र में कार्यक्रम अधिकारियों के पद पर बने रहे।

3. गोष्ठियां

प्रतिवेदित वर्ष के दौरान, भा.दा.अ.प. ने क्रमशः केवल एक बार 29 मार्च, 2018 को बैठकें कीं। शासी निकाय की बैठकें 30 अप्रैल 2018 और 29 मार्च 2018 को आयोजित की गईं। वित्त समिति की 30 अप्रैल 2017 और 21 सितम्बर 2017 और 24 मार्च 2018 को तीन बार बैठकें आयोजित की गईं। इस अवधि के दौरान अनुसंधान परियोजना समिति की 18 अप्रैल 2017, 11 सितंबर 2017, 13 नवम्बर 2017 और 28 मार्च 2018 को चार बैठकें हुईं।

4. शोधवृत्तियां

अपनी शोधवृत्ति योजना के माध्यम से, भा.दा.अ.प. का लक्ष्य है विद्वानों को, और विशेषकर युवा विद्वानों को अवसर प्रदान कर विभिन्न स्तरों पर दर्शनशास्त्र में शोध को बढ़ावा देना ताकि वे अपने रुचि के विषयों पर शोध परियोजनाओं में पूरे समय के आधार पर जुड़े रहें। अनुसंधान के जो विषय सामान्य रूप से दर्शनशास्त्र के प्रमुख क्षेत्रों और संबद्ध विषयों के अंतर्गत आते हैं, परिषद् ने उनकी पहचान की है और वे इस प्रकार हैं:

- सत्य और ज्ञान के सिद्धांत
- मूल्यपरक अन्वेषण – भारतीय संस्कृति में सन्निहित मूलभूत मूल्यों और राष्ट्रीय पुनर्निर्माण में उनकी प्रासंगिकता सहित नीतिशास्त्र, और सौंदर्यशास्त्र
    - कला और मानविकी के विविध पहलुओं पर अंतर्वैषयिक अन्वेषण
    - दार्शनिक प्रणालियों/आंदोलनों और धर्म में तुलनात्मक और समालोचनात्मक अध्ययन।
    - तर्कशास्त्र और उसका दर्शनशास्त्र
    - गणित का दर्शनशास्त्र
    - भाषा का दर्शनशास्त्र
    - दर्शनशास्त्र, विज्ञान और प्रौद्योगिकी

- मानव दर्शनशास्त्र और पर्यावरण
- सामाजिक और राजनीतिक दर्शनशास्त्र
- विधि का दर्शनशास्त्र
- तत्वामीमांसा
- शिक्षा का दर्शनशास्त्र
- सामाजिक विज्ञान का दर्शनशास्त्र
- नारीवाद का दर्शनशास्त्र

भा.दा.अ.प. ने राष्ट्रीय दैनिक समाचार पत्रों में विज्ञापन के माध्यम से शोधवृत्तियों के लिए (राष्ट्रीय शोधवृत्तियों को छोड़कर) आवेदन आमंत्रित किए। भा.दा.अ.प. द्वारा सभी शोधवृत्तियों की वर्तमान दरों में दिनांक 1-7-2015 से 10 प्रतिशत की वृद्धि कर दी गई। शोधवृत्तियों की विभिन्न श्रेणियों का विवरण नीचे दिया गया हैः

राष्ट्रीय शोधवृत्तियां

राष्ट्रीय शोधवृत्तियां उन प्रसिद्ध विद्वानों को दी जाती हैं, जिन्होंने दर्शनशास्त्र के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान दिया है। शोधवृत्ति की राशि 60,500/- रुपये प्रति माह और वार्षिक आकस्मिक राशि 66,000/- रुपये निर्धारित की गई है। ये शोधवृत्तियां आवेदन आमंत्रित किए बिना तथा विशुद्ध रूप से योग्यता और श्रेष्ठता के आधार पर दी जाती हैं। इसमें विद्वानों की उम्र और आधिकारिक स्तर कोई मायने नहीं रखता है।

परिषद् ने 2017–18 में कोई राष्ट्रीय शोधवृत्ति नहीं दी। प्रोफेसर पनीर सेल्वम 15 अक्टूबर 2015 को राष्ट्रीय अध्येता के रूप में जुड़े थे और उन्होंने प्रतिवेदित वर्ष के दौरान **"अंडरस्टैंडिंग द प्रॉब्लम्स ऐंड मेथड्स इन रीसेंट इंडियन फिलॉसफीः ए हर्मिन्यूटिकल स्टडी"** परियोजना पर काम करना जारी रखा।

2017–18 में, दो राष्ट्रीय अध्येता शामिल हुए और अपने शोध कार्य में लगे रहेः

1. प्रोफेसर के. रामकृष्ण राव "भगवद् गीताः ए स्टडी इन साइकोलॉजिकल काउंसलिंग" विषय पर काम कर रहे हैं।
2. प्रोफेसर वशिष्ठ त्रिपाठी, "सामान्य निरुक्ति गदाधारी की विवेचना" विषय पर काम कर रहे हैं।

वरिष्ठ शोधवृत्तियां

वरिष्ठ शोधवृत्तियां उन विद्वानों को दी जाती हैं जिनके द्वारा लिखित उच्च स्तर की प्रकाशित पुस्तकें हों। ये शोधवृत्तियां दर्शनशास्त्र के उन सुप्रसिद्ध वरिष्ठ अनुभवी विद्वानों के लिए हैं जिन्होंने दर्शनशास्त्र और संबंधित विषयों के अध्ययन में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया हो जो उनके शोध पत्रों और पुस्तकों के प्रकाशन से स्पष्ट हो। शोधवृत्ति की राशि 44,000/- रुपये प्रति माह और आकस्मिक अनुदान 44,000/- रुपये प्रति वर्ष दिया जाता है। यह शोधवृत्ति दो वर्षों की अवधि के लिए दी जाती है।

2017–18 में, दो वरिष्ठ अध्येता शामिल हुए और अपने शोध कार्य में लगे रहे, वे इस प्रकार हैंः

1. प्रोफेसर मंगला आर. चिंचोरे "सम कन्सिडरेशंस कंसर्निंग अल्टरनेटिव फ्रेमवर्क्स ऑफ़ इंडियन इपिस्टेमोलॉजीः ए फिलोसॉफिकल इन्क्वायरी" विषय परियोजना पर काम कर रही हैं।
2. डॉ. अरुण कुमार सिंह "एम. के. गाँधी, डॉ बी. आर. अम्बेडकर एवं पंडित दीनदयाल उपाध्यायः एक तुलनात्मक दार्शनिक विश्लेषण" विषय परियोजना पर काम कर रहे हैं।

निम्नलिखित चार वरिष्ठ अध्येताओं ने 2016–17 से काम करना जारी रखा हैः

1. प्रोफेसर अमिताभ दासगुप्ता "सेल्फ,सेल्फ–नॉलेज एंड मॉरल एजेंसी" विषय परियोजना पर काम कर रहे हैं।
2. प्रोफेसर बी. संबाशिव प्रसाद "दी सोशियो–इकोनॉमी फिलॉसोफी ऑफ़ महात्मा गाँधी विथ स्पेशल रेफरेन्स टू कांसेप्ट्स ऑफ़ स्वराज, स्वदेशी, ब्रेड लेबर, ट्रस्टीशिप एंड सर्वोदय" विषय परियोजना पर काम कर रहे हैं।
3. प्रोफेसर एस. श्याम किशोर सिंह "कन्वर्जेन्स ऑफ़ थॉट बिटवीन दी ट्रेडिशनल मणिपुरी फिलोसॉफिकल एंड रिलीजियस राईटिंग्स एंड सम आस्पेक्ट्स ऑफ़ दी वैदिक, पुराणिक एंड तांत्रिक स्क्रिप्चर्स" विषय परियोजना पर काम कर रहे हैं।
4. डॉ. अरुण मिश्रा "गोतमीय न्याय की मूलभूत अवधारणाएँ (मौलिक ग्रंथों पर आधारित न्याय की मूलभूत अवधारणाओं की विकास–यात्रा)" विषय परियोजना पर काम कर रहे हैं।

सामान्य शोधवृत्तियां

सामान्य शोधवृत्तियां उन विद्वानों को दी जाती हैं जिन्होंने स्वतंत्र शोधकार्य में महत्त्वपूर्ण सक्षमता और योग्यता प्रदर्शित की है। यह पुस्तकों और शोध लेखों के रूप में उनके प्रकाशन से स्पष्ट हो जाता है। इस श्रेणी की शोधवृत्ति के पुरस्कार का निर्धारण प्रत्याशी के प्रकाशित कार्य (पुस्तकें अथवा लेख) के रूप में अथवा अप्रकाशित रूप में शोधकार्य की गुणवत्ता के आधार पर किया जाता है। पत्रों की आवेदन जांच–पड़ताल के बाद, योग्य प्रत्याशियों को उनकी परियोजना के प्रस्तावों की योग्यता का मूल्यांकन करने के लिए साक्षात्कार के लिए बुलाया जाता है। इस श्रेणी में शोधवृत्ति की राशि 30,800/- रुपये प्रति माह और आकस्मिक अनुसंधान 22,000/- रुपये प्रतिवर्ष है। यह शोधवृत्ति दो वर्षों की अवधि के लिए दी जाती है।

वर्ष 2016–17 के दौरान शोध परियोजनाओं पर काम करने के लिए और शोध परियोजनाओं को जारी रखने वाले निम्नलिखित अध्येताओं को निम्नलिखित सामान्य शोधवृत्तियां प्रदान की गईं :

सामान्य शोधवृत्तियाँ 2016–17

क्र.म.	श्रेणी	नाम	शोध का शीर्षक	टिप्पणी
1.	सामान्य	जय शंकर सिंह	आधुनिक सन्दर्भ में तंत्र दर्शन की मूल्य मीमांसा	कार्यरत रहे
2.	सामान्य	जयंत उपाध्याय	भारतीय दर्शनशास्त्र में वाक्यार्थ प्राविधि	कार्यरत रहे
3.	सामान्य	शंकर कुमार लाल	स्वस्थ्य समाज की रचना में योगदर्शन की भूमिका	कार्यरत रहे
4.	सामान्य	सत्य नारायण देवलिया	पुरुषार्थ व्यवस्था एवं उसका समसामयिक औचित्य	कार्यरत रहे
5.	सामान्य	रविशंकर सिंह	डायिहेलिक एंड सिंक्रोनिक स्टडी ऑफ़ एनवायर्नमेंटल ट्रांक्विलिटी विथ बुद्धिस्ट पेर्स्पेक्टिव	कार्यरत रहे
6.	सामान्य	ईश्वर सिंह	कांसेप्ट ऑफ़ ह्यूमन नेचर एंड फिलॉसफी ऑफ़ एजुकेशनः ए स्टडी विथ स्पेशल रिफरेन्स टू अरबिंदो, कृष्णमूर्ति एंड टैगोर	कार्यरत रहे

7.	सामान्य	राजीव कुमार सरावगी	इंटीग्रेल ह्यूमन फिलॉसोफीः मॉडर्न सरकमस्टेन्सेस एंड साइन्टफिक रिसर्च बोर्न इन पर्सपेक्टिव ऑफ़ द वर्ल्डव्यू	कार्यरत रहे
8.	अ.पि.वर्ग	जाहिरा खातून	आधुनिक शिक्षा पाठ्यकर्मों में नैतिक मूल्यों का स्वरुप, महत्व एवं अपेक्षित परिणाम मूलक चुनौतियां तथा समाधान	कार्यरत रही
9.	अ.पि.वर्ग	अकन्या पद्मजा	एथिकल वैल्यूज ऑफ़ भगवद गीता एंड देयर रेलेवंस टू कंटेम्पोररी सोसाइटी	कार्यरत रही
10.	अ.पि.वर्ग	जयन जे.	सिक्खीज्म एंड तमिल रिलीजियस ट्रेडिशनः ए सोशियो–फिलोसोफिकल एनालिसिस	कार्यरत रहे
11.	अ.पि.वर्ग	ऋषिका वर्मा	भामती एवं विवरण प्रस्थान का तुलनात्मक अध्ययन	कार्यरत रही
12.	अ.जा.	मौसमी सोलंकी	मानवकल्याण के लिए धर्म एवं पर्यावरण	कार्यरत रही
13.	अ.जा.	शालिग्राम अहिरबार	आधुनिक भारतीय चिंतन में नव्यवेदान्त : एक समालोचनात्मक अध्ययन (विवेकानन्द एवं रामतीर्थ के विशेष सन्दर्भ में	कार्यरत रहे
14.	अ.जा.	राजीब लोचन बेहरा	इज सेनामाटिक्स पॉसिबल थ्रू डिस्कोर्स एनालिसिस एंड कल्चरल यूनिटी ?	कार्यरत रहे
15.	सामान्य	जय प्रकाश तिवारी	डीप इकोलॉजिकल इनसाइट्स ऑफ इंडियाः रिफ्लेक्शन ऑन दी वैदिक एंड बुद्धिस्ट फिलॉसोफी	कार्यरत रहे

निम्नलिखित विद्वानों को उनके संबंधित शोध विषयों पर 2017–18 में सामान्य शोधवृत्तियों से सम्मानित किया गयाः

सामान्य शोधवृत्तियाँ 2017–18

योग	श्रेणी	नाम	शोध का शीर्षक	टिप्पणी
1.	सामान्य	डॉ. पवन कुमार जैन	प्राकृतिक आगम व्याख्याप्रज्ञप्ति सूत्र पर आचार्य अभयदेवसूरी (12वी शती) विरचित संस्कृत वृत्ति के 25 शतकों का अनुवाद एवं उसमें प्राप्त दार्शनिक अवधारणाओं का समीक्षात्मक अध्ययन	कार्यरत रहे

2.	सामान्य	डॉ. मनोज कुमार	एकात्मक मानववाद दर्शन : अंतिम समन्वय (विशेष सन्दर्भ : पंडित दीनदयाल उपाध्याय	कार्यरत रहे
3.	सामान्य	डॉ. जगदीश नारायण तिवारी	आधुनिक सौन्दर्यशास्त्रालोके कालिदस्य ग्रन्थेषु सौन्दर्यतत्व विवेचनम	कार्यरत रहे
4.	सामान्य	डॉ. सुनील कुमार शुक्ल	कौटिलीय लोक दर्शन की समकालीन समीक्षा	कार्यरत रहे
5.	सामान्य	डॉ. सोनी कुमारी	एकात्म–मानव दर्शन में अत्योदय की अवधारणा : एक समीक्षात्मक अध्ययन (पडित दीनदयाल उपाध्याय के विशेष सन्दर्भ में)	कार्यरत रही
6.	सामान्य	डॉ. महेंद्र प्रसाद	कबीर–चिंतन में सामाजिक न्याय : एक दार्शनिक विवेचन	कार्यरत रहे
7.	सामान्य	डॉ. स्मिता तेलंग	आचार्य जयतीर्थ कृत 'प्रमाण–पद्धति' का समीक्षात्मक अध्ययन	कार्यरत रही
8.	सामान्य	डॉ. हिमांशु शेखर सिंह	पुरुषार्थ की अवधारणा में निहित मूल्यों का राष्ट्रीय पुनर्निर्माण में अवदान : एक समीक्षात्मक विमर्श	कार्यरत रहे
9.	सामान्य	डॉ. अल्लादी वीरभद्र राव	दी नेसेसिटी ऑफ़ टीचिंग एथिक्स टू मेडिकल एंड पैरामेडिकल स्टूडेंट्स इन इंडिया	कार्यरत रहे
10.	सामान्य	डॉ. सरीम अब्बास	ए कम्पेरेटिव स्टडी ऑफ़ एथिक्स इन एक्सिस्टेंटिअलिस्म एंड जैनिज़्म	कार्यरत रहे
11.	सामान्य	डॉ. धर्मेन्द्र कुमार मिश्रा	भारतीय ऋण व्यवस्था एवं मानव मूल्य : एक समीक्षात्मक अध्ययन	कार्यरत रहे
12.	अ. जा.	डॉ. ए. सुब्रमण्यमू	दी कांसेप्ट ऑफ़ माइंड एंड सुपरमाइंड इन व्यू ऑफ़ श्री अरबिंदो : ए क्रिटिकल स्टडी	कार्यरत रहे
13.	अ. जा.	डॉ. ओम प्रकाश	भारतीय भक्ति दर्शन में सामाजिक चेतना संत रविदास के विशिष्ट के सन्दर्भ में	कार्यरत रहे

कनिष्ठ अनुसंधान शोधवृत्तियां

कनिष्ठ अनुसंधान शोधवृत्ति के लिए प्रत्याशी के स्नातकोत्तर में कम से कम 55 प्रतिशत (अ.जा. /अ.ज.जा. प्रत्याशी के लिए 5 प्रतिशत की छूट) अंक होने चाहिए और दर्शनशास्त्र में पीएच.डी. कार्यक्रम अथवा अध्ययन के संबद्ध क्षेत्रों में पंजीकरण आवश्यक है। कनिष्ठ अनुसंधान शोधवृत्ति के लिए संस्थागत संबद्धता भी अनिवार्य है।

ये शोधवृत्तियां दो वर्षों की अवधि के लिए प्रदान की जाती हैं जिनमें प्रतिमाह 17,600 रुपये प्रति माह का अध्येतावृत्ति और प्रति वर्ष 16,500 रुपये का आकस्मिक अनुदान दिया जाता है। शोधवृत्ति की इस श्रेणी में वेतन संरक्षण का कोई प्रावधान नहीं है। हालांकि, यदि अध्येता द्वारा अपने कार्यकाल में किया गया कार्य प्रकाशन के योग्य पाया जाता है, तो ऐसे विशिष्ट मामलों में शोधवृत्ति को तीसरे वर्ष तक बढ़ाया जा सकता है।

वर्ष 2016–17 में निम्नलिखित विद्वानों को कनिष्ठ अनुसंधान शोधवृत्तियां प्रदान की गईः

कनिष्ठ अनुसंधान शोधवृत्तियाँ 2016–17

क्र.म.	श्रेणी	नाम	शोध का शीर्षक	टिप्पणी
1.	सामान्य	सिजो सेबेस्टियन	एपिस्टीमिक क्रेडेंसिअल्स ऑफ़ रिलीजियस बिलीफ : ए कंटेम्पोररी रीडिंग रिलीजियस ऐपिस्टेमोलॉजी	कार्यरत रहे
2.	सामान्य	ग़ज़ला रिज़वी	इंटरफेस बिटवीन परफेक्ट जस्टिस एंड मिनिमाइज़िंग जस्टिसः ए क्रिटिकल स्टडी	कार्यरत रही
3.	सामान्य	आभा त्रिपाठी	मानव मूल्य के संदर्भ में वैज्ञानिक दृष्टिकोण : एक दार्शनिक गवेषणा	कार्यरत रही
4.	अ.पि.वर्ग	सरोज यादव	मनुष्य की नियति और स्वतंत्रता की अस्तित्ववादी अवधारणा : एक आलोचात्मक अध्ययन	कार्यरत रही
5.	सामान्य	पानू शर्मा	द वेदांत फिलॉसोफी ऑफ़ नारायण गुरु एंड इट्स रेलेवेंस टू द कंटेम्पोररी सोसाइटी	कार्यरत रही

6.	सामान्य	गुरप्रीत कौर	एन एपिस्टेमोलॉजिकल स्टडी ऑफ़ शब्द प्रमाण विथ स्पेशल रिफरेन्स टू पूर्व–मीमांसा स्कूल ऑफ थॉट	कार्यरत रही
7.	सामान्य	स्निग्धा केतन चव्हाण	अंडरस्टैंडिंग एन्ड्रॉयनिस्म इन बुद्धिज़्म : ए फिलोसॉफिकल स्टडी	कार्यरत रही
8.	सामान्य	बरुण कुमार चौबे	महात्मा गांधी के नैतिक दर्शन का एक समीक्षात्मक अध्ययन	कार्यरत रहे
9.	सामान्य	सलोनी सिंह	ए कम्पेरेटिव स्टडी ऑफ़ दी कांसेप्ट ऑफ़ कर्म इन इंडियन फिलॉसोफी विथ स्पेशल रिफरेन्स टू बुद्धिज़्म, जैनिज़्म, मीमांसा एंड गीता दर्शन	कार्यरत रही
10.	अ.पि.व.	मोनालिसा सैकिया	फिलॉसोफी पर्सपेक्टिव ऑफ़ पनिशमेंटः ए रिफरेन्स टू विनय पिटक एंड सुत्त पिटक	कार्यरत रही
11.	अ.पि.व.	सुश्री आराधना सिंह	डॉ. बी.आर. अम्बेडकर का धर्म दर्शन : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	त्यागपत्र दिया
12.	सामान्य	श्रीरूपा दत्त चौधरी	अपेयरेंस एंड रियलिटी (विथ रिफरेन्स टू कांट एंड हेगेल)	कार्यरत रही
13.	सामान्य	ऋचा कपूर	मीनिंग, माइंड एंड द वर्ल्डः ए स्टडी ऑफ डोनाल्ड डेविडसन	पाण्डुलिपि प्रस्तुत किया
14.	अ.ज.जा.	गाइचुइमिल्लू पल्मी	मेसिनिज्मः ए स्टडी इन डायलेक्टिक्स एंड डिकंस्ट्रक्शन	पाण्डुलिपि प्रस्तुत किया
15.	सामान्य	मंशा पांडे	नागार्जुन एवं शंकराचार्य के दर्शन में संवित्ति की अवधारणा : एक तुलनात्मक अध्ययन	कार्यरत रही
16.	सामान्य	अतिया लतीफ	द एथिक्स ऑफ ऑथेंटिसिटीः एक्ज़िस्टिविज़्म एंड बियॉन्ड	त्यागपत्र दिया
17.	अ.पि.व.	पूजा कुमारी	कश्मीर शैव दर्शन का अद्वैतवाद	त्यागपत्र दिया

18.	सामान्य	पार्थ एस. शर्मा	कान्ट्स ट्रान्सडैंटल डिडक्शन एंड अपोडिक्टिस सर्टेटी ऑफ़ साइंटिफिक नॉलेज	कार्यरत रहे
19.	अ.पि.व.	सहस्त्रंगद कुमार यादव	वैश्वीकरण एवं आतंकवाद के सन्दर्भ में महात्मा गांधी के सर्वोदय और अहिंसा सिद्धांत का एक समीक्षात्मक अध्ययन	कार्यरत रहे
20.	सामान्य	राकेश एस.	मैटर–स्पिरिट इंटेग्रलिटी इन श्री अरबिंदोस इंटेग्रल योग	कार्यरत रहे
21.	सामान्य	शील कमल चौरसिया	एन एनालिसिस ऑफ़ दी कांसेप्ट ऑफ़ 'डिटैचमेंट' इन इंडियन एंड वेस्टर्न फिलॉसोफी	कार्यरत रहे
22.	अ. जा.	मंजू वर्मा	संत रैदास के धार्मिक–सामाजिक दर्शन का समीक्षात्मक अनुशीलन	कार्यरत रही
23.	अ.पि.व.	रेशमा ई के	मशीन इंटेलिजेंस एंड द नेचर ऑफ कॉन्शियसनेसः एन एनालिटिक स्टडी	कार्यरत रही
24.	सामान्य	बिलाल अहमद दादा	पॉलिटिकल फिलोसॉफी ऑफ़ रिचर्ड रोर्टी : ए क्रिटिकल स्टडी	कार्यरत रहे
25.	सामान्य	शगुफ्ता जाफरी	सोशल फिलोसॉफी ऑफ़ संत कबीरः ए क्रिटिकल स्टडी	कार्यरत रही
26.	अ. जा.	विजय कुमार	बौद्ध दर्शन के विकास में डॉ. अम्बेडकर का योगदान	कार्यरत रहे
27.	अ.पि.व.	कल्पना बेहरा	ए स्टडी ऑफ़ श्री रामायण कवीस वेदांत संग्रह	कार्यरत रही
28त्र	सामान्य	आरिफ़ा आरा बेगम	दा एथिक्स ऑफ़ कान्ट्स एंड दी टीचिंग्स ऑफ़ दी भगवद्गीता : ए कम्पेरेटिव स्टडी	कार्यरत रही
29.	अ.पि.व.	चंद्र किशोर	कश्मीरशैवदर्शनस्य संप्रदाय–परम्परा–परिशीलनम्	कार्यरत रहे
30.	सामान्य	अकबर चौधरी	थ्योरी एंड प्रैक्टिस ऑफ़ जस्टिस : ए कम्पेरेटिव ऑफ़ अमर्त्य सेन एंड अकील बिलग्रामी	कार्यरत रहे
31.	अ.पि.व.	तेजराम पाल	गांधी दर्शन के समदर्शी नीतिशास्त्र के एकादश आधार (एक समीक्षात्मक अध्ययन)	कार्यरत रहे

32.	अ.पि.व	मंसूर आलम	रीज़न, रेवेलशन एंड इंट्यूशन इन ग़ज़ालिस फिलोसॉफी	कार्यरत रहे
33.	अ. जा.	नज़ाकित हुसैन	कांसेप्ट ऑफ़ जस्टिस इन मॉडर्न इस्लामिक पोलिटिकल थॉट	कार्यरत रहे
34.	अ.पि.व.	राज किशोर चौरसिया	स्वामी विवेकानंद के दर्शन में योग की अवधारणाः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	कार्यरत रहे
35.	अ. जा.	रमेश धीरावथ	सेवेन्टीन्थ सेंचुरी थेओरिएस ऑफ़ सब्सटांस–दोज़ ऑफ़ डेसकार्टेस, स्पिनोज़ा एंड लेइब्निज़ः ए कॉम्परेटिवे एनालिसिस ऑफ़ मेटाफिज़िकल अप्रोच	कार्यरत रहे
36.	अ.पि.वर्ग	अब्दुल लतीफ मंडल	बर्ट्रेंडरसेल्स फिलॉसफी ऑफ न्यूट्रल मोनिज्म	कार्यरत रहे
37.	अ.पि.वर्ग	पूजा	गण्डव्यूहसूत्रस्य समीक्षात्मकमध्ययन	कार्यरत रहे
38.	अ.पि.वर्ग	विभूति कुमार	एकादशोपनिषतप्रतिपदितसांख्येन सह कपिलसांखायस्य तुलनात्मक अध्ययन	कार्यरत रहे
39.	अ.पि.वर्ग	सरला साहू	दी टेन्डेन्सी ऑफ़ सिंथेसिस बिटवीन मटेरिअलिस्म एंड स्पिरिचालिस्म इन दी कंटेम्परारी इंडियन थॉट विथ रिफरेन्स टू श्री अरबिंदो एंड ओशो	कार्यरत रहे
40.	अ.पि.वर्ग	पानो कुमारी	वेदांत दर्शन में परम सत्ता का विचार (शंकर, रामानुज, मध्व, निम्बार्क एवं वल्लभ के दर्शन के विशेष सन्दर्भ में)	कार्यरत रही
41.	अ.पि.वर्ग	जोया निगार	दी प्लेस ऑफ़ रीज़न एंड रेवेलशन इन इस्लामिक फिलोसॉफी	कार्यरत रही
42.	अ.पि.वर्ग	रविशंकर कुमार	वैदिक एवं समकालीन अध्यात्मवाद : एक समीक्षात्मक अध्ययन	कार्यरत रहे
43.	अ.पि.वर्ग	अंजलि बर्मन	स्वामी विवेकानंद, महात्मा गाँधी एवं सर्वपल्ली राधकृष्णन के धर्म विषयक चिंतन की वर्तमान समस्याओं के परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता	कार्यरत रही

44.	अ.पि.वर्ग	वर्षा चौरसिया	स्वामी योगानंद का दर्शन–एक अनुशीलन	कार्यरत रही
45.	अ.पि.वर्ग	चक्रपाणि पोखरेल	व्याकरणाभीमतसंबंधतत्वस्य दर्शानान्तरीयसंबंधेंन सह समीक्षात्मक मध्ययनम्	कार्यरत रहे
46.	अ.पि.वर्ग	अवधेश कुमार	कबीर पंथ के विकास में पारख मार्ग की भूमिका	कार्यरत रहे
47.	सामान्य	जान मोहम्मद लोन	कांसेप्ट ऑफ़ गॉड एंड वर्ल्ड इन रामानुज और सरहिंदीः ए कम्पेरेटिव स्टडी	कार्यरत रहे
48.	सामान्य	प्रेम लता	विश्वेश्वरकतायाः अष्टावक्रगीताटीकायाः अध्यात्मप्रदीपिकायाः पाठसमीक्षात्मकं सम्पादनं दार्शनिकमध्ययनच्च	कार्यरत रहे
49.	सामान्य	शशिकांत मिश्रा	हिन्द स्वराज के सन्दर्भ में सामाजिक–राजनीतिक परिवर्तनों का समीक्षात्मक अनुशीलन	कार्यरत रहे
50.	सामान्य	रेयाज अहमद भट	एन एनालसिस ऑफ़ मेजर सोशल वैल्यूज ऑफ़ कुरान	कार्यरत रहे
51.	सामान्य	बीना मिश्रा	अमृतोदय नाटकस्य दार्शनिकम् अध्ययनम्	कार्यरत रहे
52.	सामान्य	हरीश कुमार	श्रीशंकराचार्यरचित विवेकचूड़ामणि का समीक्षात्मक अध्ययन	कार्यरत रहे
53.	सामान्य	दीपक कुमार पांडे	दिनकार्याः गुणनिरुपणस्य समीक्षणम्	कार्यरत रहे
54.	सामान्य	अश्विनी कुमार कालरा	कर्म योग : ए फिलॉसॉफिकल एनालिसिस इन विवेकनन्दस एंड गांधीस पर्सपेक्टिव एंड इट्स एजुकेशनल इम्प्लिकेशन्स	कार्यरत रहे
55.	सामान्य	सुरिंदर कुमार शर्मा	विज्ञानभिक्षुकृत योगवार्त्तिक का समीक्षात्मक अध्ययन	कार्यरत रहे
56.	सामान्य	श्रद्धा कुमारी	महायान की साधना पद्धति : एक दार्शनिक अध्ययन	कार्यरत रही

57.	सामान्य	नवनीत शर्मा	योगसाधनोपायो का सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक परिशीलन (पतञ्जलि योगसूत्र के विशिष्ट संदर्भ में)	कार्यरत रहे
58.	सामान्य	प्रिंस कुमार सिंह	न्याय तर्कशास्त्र में हेतु एवं हेत्वाभास	कार्यरत रहे
59.	सामान्य	मंजीत कौर	श्रीकेशवकश्मीरीभट्टविरचित वेदांतकौस्तुभप्रभायाः समीक्षणम्	कार्यरत रही
60.	सामान्य	अंजना ई.पी.	एनवायर्नमेंटल एथिक्स : इंटरप्रेटिव प्रॉस्पेक्ट्स ऑफ़ सांख्य योग एंड बुद्धिज़्म	कार्यरत रही

2017—18 के लिए निम्नलिखित विद्वानों को कनिष्ठ अनुसन्धान शोधवृत्तियो से सम्मानित किया गया जो निम्नानुसार हैः

कनिष्ठ अनुसन्धान शोधवृत्तियाँ 2017—18

क्र.म.	श्रेणी	नाम	शोध का शीर्षक	टिप्पणी
1.	सामान्य	श्री विनय गोपाल त्रिपाठी	आचार्यश्रीशान्तरक्षितविरचितस्य तत्त्वसंग्रहस्य मध्यमकशास्त्रेण सह तुलनात्मकमध्ययनम्	कार्यरत रहे
2.	सामान्य	दिग्विजय मिश्रा	वेदांत विरोध—निरास	कार्यरत रहे
3.	सामान्य	श्री नीरज कुमार पांडे	दा होलिस्टिक विज़न ऑफ़ जिद्दू कृष्णमूर्ति एंड इट्स कंटेम्पोररी रेलेवेंस	कार्यरत रहे
4.	सामान्य	सुश्री देबस्मिता चक्रवर्ती	प्रैगमैटीक टर्न टू लिंगविस्टिक फिलोसॉफी : ए क्रिटिकल स्टडी ऑफ़ रिचर्ड रॉर्टीज वर्क्स	कार्यरत रही
5.	सामान्य	सुश्री देवप्रिया चक्रवर्ती	फ्रॉम मोरल फिलोसॉफी टू पॉलिटिकल थॉट : एन एक्सप्लोरेशन ऑफ़ दी कांटियन पाथ	कार्यरत रही
6.	सामान्य	श्री आशीष कुमार	नैतिक संज्ञानवाद का समीक्षात्मक सर्वेक्षण	कार्यरत रही

7.	सामान्य	श्री मनोज कुमार मिश्रा	जयंत भट्ट एवं विट्गेंस्टाइन के विशेष सन्दर्भ में भाषा–दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन	कार्यरत रहे
8.	सामान्य	सुश्री प्रतिमा शाही	गुरुनानक के अध्यात्म दर्शन का समीक्षात्मक अनुशीलन	कार्यरत रही
9.	सामान्य	सुश्री के. निरुपमा सिंहा	कैपबिलिटी एप्रोच टू फ्रीडम : ए क्रिटिकल अप्रैज़ल	इस्तीफा दे दिया
10.	सामान्य	सुश्री मनीषा सिंह	भारतीय दर्शन में आत्मा की वस्तुवादी अवधारणा का समीक्षात्मक अध्ययन	कार्यरत रहे
11.	सामान्य	श्री श्याम रंजन पांडेय	समसामयिक परिप्रेक्ष्य में अस्तित्ववादी दर्शन की प्रासंगिकता : सार्त्र के विशेष सन्दर्भ में एक समीक्षात्मक अध्ययन	कार्यरत रहे
12.	सामान्य	सुश्री रेशमी सरकार	दी प्रॉब्लम ऑफ़ मीनिंग : ए फ्रेजां अकाउंट	इस्तीफा दे दिया
13.	सामान्य	श्री अजय कुमार सिंह	उपनिषद दर्शन में संपोष्य विकास की अवधारणा : एक अनुसन्धान	कार्यरत रहे
14.	सामान्य	सुश्री दयिता रॉय	कॉन्सेप्ट ऑफ़ बॉडी : ए ग्लिम्पस इनटू द न्याय एंड बुद्धिस्ट कॉन्ट्रोवर्सी (विथ स्पेशल रेफ़रेन्स टू न्याय–भाष्य एंड लंकावतार–सूत्र)	कार्यरत रही
15.	सामान्य	सुश्री रितु शर्मा	माइंडफुल्नेस्स इन एजुकेशनः टू असेस दी इम्पैक्ट ऑफ़ मैडिटेशन ऑन स्ट्रेस लेवल एंड वेल बीइंग इन हायर सेकेंडरी स्टूडेंट्स	कार्यरत रही
16.	सामान्य	श्री अरूप दारिपा	फेमिनिस्ट फिलॉसॉफी ऑफ़ टैगोरः एन एक्सप्लोरेशन	कार्यरत रहे
17.	सामान्य	श्री अंकित कुमार	आर्य समाज का धर्मदर्शन : एक दार्शनिक विवेचना	कार्यरत रहे
18.	सामान्य	सुश्री शशिकला यादव	महाभारत के शांतिपर्व का नीतिशास्त्रीय अध्ययन (वर्तमान धार्मिक एवं सामाजिक परिपेक्ष्य में)	कार्यरत रही

19.	सामान्य	श्री अमित कुमार दुबे	दी डाइलेमा ऑफ़ टोलेरेंस एंड वायलेंस इन अब्रह्मिक कल्ट	कार्यरत रहे
20.	सामान्य	श्री श्रीकांत मिश्रा	न्यायदर्शनाभिमतव्याप्तिस्वरूपस्य दर्शनान्तरदिशा समीक्षात्मकमध्ययनम	कार्यरत रहे
21.	सामान्य	सुश्री संध्या	पुरुषार्थ इन द कॉन्टेक्स्ट ऑफ़ स्वास्थ्य इन आयुर्वेदः ए स्टडी इन मेडिकल एथिक्स	कार्यरत रही
23.	सामान्य	श्री नितिन कुमार गुप्ता	तार्किक प्रत्यक्षवाद के सन्दर्भ में ज्ञान तथा अर्थ का आलोचनात्मक विश्लेषण	कार्यरत रहे
24.	सामान्य	श्री सलमान सिद्दीकी	जेंडर जस्टिस : ए जिनोलॉजिकल स्टडी	कार्यरत रहे
25.	सामान्य	श्री रोहित शर्मा	ए क्रिटिकल स्टडी ऑफ़ शाक्ताद्वैत विथ स्पेशल रेफरन्स टू डॉक्ट्रिन ऑफ़ नाद	कार्यरत रहे
26.	सामान्य	श्री वरुण भट्ट	फिलोसोफिकल एनालिसिस ऑफ़ मैटर इन कंटेम्पररी फिजिक्स	कार्यरत रहे
27.	सामान्य	श्री पटेल नीरवकुमार हितेशभाई	गांधी फिलोसॉफी ऑफ़ खादी : ए स्टडी ऑफ़ द प्रैक्टिस ऑफ़ खादी इन गुजरात विद्यापीठ	कार्यरत रहे
28.	सामान्य	सुश्री सतरूपा चक्रवर्ती	मीनिंग ऑफ़ ट्रूथ : ए क्रिटिकल एनालसिस ऑफ़ माइकल ड्यूमेटस आंटीस रेअलिस्म	रूका हुआ है
29.	सामान्य	सुश्री वंदना शर्मा	आदि शंकराचार्यस अद्वैत–वेदांत फिलोसॉफी : ए वाएबल सॉल्यूशन टू एनवायर्नमेंटल डिसहार्मोनी	कार्यरत रही
30.	अ.जा.	सुश्री गुड़िया कुमारी	वर्तमान समय में योग की उपादेयता : एक वैज्ञानिक अध्ययन	कार्यरत रही
31.	अ.जा.	श्री रवि कुमार	लैंग्वेज एंड सोशल रियलिटी : ए क्रिटिकल स्टडी ऑफ़ लुडविंग विट्गेंस्टीन एंड जॉन सेअरले	कार्यरत रहे
32.	अ.जा.	श्री होनवदजकर महेंद्र बाबूराव	रा.ना. चव्हाण के धर्मविषयक विचारों का तात्विक अध्ययन	कार्यरत रहे
33.	अ.जा.	सुश्री रीता टेटवाल	सिंहस्थ महापर्व का अध्यात्म–एक दार्शनिक विश्लेषण (उज्जयनी के विशेष सन्दर्भ में)	कार्यरत रही

34.	अ.जा	सुश्री रेखा सेठी	दी नेचर ऑफ़ नॉलेजः ए कम्पेरेटिव स्टडी ऑफ़ डेकार्ट एंड स्पिनोज़ास थ्योरी ऑफ़ नॉलेज	कार्यरत रही
35.	अ.जा.	श्रीचंदन कुमार चंचल	अपराध निवृति और दंड सिद्धांत : एक सामाजिक एवं नैतिक अध्ययन	कार्यरत रहे
36.	अ.जा.	श्री सुरजीत मंडल	तर्कसंग्रहदीपिकायाः नीलकण्ठी–भास्करोदयाटीकयोस्तुलनात्मकमध्ययनम्	कार्यरत रहे
37.	अ.जा.	सुश्री शम्पू रानी	महाभारत में उपलब्ध सांख्य एवं योग दर्शन के संदर्भों की मीमांसा	कार्यरत रही
38.	अ.जा.	श्री सुरेन्द्र सिंह विरह	योग द्वारा मनोदैहिक आरोग्य एवं आध्यात्मिक स्वस्थ्य उत्कर्षः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	कार्यरत रही

5. परिसंवाद / कार्यशाला / संगोष्ठी / सम्मेलन

विद्वानों को अपना शोध कार्य प्रस्तुत करने तथा अपने विचार रखने व अन्य विद्वानों के साथ विचार–विमर्श करने का अवसर प्रदान करने के लक्ष्य के साथ भा.दा.अ.प. दर्शनशास्त्र और अंतर्विषयक अध्ययनों के क्षेत्र में विभिन्न विषयों पर राष्ट्रीय परिसंवाद का आयोजन करती है और अंतरराष्ट्रीय परिसंवादों में सहभागिता करती है।

अंतर्राष्ट्रीय गंगा–मेकांग सम्मेलन, थाईलैंड

गंगा–मेकांग सम्मेलन, 2018, का आयोजन भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद् (आईसीपीआर), नई दिल्ली, भारत, द्वारा प्रीडी बैनोमॉन्ग इंटरनेशनल कॉलेज (पीबीआईसी) के सहयोग से, धम्मासात विश्वविद्यालय, बैंकाक, थाईलैंड, में 22–23 मार्च 2018 को आयोजित किया गया। सम्मेलन का स्थल सान्या धम्माशक्ति मीटिंग रूम, धम्मासात विश्वविद्यालय, बैंकॉक, थाईलैंड था। उद्घाटन समारोह में शामिल होने वाले गणमान्य व्यक्तियों में माननीय श्री राम माधव, निदेशक, इंडिया फाउंडेशन, नई दिल्ली, महामहिम श्री भगवंत सिंह बिश्नोई, थाईलैंड में भारत के राजदूत, एसोसिएट प्रोफेसर गैसिने विटूनचार्ट, प्रो. एस.आर. भट्ट, अध्यक्ष, भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद् और डॉ. नितिनांत विस्वाइसुआन, डीन (पीबीआईसी), धम्मासात विश्वविद्यालय आदि थे। स्वागत उद्बोधन डॉ. विस्वाइसुआन द्वारा करते

हुए कहा गया कि गंगा–मेकांग देशों के बीच सहयोग की समय की जरूरत है। उन्होंने धम्मासात विश्वविद्यालय की ओर से सभी प्रतिनिधियों का स्वागत किया। उद्घाटन भाषण थैमसैट विश्वविद्यालय के रेक्टर एसोसिएट प्रो. विंटूनचार्ट द्वारा दिया गया। मुख्य भाषण माननीय श्री राम माधव द्वारा दिया गया। डॉ. माधव ने कहा कि गंगा और मेकांग दोनों दक्षिण और दक्षिण पूर्व एशिया की जीवन रेखा हैं और गंगा–मेकांग घाटी के सभी छह देशों ने इनके माध्यम से समान संस्कृति और धर्म को साझा किया है। सम्मानीय अतिथि, महामहिम श्री भगवंत सिंह बिश्नोई ने इस अवसर पर प्रसन्नता व्यक्त की और आयोजकों को इस विषय पर सम्मेलन को सफलतापूर्वक आयोजन के लिए बधाई दी। उन्होंने भारतीय दूतावास द्वारा भारत और थाईलैंड के बीच संबंधों को मजबूत करने के लिए की गई गतिविधियों पर भी प्रकाश डाला।

पहला अकादमिक सत्र, जिसका विषय ''मेकांग–गंगा इकोनोमिक पार्टनरशिप'' था, की अध्यक्षता सहायक प्रो. एकरापोंग कामकॉन ने की थी। सत्र के पहले वक्ता प्रो. डॉ. जरीन मलुलेन थे। उनके पेपर का शीर्षक 'मेकांग गंगा कोओपरेशन–एन ओवरव्यू' था। सत्र के दूसरे वक्ता डॉ. सुप्रीत थ्वोर्नयुतिकरन थे। उनके पेपर का शीर्षक 'मेकांग–गंगा इकोनोमिक पार्टनरशिप' था। दूसरे शैक्षणिक सत्र का विषय 'लेंग्वेज एंड लिटरेचर' था। इसकी अध्यक्षता डॉ. अनुचा थिरकानोन ने की। सत्र के पहले वक्ता प्रो. सत्यव्रत शास्त्री थे। उनके शोधपत्र का शीर्षक था 'दि इम्पेक्ट ऑफ संस्कृत प्रोसोडी ऑन थाई पोयट्री'। प्रो. शास्त्री ने संस्कृत और थाई गद्यकाव्य के तुलनात्मक अध्ययन पर एक महत्वपूर्ण पेपर प्रस्तुत किया। दूसरे वक्ता थे डॉ. राणा पुरुषोत्तम कुमार सिंह। उनके शोधपत्र का शीर्षक था–'ग्लीमसिस ऑफ दि रामायना कल्चर इन गंगा–मेकान रिजन'। दिन के अंतिम सत्र की अध्यक्षता प्रो. एस.आर. भट्ट ने की। इस सत्र के पहले वक्ता प्रो. एस सहाय थे। उनके पेपर का शीर्षक 'द गंगा इन द मेकांग वैली' था। सत्र के दूसरे वक्ता प्रो. बैद्यनाथ लाभ थे। उनके पेपर का शीर्षक था 'बौद्ध धर्मः आसियान राष्ट्रों के बीच एक एकजुट बल'। उन्होंने मेकॉन्ग घाटी के लोगों के बौद्ध धर्म के महत्व और दिन–प्रतिदिन के जीवन पर इसके प्रभाव पर अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया। सत्र के अंतिम वक्ता प्रो. चिरापत प्रपांडविद्या थे। उनके शोधपत्र का शीर्षक था 'अर्ली रिलिजियस इंटरफेस बिटवीन इंडिया एंड द मेकागं रिजसं'। दिन का तीसरा सत्र समापन समारोह था। प्रो. एस.आर. भट्ट और प्रो. सत्यव्रत शास्त्री समापन समारोह के सम्मानित अतिथि थे। समापन सत्र में मसौदा प्रस्ताव पारित किया गया और आयोजकों ने अपना अनुभव साझा किया। सम्मेलन का समापन धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ।

इंटरनेशनल इन्टर–रिलिजियस डायलॉग ऑन स्प्रीच्यूलिटी इन हिन्दूज्म एंड इस्लाम

ईरान कल्चर हाउस, ईरान के भारतीय दूतावास, नई दिल्ली और भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद् और इंडिया फाउंडेशन, नई दिल्ली द्वारा आयोजित ''इंटरनेशनल इन्टर–रिलिजियस डायलॉग ऑन स्प्रीच्यूलिटी इन हिन्दूज्म एंड इस्लाम'' विषय पर 25–26 अक्टूबर, 2017 को इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली, में आयोजित किया गया। प्रोफेसर एस.आर. भट्ट, अध्यक्ष, भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली ने विषय प्रस्तावना प्रस्तुत की तथा आयोजन के उद्देश्य पर प्रकाश डाला। प्रोफेसर भट्ट ने बताया कि अंतर–धार्मिक सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य इस बात पर जोर देना है कि भारतीय विचार भौतिकवादी नहीं है, बल्कि समग्र है जिसमें किसी राज्य के नागरिकों या किसी समुदाय के सदस्यों को ही शामिल नहीं किया गया है, बल्कि संपूर्ण मानवता और पूरे ब्रह्मांड को ध्यान में रखा जाता है। इसके बाद डॉ. अली देहगाही, सांस्कृतिक परामर्शदाता, ईरान कल्चरल हाऊस ने कार्यक्रम में आए प्रतिभागियों एवं विशिष्ट अतिथियों के लिए स्वागत भाषण किया। सम्मेलन के विशिष्ट अतिथि के रूप में डॉ. अबूज़र इब्राहिमी तुर्कमान, जो कि इस्लामी संस्कृति और संबंध संगठन और धर्मों के बीच नीति निर्माण और समन्वय परिषद के अध्यक्ष हैं, ने कहा कि एक सतही दृष्टिकोण वाला व्यक्ति अपने भौतिक क्षेत्र में जो कुछ भी दिखता है उसे स्वीकार करता है, लेकिन समन्वित एवं व्यापक दृष्टिकोण वाले व्यक्ति की दृष्टि अंतर्ज्ञान में बदल जाती है। डॉ. मोहसेन कोमी, डिप्टी हेड (उपाध्यक्ष) इंटरनेशनल रिलेशन ऑफिस, ने कहा कि ईरान और भारत दुनिया की सांस्कृतिक वास्तुकला और सिद्धांत को बढ़ावा देने के लिए विश्व सभ्यता के दो केंद्र हैं। इस्लाम और हिंदू धर्म के अनुयायी दुनिया की आबादी के एक तिहाई से अधिक हैं और यह बातचीत एक बेहतर दुनिया के लिए एक नींव हो सकती है। उद्घाटन संबोधन स्वामी श्री गुरुशरणानंदजी महाराज (संस्थापक अध्यक्ष, श्री उदासीन कार्ष्णि आश्रम, रमणरेति, वृंदावन) द्वारा दिया गया। उन्होंने कहा कि परस्पर प्रेम एकमात्र एहसास है जिसके द्वारा हम दूसरे के साथ जुड़ सकते हैं। भारत एक ऐसा देश है जहाँ हम सभी धर्मों का सम्मान करते हैं। श्री गुलाम रजा अंसारी, भारत में ईरान के राजदूत और अतिथि स्वामी विष्णु हरि प्रसाद, विष्णु फाउंडेशन, चेन्नई, श्री युधिष्टर गोविंद दास, उपनिदेशक, इस्कॉन, नई दिल्ली, डॉ श्रीवत्स गोस्वामी, वृंदावन, प्रोफेसर के.डी. त्रिपाठी, एमेरिटस प्रो. बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय, श्री सुरेश सोनी आदि विशिष्ट विद्वानों ने अंतर–धार्मिक संवाद में भाग लिया। धन्यवाद का समापन प्रोफेसर रजनीश कुमार शुक्ला, सदस्य सचिव, भा.दा.अनु. परिषद्, नई दिल्ली द्वारा किया गया

स्वामी अग्निवेश, श्रीपद शांता महाराज, श्रीपद भक्ति विज्ञान मुनि, डॉ. कला धनंजय आचार्य, डॉ. जनक दवे, अक्षरधाम और श्रीपाद भक्ति निष्काम शांत महाराज (सभी भारत से) और डॉ. अहमद मोबलेघी, डॉ. हामिद परसनिया, प्रोफेसर हसन बोल्खारी घीहरी मारिजी (सभी ईरान) ने इस अंतर्राष्ट्रीय संवाद

कार्यक्रम में अपनी प्रस्तुति दी। कार्यक्रम के अंत के साथ भा.दा.अनु.परिषद् के कार्यक्रम अधिकारी डॉ सुशीम दुबे द्वारा हिंदू धर्म और इस्लाम में आध्यात्मिकता पर अंतर–धार्मिक संवाद का एक सारांश प्रस्तुत किया गया।

"कल्चर एनकाउन्टर्स एण्ड कॉन्फ्लूईन्सेज बिटवीन इंडिया एण्ड कोरिया" विषय पर दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली और कोरिया फाउंडेशन, नई दिल्ली द्वारा 29–30 जून, 2017 को इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली में "कल्चर एनकाउन्टर्स एण्ड कॉन्फ्लूईन्सेज बिटवीन इंडिया एण्ड कोरिया" पर दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन भाषण माननीय श्री ली है क्वांग, दक्षिण कोरिया गणराज्य के कार्यवाहक राजदूत द्वारा किया गया। स्वागत भाषण भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद् के सदस्य–सचिव, प्रोफेसर रजनीश कुमार शुक्ला द्वारा दिया गया। संगोष्ठी का मुख्य बीज वक्तव्य–'कल्चर एनकाउन्टर्स एण्ड कॉन्फ्लूईन्सेज बिटवीन इंडिया एण्ड कोरिया', विषय पर प्रोफेसर एस आर भट्ट, अध्यक्ष, भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद् द्वारा दिया गया।

कार्यक्रम में अकादमिक प्रस्तुतियाँ निम्नलिखित थीं:

प्रो. से ओक गिल एम हूँ बौद्ध अध्ययन विभाग डोंगगुक विश्वविद्यालय, ग्योंगजू कैंपस, कोरिया	–	वान–हेयोज बुद्धा, इट्स कल्चरल एंड आयडियोलॉजिकल इमेज
प्रो. के.टी.एस. साराओ बौद्ध अध्ययन विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली	–	बुद्धिस्ट पर्सपेक्टिव ऑन इंटरफेथ डायलॉग
प्रो. जियो लियोंग ली सनमून विश्वविद्यालय कोरिया	–	फिलॉसोफी एण्ड प्रिक्सिस ऑफ़ रेकिलिएशन इन वोन–हायो एण्ड रामानुज

प्रो. एच पी गंगनेगी बौद्ध अध्ययन विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय	–	दि अल्टीमेट रियल्टी ऑफ बुद्धिस्ट फिलॉसफी
प्रो.जेजीन जंग के. टांगमांग विश्वविद्यालय कोरिया	–	दि स्पिरिट ऑफ पीस एंड हारमोली गल वान–ह्योस मैत्रेय आयडिऑलॉजी
डॉ रंजीत कुमार धवन पूर्व एशियाई अध्ययन विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली	–	कोरियाज कल्चरल डिप्लोमेसीः एन एनॉलिसिस ऑफ कोरियन वेव इन इंडिया
प्रो. एस.आर. भट्ट भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली	–	पीस, सस्टेनेबल डेवलपमेंट, वेल बीईंग एंड इनोवेशन
प्रो. मून एउल–सिक सोल बौद्ध धर्म विश्वविद्यालय कोरिया	–	वान–ह्योज थाट ऑफ 'टू फीचर्स एंड वन मांइड' इन ड्यूलिज्म ऑफ सामख्य सिस्टम
प्रो. बिन्दू पुरी, दर्शनशास्त्र विभाग, जे.एन.यू., नई दिल्ली	–	पॉसिबिलिटीज ऑफ इंटर कल्चरल कम्यूनिकेशनः शेयरिंग मॉरेल इनसाइट्स एक्रास लिंगयुस्टिक कल्टरल एंड रिलिजियस कॉन्टेक्स्ट्स
प्रो. यूं जोंगगैब डोंग–ए कोरिया विश्वविद्यालय कोरिया	–	नागार्जुन एंड वान–ह्यो
प्रो. रंजन घोष भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद नई दिल्ली	–	सम रीसेन्ट्स डेवलपमेंट इन इन्डियन एसथेटिकल ट्रेडिशन्स

सुश्री हेमा
पीएच.डी. अनुसंधान विद्वान — ए स्टडी ऑन इनहान्सिग कोरियन लेगवेज स्किल थ्रू
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली फॉकटेल्सः फोकसिंग ऑन राइटिंग एंड स्पीकिंग स्किल

वर्ष 2017–18 में भा.दा.अ.प. ने कार्यक्रम आयोजित करने के अलावा, विभिन्न संस्थानों को अनुदान प्रदान किया। ऐसे सभी अनुदानों के साथ–साथ भा.दा.अ.प. द्वारा स्वयं आयोजित कार्यक्रमों के विवरण नीचे दिए गए हैंः

क्र. सं.	दिनांक	कार्यक्रम का नाम	निदेशक का नाम/स्थान	अनुमोदित धनराशि
1.	1 –3 जुलाई 2017	"वल्नरेबिलिटी वर्सस सस्टेनेबिलिटीः रिविजीटिंग दी ट्राइबल लाइफ एंड कल्चर इन दी वयनाड एंड अट्टपड़ि इन केरल" विषय पर संगोष्ठी	डॉ. के. गोपीनाथ पिल्लई, संथीगीरी रिसर्च फाउंडेशन, संथीगीरी पीओ, तिरुवनंतपुरम–695 589, केरल	5.0
2.	1–3 अगस्त 2017	"इंटरफ़ेस बिटवीन साइंस बुद्धिज़्म" (बुद्धिज़्म इन लद्दाख) विषय पर संगोष्ठी	डॉ विपिन कुमार, इंस्टिट्यूट ऑफ बुद्धिस्ट, चोगलमसर, लद्दाख लेह–194 101, लद्दाख	5.0
3.	22–24 अगस्त 2017	"नवज्योतिषा करुणाकर गुरुः पैराडिगम शिफ्ट इन इंडिया स्पिरिचुअल डिस्कोर्से ऑन धर्म" विषय पर संगोष्ठी	डॉ. के. गोपीनाथ पिल्लई, संथगिरी रिसर्च फाउंडेशन, संथगिरी पीओ, तिरुवनंतपुरम–695 589, केरल	5.0
4.	25–27 अगस्त 2017	"धर्म एंड प्रैक्सिस इन दि इमर्जिंग ग्लोबल सिनेरियो" विषय पर संगोष्ठी	डॉ. के. गोपीनाथ पिल्लई, संथीगीरी रिसर्च, संथीगीरी रिसर्च फाउंडेशन, संथीगीरी पीओ, तिरुवनंतपुरम–695 589, केरल	5.0
5.	6 –8 नवंबर 2017	"मिस्टिक फिलॉसॉफीज ऑफ़ कश्मीरः रेकन्सीलिएशन ऑफ़ थ्योरी एंड प्रैक्टिस इन श्रीनगर" विषय पर संगोष्ठी	डॉ. आशुतोष भटनागर, सचिव, जे एंड के स्टडी सेंटर, नई दिल्ली संगोष्ठी श्रीनगर में आयोजित की गई	5.0
6.	6–8 नवंबर 2017	"ऑन टू परफेक्शन : इंटर रिलीजियस डायलाग" विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	डॉ. जय शंकर सिंह, कार्षणी, गुरुशरणानन्द आश्रम (रमणरेती, गोकुल, मथुरा)	5.0
7.	8–10 दिसंबर 2017	"कंटेम्परारी नीड्स एंड रेलेवंस ऑफ़ फिलोसॉफी बुक्स" विषय पर संगोष्ठी	अध्यक्ष, अन्तराष्ट्रीय पुस्तकोत्सव समिति, कलूर, कोच्चि 682017	5.1
8.	8–10 दिसंबर 2017	"रेविसिटिंग दी हिल–वैली कनेक्शन इन नार्थ–	डॉ शिव पूजन प्रसाद पाठक,	

		ईस्ट इंडिया" विषय पर संगोष्ठी	पॉलिटिकल साइंस डिपार्टमेंट, आर्यभट्ट कॉलेज, आनंद निकेतन, बेनिटो जुआरेज़ रोड, नई दिल्ली 110021	1.0
9.	17 –19 जनवरी 2018	"ट्राइब्स इन कूर्गः ए डिस्टिंक्ट नैरेटिव इन इंडियन ट्राइबल वर्ल्ड व्यू" विषय पर संगोष्ठी	डॉ. लोके कुमारी, सोसाइटी फॉर सोशल एम्पावरमेंट, 24–सी, एबरशाइन अपार्टमेंट्स, डी–ब्लॉक, विकासपुरी, नई दिल्ली– 110 018	5.0
10.	5–7 फरवरी 2018	"फिलोसॉफी ऑफ़ आचार्य विनोबा भावे" विषय पर संगोष्ठी	डॉ. शंभु जोशी और डॉ. गीता मेहता, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा– 442 001	5.0
11.	8–9 फरवरी 2018	"फिलोसॉफी ऑफ़ बिपिन चंद्र पाल" विषय पर संगोष्ठी	प्रोफेसर देबिका साहा, दर्शनशास्त्र विभाग, उत्तर बंगाल विश्वविद्यालय, पी.ओ.: राजमोहनपुर, जिलाः दार्जिलिंग– 743 013	3.0
12.	9 –10 फरवरी 2018	"ट्रेडिशनल वैल्यूः इट्स रेलेवंस इन दी एरा ऑफ़ ग्लोबलाइजेशन विथ स्पेशल रिफरेन्स टू नार्थ–ईस्ट इंडिया" विषय पर संगोष्ठी	श्रीमती नबनिता देवी, बी.एन. कॉलेज, भुबरी, पी.ओ. बिद्यापारा, असम–783 324	3.0
13.	16 –18 फरवरी 2018	"स्वामी दयानंद सरस्वतीः ए विजनरी रिफॉर्मर" पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	प्रोफेसर रणवीर सिंह, अध्यक्ष प्रोफेसर, स्वामी दयानंद सरस्वती चेयर, अकादमिक ब्लॉक नंबर–4, कक्ष संख्या 207, सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ़ हरियाणा , जैंत – पाली, महेंद्रगढ़–123 031, हरियाणा	5.0
14.	19–22 फरवरी 2018	"रामकृष्ण कथामृत" विषय पर संगोष्ठी	डॉ. रंजन कुमार घोष, इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली	3.84
15.	22–23 फरवरी 2018	"धर्म, यूनिवर्सलिटी एंड दी कन्टिन्जेन्सीज़ ऑफ़ ह्यूमन लाइफ "विषय पर संगोष्ठी।	डॉ. राजश्री रॉय, सहायक प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग, लक्ष्मी बाई कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, अशोक विहार–III, दिल्ली–110 052	4.0
16.	26–28 फरवरी 2018	"मॉरेलिटी एंड पॉलिटिक्सः दी पर्सपेक्टिव ऑफ़ जय प्रकाश नारायण" विषय पर संगोष्ठी	डॉ. संजय पासवान, प्रोफेसर और निदेशक, जगजीवन राम चेयर, पी.एम.आई.आर. विभाग, पटना विश्वविद्यालय, 203, नीलाम्बर अपार्टमेंट, ईस्ट बोरिंग कैनाल रोड, पटना–800 001	5.0

17.	4–7 मार्च 2018	"आनंद मीमांसा" विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी	रमण रेति, गोकुल, मुथुरा	5.0
18.	8 –10 मार्च 2018	फिलॉसोफी ऑफ़ लव इन सूफिज्म एंड भक्ति ऐज रेफ्लेक्टेड इन लिटरेचर" विषय पर संगोष्ठी	प्रोफेसर के.के.एन. कुरुप, निदेशक, मालाबार इंस्टीट्यूट ऑफ रिसर्च एंड डेवलपमेंट, वातकारा, कालीकट–673 101, केरल	5.0
19.	13–15 मार्च 2018	"फिलोसॉफिकल फॉउण्डेशन्स एंड प्रैक्सिस ऑफ़ कम्युनल हार्मोनी : रेविसिटिंग इट्स सक्सेस एंड चैलेंजेज" विषय पर संगोष्ठी	डॉ. नमिता निंबालकर, एसोसिएट प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग, मुंबई विश्वविद्यालय, जनेश्वर भवन, फर्स्ट फ्लोर, विद्यानगर कैम्पस, सांताक्रूज़ (पूर्व), मुंबई–400098	5.0
20.	22–24 मार्च 2018	"होलिस्टिक हेल्थ एंड वैलनेस : यूनीफीइंग बॉडी, माइंड एंड स्पिरिट फॉर वेल्बीइंग" विषय पर संगोष्ठी	डॉ. जुगल किशोर, हेड, सामुदायिक चिकित्सा विभाग, वि.एम.एम.सी. और सफदरजंग अस्पताल, नई दिल्ली–110 029	5.0
21.	26–28 मार्च 2018	"ट्राइबल कम्युनिटी इन इंडियाः आइडेंटिटी एंड कल्चर हेरिटेज" विषय पर संगोष्ठी	डॉ. सतीश कुमार गंझू, अध्यक्ष प्रोफेसर, ट्राइबल स्टडीज, सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ़ हिमाचल प्रदेश, धर्मशाला–176 215	5.0
22.	27–29 मार्च 2018	"इंडियन कल्चर एंड सस्टेनेबल डेवलपमेंट फॉर सॉल्विंग ह्यूमन प्रोब्लेम्स" विषय पर संगोष्ठी	डॉ. अशोक बापना, जयपुरिया इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, 1, बम्बाला इंस्टीट्यूशनल एरिया, प्रताप नगर, सांगानेर, जयपुर–302 033	5.0
23.	28–30 मार्च 2018	"दी एंटेगरल ह्यूमैनिज्म ऑफ़ पंडित दीन दयाल उपाध्याय" विषय पर संगोष्ठी	डॉ. पी. मिलन खंगमेहा, प्रमुख, दर्शनशास्त्र विभाग, मणिपुर विश्वविद्यालय, इंफाल–795 003	5.0

* भा.दा.अ.प. ने सेमिनार का आयोजन किया

दार्शनिक संस्थाओ का वार्षिक–सत्र

क्र. सं.	दिनांक	कार्यक्रम का नाम	निदेशक का नाम/स्थान	अनुमोदित धनराशि
1.	9–11अक्टूबर 2017	महाराष्ट्र तत्त्वज्ञान परिषद् का 34वां सत्र	डॉ. शैलजा खरगड़े, स्थानीय सचिव, एम.टी.पी., प्रिंसिपल, वसंतराव नाइक सरकार, इंस्टीट्यूट ऑफ आर्ट्स एंड सोशल साइंस कॉलेज, नागपुर	0.5

2.	13–15 अक्टूबर 2017	"ए फिलॉसॉफिकल डिस्कोर्स ऑन करैक्टर बिल्डिंग" विषय पर ऑल इंडिया फिलॉसफी एसोसिएशन (ए.बी.डी.पी.) का 62वां वार्षिक सम्मेलन	प्रोफेसर ए. डी. शर्मा, महासचिव, अखिल भारतीय दर्शन परिषद, दर्शन विभाग, डॉ एच.एस. गौर विश्वविद्यालय, सागर–470003, एम.पी.	2.0
3.	3–5 नवंबर 2017	"एथिक्स, एस्थेटिक्स एंड रिलिजन इन दी फिलोसॉफी ऑफ़ लुडविग विट्गेन्स्टाइन" विषय पर संगोष्ठी	डॉ. लाईमायम बिश्वनाथ शर्मा, दर्शनशास्त्र विभाग, मणिपुर विश्वविद्यालय, इंफाल–795003	5.0
4.	25–26 नवंबर 2017	दर्शनिक परिषद् बिहार का 40वाँ वार्षिक सम्मेलन	प्रोफेसर श्यामल किशोर, महासचिव, दर्शन परिषद बिहार, दर्शन विभाग, टी.पी.एस. कॉलेज, पटना 800001	0.5
5.	9–10 दिसंबर 2017	"इंडियन फिलोसॉफी एंड पुरुषार्थ सिस्टम" पर म.प्र. और छत्तीसगढ़ दर्शन परिषद का 13वां सम्मेलन	प्रोफेसर प्रदीप खरे, सचिव, दर्शन परिषद (म.प्र. और सी. जी.), आर.वी.–72, सिंधु गार्डन, ई–8, विस्तार, गुलमोहर, भोपाल–462039	0.5
6.	15–17 दिसंबर 2017	"21वीं सदी में दर्शन" विषय पर भारतीय महिला दार्शनिक परिषद् का 11वां वार्षिक सम्मेलन	डॉ. राज कुमारी सिन्हा, अध्यक्ष, भारतीय महिला दार्शनिक परिषद, 3/के / 20, गृहस्थी हरमू हाउसिंग कॉलोनी, रांची–834 002	1.0
7.	3–4 जनवरी 3–4 2018	एशियाई दर्शन सम्मेलन का अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन	डॉ. लालभाई डी. पटेल, होलिस्टिक साइंस रिसर्च सेंटर, वीतराग विज्ञान चैरिटेबल रिसर्च फाउंडेशन, महावीर तीर्थ धाम के पास, एन.एच.–8, नानसाद रोड, कामरेज चार रास्ता, सूरत– 398185	10.0
8.	5–7 जनवरी 2018	"इंडियन आइडेंटिटी एंड कल्चरल कॉन्टिनुइटी" विषय पर भारतीय दार्शनिक कांग्रेस का 92वां वार्षिक अधिवेशन	प्रोफेसर एस. पन्नीरसेल्वम, महासचिव, भारतीय दार्शनिक कांग्रेस, संख्या–6, तिरुप्पुर कुमारन स्ट्रीट, (ए –1), प्रथम तल, पार्क व्यू अपार्टमेंट, तांबरम पश्चिम, चेन्नई–600045	2.0
9.	23–24 जनवरी 2018	ऑल उड़ीसा फिलॉसफी एसोसिएशन का 30वां सत्र	प्रोफेसर बी.सी. साहू, महासचिव, ऑल उड़ीसा फिलॉसफी एसोसिएशन, पी.जी. दर्शनशास्त्र विभाग, उत्कल विश्वविद्यालय, वाणी विहार, भुवनेश्वर–751004	0.5

10.	27–28 जनवरी 2018	उत्तर भारत दर्शन परिषद का वार्षिक सम्मेलन	प्रोफेसर हरिशंकर उपाध्याय, दर्शनशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद–211002	0.75

कार्यशाला

क्र. सं.	दिनांक	कार्यक्रम का नाम	निदेशक का नाम/स्थान	अनुमोदित धनराशि
1.	13–17 जुलाई 2017	"भारतीय विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में शिक्षण दर्शन पर कार्यशाला" विषय पर कार्यशाला	भा.द.अ.प. शैक्षणिक केंद्र, लखनऊ	5.5
2.	19–25 जुलाई 2017	"दी साइंस ऑफ़ कॉन्ससियसनेस्स इन दी लाइट ऑफ़ दी उपनिषद् एंड दी लाइफ डिवाइन" विषय पर कार्यशाला	डॉ. वी. आनंद रेड्डी, श्री अरबिंदो सेंटर फॉर एडवांस्ड रिसर्च, 39, वन्नियार स्ट्रीट, वैथिकुप्पम, पुडूचेरी–602501	7.0
3.	1–31 अक्टूबर 2017	"गुरुकुल सिस्टम ऑफ़ टीचिंग्स एंड लर्निंग एक्सपेरिमेंट इन दी फेनोमेनोलॉजी ऑफ़ एडमंड हुसेरेल" विषय पर कार्यशाला	डॉ. वी.सी. थॉमस, श्री अरबिंदो सेंटर फॉर एडवांस्ड रिसर्च, 39, वन्नियार स्ट्रीट, वैथिकुप्पम, पुडूचेरी–602501	424,710
4.	23–29 दिसंबर 2017	"एन एनालिटिकल स्टडी ऑफ़ एपहॉरिज़्मूस ऑफ़ नारद एंड शांडिल्य" विषय पर कार्यशाला	डॉ. सूरजमल राव, सहायक रजिस्ट्रार, महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर–305 801 डॉ. एन. लक्ष्मी अय्यर, प्रमुख, हिंदी विभाग, सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ़ राजस्थान , बंदरसिन्द्री, एन.एच.–8, (जयपुर–अजमेर हाईवे), तहसीलः किशनगढ़–305801	7.0
5.	5–6 फरवरी 2018	"त्रिक शैविज़्म ऑफ़ कश्मीर" विषय पर कार्यशाला	निदेशक (ए), भा.दा.अ.प. अकादमिक केंद्र, 3/9, विपुल खंड, पुस्तकालय भवन, गोमती नगर, लखनऊ–226 010	10.0
6.	6–12 मई 2018	"मॉडर्न फिजिक्स रियलिटी एंड एन्सिएंट इंडियन विज़डम" विषय पर कार्यशाला	डॉ. शिशिर रॉय, टी.वी. रमन पई, अध्यक्ष, नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ़ एडवांस्ड स्टडीज, आई.आई.एस.सी. कैंपस, बंगलुरु– 560012	7.0

भा.दा.अ.प. का पूर्ण सत्र

क्र. सं.	दिनांक	कार्यक्रम का नाम	निदेशक का नाम/स्थान	अनुमोदित धनराशि
1.	14–15 सितंबर 2017	"रिथिंकिंग कंटेम्पोररी इंडियन पॉलिटी" विषय पर राष्ट्रीय राजनीति विज्ञान सम्मेलन, 2017 में पूर्ण सत्र	डॉ. शालिनी सक्सेना, एमिटी इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज, एमिटी यूनिवर्सिटी, सेक्टर–125, नोएडा– 201831	1.0

अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियाँ / कार्यशालाएँ / सम्मेलन

क्र. सं.	दिनांक	कार्यक्रम का नाम	निदेशक का नाम/स्थान	अनुमोदित धनराशि
1.	24–25 फरवरी 2018	"वसुधैव कुटुम्बकम" विषय पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी	डॉ. मनोज सिन्हा, सेमिनार को–ऑर्डिनेटर, शैक्षिक फाउंडेशन, 606/13, कृष्णा गली नंबर–9, मौजपुर, दिल्ली–110053	4.0
2.	17–26 जून 2017	"व्यास–वाल्मिकी–कालीदास रेअलीज़िंग दी स्पिरिट ऑफ़ इंडियन कल्चर थ्रू देअर क्रिएशन" विषय पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी	डॉ. अरुंधति सुंदर,समर स्कूल, चिन्मय इंटरनेशनल फाउंडेशन में, आदि शंकरा निलयम, वेलियांड, अर्नाकुलम– 682313, केरल	8.0
3.	29–30 जून 2017	"कल्चरल एनकाउंटर्स एंड कोन्फ़्लुएंसेस बिटवीन इंडिय एंड कोरिया" विषय पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी	भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली (इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली)	5.0
4.	7–9 सितंबर 2017	"बुद्धिज़्मः ट्रडिशन्स, आईडियोलोजि एंड डिस्सेंट" पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में पैनल चर्चा	डॉ. आनंद सिंह, डीन, स्कूल ऑफ बौद्ध स्टडीज एंड सिविलाइज़ेशन, गौतम बुद्ध यूनिवर्सिटी, गौतम बुद्ध नगर, ग्रेटर नोएडा– 201312	2.0
5.	25–26 अक्टूबर 2017	अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी "स्पिरिचुअलिटी इन हिन्दुइज़्म एंड इस्लाम" विषय पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी	भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली (इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, नई दिल्ली–110003)	5.0
6.	27–29 जनवरी 2018	"पीस रेकन्सीलिएशन : रेस्पेक्टिव फ्रॉम रिलिजन एंड फिलोसॉफी" विषय पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन	श्री हरि प्रसाद, मैनेजिंग ट्रस्टी, श्री विष्णु मोहन फाउंडेशन, 7/15, न्यू गिरी रोड, चेन्नई–600017	5.0

शैक्षिक आयोजन का संक्षिप्त विवरण

1. 22–24 अगस्त 2017 को "नवज्योतिश्री करुणाकरण गुरुः पैराडिग्म शिफ्ट इन इंडियन स्पिरिचुअल डिस्कोर्स ऑन धर्म" पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का मुख्य विषय सनातन धर्म की पृष्ठभूमि में नवज्योतिश्री करुणाकरण गुरु द्वारा धर्म के पालन में प्रतिमान बदलाव पर था। सेमिनार का उद्‌घाटन प्रोफेसर मार्क जुवेन्समेयर, प्रोफेसर ऑफ सोशियोलॉजी और हेड, ग्लोबल स्टडीज, बारबरा यूनिवर्सिटी, यू.एस.ए. द्वारा किया गया। इनके अपने मुख्य संबोधन में, स्वामी नवान्नम् ज्ञान तपस्वी ने भारत की आध्यात्मिक संस्कृति, जो आत्मज्ञान और गुरुदीक्षा परंपरा में निहित है, का एक व्यावहारिक परीक्षण और विश्लेषण किया। प्रोफेसर पन्नीरसेल्वम ने "नवज्योतिश्री करुणाकरण गुरु" पर अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया। उन्होंने एक दार्शनिक के दृष्टिकोण से प्रस्तुति दी और एक महान गुरु के परिप्रेक्ष्य में एक गुरु के शिक्षण को रखने की मांग की, जिन्होंने मानव इतिहास को प्रभावित किया है। नवज्योतिश्री करुणाकरण गुरु पर अपना शोधपत्र प्रस्तुत करते हुए, प्रोफेसर श्रीकला एम. नायर ने कहा कि गुरु के रहस्योदघाटन के लिए सावधानी पूर्वक विश्लेषण और शोध की आवश्यकता है। नवज्योतिश्री करुणाकरण गुरु और भारतीय आध्यात्मिक विरासत पर अपने शोधपत्र में प्रोफेसर सेबेस्टियन वेलासेरी ने धर्म और युगधर्म, मानव कल्याण और स्थिरता के बीच मिलीभगत पर बुनियादी निर्विवाद तत्व लाने की मांग की। डॉ. के. गोपीनाथन पिल्लई ने नवज्योतिश्री करुणाकरण गुरु की रहस्योद्‌घाटन अध्यात्म पर अपनी प्रस्तुति में बताया कि गुरु का शिक्षण आध्यात्मिकता और धर्म में अनुत्तरित पहेलियों पर एक रहस्योद्‌घाटन है। इसके बाद के सत्रों में अन्य प्रस्तुतियों ने भारतीय संस्कृति, आध्यात्मिकता और सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलुओं पर ध्यान केंद्रित किया और बताया कि कैसे मानवता को महान आध्यात्मिक दूरदर्शी के जीवन और शिक्षाओं से लेना चाहिए और उसके अनुसार जीवन व्यतीत करना चाहिए। स्वामी धर्मानंद ज्ञान तपस्वी ने मान्य भाषण दिया। सेमिनार में 28 पेपर प्रस्तुत किए गए। प्रत्येक सत्र के दौरान होने वाली चर्चा में प्रस्तुत विषयों की गहराई और प्रतिनिधियों द्वारा सक्रिय भागीदारी दिखाई गई। सेमिनार में भारत के विभिन्न हिस्सों से और केरल राज्य से 150 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

2. 25 से 27 अगस्त 2017 तक शांतिगिरी आश्रम द्वारा "धर्म–आइडियल एंड इन दी प्रैक्सिस इन द इमर्जिंग ग्लोबल सिनेरियो" विषय पर सम्मेलन का आयोजन किया गया। यह सम्मेलन कई कारणों से उल्लेखनीय रहा, इसमें सभी दार्शनिकों, अध्यात्मवादियों, वैज्ञानिकों और जीवन के अनुभव को जानने वाले लोगो का एक साथ मिलना हुआ। सम्मेलन का उद्‌घाटन कृषि राज्य मंत्री श्री सुंदरन भगत ने किया। अपने उद्‌घाटन भाषण में उन्होंने समाज की गुणकारी प्रगति के लिए धर्म की भूमिका और

इसके उचित अभ्यास पर विशेष जोर दिया। प्रोफेसर एस.आर. भट्ट, अध्यक्ष, भारतीय दर्शन अनुसंधान परिषद, ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कई मूलभूत मुद्दों जैसे शासकों, लोगों और धर्म और आध्यात्मिकता के चिकित्सकों पर लोगों का ध्यान आकर्षित किया। उद्घाटन समारोह में श्री लंका महाबोधि सोसाइटी के अध्यक्ष सम्मानित बनगाला उपथिसा थेरो, सम्मानित थिक टाम ड्यू, एसोसिएट रेक्टर, बौद्ध शोध संस्थान, वियतनाम प्रमुख अतिथि के रूप में उपस्थित थे। स्वामी चैतन्य ज्ञान तपस्वी, महासचिव शांतिगिरी आश्रम, डॉ. के. गोपीनाथन पिल्लई, फेलो, शांतिगिरी रिसर्च फाउंडेशन ने उपस्थित लोगों का स्वागत किया और प्रोफेसर के. राजशेखरन नायर, फेलो, शांतिगिरी रिसर्च फाउंडेशन ने धन्यवाद ज्ञापन किया। सम्मेलन में निम्नलिखित पेपर पढ़े गए:

- प्रोफेसर डेविड पीटर लॉरेंस, दर्शनशास्त्र और धर्म विभाग, शिकागो विश्वविद्यालय ने "प्लरिस्टीक स्प्रीचुअलिटी, नॉन–ड्यूल सेवीज़्म एंड दी इवॉल्यूशन ऑफ़ फ्रीडम" विषय पर अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया।
- प्रोफेसर जियो लियोंग ली, सन मून विश्वविद्यालय, कोरिया ने "कनफ्लिक्ट एंड रेकन्सीलिएशन बिटवीन इंडिवीडुअलिस्म एंड अल्ट्रूइस्म फ्रॉम दी पर्सपेक्टिव ऑफ़ हिन्दू धर्म" विषय पर अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया।
- प्रोफेसर सेर्गेय परखोमोव, भारतीय संस्कृति विभाग, सेंट पीटर्सबर्ग विश्वविद्यालय, रूस ने "हिन्दू तांत्रिक धर्म फ्राम द व्यूपॉइन्ट ऑफ़ दी महानिर्वाण–तंत्र" विषय पर अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया।
- प्रोफ़ेसर हैयान शेन, प्रोफ़ेसर (डॉ.) बुद्धिज़्म स्टडीज़, दर्शनशास्त्र विभाग, शंघाई, चीन ने "द माइंड एम्ब्रेसेज़ द यूनिवर्सः द प्रैक्टिकल पर्सपेक्टिव्स ऑफ़ तियाताई ज़्हीइस थ्योरी ऑफ़ माइंड" विषय पर अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया।
- डॉ. मैथ्यू वर्गीस, द हाज़ीम नाकौरा एस्टर्न इंस्टीट्यूट, टोक्यो, जापान ने "बुद्धिज़्म एक्ट ऑफ़ नेगशनः द साइलेंस ऑफ़ बुद्ध एंड फोर–वैल्यू लॉजिक" विषय पर अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया।
- डॉ. मैथ्यू वर्गीज, द हाज़ीम नाकौरा एस्टर्न इंस्टीट्यूट, टोक्यो, जापान ने "नेगज़िस्ट ऑफ़ एक्ट ऑफ़ निगेशनः द साइलेंस ऑफ़ बुद्ध एंड फॉर–वैल्यू लॉजिक" पर अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया।
- प्रोफेसर (डॉ.) ब्रिखा एच.एस. नसोरारिया , सिडनी विश्वविद्यालय, ऑस्ट्रेलिया ने "प्रोटेक्टिंग ह्यूमन सोल फ्रॉम डेफिलेमेंट : प्रैक्टिकल एप्रोच टू स्पिरिचैलिटी इन मन्दाकिस्म" विषय पर अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया।
- प्रोफेसर मोहन खरेल, रिलिजन एंड फिलोसॉफी फॉर पीस अकादमी, काठमांडू, नेपाल ने कर्म के

प्रभावों की व्याख्या करते हुए "अंडरस्टैंडिंग ऑफ़ कार्मिक एंड रेंकरनेशन प्रिंसिपल फॉर डेवलपिंग चैंपियनशिप फॉर लिबरेशन" विषय पर अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया।

- डॉ. मोरगोलागामा उपराथना, प्रमुख, बौद्ध और पाली विभाग,यूनिवर्सिटी ऑफ़ श्री लंका, ने कहा कि बौद्ध अभ्यास में तीन गुना प्रशिक्षण हैः नैतिकता, एकाग्रता और ज्ञान, (शील, समाधि और पन्ना) और बौद्ध शिक्षाओं में पांच नियमित उपदेश है।
- डॉ. विथरनंदनिया चंदासिरी थेरो, लेक्चरर, पाली विभाग, बौद्ध एंड पाली यूनिवर्सिटी ऑफ़ श्रीलंका ने "फिलॉसोफिकल रेकौर्से टू ह्यूमन राइट्स एंड बियॉन्ड देट विथ रेफरन्स टू बुद्धा धर्मा" विषय पर अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया।
- श्री कोग्गेल विजिथा, वरिष्ठ व्याख्याता, पाली विभाग और बौद्ध अध्ययन विभाग, रुहुना यूनिवर्सिटी, मतारा, श्रीलंका के विभाग ने अपने पेपर "एन एनालसिस ऑन दी यूज़ ऑफ़ सब्बसवा सूत्रा ऐज ए थ्योरी इन बुद्धिस्ट साइकोथेरेपी" के माध्यम से कहा गया है कि बौद्ध धर्म दर्शनशास्त्र के साथ–साथ मनोविज्ञान है तथा यह गहराई से 'मन' पर जोर देता है जो अन्य किसी दर्शन या धर्म में नहीं देखा जा सकता है।
- श्री डॉ. लेनगला सिरिनिवास थेरो, संस्कृत, बौद्ध और पाली के विभागाध्यक्ष, यूनिवर्सिटी ऑफ़ श्रीलंका, ने अपना शोधपत्र "ए क्रिटिकल स्टडी ऑफ विज़डम ऐज डिपिक्टेड इन असत्सहस्रिका प्रज्ञापारामिता विथ रेफेरेंस टू दी फिलोसॉफी ऑफ़ नागार्जुन" विषय पर प्रस्तुत किया।
- प्रोफेसर जे.एस. राजपूत, शिक्षाविद ने अपने शोध "सनातना धर्मा इन सोशल–कल्चरल रियल्म ऑफ़ पीपुल्स लाइफ' में सनातन धर्म के विकास, गृहस्वामी तक इसके संचरण और समकालीन संदर्भ में इसकी प्रासंगिकता की जांच की।
- डॉ. किरण गोपाकुमार राजलक्ष्मी, डीन, मिडिल ईस्ट कॉलेज, सल्तनत ऑफ़ ओमान (गुरुस्थानमः बियॉन्ड द आइडियल एंड प्राक्सिस ऑफ़ धर्म) ने धर्म की सत्तामूलक निष्पक्षतावाद पर चर्चा की।
- प्रोफेसर सिसिर रॉय, टी. वी. रमन पाई, चेयर प्रोफेसर, नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ़ एडवांस्ड स्टडीज, आई.आई.एस.सी. कैम्पस, बैंगलोर ने शून्यता परिमाण की अवधारणा के बारे में बात की।
- प्रोफेसर उत्तम पाटी, स्कूल ऑफ बायोटेक्नोलॉजी, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली ने "ट्रांसेंडिंग दी साईकिल ऑफ़ एक्शन एंड रिएक्शन्स" विषय पर अपना शोध प्रस्तुत किया।
- प्रोफेसर सुजाता मिरी, दर्शनशास्त्र के सेवानिवृत्त प्रोफेसऱ और डीन, स्कूल ऑफ एजुकेशन एंड ह्यूमैनिटीज, नॉर्थ ईस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी, ने "स्पिरिचुअलिटी एंड ट्राइबल रिलिजन" विषय पर

अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया।

- प्रोफेसर बालगणपति देवरकोंडा, दिल्ली विश्वविद्यालय, ने "रोल ऑफ़ गुरु इज एन इंटरप्रेटर ऑफ़ धर्म" विषय पर शोध प्रस्तुत किया।

ग्लोबल स्पिरिचुअल कॉन्क्लेव ने आध्यात्मिक दृढ़ निश्चय वाले, आध्यात्मिक तथा धर्म प्रमुखों और समाज शास्त्रियों जैसे विद्वानों के विचार–विमर्श के लिए साझा मंच प्रदान किया। संयुक्त राज्य अमेरिका, जर्मनी, चीन, दक्षिण कोरिया, ऑस्ट्रेलिया, जापान, श्रीलंका और नेपाल के 70 से अधिक प्रसिद्ध राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय विद्वानों ने सम्मेलन में भाग लिया।

3. 15 और 17 दिसंबर 2017 को भारतीय महिला दार्शनिक परिषद का 11वां वार्षिक राष्ट्रीय सम्मेलन मूलजी कॉलेज, जलगांव, महाराष्ट्र में "फिलोसॉफी ऑफ़ 21स्ट सेन्चुरी" विषय पर आयोजित किया गया था। उद्घाटन समारोह में 1) श्री पी.बी. पाटिल, उपाध्यक्ष, के.सी.ई. सोसायटी और सत्र के अध्यक्ष ने भाग लिया; 2) प्रोफेसर (डॉ.) रजनीश कुमार शुक्ला, सदस्य सचिव, भा.दा.अ.प. और मुख्य अतिथि; 3) प्रोफेसर (डॉ.) जटाशंकर, अध्यक्ष, ए.बी.डी.पी. और विशेष आमंत्रित; 4) प्रोफेसर रामजी सिंह, मुख्य वक्ता, पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय और स्वतंत्रता सेनानी; 5) प्रोफेसर रमेश चंद्र सिन्हा, मुख्य संपादक, दर्शनिका त्रिमासिका (त्रैमासिक पत्रिका), सेवानिवृत्त प्रमुख, दर्शनशास्त्र विभाग, पटना विश्वविद्यालय और ; 6) डॉ. पूजा व्यास, निदेशक (अकादमिक), भा.दा.अ.प., लखनऊ और; 7) प्रोफेसर राजकुमारी सिन्हा, अध्यक्ष बी.एम.डी.पी., सेवानिवृत्त प्रोफेसर दर्शन और निदेशक, महिला अध्ययन केंद्र, रांची विश्वविद्यालय, रांची; 9) प्रोफेसर (डॉ.) उदय डी. कुलकर्णी, प्रिंसिपल, मूलजी जठिया कॉलेज; 10) डॉ. रजनी सिन्हा, प्रमुख, दर्शनशास्त्र विभाग, एम.जे. कॉलेज और आयोजन सचिव। बी.एम.डी.पी. की ओर से डॉ. राजकुमारी सिन्हा और डॉ. छाया राय ने स्वागत भाषण दिया। डॉ. यू.डी. कुलकर्णी, प्राचार्य, ने एम.जे. कॉलेज की ओर से अपना स्वागत भाषण दिया। इसके पश्चात, डॉ. रजनी सिन्हा, आयोजन सचिव और प्रमुख, दर्शनशास्त्र विभाग, एम.जे. कॉलेज द्वारा प्रतिष्ठित वक्ताओं का परिचय कराया गया। इसके पश्चात प्रसिद्ध अतिथि वक्ताओं–– डॉ. रजनीश कुमार शुक्ल, डॉ. जटाशंकर, डॉ. रमेश चंद्र सिन्हा ने सम्मेलन के विषय पर अपने–अपने विचार प्रस्तुत किए। मुख्य संबोधन, व्योवृद्ध दार्शनिक और स्वतंत्रता सेनानी डॉ. रामजी सिंह द्वारा दिया गया था। वे संगोष्ठी उप–विषय पर समानांतर सत्रों में आयोजित तकनीकी सत्र और संगोष्ठी में शामिल थेः 1) भारतीय दर्शन और नैतिकता; 2) सात्त्विक और ज्ञान–पद्धति शास्त्र; 3) योग दर्शन; और 4) महिलाओं से संबंधित मुद्दा। इन सत्रों में 60 से अधिक पत्र प्रस्तुत किए गए। शाम को बी.एम.डी.पी. की कार्यकारी बैठक थी। शाम को तकनीकी सत्रों के बाद भाग लेने वाले प्रतिनिधियों के बीच चुनिंदा विषयों पर अलग–अलग सत्रों पर चर्चा की गई। बी.एम.डी.पी. के 11वें राष्ट्रीय सम्मेलन के महासचिव प्रोफेसर डॉ. छैया राय ने भी सम्मेलन के विषय पर अपने विचार

प्रस्तुत किए। डॉ. विजय श्रीनाथ कांची ने तीन दिनों की सम्मेलन रिपोर्ट दी। प्राचार्य डॉ. वी.आर. श्रीमती का पाटील, जी.जी. खडसे कॉलेज, मुक्तेनगर ने समारोह में अध्यक्षीय भाषण दिया। धन्यवाद ज्ञापन बी.एम.डी.पी. की ओर से डॉ. राजकुमारी सिन्हा और मूलजी जठिया कॉलेज की ओर से डॉ. रजनी सिन्हा ने किया।

4. 3 से 5 दिसंबर 2017 को भा.दा.अ.प. द्वारा "मल्टी–डायमेंशनल कंट्रीब्यूशन ऑफ़ लोकमान्य तिलक टू इंडोलॉजी एंड एप्लाइड फिलॉसफी" विषय पर के.जे. सोमैया भारतीय संस्कृत पीठम, मुंबई में राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी का उद्घाटन सरसंघचालक डॉ. मोहन जी भागवत ने किया। उद्घाटन कार्यक्रम में भारी संख्या में विभिन्य क्षेत्रों के विशेषज्ञ, वक्ता, संकाय, छात्र और अतिथि उपस्थित थे। डॉ. मोहन जी भागवत ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा, "भारतीय क्रांति का इतिहास लोकमान्य तिलक के योगदान पर विचार किए बिना अधूरा है। वह ऐसे नेता थे, जिन्होंने जनता में राजनीतिक जागरूकता पैदा करने के महत्व को महसूस किया और आम लोगों को स्वतंत्रता की लड़ाई में सक्रिय रूप से योगदान करने के लिए प्रेरित करने के लिए अथक प्रयास किया।

आलस्य और निष्क्रियता में फंसे समाज को जगाने के लिए, लोकमान्य तिलक ने धर्म का माध्यम चुना और भगवद्गीता से कर्मयोग के सिद्धांत को दोहराया। उन्होंने लोगों को व्यक्तिगत खुशियों की अपेक्षा सामाजिक कल्याण के लिए चिंतन प्रक्रिया को करने के लिए प्रोत्साहित किया।

लोकमान्य तिलक की गणित, संस्कृत और खगोल विज्ञान में विद्वता थी , अनुसंधान में उनकी निरंतर खोज और पत्रकारिता में अतिरिक्त–सामान्य विशेषज्ञता के कारण एक बहुमुखी व्यक्तित्व के स्वामी थे। उन्होंने परंपराओं का स्वच्छीकरण करने और विभिन्न ध्यान चुनौतियों का सामना करने के लिए भारतीय शिक्षा प्रणाली को मजबूत बनाने की प्रक्रिया पर केंद्रित किया। उन्होंने वेदों और अन्य दार्शनिक ग्रंथों के विश्लेषण और व्याख्या के नए दृष्टिकोणों को सामने रखा, जिन्होंने अनुसंधान के क्षेत्र में भारतीय समाज की पहचान को फिर से जीवंत किया।"

उद्घाटन भाषण के पश्चात प्रोफेसर एस.आर. भट्ट, भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद् के अध्यक्ष का मुख्य सम्बोधन रहा। सभी भाषणों ने हमारे समकालीन समय में लोकमान्य तिलक की शिक्षाओं और इसकी प्रासंगिकता पर चर्चा करने के महत्व पर जोर दिया। भारतीय दर्शनशास्त्र अनुसंधान परिषद् के सदस्य सचिव प्रोफेसर रजनीश कुमार शुक्ला ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

कुल 15 पत्र प्रस्तुत किए गए और उन्होंने तिलक की बहुआयामी शिक्षाओं के लगभग प्रत्येक पहलू को सम्मिलित किया। निम्नलिखित वक्ताओं की सूची, उनके पदनाम, और उनके पत्रों का शीर्षक हैः

1. प्रोफेसर (डॉ.) बी.एन. नरहरि अचार, अमेरिका के मेम्फिस विश्वविद्यालय के प्रोफेसर एमेरिटस, ने

"एस्ट्रोनॉमी (प्लैनेटेरियम सॉफ्टवेयर की सहायता से) ऐज ए रिसर्च टूल इन इंडोलॉजी विथ स्पेशल रेफरन्स टू लोकमान्य तिलक" विषय पर शोध पत्र प्रस्तुत किया।

2. श्री सुरेश भावे, लेखक और स्वतंत्र अनुसंधान विद्वान, पुणे ने दी ओरिजिन ऑफ़ वेदजः मॉडर्न आर्कियोलॉजिकल फाइंडिंग्स–लोकमान्य तिलकस रिसर्च" विषय पर शोध पत्र प्रस्तुत किया।
3. डॉ. सुशीम दुबे, कर्यक्रम अधिकारी, भारतीय दर्शन अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली ने "लोकमान्य तिलकसव्यूज ऑन दी फिलोसॉफी ऑफ़ उपनिषद्स" विषय पर शोध पत्र प्रस्तुत किया।
4. डॉ. मारियानो इटुरबे, एडजंक्ट प्रोफेसर, के.जे. सोमैया भारतीय संस्कृति पीठम, मुंबई ने "लोकमान्य तिलक एंड सुकरातःए कम्पेरेटिव स्टडी" विषय पर शोध पत्र प्रस्तुत किया।
5. श्री दिलीप करमबेलकर, अध्यक्ष, महाराष्ट्र राज्य मराठी विश्वकोष निर्मली मंडल, प्रबंध संपादक, विवेक मीडिया समूह ने "निष्काम कर्म योग ऑफ़ लोकमान्य तिलक – इट्स एप्लीकेशन इन आरएसएस एंड रिजल्ट्स" विषय पर शोध–पत्र प्रस्तुत किया।
6. "डॉ. मीनल कातरनीकर, एसोसिएट प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग, मुंबई विश्वविद्यालय ने "हर्मेन्यूटिकल स्टडी ऑफ गीतारहस्य" विषय पर शोध–पत्र प्रस्तुत किया।
7. प्रोफेसर डॉ. मल्हार कुलकर्णी, संस्कृत के प्रोफेसर, मानविकी और सामाजिक विज्ञान विभाग, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, मुंबई ने "इनसाइट्स फ्रॉम लोकमान्य तिलकस कमैंट्स ऑन दी ब्रहासूत्र" विषय पर शोध पत्र प्रस्तुत किया।
8. डॉ. मनाली लोंढे, एसोसिएट प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग, एस. सोमैया कॉलेज ऑफ आर्ट्स, साइंस एंड कॉमर्स, मुंबई ने "लोकमान्य तिलकस कण्ट्रीब्यूशन फॉर दी सोशल वेल–बीइंगः लोकसंग्रह" विषय पर शोध पत्र प्रस्तुत किया।
9. प्रोफेसर (डॉ) एस.एम. माइकल, पूर्व प्रमुख, समाजशास्त्र विभाग, मुंबई विश्वविद्यालय ने "डायलाग ऑन 'दी विज़न ऑफ़ लोकमान्य तिलक्स' ऑन इंडियन नेशनलिज़्म" विषय पर शोध पत्र प्रस्तुत किया।
10. प्रोफेसर अशोक मोदक, राष्ट्रीय अनुसंधान प्रोफेसर, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार ने "गीतारहस्यः ए फोउन्टैनेड ऑफ़ इंटेगरल ह्यूमानिज़्म" पर एक पत्र प्रस्तुत किया।
11. श्री रुद्राक्ष सकरीकर, संस्कृत में सहायक प्रोफेसर, के.जे. सोमैया भारतीय संस्कृति पीठम, मुंबई ने "क्रिटिकल एनालसिस ऑफ़ लोकमान्य तिलक्सः व्यू ऑन दी मिसिंग वर्स ऑफ़ सांख्यकारिका"

विषय पर शोध पत्र प्रस्तुत किया।

12. डॉ. बलराम शुक्ला, संस्कृत के सहायक प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली ने "लोकमान्य तिलक्स व्यूज ऑन दी एंटिक्विटी ऑफ़ वेदास" विषय पर शोध पत्र प्रस्तुत किया।
13. प्रोफेसर डॉ. जी.यू. थिटे, पूर्व प्रमुख, संस्कृत विभाग, पुणे विश्वविद्यालय ने "लोकमान्य तिलक एंड संस्कृत" विषय पर शोध पत्र प्रस्तुत किया।
14. डॉ. श्रीनिवास तिलक, स्वतंत्र शोधकर्ता, टोरंटो, कनाडा ने "125 इयर्स ऑफ़ सार्वजनिक गणेशोत्सव : ए लिगेसी ऑफ़ लोकमान्य तिलक" विषय पर शोध पत्र प्रस्तुत किया।
15. डॉ. शर्मिला वीरकर, एसोसिएट प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग, मुंबई विश्वविद्यालय ने "फ्रॉम नेशनल एजुकेशन टू इंटरनेशनल माइंडनेस इन एजुकेशन : रिविजिटिंग लोकमान्य तिलक्स व्यूज ऑन एजुकेशन" विषय पर शोध पत्र प्रस्तुत किया।

प्रोफेसर अशोक मोदक के समापन भाषण के साथ शोध पत्र प्रस्तुत करने का अंतिम सत्र समाप्त हुआ जिसमें उन्होंने कहा :

भारतीय दर्शन चक्रकारी मंडलियों में विश्वास करता है, जहां व्यक्ति परिवार, गांव, राष्ट्रीय और इसी प्रकार के सूत्र से जुड़ा होता है। यह व्यक्ति के साथ–साथ उसके आस–पास के व्यापक दायरा जैसे सहानुभूति, करुणा और वैश्विक मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता पर विशेष ध्यान देने के बीच संतुलन पर जोर देता है।

निश्चित रूप से यह सकारात्मक विकास है जिसमे सम्पूर्ण संसार भारतीय संस्कृति द्वारा प्रस्तावित आध्यात्मिक मानवतावाद पर ध्यान दे रहा है। सामाजिक सौहार्द्र प्राप्त करने के साधन के रूप में भारतीय लोकनीति की विश्व स्तर पर सराहना की जा रही है।

5. 8 से 10 दिसंबर 2017 तक अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक महोत्सव समिति, कोच्चि केरल द्वारा "नीड एंड रेलेवंस ऑफ़ फिलॉसॉफिकल बुक्स" विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन डॉ. के.एस. राधाकृष्णन, पूर्व अध्यक्ष, केरल लोक सेवा आयोग और पूर्व कुलपति (श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, कलाडी) द्वारा किया गया।

   डॉ. श्रीकला नायर (विभागाध्यक्ष, शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, कलदी), डॉ. सुशीम दुबे (कार्यक्रम अधिकारी, भा.दा.अ.प.) और डॉ. फ़ादर पॉल थेलकट्टू ने संगोष्ठी में शोध पत्र प्रस्तुत किया। कार्यक्रम मुख्य आयोजन स्थल में आयोजित किया गया था। द्वितीय आयोजन दोपहर 3. 30 बजे था।

कुमारी मालविका सुनील ने मोहिनी अट्टम का प्रस्तुति की। 9 दिसंबर 2017 को सुबह 10.30 बजे मुख्य समारोह स्थल पर पेपर प्रस्तुत किये गये। डॉ. श्रीकला नायर ने पेपर प्रस्तुत करते हुये विषय पर बात की। डॉ जी प्रसादकुमार, मुख्य संवाददाता, मातृभूमि समाचार, चेन्नई; जी. आनंद राज, एसोसिएटेड प्रोफेसर; और टी. सतीशन, पत्रकार, ने भी चर्चा में हिस्सा लिया। अपराह्न 3.30 बजे, "रीटेलिंग एंटरप्रेटेनिंग एंड इंडियन एपिक्स" पर पैनल चर्चा हुई। अधिवेशन का संचालन अधिवक्ता एम. ससिसंकर द्वारा किया गया जिसमे प्रसिद्ध उपन्यासकार श्री आनंद नीलकंदन और लेखक आर प्रस्सनकुमार ने अपने–अपने विचार प्रस्तुत किए।

शाम 4.30 बजे, पद्मश्री प्रोफेसर एम. लीलावती ने सबसे प्रसिद्ध और वरिष्ठ मलयालम लेखकों में से एक लेखक डॉ. गोपीनाथ पनांग मलयालम का साक्षात्कार लिया। शाम 5.30 बजे, श्री ई. एम. हरिदास ने श्री अहमद कबीर, एम.एल.ए., का साक्षात्कार लिया।

6. 1–3 जुलाई 2017 को भा.दा.अ.प. द्वारा "वल्नेरेबिलिटी वर्सेज सस्टेनेबिलिटीः द रिवाइजिंग द ट्राइबल लाइफ एंड कल्चर" विषय पर केरल के व्यानंद और अट्टापडी में तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया था। सेमिनार का उद्घाटन करते हुए प्रोफेसर भट्ट ने कहा कि भा.दा.अ.प. इन क्षेत्रों में लोगों का ध्यान आकर्षित करने के उद्देश्य से आदिवासी जीवन, संस्कृति और धर्म पर पूरे भारत में इस प्रकार का आयोजन कर रहा है। उन्होंने कहा कि आदिवासी जीवन और संस्कृति भारत की विरासत के सबसे सबसे गौरवपूर्ण प्रतीकों में से एक हैं। जनजातीय कलाकार, शिल्प, भाषा, धार्मिक विश्वास, वैज्ञानिक विचार, कृषि प्रौद्योगिकी, वास्तुकला डिजाइन और चिकित्सा पद्धतियों का भारत के पिछले इतिहास पर गहरा प्रभाव पड़ा है और भारत की समग्र संस्कृति के प्रमुख घटक हैं। श्री बालाकृष्णन, विधायक, सुल्तान बाथरी, ने आदिवासी योजनाओं और गरीबी और पुनर्वास के साथ–साथ केरल में जनजातियों को रोजगार प्रदान करने के लिए सरकार की पहल का मूल्यांकन किया। आदरणीय डॉ. बिशप जोसेफ मार थॉमस, मलंकरा कैथोलिक बेटरी डायोसिस ने वनवासियों के आवाजहीन लोगों की नियति और हाशिए पर रहने की बात कही। स्वामी आनंद ज्योति ज्ञान तपस्वी, प्रभारी, संथिगिरी आश्रम, वायंड शाखा ने मुख्य भूमि और वनवासियों में लोगों के ध्रुवीकरण के ऐतिहासिक कारणों पर बात की, और हम संयुक्त रूप से वेनंद और अटापेडी में जनजातीय लोगों के उत्थान और उत्थान की दिशा में प्रयास कर सकते हैं। प्रोफेसर एस.एन. चौधरी, समाजशास्त्र विभाग, बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल ने अपना मुख्य भाषण की प्रस्तुत में आदिवासी जीवन और संस्कृति के राष्ट्रीय परिदृश्य और आदिवासी लोगों के संघर्ष को संरक्षित करने तथा उनकी संस्कृति और जीवन की रक्षा की बात कही। अट्टापदी के जापान सरकार के प्रोजेक्ट के पूर्व परियोजना अधिकारी डॉ. आर. दारार ने

"आदिवासीलाइफ : ए लेसन इन एनवायरनमेंट एंड कल्चर" विषय पर पर अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया। उन्होंने अटापेडी में जनजातियों के जीवन और लुप्त होती उनकी संस्कृति को त्रासदी होने की ओर इशारा किया। डॉ. राजीव भट्ट, जन स्वास्थ्य विशेषज्ञ, दिल्ली ने जनजातीय स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली और जनजातीय चिकित्सा पर बहुमूल्य प्रस्तुति की। राजशेखरन नायर, लालकृष्ण संथीगिरी सोशल रिसर्च इंस्टीट्यूट के प्रमुख फेलो ने "सिंक्रेटिक होलिज्म विथ रेस्पेक्ट टू इलनेस एपिसोड" विषय पर अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया। डॉ. विजय कुमारी के., सहायक प्रोफेसर, ऑल सेंट्स कॉलेज, तिरुवंतपुरम ने "प्रैक्टिसेज ऑफ़ डिस्क्रिमनेशन एंड सबजुगेशन ऑफ़ कोरागास ऑफ़ वयानाड एंड कासरगोड इन केरल" विषय पर शोध पत्र प्रस्तुत किया। डॉ. सुधीर दिंघ ने उन चुनौतियों पर अपनी बात कही जो पूरे भारत में जनजातियाँ सामना कर रही हैं। डॉ. बैजू के. ने "डेमोक्रेटिक डेंटरलिज़्ड पार्टिसिपेटरी गवर्नेंस : एनालसिस ऑफ़ इंस्टीटूशनल इंटरेक्शन्स ऑफ़ लोकल कम्युनिटीज एंड सेल्फ गवर्निंग बॉडीज ऑफ़ वेस्टर्न घाट्स, केरल" विषय पर बात कही। विदाई सत्र की अध्यक्षता प्रोफेसर एस.आर. भट्ट और विदाई भाषण डॉ वी. बालाकृष्णन, निदेशक एम.एस. स्वामीनाथन इंस्टीट्यूट, वयानाड द्वारा दिया गया।

7. 3 से 4 जनवरी 2018 तक, नई दिल्ली में भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद् के सहयोग से होलिस्टिक रिसर्च सेंटर (वीतराग विज्ञान चैरिटेबुल रिसर्च फाउंडेशन द्वारा स्थापित और प्रबंधित), सूरत द्वारा "एशियाई पर्सपेक्टिव्स ऑन होलिस्टिक मोड्स ऑफ़ थिंकिंग एंड वेज़ ऑफ़ लिविंग" विषय पर सम्मेलन आयोजित किया गया गया। सम्मेलन में एशियाई और पश्चिमी देशों के आमंत्रित वक्ताओं के लिए चार पूर्ण सत्र और पंजीकृत प्रतिभागियों के लिए तीन समानांतर सत्र थे। इसके अतिरिक्त, श्री रामानुज मिशन ट्रस्ट, चेन्नई द्वारा सह–प्रायोजन के साथ "फ्लो ऑफ़ फिलॉसॉफिकल थॉट्स बिट्वीन इंडिया एंड फार ईस्टर्न कन्ट्रीज – हिस्टोरिकल पर्सपेक्टिव्स" विषय पर विशेष पूर्ण सत्र आयोजित किया गया था। श्री ओ.पी. कोहली, माननीय राज्यपाल, गुजरात राज्य, मुख्य अतिथि थे, डॉ. अली देहगही, सांस्कृतिक परामर्शदाता, इस्लामिक रिपब्लिक ऑफ ईरान, नई दिल्ली के दूतावास के अतिथि थे। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता प्रोफेसर एस.आर. भट्ट, अध्यक्ष, भा.दा.अ.प., नई दिल्ली और सह–अध्यक्षता श्री वसंतभाई यू. पटेल, संस्थापक ट्रस्टी, वी.वी.सी.आर.एफ. ने की। दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर और एशियाई दर्शन सम्मेलन के महासचिव डॉ. बालगनपति डी. ने सम्मेलन के विषय का विवरण दिया। माननीय राज्यपाल श्री ओ.पी. कोहली ने उल्लेख किया की "दुनिया को एक परिवार (वसुधैव कुटुम्बकम) माना जाता है। एशियाई सोच का तरीका जिसमें आपस में अपनापन हो, वही वैश्विक समस्याओं का समाधान करेंगे। सभी को साथ लेकर चलने की भारतीय संस्कृति का दृढ़ विश्वास पूर्व और पश्चिम के बीच

की खाई पाटेगी। प्रोफेसर मारजैना जकुबज़ाक, पोलैंड, सांख्य–योग परंपरा के साथ भारतीय दर्शन के संदर्भ में मनोवैज्ञानिक एजेंसी के मसला पर चर्चा की। प्रोफेसर जी. मिश्रा, मद्रास विश्वविद्यालय, ने कहा कि दर्शन को हमेशा पूर्व निर्धारित सीमा के बिना प्रयोगात्मक होना चाहिए। प्रोफेसर जी.डी. समनपाल, श्रीलंका ने बौद्ध दर्शन, हिंदू दर्शन, भौतिकवाद, जैन दर्शन, आयुर्वेद और ज्योतिष के विशेष संदर्भ के साथ–साथ एशियाई विज्ञान के प्राकृतिक तरीकों के बीच संबंधों पर चर्चा की। प्रोफेसर लिसेंको विक्टोरिया, मास्को, ने वैदिक परंपरा में समस्त संबंधित अंश का महत्व और अभिप्राय पर विचार–विमर्श किया। अपने पर्चा (श्री रामतीर्थ पटेल द्वारा पढ़ा) में डॉ. राधा कृष्णन, अध्यक्ष, एचएससीआरएफ, ओक रिज, टेनेसी, यू.एस.ए. ने 'जैविक रूप से मानव होने के कारण व्यक्ति में उत्कृष्ट बनने की क्षमता और संभावना होती है' पर चर्चा की। प्रोफेसर डू था हा, वियतनाम, ने देवी या दाऊ मऊ जैसे कि प्रकृति की देवी के अवतार के महत्व (वियतनाम में 16वीं शताब्दी) के रूप में बताया जो की इसे यूनेस्को द्वारा मान्यता प्राप्त है। मलेशिया के प्रोफेसर रविचंद्रन मूर्ति ने चेट्टी के बारे में चर्चा की, जो एक संकर समुदाय है जो हिंदू व्यापारियों और स्थानीय मलेशियाई, चीनी, जावानीस और बटक के बीच अंतर्जातीय विवाह से निकला है। प्रोफेसर तांग मिंगजुन ने बौद्ध तर्क की एशियाई परंपरा और भारतीय परंपरा से इसके संबंध की कुछ आधारभूत विशेषताओं को विस्तार से बताया। मॉरीशस के डॉ. राजेंद्रकुमार डाबी ने मॉरीशस में सांस्कृतिक और धार्मिक प्रथाओं में भारत के योगदान के बारे में चर्चा की। प्रोफेसर जियो लियोंग ली, दक्षिण कोरिया, ने दुनिया के भीतर खोज की शुरुआत के रूप में पीड़ा का उल्लेख किया। वियतनाम के वेन डॉ. थिच टैम ड्यूक ने उल्लेख किया कि विश्व में अनिश्चितता भौतिक दुनिया में वृद्धि का गवाह है जबकि नैतिक दुनिया में कमी। स्वामी शैलेशानंद, दादा भगवान के अप्पपुत्र, सूरत ने इस विषय पर दादा का दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। प्रोफ़ेसर चिरपत प्रपांडविद्या, थिलन, ने संस्कृत शिलालेखों के शाब्दिक प्रमाणों में उल्लिखित दार्शनिक विचारों के अध्ययन के बारे में बहुमूल्य जानकारी प्रस्तुत की। शाश्वत सुख प्राप्त करने के लिए 3 शताब्दी ईस्वी के बाद से सूचीबद्ध। एशियाई दर्शन सम्मेलन के लिए प्राप्त विभिन्न 90 शोधों के सार सहित एक पुस्तक प्रकाशित की गई थी जिसकी सभी 300 प्रतिभागियों को मानार्थ प्रति दी गई थी।

8. 7 से 19 जनवरी, 2018 तक सोसाइटी फॉर एंपावरमेंट, नई दिल्ली ने "कूर्ग ट्राइब : ए डिस्ट्रिक्ट नैरेटिव ऑफ ट्राइबल वर्ल्डव्यू" विषय पर फॉरेस्ट्री कॉलेज, पोन्नमपेट, कोडागु, कर्नाटक में तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। डॉ. लोकेश कुमार, सेमिनार समन्वयक, ने उद्घाटन सत्र में संगोष्ठी के विषय–वस्तु का परिचय दिया। उसने कहा कि कई कारणों से कूर्ग जनजाति अन्य जनजातीय समूहों से अलग है। उन्होंने विशेषतौर पर कहा कि यह समुदाय जंगल

का प्राकृतिक रक्षक है जिसके परिणामस्वरूप इस जिले में हरे–भरे हरे–भरे जंगल टिकाऊ हैं। डॉ. एम. जेडेयगौड़ा (प्रथम सोलीगा जनजाति से पीएचडी किया हैं और वर्तमान में कॉलेज ऑफ फॉरेस्ट्री, पोन्नमपेट, कोडागु में सहायक प्रोफेसर के रूप में काम कर रहे हैं), ने कूर्ग जनजाति के कई पहलुओं के बारे में विस्तार से बताया। प्रोफेसर सिद्दलिंगा स्वामी, समन्वयक, राज्य उच्च शिक्षा गुणवत्ता प्रकोष्ठ, कर्नाटक और मुख्य अतिथि श्रीमती पंकजा, जिला पंचायत सदस्य कोडागु, श्री प्रकाश, तालुक पंचायत सदस्य, विराजपेट साथ ही विशिष्ट अतिथि डॉ. डैनियल एम., मैसूर विश्वविद्यालय और प्रोफेसर रजनी जयराम, जैन विश्वविद्यालय, बैंगलुरु संगोष्ठी में उपस्थित थे। उच्च शिक्षा गुणवत्ता प्रकोष्ठ, कर्नाटक के निदेशक प्रोफेसर सिद्दलिंगा स्वामी ने कूर्ग में वन जनजातियों की विरासत की रक्षा करने के बारे में तर्क दिया। श्रीमती पंकजा, जिला परिषद सदस्य (कूर्ग जनजाति) ने कूर्ग की जनजातियों को गांव, कॉलोनियों और जंगल में रहने वाली जनजातियों में वर्गीकृत किया। उसने कहा कि उनके पास विभिन्न प्रकार की भूमि प्रणाली है। पंचशील समिति सदस्य (कूर्ग जनजाति) श्री प्रकाश ने नीति क्रियान्वयन की समस्या पर ध्यान दिया और कहा कि सरकार इस समुदाय के दृष्टिकोण को समझने के बाद सरकारी योजनाओं के सही तरीके से क्रियान्वयन में सक्षम होगी। डॉ. डैनियल एम., यूनिवर्सिटी ऑफ मैसूर, ने कूर्ग जनजातियों के सामाजिक–संस्कृति और धार्मिक जीवन पर ध्यान केंद्रित किया। प्रोफेसर रजनी जयराम, जैन विश्वविद्यालय, बैंगलुरु ने कहा कि वास्तव में धर्म का अर्थ है क्या था, क्या है और क्या किया जा सकता है जो यह सीधे इस विषय की निरंतरता से संबंधित है। प्रोफेसर एस.एन. चौधरी, बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल, डॉ. सुमति एन., मैसूर विश्वविद्यालय, डॉ. साजी वर्गीज, एनईएचयू, शिलॉन्ग, डॉ. सुरेश आर., केरल विश्वविद्यालय, डॉ. चंद्रशेखर राम, दिल्ली विश्वविद्यालय, डॉ. मारुला सिद्धि पटेल, ए.एस.आई., भारत सरकार, मैसूर, डॉ. जय कुमार, मैसूर विश्वविद्यालय और डॉ. अनन्त पी., मदुरै कामराज विश्वविद्यालय ने भी इस सत्र में अपनी बात की। तीसरे सत्र में प्रोफेसर अमूल्य त्रिपाठी, बहरामपुर विश्वविद्यालय, श्री हरिनाक्षी, एम.एस.डब्ल्यू के संकाय, सामाजिक कार्य विभाग के अध्ययन विभाग, ज्ञान कावेरी, बैंगलोर विश्वविद्यालय के पीजी सेंटर, कोडागु, प्रोफेसर आर.आर. मूर्ति, आंध्र विश्वविद्यालय, डॉ. गुरु पंडिता, मैसूर विश्वविद्यालय, डॉ. मनोज कुमार, कालीकट विश्वविद्यालय, डॉ. रूप कुमारी, दिल्ली विश्वविद्यालय, डॉ. आर.एन. हेगड़े, कर्नाटक एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी, शिवमोगा और डॉ. सुमित झा, पांडिचेरी केंद्रीय विश्वविद्यालय। प्रतिभागियों ने कूर्ग जनजाति के दो नजदीकी गांवों का दौरा किया। सेमिनार के तीसरे और अंतिम दिन, लंच से पहले पांचवें सत्र में डॉ. गोपीनाथ पिल्लई, शांतिगिरी रिसर्च फाउंडेशन, त्रिवेंद्रम, प्रोफेसर शिवानंद, मैसूर विश्वविद्यालय, डॉ. एस.बी.यू. थॉमस, कालीकट

विश्वविद्यालय, डॉ. सुधीर सिंह, द्वारा शोध पत्र प्रस्तुत किया गया। दिल्ली विश्वविद्यालय, डॉ. नम्रता, वेटनरी डॉक्टर, कोडागु जिला, डॉ. आर.एन. केंचराड्डी, यूनिवर्सिटी ऑफ़ एग्रीकल्चर एंड हॉर्टिकल्चरल साइंसेज, शिवमोग्गा, कॉलेज ऑफ फॉरेस्ट्री, पोन्नमपेट, कोडागु, कर्नाटक, डॉ. अप्पाजी गौड़ा, ट्राइबल रिसर्च इंस्टीटयूट, मैसूर, डॉ. रमेश, मंगलौर विश्वविद्यालय और डॉ. सुमित कुमार, पॉन्डिचेरी सेंट्रल यूनिवर्सिटी। प्रोफेसर रजनी जयराम जैन विश्वविद्यालय, बैंगलुरु के डीन द्वारा समापन सत्र की अध्यक्षता की गई। प्रोफेसर सी. बसवराज, कुलपति, मैसूर विश्वविद्यालय, सत्र के मुख्य अतिथि थे। प्रोफेसर जयराम ने जोर देकर कहा कि कूर्ग जनजाति सभी मामलों में अद्वितीय है तथा उनके हितो की रक्षा करना हमारा कर्तव्य है।

9. 23 और 24 जनवरी 2018 को ऑल उड़ीसा फिलॉसॉफिकल एसोसिएशन ने अपना 30वां वार्षिक सम्मेलन रमा देवी विमेंस यूनिवर्सिटी, भुवनेश्वर में आयोजित किया। 23 जनवरी को सम्मेलन का उद्घाटन मुख्य अतिथि प्रोफेसर डॉ. पद्मजा मिश्रा, कुलपति, रमा देवी विमेंस यूनिवर्सिटी,सम्मेलन का उद्घाटन द्वारा किया गया। श्री राबिनारायण दास, भा.प्र.से. (सेवानिवृत्त), माननीय सलाहकार, प्लानिंग बोर्ड ऑफ़ ओडिशा, को अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया। अपने विचार–विमर्श में, उन्होंने हमारे जीवन के हर क्षेत्र में दर्शन की प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। डॉ. सीतांशु कुमार दास, अध्यक्ष, पी.जी. परिषद, रमा देवी विमेंस यूनिवर्सिटी और अध्यक्ष स्वागत समिति ने स्वागत भाषण दिया। प्रोफेसर गणेश प्रसाद दास, कार्यकारी उपाध्यक्ष, ने अतिथियों का स्वागत किया। डॉ. भास्कर चंद्र साहू, महासचिव ने एसोसिएशन की कार्यकलापों पर प्रकाश डाला। प्रोफेसर पी. के. संघ के सलाहकार महापात्र ने विषय पर संक्षिप्त परिचयात्मक भाषण दिया।

इस अवसर पर जर्नल ऑफ एओपीए जारी किया गया था। एसोसिएशन ने प्रोफेसर नीलमणि साहू, डॉ. गयाधर पंडा, डॉ. दुर्गमाधव प्रहाराज, डॉ. दारानी रंजन सतपथी और डॉ. शिव प्रसाद चट्टोपाध्याय को दर्शनशास्त्र में शिक्षण और अनुसंधान में उनके योगदान के लिए 'आजीवन उपलब्धि' से सम्मानित किया।

एसोसिएशन ने दर्शनशास्त्र के बाद के पूर्व–स्नातक और स्नातक छात्रों के बीच दो निबंध प्रतियोगिताओं का आयोजन किया। प्रथम निबंध "प्रागमतीज्म मानवतावाद एंड ह्यूमोनिज्म" पर थे। मुख्य अतिथि प्रोफेसर पद्मजा मिश्रा द्वारा विजेताओं को सर्वश्रेष्ठ निबंध पुरस्कार प्रदान किए गए। प्रोफेसर शरत चंद्र पाणिग्रही, पूर्व प्रोफेसर, उत्कल विश्वविद्यालय ने "लार्ड जगन्नाथ–सिंबल ऑफ़ सिंथेसिस एंड ह्यूमोनिज्म" विषय पर अध्यक्षीय अधिवेशन का व्याख्यान दिया। प्रोफेसर एस.के. मोहंती, एसोसिएशन के कार्यकारी अध्यक्ष ने अपनी अध्यक्षीय भाषण दिया। अंत में, राम

देव विमेंस यूनिवर्सिटी के दर्शन विभाग के प्रमुख बसंत कुमार दास और स्थानीय सचिव ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया।

10. 27 जनवरी 2018 को अपराह्न 3.00 बजे "पीस एंड रेकन्सीलिएशन 2018" विषय पर चेन्नई के एमरल्ड हॉल, एकॉर्ड मेट्रोपॉलिटन होटल में तीसरा वार्षिक सम्मेलन शुरू हुआ। श्री विष्णु मोहन फाउंडेशन के मैनेजिंग ट्रस्टी स्वामी श्री हरिप्रसाद ने सभा में शामिल लोगों का स्वागत किया। श्री मोजो रज़ा, भा.प्र.से., ने शैक्षणिक और धार्मिक क्षेत्रों पर फाउंडेशन के कार्यों के बारे में जानकारी दी। प्रोफेसर एस.आर. भट्ट, अध्यक्ष, भा.दा.अ.प., नई दिल्ली ने सम्मेलन की विषय–वस्तु प्रस्तुत किया। प्रोफेसर भट्ट ने अपने संबोधन में धर्मनिरपेक्षता को परिभाषित करने की आवश्यकता की पुष्टि की जो भारतीय संदर्भ के लिए सबसे उपयुक्त है। इसके बाद सम्मान समारोह के दो अतिथियों श्रीमती क्रोंकंकिट रकरोचेन, महावाणिज्य दूतावास, रॉयल थाई वाणिज्य दूतावास, चेन्नई और श्री अरविंद मेनन, नई दिल्ली द्वारा संबोधित किया गया। अपने विशेष संदेश में, ऑल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के उपाध्यक्ष हज़रत मौलाना डॉ. कल्बे सादिक ने पिछले दो शांति सम्मेलनों के योगदान को याद किया। हाजी सैयद सलमान चिश्ती ने अपने आध्यात्मिक संबोधन में सूफीवाद, विशेष रूप से चिश्ती आंदोलन और भारत में भक्ति पंथ के बीच समानता पर प्रकाश डाला। मुख्य भाषण डॉ. के.एस. राधाकृष्णन, पूर्व अध्यक्ष, केरल पब्लिक सर्विस कमीशन। प्रोफेसर श्रीकला एम. नायर, कला और सामाजिक विज्ञान के डीन संकाय, श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, ने धन्यवाद ज्ञापन किया। फादर (डॉ.) थॉमस मेनम्पारम्बिल ने विदाई भाषण दिया। सम्मेलन में 'पीस कॉन्फ्रेंस रिज़ॉल्यूशन' को भी पढ़ा गया और पारित किया गया। प्रोफेसर अशोक बापना ने मुख्य भाषण दिया और श्री विष्णु मोहन फाउंडेशन के मैनेजिंग ट्रस्टी स्वामी श्रीहरिप्रसाद ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

11. 9 और 10 फरवरी, 2018 को भा.दा.अ.प. द्वारा "ट्रेडिशनल वैल्यू : इट्स इन दी एरा ऑफ़ ग्लोबलाइजेशन विथ स्पेशल रेफेरेन्स टू नार्थ–ईस्ट इंडिया" विषय पर दर्शन विभाग, बी.एन. कॉलेज, धुबरी में दो–दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। डॉ ध्रुबा चक्रवर्ती, प्रिंसिपल, बी.एन. कॉलेज द्वारा उद्घाटन भाषण दिया। श्री मीर सहादत अली, बी.एन. कॉलेज, गवर्निंग बॉडी, संगोष्ठी के मुख्य अतिथि थे। प्रोफेसर नीलिमा शर्मा, पूर्व प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग, गौहाटी विश्वविद्यालय, की मुख्य वक्ता थीं और डॉ. जगदीश पाटगिरी, एसोसिएट प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग, कॉटन विश्वविद्यालय, डॉ. पद्मधर चौधरी, सहायक प्रोफेसर, सी.एस.पी., डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय, डॉ. प्रहलाद बसुमतरी, उप–रजिस्ट्रार, बोडोलैंड विश्वविद्यालय, को इस अवसर पर संगोष्ठी के स्रोत–व्यक्तियों के रूप में सम्मानित किया। उद्घाटन बैठक में

जिले के गणमान्य शिक्षाविद् भी उपस्थित थे। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. ध्रुबा चक्रवर्ती ने विशिष्ट अतिथियों और प्रतिभागियों का स्वागत किया। प्रोफेसर नीलिमा शर्मा, पूर्व प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग, गौहाटी विश्वविद्यालय ने अपने मुख्य भाषण में पारंपरिक और आधुनिक दृष्टिकोण से मूल्य की अवधारणा के बारे में चर्चा की। सत्र का समापन कुमारी नमिता पावगम, सहायक प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग, बी.एन. कॉलेज द्वारा दिए गए धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ। दो दिवसीय कार्यक्रम के दौरान पांच तकनीकी सत्र आयोजित किए गए, जिसमें डॉ. जगदीश पाटगिरी, एसोसिएट प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग, गौहाटी विश्वविद्यालय, डॉ. पद्मदेव चौधरी, जैसे विद्वानों द्वारा मुख्य विषय और उप–विषयों से संबंधित 15 शोधपत्र प्रस्तुत किए गए। असिस्टेंट प्रोफेसर, सी.एस.पी., डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय, डॉ. प्रहलाद बसुमतरी, उप–रजिस्ट्रार, बोडोलैंड विश्वविद्यालय, संदीपा विश्वास, दर्शनशास्त्र विभाग, बिलासिपारा कॉलेज, डॉ. दीपेंद्र कुमार अधिकारी, असम के पूर्व विभागाध्यक्ष, बी.एन. कॉलेज, श्रीमती नबनिता देवी, दर्शनशास्त्र विभाग, बी.एन. कॉलेज, कुमारी नमिता पावगम, दर्शनशास्त्र विभाग, बी.एन. कॉलेज, नाबा पल्लब नेवार, दर्शनशास्त्र विभाग, बरपेटा गर्ल्स कॉलेज, डॉ. मौसमी भट्टाचार्जी, संस्कृत के विभागाध्यक्ष, इप्सिता चक्रवर्ती, दर्शनशास्त्र विभाग, बिलासिपी कॉलेज, यास्मीन नसीम परवीन रिसर्च, अबू जफर अहमद, दर्शनशास्त्र विभाग, ज़ेतराम कॉलेज, अली शेख, दर्शनशास्त्र विभाग, ए.आर. कॉलेज, श्रीमती पल्लबी बोरा, सहायक प्रोफेसर, धुबरी लॉ कॉलेज।

कु. नमिता पावगेम, कु. यास्मीन नसीमा परवीन और नाबा पल्लब नेवार प्रतिवेदकों ने सत्र पूरा होने के बाद अपनी रिपोर्ट पेश की। नबा पल्लब नेवार और कु. यास्मीन नसीमा परवीन ने सेमिनार के विभिन्न तकनीकी सत्रों में तकनीकी सहयोग दिया। समापन सत्र में डॉ. ध्रुबा चक्रवर्ती, प्रिंसिपल, बी.एन. कॉलेज, द्वारा प्रतिभागियों को सर्टिफिकेट वितरित किए गए। संगोष्ठी का समापन कु. यास्मीन नसीमा परवीन के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ।

12. 26 से 28 फरवरी तक जगजीवन राम चेयर, पी.एम.आई.आर. विभाग, पटना विश्वविद्यालय और राजनीति विज्ञान विभाग, पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय द्वारा "मोरालिटी एंड पॉलिटिक्सः दी पर्सपेक्टिव ऑफ़ जयप्रकाश नारायण" पर तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें आधुनिक भारत को आकार देने वाले जयप्रकाश नारायण के योगदान पर विचार–विमर्श हुआ। उद्घाटन कार्यक्रम में प्रोफेसर आर.सी. सिन्हा, पूर्व प्रमुख, पी. जी. दर्शनशास्त्र विभाग, पटना वि.वि. प्रोफेसर रास बिहारी प्रसाद सिंह, पटना विश्वविद्यालय के कुलपति, स्वामी सुखानंद जी, आर.के. मिशन, फादर रॉबर्ट अतिकाल, एस.जे. तरुमित्र और श्री बीरेंद्र कुमार, पूर्व विधायक जैसे अतिथियों का सम्मान किया गया। प्रोफेसर जटा शंकर, अध्यक्ष,

अखिल भारतीय दर्शन परिषद् द्वारा मुख्य भाषण दिया गया था। कार्यक्रम की अध्यक्षता पटना विमेंस कॉलेज की प्रिंसिपल डॉ. सिस्टर मैरी जेसी एसी ने की। प्रोफेसर संजय पासवान, पूर्व केंद्रीय मंत्री, भारत सरकार और संगोष्ठी के समन्वयक ने अपने उद्घाटन भाषण में मुख्य विषय पर केंद्रित किया। उन्होंने कहा कि इस महत्वपूर्ण मोड़ पर व्यक्ति और समाज दोनों के नजरिए और व्यवहार के तौर–तरीकों में बदलाव लाने की कोशिश बहुत जरूरी है, जहां जयप्रकाश नारायण के भ्रष्टाचार मुक्त राजनीति के आदर्श अब अवास्तविक नहीं दिखते। प्रोफेसर जटा शंकर, प्रमुख टिप्पणीकार वक्ता ने राजनीतिक नैतिकता और नैतिकता की अनदेखी करने वाले प्रचलित राजनीतिक परिदृश्य पर प्रकाश डाला। प्रोफेसर आर.सी. सिन्हा, पूर्व प्रमुख, पी.जी. दर्शनशास्त्र विभाग ने राजनीति, नैतिकता और लोकतंत्र के बीच के संबंध पर प्रकाश डाला। प्रोफेसर रास बिहारी प्रसाद सिंह, पटना विश्वविद्यालय के कुलपति, ने भारतीय राजनीति में नैतिकता की गिरावट पर विस्तार से बताया। प्रोफेसर पूनम सिंह, प्रमुख, दर्शनशास्त्र विभाग, पटना यूनवर्सिटी ने विस्तृत सत्र–प्रथम में राजनीति में नैतिकता की प्रासंगिकता के बारे में बताया। विस्तृत सत्र–II में, प्रोफेसर दिलीप मोहंता, कुलपति, संस्कृत विश्वविद्यालय, कोलकाता ने यह कहते हुए सत्र का आरम्भ किया कि दर्शन जीवन के लिए एक समग्र दृष्टिकोण है। यदि नैतिकता को दर्शन से कम किया जाता है, तो अंतिम उत्पाद उपभोक्तावाद और आत्म–केंद्रवाद है। नागपुर विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग के प्रोफेसर निर्मल सिंह ने अपने महत्वपूर्ण भाषण में कहा कि जय प्रकाश नारायण के साथ उनकी आत्मीयता ने उन्हें कई बातें सिखाईं जो आज तक उनका मार्गदर्शन करती हैं। प्रोफेसर बलराम तिवारी, पूर्व प्रमुख, हिंदी के पीजी विभाग, पटना विश्वविद्यालय तकनीकी सत्र–II के अध्यक्ष थे। मुख्य संबोधक श्री कृष्ण कांत ओझा, संपादक, सवातवा द्वारा दिया गया। प्रोफेसर आर.सी. सिन्हा, पूर्व प्रमुख, पटना विश्वविद्यालय के पीजी विभाग, और सदस्य सचिव, भा.दा.अ.प. ने तकनीकी सत्र–III की अध्यक्षता की। प्रोफेसर संगीत रागी, राजनीतिक शास्त्र विभाग, दिल्ली यूनिवर्सिटी, दिल्ली द्वारा मुख्य व्याख्यान दिया गया। 28 फरवरी 2018 को ओपन स्टेज हॉल में विदाई समारोह का आयोजित किया गया। मान्यवर श्री तथागत रॉय, त्रिपुरा के माननीय राज्यपाल समारोह के मुख्य अतिथि थे। अपने संबोधन में उन्होंने नैतिकता और मैकियावेली के बारे में बात की। उन्होंने यह भी कहा कि राजनीति संभव की कला है। विषय के लगभग सभी पहलुओं को शामिल करने के लिए अच्छी संख्या में शोध पत्र प्रस्तुत किए गए थे जो सैद्धांतिक होने के साथ–साथ प्रयुक्त भी थे।

13. 5 से 7 फरवरी 2018 तक "फिलोसॉफी ऑफ़ आचार्य विनोबा भावे" पर तीन दिवसीय भा.दा.अ.प. राष्ट्रीय संगोष्ठी का महात्मा गांधी अंर्तराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा में आयोजन किया गया।

डॉ. गीता मेहता ने संगोष्ठी में शामिल प्रत्येक व्यक्ति का स्वागत करते हुए संगोष्ठी के विषय का वर्णन किया। डॉ. शंभू जोशी संगोष्ठी के समन्वयक थे। उन्होंने प्रोफेसर गिरीश्वर मिश्र, कुलपति, महात्मा गांधी अंर्तराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय और प्रोफेसर एस.आर. भट्ट, अध्यक्ष, भा.दा.अ.प. के संदेशों को भी पढ़ा। श्री बालविजयी ने विनोबाजी के ब्रह्मजिज्ञासा से ब्राह्मनिर्वाण की यात्रा का बहुत अच्छा परिचय दिया। विनोबाजी का संदेश सामयोग है और उन्होंने अपने जीवन काल में इसे किस प्रकार प्राप्त किया। प्रोफेसर रामजी सिंह ने मुख्य भाषण दिया और गांधी तथा विनोबा को निरंतरता के रूप में दिखाया कि गांधी ने खुद कहा था कि अध्यात्म में विनोबा उनसे आगे हैं। विनोबा ने सैद्धांतिक रूप से चर्चा की और दर्शन के तीनों बिंदुओं अर्थात् जीव, जगत और ईश्वर का अभ्यास किया। डॉ शर्मिला वीरकर, मुंबई विश्वविद्यालय ने "स्थितप्रज्ञ एंड विनोबा" विषय पर शोध पत्र प्रस्तुत किया। प्रोफेसर नंद किशोर आचार्य ने "विनोबाः अहिंसा की तत्व–मीमांसा" पर रोशनी डाला। उन्होंने आचार्य विनोबा भावे द्वारा लिखित पुस्तक स्वराज शास्त्र पर महत्व दिया। श्री गौतम बजाज ने विनोबा के आश्रम समकल्पना पर बात की और विनोबा द्वारा शुरू किए गए छह आश्रमों का उद्देश्य समझाया। उन्होंने कहा कि विनोबाजी का पूरा जीवन अहिंसा की खोज में था, इसलिए, भूदान, ग्रामदान से इसका अनुसरण करते हैं। चिपको आंदोलन के लिए काम करने वाली और गंगा को बचाने के मुहिम के लिए उत्तराखंड की सुश्री राधा भट्ट ने विनोबा और महिलाओं के बारे में अपने विचार प्रस्तुत किए। गुजरात विद्यापीठ के पूर्व कुलपति, प्रोफेसर सुदर्शन अयंगर ने विनोबा के शिक्षा के आदर्श के लिए विनोबा के योगदान पर अपने विचार प्रस्तुत किए। प्रोफेसर चंद्रकांत रागित ने "विनोबा भावे को एक आधुनिक संत" के बारे में बात की। उन्होंने "आचार्य विनोबा भावे के जीवन में ज्ञान, कर्म और भक्ति की एकता" के बारे में बात की। ब्रह्म विद्या मंदिर की सुश्री प्रवीना देसाई ने "विनोबा के भगवद् गीता के निष्कासन" पर अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया। डॉ. गीता मेहता ने "विनोबा भावे के मेटाफिजिकल बेसिस ऑफ विनोबा भावेस फिलोसॉफी" पर अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया। प्रोफेसर रोड्रिक चुरेह ने ऋषि खेती और कंचन–मुक्ती (बिना पैसे के रहने वाले) पर अपने विचार प्रस्तुत किए। डॉ. शंभू जोशी ने "विनोबा की श्रम दृष्टि" पर अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया। आमंत्रित शोध विद्वानों द्वारा कुल 24 शोध पत्र प्रस्तुत किए गए और 17 शोध पत्र अन्य विद्वानों द्वारा प्रस्तुत किए गए।

14. 8, 9 और 10 मार्च 2018 तक "फिलोसॉफी ऑफ़ लव इन सूफिज्म एंड भक्ति ऐज रेफ्लेक्टेड इन लिटरेचर" विषय पर भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद द्वारा मलयालम विभाग, मालाबार क्रिश्चियन कॉलेज, कालीकट, केरल में तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। डॉ. के. मुहम्मद बशीर, कुलपति, कालीकट यूनिवर्सिटी द्वारा संगोष्ठी का उद्घाटन किया गया।

उन्होंने सांप्रदायिक सौहार्द, आध्यात्मिक जीवन और धार्मिक सहिष्णुता के साथ भारतीय समाज के पुनर्निर्माण के बारे में संगोष्ठी के महत्व पर रोशनी डाला। डॉ. श्रीजीत, मलयालम के विभागाध्यक्ष, मालाबार क्रिश्चियन कॉलेज द्वारा उद्घाटन सत्र का स्वागत भाषण दिया गया और अध्यक्षता कॉलेज के प्रिंसिपल डॉ गॉडविन सामराज ने की। कालीकट के आदरणीय मनोज विक्टर, बिशप, कालीकट के सी.एस.आई. धर्मप्रदेश ने कहा कि सभी धर्मों ने ईश्वर के प्रति निरपेक्ष प्रेम के रूप में भक्ति में योगदान दिया है और तुलनात्मक धर्म का अध्ययन नैतिकता और विनय के लिए एकीकरण की शक्ति है। डॉ. के.के.एन. कुरुप ने कहा कि भारतीय साहित्य "सूफीवाद और भक्ति की दो धार्मिक शक्तियों" पर आधारित है। प्रोफ़ेसर श्रीकला नायर ने कहा कि दर्शन, संस्कृति और धर्म निर्विवाद कमरा नहीं हैं। तकनीकी सत्र की अध्यक्षता डॉ. के. गोपालकुट्टी, पूर्व विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग, कालीकट विश्वविद्यालय द्वारा किया गया। डॉ. श्रीदेवी, विजिटिंग प्रोफेसर, कलामंडलम ने "कृष्णनट्टम, अष्टापथियट्टम, केरल कृष्णभक्ति कल्ट इन केरला" शीर्षक से अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया। डॉ. नीलकांतन ने "भक्ति – द डिवाइन लव इन नारायणीयम ऑफ मेलपाथुर" और प्रोफेसर ई. इस्माइल ने "असिमिलेशन एंड हाउसिंगः द कंटेंट एंड आइडियोलॉजी ऑफ सूफ़ीज़्म इन नेचर एंड प्रैक्टिस" विषय पर शोध पत्र प्रस्तुत किए। इस सत्र की अध्यक्षता डॉ. श्रीजीत ने की, जिसमें संगोष्ठी के निदेशक डॉ. कुरुप ने युवाओं और शैक्षणिक समाज के बीच संगोष्ठी के विचारों और विचारधारा की निरंतरता के बारे में बताया।

15. 1 से 31 अक्टूबर 2017 तक सेंटर फॉर फेनोमेनोलॉजिकल स्टडीज (सी.पी.एस.) और श्री अरविन्दो सेंटर फॉर एडवांस्ड रिसर्च (एस.ए.आर.सी.), द्वारा "फेनोमेनोलॉजी ऑफ एडमंड हुसेरेल" विषय पर एक महीने की गुरुकुल कार्यशाला का आयोजन एस.ए.आर.सी., पांडिचेरी में किया गया है। 2 अक्टूबर 2017, मंगलवार, को 'दृश्यपंचशास्त्र' पर बुनियादी पाठ्यक्रम (फाउंडेशन कोर्स) का आरम्भ हुआ। आदरणीय माथूवज, सत्यानिलयम, चेन्नई ने स्वागत भाषण दिया। उन्होंने कार्यक्रम की मेजबानी करने वाले एस.ए.आर.सी. की निदेशक प्रोफेसर आनंद रेड्डी का स्वागत किया। अतिथियों में शिवानंद देव, एसोसिएट प्रोफेसर, मनोविज्ञान विभाग, पांडिचेरी विश्वविद्यालय, पांडिचेरी और कार्यक्रम के समन्वयक प्रोफेसर थॉमस शामिल थे। प्रोफेसर थॉमस ने योगाचार्य से भी परिचय कराया जो एक महीने तक चलने वाले कार्यक्रम में प्रतिभागियों को योग की कक्षाएं और योग चिकित्सा सिखाएंगे। उन्होंने प्रतिभागियों को उनके साथ चर्चा करने और पीठ दर्द सहित विभिन्न स्वास्थ्य की समस्यों का इलाज करने के लिए विचार–विमर्श करने का सुझाव दिया। इसका उद्घाटन प्रोफेसर शिवानंद देव, मनोविज्ञान विभाग, पांडिचेरी सेंट्रल यूनिवर्सिटी ने

किया। उन्होंने बताया कि कैसे मनोविज्ञान को आधुनिकतम प्रवृत्ति के रूप में लिया गया है। प्रोफेसर रेड्डी ने गुरुकुल प्रणाली के संबंध में अपना भाषण दिया। डॉ. जेम्स कुरियन द्वारा धन्यवाद ज्ञापन दिया गया।

विदाई सत्र में, एस.ए.आर.सी. कर्मचारी दीपशिखा दीदी ने सत्र की अध्यक्षता की। प्रोफेसर थॉमस और निदेशक, डॉ. आनंद रेड्डी मंच पर उपस्थित थे। दीपशिखा दीदी ने प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान किया। उन्होंने माँ के शिक्षण के बारे में बात करते हुए भाषण दिया। डॉ. रॉबर्ट ने अपनी दीक्षान्त प्रतिक्रिया दी कि फाउंडेशन कोर्स में होना बहुत प्रोत्साहक था, विशेष रूप से श्री अरविंदो इंस्टीट्यूशन की आध्यात्मिक पृष्ठभूमि। डॉ. सी.वी. बाबू ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

16. 27 मार्च 2018 को जयपुरिया इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, जयपुर द्वारा "इंडियन कल्चर एंड सस्टेनेबल डेवलपमेंट फॉर सॉल्विंग ह्यूमन प्रोब्लेम्स" पर भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद के संरक्षण में राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन डॉ. प्रियम जैन, एसोसिएट प्रोफेसर द्वारा आनन्ददायी के साथ शुरू हुआ। स्वागत सम्बोधन जयपुरिया इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, जयपुर की निदेशक डॉ. प्रभा पंकज द्वारा किया गया। स्वामी हरिप्रसाद जी, प्रमुख, श्री विष्णु मोहन फाउंडेशन, चेन्नई ने भारतीय संस्कृति के चार स्तंभों पर जोर दिया जो जीवन को उत्तम दिशा प्रदान करते हैं। इनमें धर्म, अहिंसा, सत्य और साधन की पवित्रता शामिल हैं। संगोष्ठी के विषय का अवलोकन प्रोफेसर अशोक बापना, मानद प्रोफेसर, एम.एन.आई.टी. जयपुर; द्वारा दिया गया। वो संगोष्ठी समन्वयक भी थे। स्वामी पदम प्रकाश ने विवेकानंद के हवाले से कहा, "युवा बेकार नहीं हैं, युवा अपनी शक्ति का कम प्रयोग करते हैं"। स्वामी जी ने आध्यात्मिकता को एक व्यक्तित्व की रचनात्मकता पर बल दिया। पद्म भूषण वी.एस. व्यास, मुख्य अतिथि, ने शास्त्रों और भारतीय संस्कृति द्वारा प्रचारित दो महत्वपूर्ण मूल्यों पर प्रकाश डालाः प्रकृति की वंदना और इच्छा पर नियंत्रण। प्रोफेसर एस.आर. भट्ट, अध्यक्ष, भा.दा.अ.प. ने समग्र विकास, दुनिया के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक पहलुओं के विकास पर जोर देकर अपने संबोधन का आरम्भ किया। संगोष्ठी में भारतीय संस्कृति, दर्शन, अर्थशास्त्र और धर्मों के क्षेत्र के प्रतिष्ठित विद्वानों और विशेषज्ञों की विशिष्ट मण्डली देखी गई। डॉ. देवर्षि कला नाथ शास्त्री (संस्कृत विद्वान), प्रोफेसर दयानंद भार्गव (राष्ट्रीय प्रोफेसर और जाने–माने वैदिक विद्वान), प्रोफेसर सूरज जैकब (अर्थशास्त्री और सीईओ, विद्या भवन सोसाइटी, उदयपुर), डॉ. नारायण हेगड़े (मैनेजिंग ट्रस्टी, नेचर क्योर आश्रम; ट्रस्टी, भारतीय एग्रो इंडस्ट्रीज फाउंडेशन–बीएआईएफ), प्रोफेसर अरुणा गोपीनाथ; अध्यक्ष, ऑल मलेशिया मलयाली एसोसिएशन (ए.एम.एम.ए.) फाउंडेशन), प्रोफेसर के.बी. कोठारी (पूर्व वरिष्ठ सलाहकार, यूनिसेफ और प्रथम राजस्थान के मैनेजिंग ट्रस्टी), कमल सिंह (कार्यकारी निदेशक, यू.एन.

ग्लोबल कॉम्पैक्ट नेटवर्क इंडिया)। संगोष्ठी के तीन दिनों में 12 पूर्ण सत्र थे, जहां 30 शोधपत्र प्रस्तुत किए गए थे। सत्र के अंत में, जयपुरिया प्रबंधन संस्थान, जयपुर के निदेशक डॉ. प्रभात पंकज ने धन्यवाद प्रस्ताव रखा।

17. 24–25 फरवरी 2018 को "वसुधैव कुटुम्बकम" (संपूर्ण विश्व एक परिवार है) विषय पर दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन नई दिल्ली नगर निगम कन्वेंशन सेंटर, नई दिल्ली में आयोजित किया गया था। सम्मेलन का शैक्षिक फाउंडेशन द्वारा आर्यभट्ट कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय के सहयोग से आयोजित किया गया था। 24 फरवरी 2018 को उद्‌घाटन सत्र माननीय कैबिनेट मंत्री सुश्री उमा भारती, पेयजल और स्वच्छता मंत्री, भारत सरकार; प्रोफेसर के. नरबाड़ी, फिजिशियन और सर्जन, अध्यक्ष, शैक्षिक फाउंडेशन; प्रोफेसर जे.पी. सिंहल, अध्यक्ष (ए.वी.आर.एस.एम.) की उपस्थिति में सम्मेलन आयोजित किया गया था। श्री महेंद्र कपूर, संगठन मंत्री, ए.वी.आर.एस.एम. और सम्मेलन के आयोजन सचिव डॉ. मनोज सिन्हा, प्राचार्य, आर्यभट्ट कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय। ए.वी.आर. एस.एम. के अखिल भारतीय अध्यक्ष डॉ. जे.पी. सिंघल ने सभी गणमान्य व्यक्तियों और प्रतिभागियों का स्वागत किया। डॉ. सिंघल ने सुझाव दिया कि निरपेक्षता के दर्शन को अपनाया जाना चाहिए, जिसके लिए सामंजस्य के दर्शन को अपनाना होगा। सहिष्णुता के दर्शन का आश्वासन दिया जाना चाहिए, और संतुष्टि और खुशी की भावना को मानना होगा। उद्‌घाटन सत्र के मुख्य अतिथि माननीय कैबिनेट मंत्री पेयजल और स्वच्छता, सुश्री उमा भारती ने अपने संबोधन में संकेत दिया कि सच्चे वसुधैव कुटुम्बकम के लिए यह महसूस करना होगा कि पूर्व और पश्चिम दोनों के मूल्यों को गले लगाए बिना, सार्वभौमिक परिवार का यह सपना पूरा होगा, एक दूर का भ्रम बना हुआ है। 24 फरवरी 2018 को आयोजित प्लेनरी सत्र में छत्तीसगढ़ राज्य के पूर्व माननीय राज्यपाल, प्रोफेसर शेखर दत्ता थे। सत्र के मुख्य वक्ता प्रोफेसर बलराम सिंह, अमेरिका के डार्टमाउथ में मैसाचुसेट्स विश्वविद्यालय के प्रोफेसर थे। अपने विचार–विमर्श में, प्रोफेसर बलराम सिंह ने कहा कि सूक्ष्म से स्थूल एकता वसुधैव कुटुम्बकम का एक आधार है यदि हम परिवार की देखभाल कर सकते हैं तो ही हम दूसरों के साथ रह सकते हैं।

तकनीकी सत्र –1 में, 24 फरवरी 2018 को, प्रोफेसर सुषमा यादव, सदस्य, यूजीसी, दिल्ली ने कहा कि सभी का कल्याण सभी की चिंता होना चाहिए और इसके लिए राष्ट्र और समाज को स्थापित करना होगा। डॉ. रूपेश चौहान ने वसुधैव कुटुम्बकम को भारतीय संस्कृति की विरासत घोषित किया। उनके विचारों में, उस ब्रह्म का बोध सभी जीवित प्राणियों में वासुधैव कुटुम्बकम रहता है। विदाई भाषण सत्र में, संसद के सदस्य श्री बूपेंद्र यादव ने विशेष संबोधन दिया, और प्रख्यात शिक्षाविद प्रोफेसर अनिरुद्ध देशपांडे ने मुख्य अतिथि का भाषण दिया। उन्होंने दोनों

वैश्विक शांति के महत्व पर प्रकाश डाला और रेखांकित किया कि वैश्विक शांति के बिना समानता स्थापित नहीं की जा सकती। वसुधैव कुटुम्बकम के आधारभूत मूल्य समान हैं। इसलिए यह हम सभी के लिए सुविधा के रूप में कार्य करना है। अंत में, संगोष्ठी के प्रमुख और समन्वयक डॉ. मनोज सिन्हा ने इस आयोजन को प्रायोजित करने के लिए भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद की हृदय से सराहना की।

18. 8 और 9 फरवरी 2018 को भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली ने "फिलोसॉफी ऑफ़ बिपिन चन्द्र पाल" विषय पर, दार्शनिक विभाग, नॉर्थ बंगाल विश्वविद्यालय में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया। राज्य के भीतर सभी विभागों, केंद्रों और संघटक कॉलेजों और अन्य विश्वविद्यालयों को संगोष्ठी के कार्यक्रम में शामिल होने के लिए आमंत्रित किया गया था। कार्यक्रम में लगभग 150 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम की शुरुआत पारंपरिक दीप प्रज्ज्वलन और उद्‌घाटन भाषणों के साथ हुई। प्रोफेसर एस.आर. भट्ट, भा.दा.अ.प., अध्यक्ष, कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। डॉ. अनिर्बान मुखर्जी, विभागाध्यक्ष, द्वारा स्वागत भाषण गया गया। उद्‌घाटन सत्र का समापन डॉ. एन. रामथिंग द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ। पहला शैक्षणिक सत्र की अध्यक्षता प्रो। एस.आर. भट्ट द्वारा किया गया। जादवपुर विश्वविद्यालय के पूर्व प्रोफेसर प्रोफेसर सान्याल ने "बिपिन चंद्र पाल एंड अरबिंदो घोषः वेन दी ट्वेन हेड मेट" शीर्षक से व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने अपने व्याख्यान में भारत के राष्ट्रवादी संघर्ष के बारे में एक नया क्षितिज आरम्भ किया। प्रोफेसर सान्याल के बाद एन.आर. चक्रवर्ती, डीन, कला संकाय, रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय द्वारा "पॉलिटिकल स्वराज एंड बियॉन्डः बिपिन चंद्र पाल इन रिट्रोस्पेक्ट" विषय पर व्याख्यान हुआ। मध्याह्न भोजनावकाश के बाद, दूसरे शैक्षणिक सत्र का आरम्भ हुआ। उस सत्र में दो व्याख्यान प्रस्तुत किए गए थे। प्रोफेसर गीता रमना, प्रमुख, दर्शनशास्त्र विभाग, मुंबई विश्वविद्यालय ने "फिलोसॉफी, ट्रेडिशन एंड कल्चर इन के.सी.बी. (1875–1949) एंड बी.सी.पी. (1858/1932)" विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। इसके अलावा श्रीमती पम्पा रॉय चौधरी, दर्शनशास्त्र विभाग, पी.डी. वीमेंस कॉलेज ने "बिपिन चंद्र पालः फादर ऑफ़ रिवोल्यूशनरी थॉट" शीर्षक से अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। दोनों वक्ताओं ने अपने विचार रखे। संवादात्मक सत्र में, पीएच.डी. विद्वान श्रीमती प्रियंका बसाक और चौथे सेमेस्टर पोस्ट ग्रेजुएट छात्र श्री शुभंकर पोद्‌दार ने अपना पेपर प्रस्तुत किया। 'प्रश्न और उत्तर सत्र' इस सत्र का हिस्सा था।

दूसरे दिन, पहले शैक्षणिक सत्र की शुरुआत प्रोफेसर अमिताभ दासगुप्ता के "रिलिजन ऐज एथिकल प्रैक्टिस : बिपिन चंद्र पाल्स आईडिया ऑफ़ ए नेशनल प्रोजेक्ट" विषय पर शोध पत्र से

आरम्भ हुआ। इसी शैक्षणिक सत्र में प्रोफेसर रघुनाथ घोष की अध्यक्षता में दो और शोधपत्र प्रस्तुत किए गए। शोध पत्र प्रस्तुत करने वाले डॉ. लक्ष्मीकांता पाधी, दर्शनशास्त्र विभाग, एन.बी.यू. और प्रोफेसर द्युतिश चक्रवर्ती, राजनीति विज्ञान विभाग, एन.बी.यू. थे। मध्याह्न भोजनावकाश के बाद, दूसरे शैक्षणिक सत्र का आरम्भ हुआ। उस सत्र में, प्रोफेसर दिलीप महोंतो, दर्शनशास्त्र विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय ने "बिपिन चंद्र पाल ऑन दी मॉडल्स ऑफ़ सिविलाइज़ेशन : हिन्दुइज़्म वर्सेज यूरोपीयन" विषय पर पत्र प्रस्तुत किया। इस सत्र की अध्यक्षता प्रोफेसर अमिताभ दासगुप्ता ने की। प्रोफेसर रघुनाथ घोष के शोध पत्र के साथ सत्र का समापन हुआ। उस सत्र में प्रमाणपत्र वितरित किए गए और सेमिनार समन्वयक, प्रोफेसर रघुनाथ घोष और प्रोफेसर देबिका साहा ने दो दिनों के राष्ट्रीय संगोष्ठी में अपना संपूर्ण प्रभाव छोड़ा। सत्र की अध्यक्षता डॉ. निर्मल कुमार रॉय ने की। सत्र के अंत में, प्रोफेसर देबिका साहा द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव दिया गया।

19. भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद् का 62वॉ वार्षिक अधिवेशन जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर; राजस्थान में दिनांक 13–15 अक्टूबर, 2017 तक सम्पन्न हुआ। जिसमें लगभग भारतवर्ष के विभिन्न भागों से लगभग 350 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस अधिवेशन के अन्तर्गत दो संगोष्ठियों, पांच विभागीय पत्र–वाचन तथा विशिष्ट व्याख्यान के तहत् करीब 150 आलेख पढे गये। इस सारस्वत आयोजन का चिन्तनधारा का विषय 'चरित्र–निर्माण' था। दिनांक 13.10.2017 को 11.30 बजे उद्घाटन सत्र का आयोजन शारदा हाल प्रथम तल पर आयोजन किया गया, जिसमें माननीय विश्व गुरू महामंडलेश्वर परमहंस स्वामी महेश्वरानंद पुरी जी, प्रो. र्धम चन्द जैन, प्रो. जटाशंकर, प्रो. अम्बिकादत्त वर्मा, प्रो. अवतार लाल मीणा एंव 62वां अधिवेशन के सभापति प्रो. आई.एन. सिन्हा द्वारा उपलब्ध कराए गये आलेख का वाचन किया गया। भोजनोपरान्त द्वितीय सत्र का आयोजन शारदा हांल, प्रथम तल पर आयोजित किया गया जिसका विषय 'पूर्णवाद् और वेदान्त परम्परा' में डॉ. शैलेश कुमार सिंह, डां. राम बहादुर शुक्ल, डां. सुजीत कुमार पाण्डेय, डां. हरिदत त्रिपाठी, डॉ. शरद पारलकर, डॉ. सत्यनारायण अबोती, डॉ. अम्बिकादत शर्मा ने अपना–अपना आलेख प्रस्तुत किया। वही संगोष्ठी का दूसरा विषय 'नारीवादः प्राच्य एवं पाश्चात्य' मूंदडा पूंगलिया हाल, में 3.30 बजे से प्रारंभ हुआ। इस संगोष्ठी की अध्यक्षता प्रो. रामजी सिंह ने की। इस विषय पर डॉ. सुधा चौधरी , डॉ. शोभादेश पाण्डेय, डॉ. शिवनंदन झा, डॉ. शिवपरसन सिंह, डॉ. अनिता ने अपना शोधालेख प्रस्तुत कियां संध्या 5.30 बजे से धनराज राठी हांल में कार्यकारिणी की बैठक सम्पन्न हुआं। दिनांक 14.10.2017 को प्रातः 10 बजे से पांचों विभागों एंव अधिवेशन की चिंतनधारा चरित्र निर्माण पर समानान्तर सत्रों में आलेख वाचन प्रारंभ हुआ। तर्कशास्त्र और ज्ञान मीमांसा विभाग की अध्यक्षता डॉ. भरत कुमार तिवारी, नीती दर्शन विभाग

की अध्यक्षता डॉ. राज कुमारी सिन्हा, धर्म मीमांसा विभाग की अध्यक्षता डॉ. मुरली मनोहर पाठक, तत्वमीमांसा विभाग की अध्यक्षता डॉ. श्रीप्रकाश पाण्डेय, समाज दर्शन विभाग की अध्यक्षता डॉ. बी.एन.ओझा, चरित्र निर्माण विभाग की अध्यक्षता डॉ. चन्द्रशेखर के कुशल नेतृत्व में सम्पन्न हुआ। उक्त सभी विभागों में अत्यन्त रोचक एवं गंभीर आलेख प्रस्तुत किये गये। दो समानान्तर सत्रों में संध्या 3.00 बजे से व्याख्यानमालाओं का आयोजन किया गया, जिसमें डॉ. रमाशंकर श्रीवास्तव तुलनात्मक धर्म विज्ञान व्याख्यान, स्व. चम्पादेवी व्याख्यान, प्रो. सगंमलाल पाण्डेय स्मृति व्याख्यान, स्वामी प्रणवानंद तुलनात्मक दर्शन व्याख्यान, महर्षि दयानन्द व्याखयान स्वामी नारायण सेश्वर वेदांत व्याख्यान, प्रो. पाण्डेय ब्रहोश्वर विद्यार्थी स्मृति व्याख्यान एंव अंबालाल मूलजी भाई पटेल सर्वागीण जीवन विज्ञान दर्शन व्याख्यान का आयोजन किया गया। दिनांक 15.10.2017 को दर्शन एंव भ्रमण का कार्यक्रम प्रातः 7.45 बजे से प्रारंभ हुआ तथा स्वामी महेश्वरानंद पुरी जी के आश्रम जाडन, पाली में ज्ञान संसद का आयोजन 11.00 बजे से प्रारंभ हुआ। वही 2.00 बजे से समापन सत्र का भी आयोजन किया किया, जिसमें विभिन्न पुरस्कार की घोषणा करते हुए उत्कृष्ट आलेखों के प्रस्तोताओं को पुरस्कृत भी किया गया। तीन दिनों तक चलने वाले इस ज्ञानयज्ञ में विद्वत् जनों ने अपना–अपना योगदान दिया, सभी ने विभिन्न सत्रों में विचार–मंथन किया, इसके लिए परिषद् की ओर से मंत्री डॉ. श्यामल किशोर ने धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अधिवेशन की एक सबसे बडी विशेषता यह रही कि इसमें विभिन्न शोध–पत्रों पर अच्छा विमर्श हुआ। बहरहाल, समापन सत्र में विचार–मंथन से निकले कुछ चुने हुए उत्कृष्ट आलेखों को पुरस्कृत किया गया।

6. परियोजनाओं

इस योजना के अंतर्गतए भा.दा.अ.प. ने परियोजनाओं के लिए अपने प्रस्तावों में संस्थानों और व्यक्तिगत विद्वानों को योग्यता के आधार पर वित्तीय अनुदान प्रदान करता हैए जिन्हें पूरे वर्ष आमंत्रित किया जाता है। हर चौथे महीने पर मूल्यांकन के लिए प्रस्ताव रखे गए हैं। अंतिम अनुमोदन के लिए मूल्यांकन रिपोर्ट को अनुसंधान परियोजना समिति (आरपीसी) में रखा जाता है और फिर अनुदान ग्राही को वित्तीय अनुदान प्रदान किया जाता है ताकि परियोजनाओं को आगे बढ़ाया जा सके। कभी–कभी, प्रस्तावों का आरपीसी द्वारा सीधे मूल्यांकन भी किया जाता है। कुछ मामलों में, यदि सक्षम निकाय उसी को मंजूरी देता है, भा.दा.अ.प. कुछ विशिष्ट परियोजनाओं को भी लागू करता है। परियोजनाओं की पांडुलिपियों को मूल्यांकन के लिए और बाद में संभावित प्रकाशन के लिए भी रखा जाता है।

निम्नलिखित परियोजनाओं को 2017—18 में वित्तीय सहायता दी गईः

क्र. सं.	नाम	शीर्षक	राशि (लाख रु. में)
1.	मनीष कुमार झा	इंजीनियरिंग एजुकेशनः एन एक्सप्लोरेटरी स्टडी	1.0
2.	डॉ. अनुपम यादव	एपिस्टेमोलॉजी रीविसिटेड : पोस्टमॉडर्न डिस्कोर्सेज, अल्टरनेटिव फॉर्म्स ऑफ़ कॉग्निशन एंड इंटरडिस्पलीनरिटी ऑफ़ नॉलेज	2.0
3.	डॉ. शुद्धातम प्रकाश जैन	आराधना समुच्चय रिटेन बाय मुनि रविचंद्र	1.0
4.	डॉ. मिथन दास	सोशल जस्टिस : ए कम्पेरेटिव एनालिसिस ऑफ़ अम्बेडकर एंड जॉन रॉल्स	1.70
5.	श्रीमती सोनू कपिला	एथिक्स इन गुरु नानक्स बानी : रेलेवंस इन प्रेजेंट टाइम	2.0
6.	प्रोफेसर गुलाम मुस्तफा ख्वाजा	दी कांसेप्ट ऑफ़ बॉंडेज एंड लिबरेशन इन कश्मीर सैवीज़म एंड शैव सिद्धांतः ए कम्पेरेटिव एनालिटिकल स्टडी	3.0
7.	डॉ. शारदा नैन	गांधी, अंबेडकर एंड दी इश्यू ऑफ़ दलित्स इन मॉडर्न इंडिया	2.0
8.	डॉ. राधा आर. शर्मा	ए स्टडी ऑफ़ अन्सिएंट कॉन्सेप्ट्स, फेट्स एंड स्पिरिचुअल ट्रेडिशन्स एंड देयर एप्लीकेशन इन मैनेजमेंट	5.0

निम्नलिखित परियोजनाओं को 2016—17 से जारी रखा गया थाः

क्र.सं.	नाम	शिर्षक
1.	डॉ. राधेश्याम मिश्र	व्याकरणवेदांत—भीमतम् विमर्षः
2.	डॉ. कुहेली विश्वास	ऑन दा वर्क ऑफ आचार्य ब्रजेन्द्र नाथ सील इन दा लाईट ऑफ फिलोसॉफी एंड मेथेमेटिक्स
3.	डॉ. नरेश कुमार अंबष्ठ	संथाल कल्चर एंड रिलिजन
4.	डॉ. वीरनारायण	कन्नड़ ट्रांसलेशन ऑफ अद्वेता सिद्धी
5.	डॉ. सुमी वासुदेवन	द चैंजिंग कल्चरल लैंडस्केप ऑफ द ट्राइबल सेटलमेंट्स इन द वे एंड अट्टापैडीः ए फिलोसोफिकल इंक्वायरी

6.	डॉ. संगीता मेनन	बियोन्ड कैजुअल स्ट्रक्चर्सः कॉन्शियसनेस एंड सेल्फ रिफ्लेक्शन इन कश्मीर सैविज़्म
7.	डॉ के.एस. कन्नन	द फिलॉसफी ऑफ आनंद कोमारस्वामी
8.	प्रो समानी कुसुमप्रज्ञा	पञ्चकपाभाष्य हस्तप्रवृत्तियाँः सम्पादन एवं अनुवाद
9.	डॉ. आदित्य गुप्ता	अद्वैत, धर्मा एंड नेशनल पोलिटिकल डिसकोर्स
10.	डॉ. सुरभि वर्मा	ए स्टडी रिलेटिंग कोनशियसनेस एंड स्प्रीच्यूअल इनटेलीजेंस विद स्पेशल रेफरेंस टू कश्मीर सेविज्म
11.	डॉ. बी. संदीप बालकृष्ण	डॉ. डी.वी. गुंडप्पास लाईफ एंड लिगेसी ऐज ए फिलोस्फर
12.	डॉ. सुधा चौधरी	अंडरस्टेडींग ट्राइबल लाईफः सम फिलोसॉफिकल डाइमेंशन्स
13.	समणी शशि प्रजाना	दृष्टांत कोश
14.	प्रो. हरिश्चंद्र मिश्र	भक्तिभूमि काव्य में दर्शन की लोकनविति
15.	समणी हिम प्रजना	हिंदी ट्रांसलेशन ऑफ 4 संस्कृत कमेंट्रीज ऑफ आचार्यदेव
16.	डॉ. सुरेंद्र सिंह पोखराना	ए कंपेरेटिव स्टडी ऑफ कंसेप्ट ऑफ कोनशीयसनस इन साइंस एंड जैन फिलोसॉफी
17.	डॉ. मेरिना इस्लाम	ए फ्रैश लुक इनटू एकसरना नाम धर्ना, शंकरदेव एंड द सोशल रोल ऑफ नीओ वैष्णोनीज्म इन आसाम
18.	डॉ. अर्जुन भारद्वाज	ए कंपेरेटिव स्टडी ऑफ दी गवर्नींग फिलोसफीज अंडरलेईग एंशियंट इंडियन एंड ग्रीक थिऐटर्स विद स्पेशल रेफरेंस टू भारता एंड एरिसटोटिक
19.	डॉ. योगेश कुमार जैन	पुराण कोश ऑफ मेडिवल टाईम्स
20.	प्रोफेसर कांतिलाल दास	विट्गेन्स्टाइन आन रिलिजियस एंड रिलिजियस एक्सपीरियंस
21.	डॉ कुलदीप कुमार धीमान	त्रिकसाना इन शिवगामा : दि फिलोसॉफी ऑफ उपायास

परियोजनाएं – पिछले वर्षों से जारी

क्र.स.	नाम	शीर्षक	अवधि
1.	डॉ. गीता मनकतला	थ्योरी एंड मीनिंग : ए कम्पेरेटिव स्टडी ऑफ़ विट्गेन्स्टाइन एंड नागार्जुन	
2.	सुश्री डॉली जैन	महाभारत में वर्णित विविध गीताओं का दार्शनिक अध्ययन	
3.	डॉ. वनलालतनपुपिया	वर्किंग दी मेटाफिजिक्स ऑफ़ कॉन्सिसियसनेस्सः ए नई एंट्री इनटू दी परदिगं ऑफ़ बीइंग इन हीडिगेरियन ओन्टोलॉजिकल फेनोमेनोलॉजी	
4.	डॉ मंजरी चक्रवर्ती	दी इपिस्टेमिक करैक्टर ऑफ़ मटेरियल कल्चर	
5.	अरूप ज्योति सरमा	कांटस मोरल फेथ, एन.इआर.	
6.	डॉ. सरिता कार	एथिकल लीडरशिपः ए स्टडी ऑफ़ मैकइंटायर एंड लेविनस	
7.	रेखा ओझा	अल्टरनेटिव टू इम्प्रैसोंमेंट इन इंडियाः एन एथिकल पर्सपेक्टिव	
8.	डॉ. झाडेश्वर घोष	क्लाइमेट चेंज एंड डिजास्टर मैनेजमेंट : फिलोसोफिकल अप्प्रोअचेस	
9	डॉ. शिवशंकर मिश्र	1. महर्षि अगस्त्य विरचित 'अगस्त्य संहिता' हिंदी भाषानुवाद	
		2. दी एटॉमिक साइंस इन इंडियन फिलोसॉफी	
10.	डॉ. रोशन आरा	रोल ऑफ़ एस्थेटिक्स इन सूफ़ी पर्शियन त्रादितिं विथ स्पेशल रिफरेन्स टू सैय्यद हुस्सैन नज़र	
11.	डॉ. नवीन कुमार श्रीवास्तव	ए कम्पेरेटिव स्टडी ऑफ़ जैन योग ऐज डिपिक्टेड इन योगदास्ती–समुच्चय एंड ज्ञानार्णव	
12.	डॉ. राणा पुरुषोत्तम	फिलॉसॉफिकल एंड साइंसेटिफिक मॉडल्स ऑफ़ अंडरस्टैंडिंग कॉन्सिसियसनेस्स बेस्ड ऑन सूक्त–पताका	
13.	डॉ. राहुल कुमार सिंह	अनेकान्तवाद प्रवेश	

7. भा.दा.अ.प. अध्येता की बैठक और ओरिएंटेशन (दिशानिर्देश) कार्यक्रम

भा.दा.अ.प. अध्येता की 'बैठक और दिशानिर्देश कार्यक्रम, भा.दा.अ.प. के अध्येताओं को वरिष्ठ विद्वानों और प्रसिद्ध संसाधन व्यक्तियों को एक–दूसरे के साथ परिचर्चा करने का मौका देता है, जिन विषयों पर वे काम कर रहे थे। कार्यक्रम में विशेषज्ञों द्वारा दिशानिर्देश व्याख्यान और उनके साथ परामर्श शामिल हैं। इसके अलावा, वर्तमान अध्येताओं को अपने शोध कार्य के बारे में अपने अनुभव और कठिनाइयों के बारे में साझा करने और प्रतिक्रिया प्राप्त करने का अवसर मिलता है।

2017–18 में, भा.दा.अ.प. अध्येता की बैठक 13–14 नवम्बर 2017 में आयोजित किया गया था और 6–7 मार्च 2018 में भा.दा.अ.प. दिशानिर्देश कार्यक्रम का आयोजित किया गया था। दोनों कार्यक्रम गुरुशरणानंद आश्रम, रमन रेती, मथुरा (यूपी) में आयोजित किए गए थे।। लगभग 44 और 46 अध्येताओं ने क्रमशः भा.दा.अ.प. अध्येता की बैठक और ओरिएंटेशन (दिशानिर्देश) कार्यक्रम में भाग लिया।

प्रोफेसर जटाशंकर, प्रोफेसर आर. सी. सिन्हा, प्रोफेसर डी.एन. यादव, प्रोफेसर एक्स पी माओ, प्रोफेसर समानी चैतन्य प्रज्ञा, प्रोफेसर मंगला चिंचोर, प्रोफेसर डॉ. अरुण मिश्रा के साथ–साथ प्रोफेसर एस.आर. भट्ट, अध्यक्ष, भा.दा.अ.प. और प्रोफेसर रजनीश कुमार शुक्ला, सदस्य सचिव, भा.दा.अ.प. उपस्थित होकर कार्यक्रम में अध्येताओं का मार्गदर्शन किया।

निम्नलिखित भा.दा.अ.प. अध्येता की 'बैठक कार्यक्रम' में भाग लिया और अपने शोध के विषय पर अपनी प्रस्तुति दीः

श्रेणी	नाम	विषय	अध्येता
सामान्य	आभा त्रिपाठी	मानव मूल्य के सन्दर्भ में वैज्ञानिक दृष्टिकोण : एक दार्शनिक गवेषणा	जेआरएफ
अ.पि.वर्ग	सरोज यादव	मनुष्य की नियति एवं स्वतंत्रता की असितत्ववादी अवधारणा : एक आलोचनात्मक अध्ययन	जेआरएफ
सामान्य	पानू शर्मा	वेदांत फिलोसॉफी ऑफ़ नारायण गुरु एंड इट्स रेलेवंस टू कंटेम्पररी सोसाइटी	जेआरएफ
सामान्य	गुरप्रीत कौर	एन एपिस्टेमोलॉजिकल स्टडी ऑफ़ शब्द प्रमाण विथ स्पेशल रेफरन्स टू पूर्व–मीमांसा न्याय स्कूल ऑफ थॉट	जेआरएफ
सामान्य	बरुण कुमार चौबे	महात्मा गाँधी के नैतिक दर्शन का एक समीक्षात्मक अध्ययन	जेआरएफ

सामान्य	मन्शा पांडे	नागार्जुन एवं शंकराचार्य के दर्शन में संवृत्ति की अवधारणा : एक तुलनात्मक अध्ययन	जेआरएफ
सामान्य	राकेश एस.	मैटर–स्पिरिट इंटीग्रलिटी इन श्री अरबिंदोस इंटीग्रल योग	जेआरएफ
सामान्य	शील कमल चौरसिया	एन एनालसिस ऑफ़ द कॉन्सेप्ट ऑफ़ 'डिटाच्मेंट' इन इंडियन एंड वेस्टर्न फिलोसॉफी	जेआरएफ
अ.जा.	मंजू वर्मा	संत रैदास के धार्मिक–सामाजिक दर्शन का समीक्षात्मक अनुशीलन	जेआरएफ
सामान्य	शगुफ्ता जाफरी	सोशल फिलोसॉफी ऑफ़ संतकबीरः ए क्रिटिकल स्टडी	जेआरएफ
अ.जा.	विजय कुमार	बौद्ध धर्म के विकास में डॉ अम्बेडकर का योगदान	जेआरएफ
अ.पि.वर्ग	कल्पना बेहरा	ए स्टडी ऑफ़ श्री रामायणा कवीस वेदांत संग्रहा	जेआरएफ
सामान्य	आरिफ़ा आरा बेगम	द एथिक्स ऑफ़ कांट्स एंड द टीचिंग ऑफ़ द भगवदगीता– ए कम्पेरेटिव स्टडी	जेआरएफ
अ.पि.वर्ग	चंद्र किशोर	काश्मीरशैवदर्शनस्य साम्प्रदायपरम्परापरिशीलनम्	जेआरएफ
अ.पि.वर्ग	तेजराम पाल	गांधी दर्शन के समदर्शी नीतीशास्त्र के एकादश आधार (एक समीक्षात्मक अध्ययन)	जेआरएफ
अजा.	रमेश धीरावथ	17टीन्थ सेंचुरी थ्योरीज ऑफ़ सब्सटेंस : दोस ऑफ़ डिस्काट्र्स, स्पिनोज़ा एंड लिबनिज़ः ए कम्पेरेटिव मेटाफिज़िकल एप्रोच	जेआरएफ
अ.पि.वर्ग	पूजा	गण्डव्यूहसूत्रस्य समीक्षात्मकमध्ययनम्	जेआरएफ
अ.पि.वर्ग	पानो कुमारी	वेदांतदर्शन में परमसत्ता का विचार (शंकर, रामानुज, मध्व, निम्बार्क एवं वल्लभ के दर्शन के विशेष सन्दर्भ में)	जेआरएफ
अ.पि.वर्ग	ज़ोया निगार	द प्लेस ऑफ़ रीज़न एंड रेवेलेसशन इन इस्लामिक फिलोसॉफी	जेआरएफ
अ.पि.वर्ग	रविशंकर कुमार	वैदिक एवं समकालीन अध्यात्मवादः एक समीक्षात्मक अध्ययन	जेआरएफ
अ.पि.वर्ग	अंजलि बर्मन	स्वामी विवेकानंद महात्मा गांधी एवं सर्वपल्ली राधाकृष्ण के धर्म विषयक चिंतन की वर्तमान समस्यों के परिप्रेक्ष्य प्रासंगिता	जेआरएफ
अ.पि.वर्ग	वर्षा चौरसिया	स्वामी योगानंद का दर्शन––एक अनुशीलन	जेआरएफ
अ.पि.वर्ग	अवधेश कुमार	कबीरपंथ के विकास में पारख मार्ग की भूमिका	जेआरएफ
सामान्य	जान मोहम्मद लोन	कांसेप्ट ऑफ़ गॉड एंड वर्ल्ड इन रामानुज एंड सिरहिंदी : ए कम्पेरेटिव स्टडी	जेआरएफ

सामान्य	प्रेम लता	*विश्वेश्वरकृतायाः अष्टावक्रगीताटीकायाः अध्यात्मप्रदीपिकायाः पाठसमीक्षात्मकं सम्पादनं दार्शनिकमध्ययनच्च*	जेआरएफ
सामान्य	शशिकांत मिश्रा	हिन्दस्वराज के सन्दर्भ में सामाजिक–राजनीतिक परिवर्तनों का समीक्षात्मक अध्ययन	जेआरएफ
सामान्य	दीपक कुमार पांडे	दिनकार्याः गुणनिरुपणस्य समीक्षणम्	जेआरएफ
सामान्य	सुरिंदर कुमार शर्मा	विज्ञान भिक्षुकृत योगवार्तिक का समीक्षात्मक अध्ययन	जेआरएफ
सामान्य	श्रद्धा कुमारी	महायान की साधना पद्धत्ति : एक दार्शनिक अध्ययन	जेआरएफ
सामान्य	नवनीत शर्मा	योगसाधनोपायो का सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक परिशीलन (पातञ्जल योगसूत्र के विशिष्ट सन्दर्भ में)	जेआरएफ
सामान्य	अंजना ई.पी.	एनवायर्नमेंटल एथिक्सः इंटरप्रेटिवे प्रॉस्पेक्ट्स ऑफ़ सांख्य योग एंड बुद्धिज़्म	जेआरएफ
अ.पि.वर्ग	सरला साहू	दी टेन्डेन्सी ऑफ़ सिंथेसिस बिटवीन मटेरिअलिस्म एंड स्पिरीचुअलिजिस्म इन दी कंटेम्पररी इंडियन थॉट विथ रिफरेन्स टू श्री अरविंद एंड ओशो : ए कम्पेरेटिव स्टडी	जेआरएफ
अ.पि.वर्ग	रेशमा ई.के.	मशीन इंटेलिजेंस एंड द नेचर ऑफ कॉन्शियसनेसः एन एनालिटिक स्टडी	जेआरएफ
सामान्य	जय शंकर सिंह	आधुनिक सन्दर्भ 'में तंत्र दर्शन की मीमांसा'	जी.एफ.
सामान्य	जयंत उपाध्याय	भारतीय दर्शन में वाक्यार्थ प्रविधि	जी.एफ.
सामान्य	सत्य नारायण देवलिया	पुरुषार्थ व्यवस्था एवं उसका समसामयिक औचित्य	जी.एफ.
सामान्य	ईश्वर सिंह	मानव कांसेप्ट ऑफ़ ह्यूमन नेचर एंड फिलोसोफिकल ऑफ़ एजुकेशन : ए स्टडी विथ स्पेशल रेफरन्स टू अरबिंदो, कृष्णमूर्ति एंड टैगोर	जी.एफ.
सामान्य	राजीव कुमार सरावगी	इंटीग्रल ह्यूमन फिलोसॅफी : मॉडर्न सरकमस्टान्सेस एंड साइंटिफिक रिसर्च बोर्न इन पर्सपेक्टिव ऑफ़ दी वर्ल्डव्यू	जी.एफ.
अ.पि.वर्ग	जहीरा खातुन	आधुनिक शिक्षा पाठ्यकर्मो में नैतिक मूल्यों का स्वरुप, महत्व एवं अपेक्षित परिणाममूलक चुनौतियां तथा समाधान	जी.एफ.
अ.पि.वर्ग	अकन्या पद्मजा	इथिकल वैल्यूज ऑफ़ भगवद गीता एंड देअर रेलेवंस टू कंटेम्पररी सोसाइटी	जी.एफ.

अ.जा	मौसमी सोलंकी	मानवकल्याण के लिए धर्म एवं पर्यावरण	जी.एफ.
अ.जा.	शालिग्राम अहिरबार	आधुनिक भारतीय चिंतन में नव्यवेदान्त : एक समालोचनात्मक अध्ययन (विवेकानंद एवं रामतीर्थ के विशेष सन्दर्भ में	जी.एफ.

8. प्रकाशन

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद् की प्रमुख गतिविधियों में दर्शनशास्त्र विषयक प्रकाशन है। भा.दा.अ.प. अपनी परियोजनाओं, फैलोशिप, सेमिनार और कार्यशालाओं से तैयार पांडुलिपियों को अपनी अनुसंधान परियोजना समिति द्वारा प्रकाशन के लिए अनुमोदित करवाता है। भा.दा.अ.प. ने अपने प्रकाशन कार्यक्रम के अंतर्गत, ज्ञान श्रृंखला के प्रसार को पुनःप्रचलित किया है और इसी के अंतर्गत एक मोनोग्राफ प्रकाशित किया गया हैः

भा.दा.अ.प. ज्ञान श्रृंखला का प्रसार :

1 ''इंडियन स्पिरिचुअलिटी थ्योरी एंड प्रेक्टिस'', प्रोफेसर एस.आर. भट्ट, द्वारा आई.एस.बी.एन. – 978–81–89963–08–8

प्रकाशित होने वाले शीर्षक

1. "गंगेश एंड इंडक्शन इन नव्य न्याय", एच.ई. श्री जन लुयक्स द्वारा – आईएसबीएन 978–81–89963–17–6
2. "न्याय शास्त्रा प्रमाण – लक्षण : स्वरुप एवम् परिस्कार", डॉ. अरुण मिश्रा द्वारा – आईएसबीएन 978–81–89963–15–6
3. "इंटीग्रल ह्यूमनिज्म ऑफ़ पं. दीन दयाल उपाध्याय", प्रोफेसर अशोक मोदक द्वारा – आईएसबीएन 978–81–89963–16–6

(II) आठ वर्षों से अधिक की भा.दा.अ.प. के अंतर्गत सेवा के दौरान डॉ. सुशीम दुबे, भा.दा.अ.प. के कार्यक्रम अधिकारी, द्वारा "ए सर्वे ऑन स्टडी एंड रिसर्च इन फिलोसॉफी इन इंडिया" नामक पांच खंडों की श्रृंखला को प्रकाशन के लिए तैयार किया जिसे 83वीं शोध परियोजना समिति ने प्रकाशन की भी मंजूरी दी।

1. हिस्ट्री, डेवलपमेंट एंड स्टेटस ऑफ़ फिलोसॉफी इन इंडियन यूनिवर्सिटीज, आईएसबीएन 978–81–89963–10–1

2. डॉक्टोरल रिसर्च इन इंडियन यूनिवर्सिटीज, आईएसबीएन 978–81–89963–11–8
3. इंडियन कौंसिल ऑफ़ फिलॉसॉफिकल रिसर्च – हिस्ट्री एंड वर्क्स आईएसबीएन 978–81–89963–12–5
4. सिंथेसिस ऑफ़ जे.आई.सी.पी.आर. (जर्नल ऑफ़ इंडियन कउंसिल ऑफ़ फिलॉसफिकल रिसर्च) – आईएसबीएन 978–81–89963–13–2
5. टीचर्स एंड स्कॉलर्स – इन्क्लूडिंग अब्रॉड इन इंडियन फिलोसॉफी – आईएसबीएन 978–81–89963–14–9

(C) जर्नल ऑफ इंडियन काउंसिल ऑफ फिलोसोफिकल रिसर्च

रिपोर्ट के तहत I ने वर्ष के दौरान भा.दा.अ.प. ने जर्नल ऑफ इंडियन फिलॉसफी रिसर्च को प्रकाशित करना जारी रखा। प्रकाशित खण्ड निम्लिखित हैं

1. जे.आई.सी.पी.आर. खण्ड 34, संख्या 1 (जनवरी से अप्रैल 2017)
2. जे.आई.सी.पी.आर. खण्ड 34, संख्या 2 (मई से अगस्त 2017)
3. जे.आई.सी.पी.आर. खण्ड 34, संख्या 3 (सितंबर से दिसंबर 2017)

9. भा.दा.अ.प. स्थापना दिवस समारोह

7–8 मार्च 2018 को 'भा.दा.अ.प. स्थापना दिवस व्याख्यान कार्यक्रम' का आयोजित किया गया था। दस्तावेज के अनुसार, भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद का गठन 8 मार्च 1977 को सोसायटी पंजीकरण अधिनियम XXI के तहत पंजीकरण के साथ हुआ। भा.दा.अ.प. स्थापना दिवस व्याख्यान कार्यक्रम का आयोजन 7 मार्च 2018 को श्री उदासीन कार्ष्णि आश्रम, रमणरेति, मथुरा में और 8 मार्च 2018 को दिल्ली कार्यालय में किया गया।

इस उत्सव से पहले, जिसमें 4 – 5 मार्च 2018 को "आनंद मीमांसा" कार्यक्रम की एक श्रृंखला आयोजित की गई थी, पर राष्ट्रीय संगोष्ठी, 6 मार्च 2018 को भा.दा.अ.प. फेलो ओरिएंटेशन कार्यक्रम शामिल थे। ये कार्यक्रम श्री उदासीन कर्णी आश्रम, रमन रेती, मथुरा में आयोजित किए गए थे। भा.दा.अ.प. स्थापना दिवस का उद्घाटन कार्यक्रम भा.दा.अ.प. फैलो (जूनियर रिसर्च फेलो, जनरल फेलो, सीनियर फेलो) और भा.दा.अ.प. के सदस्यों के बीच आयोजित किया गया था, जिसमें "आनंद मीमांसा"

पर संगोष्ठी के प्रतिभागियों को आमंत्रित किया।

प्रोफेसर बृज बिहारी कुमार, अध्यक्ष, भा.सा.वि.अ.प. और प्रोफेसर अरविंद पी. जामखेडकर, अध्यक्ष, भारतीय इतिहासिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली को स्थापना दिवस व्याख्यान देने के लिए विशेष अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था। प्रोफेसर एस.आर. भट्ट ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की और यह पहला अवसर था कि तीनों परिषदों के अध्यक्षों ने इस अवसर को मनाने के लिए एक साथ कार्यक्रम में भाग लिया।

स्थापना दिवस व्याख्यान कार्यक्रम सुबह 11:00 बजे से कर्ष्णी आश्रम के सम्मेलन कक्ष में दीप प्रज्वलित करने के साथ शुरू हुआ। भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद के सदस्य सचिव प्रोफेसर रजनीश कुमार शुक्ला ने स्वागत भाषण दिया। उन्होंने भा.दा.अ.प. के उद्देश्य और उद्देश्यों के अनुसार उच्च शिक्षा में भारतीय दार्शनिक अनुसंधान, इसकी स्थापना और दर्शनशास्त्र को महत्वपूर्ण बनाने में इसकी भूमिका पर प्रकाश डाला। डॉ. मर्सी हेलेन, निदेशक (प्रकाशन और शोध) ने भा.दा.अ.प. की स्थापना की दिशा में एक तथ्यात्मक विवरण दिया, क्योंकि हमारे देश में मुख्य रूप से भारतीय दर्शन के प्राचीन गौरव के संरक्षण के लिए एक संगठन की स्थापना की गई थी।

प्रोफेसर ब्रज बिहारी कुमार, अध्यक्ष, भा.सा.वि.अ.प. ने 'स्थापना दिवस व्याख्यान' दिया। उन्होंने समाज, दर्शन और सामाजिक विज्ञान की प्रभावशाली भूमिका के बारे में और दर्शन के साथ सहानुभूति वाले बिंदुओं पर इस बैठक में प्रकाश डाला। प्रोफेसर अरविंद पी. जामखेडकर ने प्राचीन दर्शन और संस्कृत पर बात की जो भारतीय संस्कृति का आधार है और अन्य विषयों में इसका पता लगाया जा सकता है। उन्होंने सांख्य दर्शन की पुरानीता और अन्य प्रणालियों पर इसके ऐतिहासिक प्रभाव के बारे में बात की। प्रोफेसर एस.आर.भट्ट ने अपने अध्यक्षीय भाषण में फिलॉसफी के महत्वपूर्ण पहलुओं और भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद के कार्यों के बारे में विस्तार से बताया।

10. भा.दा.अ.प. विजिटिंग प्रोफ़ेसरों (विदेशी) के व्याख्यान

प्रमुख दार्शनिकों के हालिया विचारों के साथ–साथ उनके साथ बातचीत के अवसर प्रदान करने के लिए भारतीय विद्वानों को परिचित कराने के उद्देश्य से, प्रत्येक वर्ष भा.दा.अ.प. भारत और विदेशों के प्रोफेसरों और प्रख्यात विद्वानों द्वारा राष्ट्रीय व्याख्यान आयोजित करता है। इस योजना के तहत, प्रत्येक आमंत्रित विद्वान भारत में कम से कम तीन से चार अलग–अलग विश्वविद्यालयों में तीन व्याख्यान की श्रृंखला की प्रस्तुति करता है। निम्नलिखित आने वाले प्रोफेसरों ने विभिन्न स्थानों में व्याख्यान दिए:

विजिटिंग प्रोफेसर (विदेशी):

1. प्रोफेसर जेन लियू; सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ़ तिब्बतन स्टडीज, सारनाथ, वाराणसी, बीएचयू, वाराणसी; दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; मगध विश्वविद्यालय, बोधगया; पुणे विश्वविद्यालय, पुणे में

2017/18 के लिए विजिटिंग प्रोफेसर (विदेशी) के व्याख्यान कार्यक्रम का विवरण

क्र. सं.	व्याख्याता का नाम	विश्वविद्यालय का नाम	व्याख्याता का शीर्षक	तारीख	भुगतान की राशि
1.	प्रोफेसर झेन लियू (प्रवासी)	प्रोफेसर अताशी चटर्जी नी सिन्हा, प्रमुख, दर्शनशास्त्र विभाग, जादवपुर विश्वविद्यालय, कोलकाता–700032		26–28 अक्टूबर 2017	35,000
2.	– वही –	प्रो. बी.आर. यादव, प्रमुख, दर्शनशास्त्र विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया–824234	द मैत्रेयवक्रन (इन सातक फॉर्म) एविडेंस फॉर कल्चरल एक्सचेंज बिटवीन चीन एंड इंडिया	31 अक्टूबर 2017	35,000
3.	– वही –	प्रोफेसर गेशे न्वांग सैमटेन, कुलपति, सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ़ तिब्बतन स्टडीज, सारनाथ, वाराणसी–221 007		1–5 नवंबर 2017	35,000
4.	– वही –	प्रोफेसर बालगणपति देवरकोंडा, दर्शनशास्त्र के प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली– 110 007	द मैत्रेयवक्रन (इन सातक फॉर्म) एविडेंस फॉर कल्चरल एक्सचेंज बिटवीन चीन एंड इंडिया	7 नवंबर, 2017	35,000
5.	– वही –	प्रोफेसर रवींद्र अंबादास मुले, संस्कृत में प्रोफेसर, सेंटर ऑफ एडवांस्ड स्टडी इन संस्कृत, पुणे विश्वविद्यालय, गणेश खिन्दा, पुणे–411 007	हस्तिका कस्येसूत्रा एन अर्ली महायाना टेक्स्ट	13 नवंबर 2017	35,000
6.	– वही –	डॉ. कृपा शंकर, प्रोफेसर और प्रमुख, दर्शनशास्त्र और धर्म विभाग, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी–221 005	सम रेफ्लेक्शंस ऑन एन अर्ली महायाना टेक्स्ट, हस्तिकाकस्यासूत्रा	3 नवंबर 2017	35,000
7.	– वही –	प्रोफेसर बिन्दू पुरी, अध्यक्ष, दर्शनशास्त्र केंद्र, स्कूल ऑफ			

सोशल साइंसेज, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली–110 067	सम रेफ्लेक्शंस ऑन एन अर्ली महायाना टेक्स्ट, हस्तिकाकस्यासूत्रा	8 नवंबर 2017	35,000

शैक्षिक कार्यक्रम का संक्षिप्त विवरण

1. 31 अक्टूबर 2017 को प्रोफेसर लियू जेन, फुदान विश्वविद्यालय, चीन द्वारा "दी मैत्रेयवक्रन (इन सातक फॉर्म) एविडेंस फॉर कल्चरल एक्सचेंज बिटवीन चीन एंड इंडिया" विषय पर दर्शनशास्त्र विभाग, म्यू, बोध गया में व्याख्यान का आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रोफेसर कुमर अहसान, कुलपति, एम.यू. बोध गया द्वारा किया गया और विभिन्न विभागों के संकाय सदस्य, शिक्षाविदों, अनुसंधान विद्वानों, दर्शनशास्त्र सहित विभिन्न विभागों के छात्रों और कुछ अन्य सामाजिक कार्यकर्ताओं तथा प्रतिनिधि के शिक्षाविदों, जो 200 से अधिक भागीदार थे, की सहभागिता रही।

2. 7 नवंबर 2017 को प्रोफेसर लियू जेन, नेशनल फॉर एडवांस्ड हुमनिस्टिक स्टडीज, निदेशक गांधी केंद्र, फुदान विश्वविद्यालय, शंघाई, चीन द्वारा व्याख्यान कार्यक्रम का दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली में आयोजित किया गया। व्याख्यान का विषय " दी मैत्रेय व्याकरण (इन सातक फॉर्म) एविडेंस फॉर कल्चरल एक्सचेंज बिटवीन चीन एंड इंडिया"। प्रोफ़ेसर लियू ने अपनी बात की शुरुआत करते हुए कहा कि मैत्रेय व्याकरण 'मैत्रेय' की आकृति के विषय में बौद्ध साक्षरता परंपरा के भीतर विचरण के अंतिम चरण का प्रतिनिधित्व करता है। अपने व्याख्यान में प्रोफेसर लियू ने "स्वर्ग (तुसित) में पुनर्जन्म के सूत्र" पर चर्चा की। यह सूत्र बोधिसत्व मैत्रेय के पुनर्जन्म के बुद्ध द्वारा तुसिता स्वर्ग में पुनर्जन्म का उपदेश देता है। उन्होंने कहा कि जबकि यह सूत्र एक लोकप्रिय दान / व्रतानुष्ठित वस्तु है, यह उचित भी है कि मैत्रेयवयाकरण को एक चीनी भिक्षु के नाम से लिखा गया है। इसमें केवल गैर–महायान तत्व हैं लेकिन इन्हें हीनयान सूत्र के रूप में वर्गीकृत किया गया है। उनके अनुसार, चीनी बौद्धों ने इसे महायान खंड में पुनर्वर्गीकृत करने का प्रयास किया। इस आनंददायक व्याख्यान के बाद एक संवादात्मक सत्र था जहां दर्शकों ने उत्साह से भाग लिया। सत्र का समापन प्रोफेसर बालगणपति देवरकोंडा द्वारा उनके भाषण और दर्शकों को धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ।

3. सेंटर फॉर फिलॉसफी, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली ने केंद्र में आयोजित एक वार्षिक आमंत्रित व्याख्यान की मेजबानी की। व्याख्यान प्रोफेसर लियू जेन, फुदान विश्वविद्यालय,

शंघाई, चीन से आए विजिटिंग प्रोफेसर (विदेशी) भा.दा.अ.प. द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव द्वारा दिया गया था। 8 नवंबर 2017 को "सम रेफ्लेक्शंस ऑन एन अर्ली महायाना टेक्स्ट, हस्तिकाक्षसूत्र" विषय पर सेंटर फॉर फिलॉसफी के समिति कक्ष में व्याख्यान दिया गया। व्याख्यान की अध्यक्षता सेंटर फॉर फिलॉसफी के अध्यक्ष प्रोफेसर बिंदू पुरी ने की। व्याख्यान में बड़ी संख्या में छात्रों तथा केंद्र के संकाय सदस्यों और दिल्ली के अन्य संस्थानों (जैसे दर्शनशास्त्र विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय और दर्शनशास्त्र के वरिष्ठ सेवानिवृत्त प्रोफेसर) से आमंत्रित मेहमानों ने शिरक़त किया। प्रोफ़ेसर जेन लियू ने "हस्तिकाक्षसूत्र" पर चर्चा की जिसका अंग्रेजी में अर्थ है "हाथी के बगल पर सूत्र"। विद्वान ने "हस्तिकाक्षसूत्र" के एक नए प्रकाशित संस्कृत अंश का अनुवाद और चर्चा करने का प्रयास किया तथा इसकी चीनी और तिब्बती अनुवादों से तुलना की। व्याख्यान के दौरान वक्ता ने चार भाषाओं में इस सूत्र के पांच संस्करणों की जांच की। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि विभिन्न अनुवादों में, हाथी की शक्ति का रूपक पाठ का प्राथमिक केंद्र बना रहा। यह रूपक इस पाठ की शक्ति और भावुक प्राणियों द्वारा प्राप्त की जाने वाली शक्ति दोनों को इंगित करने के लिए था, जो इस पाठ को समझ सकते थे। व्याख्यान के बाद विचार–विमर्श और दिलचस्प चर्चा हुई।

4. भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद और दर्शनशास्त्र विभाग, सावित्रीबाई फुले विश्वविद्यालय, पुणे के सहयोग से, भा.दा.अ.प. विजिटिंग प्रोफेसर (विदेशी) व्याख्यान कार्यक्रम का आयोजन किया। प्रोफेसर जेन लियू, फुदान विश्वविद्यालय, सेंटर फॉर गांधीयन एंड इंडियन स्टडीज, शंघाई, चीन ने 13 नवंबर 2017 को भा.दा.अ.प. विजिटिंग प्रोफेसर के रूप में अपना व्याख्यान दिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रोफेसर महेश अशोक देवकरपाली, विभागाध्यक्ष, पाली विभाग द्वारा और संयोजन डॉ. मोहित टंडन, दार्शनिक विभाग, पुणे यूनिवर्सिटी द्वारा किया गया।। कार्यक्रम का स्थान बार्लिंगे सेमिनार हॉल, दर्शन विभाग, अम्बेडकर भवन, एस.पी.पी.यू. था। प्रोफ़ेसर जेन ने हस्तिसिकसूत्र के नए प्रकाशित संस्कृत अंश का अनुवाद और अनुवाद करने का प्रयास किया तथा इसकी चीनी और तिब्बती अनुवादों से तुलना की। चीनी और तिब्बती संस्करणों के विश्लेषण में, उनके शोधपत्र को ने सुझाव दिया कि इस पाठ की सामग्री और संरचना महायान सूत्र के प्रारंभिक विकास पर कुछ प्रकाश डालती है। व्याख्यान के बाद, शिक्षाविद्ों ने दर्शनशास्त्र के लिए संस्कृत के महत्व के बारे में महत्वपूर्ण चर्चा किया। साथ ही कुछ विद्वानों ने बौद्ध धर्म की शब्दावली के बारे में बताया। सत्र अत्यधिक जानकारीपूर्ण और दिलचस्प था।

5. 1 जून 2017 को "एनुअल विजिटिंग प्रोफेसर (इंडियन) ऑफ़ आई.सी.पी.आर." योजना के तहत प्रोफेसर रवि गो मतम, निदेशक, सिमेंटिक इनफार्मेशन और टेक्नोलॉजी, बर्कले, ने मद्रास

विश्वविद्यालय, चेन्नई के दर्शनशास्त्र विभाग में दो व्याख्यान दिए। प्रोफेसर जी. मिश्रा ने वक्ता का परिचय दिया और विषयों की रूपरेखा के बारे में बात की।

11. भा.दा.अ.प. विजिटिंग प्रोफ़ेसरों (भारतीय) के व्याख्यान

क्र. सं.	व्याख्याता का नाम	विश्वविद्यालय का नाम	व्याख्याता का शीर्षक	तिथि	भुगतान की राशि
8.	प्रोफेसर शकुंतला बोरा (भारतीय)	डॉ. निर्मल कुमार रॉय, प्रमुख, दर्शनशास्त्र विभाग, नोर्थ बंगाल यूनिवर्सिटी, राजा राममोहनपुर, दार्जिलिंग–734 013	धर्म : एन एनालिसिस इन मोक्षधर्म	8 नवंबर 2017	35,000
9.	– वही –	प्रो. सुरनामी इंदिरा, एसोसिएट प्रोफेसर, प्रमुख, दर्शनशास्त्र विभाग, पॉन्डिचेरी विश्वविद्यालय, पुडूचेरी–605 014	फिलोसॉफी ऑफ भगवदगीता	28 जनवरी 2018	35,000
10.	– वही –	डॉ. एस. वेंकटेश, अध्यक्ष, अध्ययन विभाग, दर्शनशास्त्र, मैसूर विश्वविद्यालय, मानसा गंगोत्री, मैसूर–570 006,	कर्नाटक फिलॉसॉफी ऑन ऑफ जिद्दु कृष्णमूर्ति	26 मार्च 2018	35,000
11.	– वही –	प्रोफेसर अंबिका दत्त शर्मा भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, 3/9, विपुल खंड, गोमती नगर, लखनऊ–226 001	गाँधी, मार्क्स एंड हीडगर द क्रिटिक ऑफ़ मॉडर्न सिविलाइज़ेशन	6 दिसंबर 2017	35,000
12.	– वही –	प्रोफेसर राम नाथ झा, प्रमुख, स्पेशल सेंटर फॉर संस्कृत स्टडीज, जे.एन.यू., नई दिल्ली–110 0		17 अगस्त 2017	35,000
13.	– वही –	प्रोफेसर ऋषि कान्त पांडे, प्रमुख, दर्शनशास्त्र विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद–211 002, यू.पी.	ए कंटेम्परारी डिस्कोर्स ऑन 2017 इररेदुसिबले फॉर्म्स ऑफ़ अद्वैतिक फिलोसॉफी	सितंबर 2017	35,000

अन्य

क्र. सं.	व्याख्याता का नाम	विश्वविद्यालय का नाम	व्याख्याता का शीर्षक	तारीख	भुगतान की राशि
14.	प्रोफेसर हिरोसिह मारुई (विदेश)	प्रोफेसर बालगणपति देवरकोंडा, दर्शनशास्त्र के प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली–110 007	डिड जयंत भट्ट नो दी सिक्स सिस्टम ऑफ़ इंडियन फिलोसॉफी ?	11 नवंबर 2017	10,000
15.	मैडम लूशी गस्ट	डॉ. पूजा व्यास, निदेशक (अकादमिक), भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, 3/9, विपुल खंड, गोमती नगर, लखनऊ–226 001	(योग विषयक राष्ट्रीय कार्यशाला –– सामंजस्य तथा शांति के लिए योग योग फॉर हार्मनी एंड पीस	21 जून 2017	25,000

शैक्षिक कार्यक्रम का संक्षिप्त विवरण

1. 8 नवंबर 2017 को दर्शनशास्त्र विभाग, नोर्थ बंगाल यूनिवर्सिटी ने "फिलॉसफी ऑफ महाभारत (मोक्षधर्म)" विषय पर भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित विशेष व्याख्यान का आयोजन किया। व्याख्यान कार्यक्रम में दर्शन विभाग के सौ से अधिक छात्रों, विद्वानों और शिक्षकों को एकत्रित किया गया। वक्ता गुवाहाटी विश्वविद्यालय, दर्शन के वार्षिक दर्शन प्रोफेसर (भारतीय), प्रोफेसर शकुंतला बोरा, दर्शनशास्त्र विभाग गुआहाटी यूनिवर्सिटी, एनुअल विजिटिंग प्रोफेसर (भारतीय), भा.दा.अ.प., नई दिल्ली, वक्ता थे। व्याख्यान का विषय "धर्म : एन एनालिसिस इन मोक्षधर्म" था। विद्वान वक्ता ने 'महाभारत का धर्म क्या माना जाता है' की समीक्षात्मक रूप से विश्लेषण किया। उन्होंने यह कहकर व्याख्यान का समापन किया कि धर्म को सदाचार के रूप में समझा जा सकता है जब तक कोई बेहतर शब्द इसे बदलने के लिए आगे नहीं आता है।

2. 28 नवंबर 2017 को भा.दा.अ.प., नई दिल्ली द्वारा दर्शन विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय में व्याख्यान का आयोजन किया गया था। प्रोफेसर हिरोशी मारुई, इंडियन फिलोसॉफी एंड स्टडीज बुद्धिस्ट विभाग, स्कूल ऑफ़ हुमानिटीज़ एंड सोशियोलॉजी, यूनिवर्सिटी ऑफ़ टोक्यो, जापान द्वारा डिड भट्टा जयंत नो दी सिक्स सिस्टम्स ऑफ़ इंडियन फिलोसॉफी?" विषय पर व्याख्यान दिया गया था। मारुई ने प्रश्न किया की 'क्या 9वीं शताब्दी से संबंधित विद्वान भट्ट जयंत को भारतीय दर्शनशास्त्र

की छह प्रणालियों का ज्ञान था?' इस सवाल में उनकी पूरी बात की उत्पत्ति पर झूठ बोला गया था, क्योंकि प्रोफेसर मारुई भारतीय दर्शन शास्त्र के छह वैदिक प्रणालियों के विपरीत करना चाहते थे, अर्थात्, न्याय, वैशेषिका, सांख्य, योग, मीमांसा और वेदांत, जिन्हें छह साधनाओं के कई अन्य समूहों के साथ षड्द में जाना जाता है। वैदिक प्रणालियों (जो कि न्याय, वैशेषिका, सांख्य, और कभी–कभी मीमांसा) और अवेदिक प्रणाली (बौद्ध दर्शन, जैन दर्शन और चार्वाक–दर्शन) के संयोजन से युक्त विभिन्न ग्रंथ भी हैं। अपने शोध पत्र के माध्यम से, उन्होंने न्याय भारतीय विचारों की प्रणाली के परिवार–स्थापित सार्वलौकिक महत्त्व को चुनौती देने का प्रयास किया जो पुराने समय से मौजूद हैं। व्याख्यान के बाद, परिचर्चा का सत्र जिसमें, अपनी दर्शकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इसके बाद प्रोफेसर एस.आर. भट्ट ने व्याख्यान पर अपनी प्रतिक्रिया दी। सत्र का समापन प्रोफेसर बालगणपति देवरकोंडा के भाषण और दर्शकों को धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ।

12. विश्व दर्शन दिवस

यूनेस्को ने सुकरात के जन्मदिन को मनाने के लिए नवंबर के तीसरे सप्ताह के बृहस्पतिवार को "अंतर्राष्ट्रीय दर्शन दिवस" घोषित किया। फलस्वरूप, भा.दा.अ.प. ने व्याख्यान कार्यक्रम या संगोष्ठी या पैनल चर्चा या किसी अन्य कार्यक्रम का आयोजन करके "अंतर्राष्ट्रीय दर्शन दिवस" को मनाने के लिए सभी दर्शन विभागों को परिपत्र भेजा। 2017–18 के दौरान, निम्नलिखित संस्थानों ने भा.दा.अ.प. से 20,000 रुपये की वित्तीय सहायता के साथ पूरे दिन का कार्यक्रम मनाया।

चयन के लिए चुने गए प्रस्ताव
विश्व दर्शन दिवस, 2017

क्र. स.	नाम और पता	विषय	दिनांक
1.	डॉ. अरुपज्योति चौधरी, डीन अकादमिक, दर्शनशास्त्र विभाग, स्कूल ऑफ सोशल साइंसिस, कृष्णकांत हंदिक्यू स्टेट ओपन यूनीवर्सिटी, हाउसफेड कॉम्प्लेक्स, दिसपुर, लास्ट गेट, गुवाहाटी–781 006	*फिलॉसोफ़फिज़िंग ऑन दी एनवायरनमेंट* प्रोफेसर सौरवप्राण गोस्वामी द्वारा	29 दिसंबर 2017

2. एन. श्रीधर, सहायक प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, एस.सी.एस.वी.एम.वी. विश्वविद्यालय, एनाथुर, कांचीपुरम, तमिलनाडु–631561 1.	*वेदांतसार* डॉ. मणि द्रविड़ शास्त्री द्वारा *सांख्यकारिका* डॉ. के.इ. धरनीधरण द्वारा	31 जनवरी 2018
3. डॉ. जे. जयमनिकाय शास्त्री, एसोसिएट प्रोफेसर, न्याय दर्शन विभाग, श्री जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, श्री विकास, पुरी–752003	*दीपिकायाँ हेत्वाभा सलक्षणविवेक*– प्रोफेसर कमलेश मिश्र द्वारा	13 मार्च 2018
4. डॉ. दयमोय माजी, टी.आई.सी. और दर्शनशास्त्र के सहायक प्रोफेसर, बांकुरा विश्वविद्यालय, मुख्य परिसर (एन.एच.–60 के पास), बांकुरा ब्लॉक – II, पो.: पुरंदरपुर, जिलाः बांकुड़ा– 722155	*फिलोसॉफी ऑफ़ लैंग्वेज : इंडियन एंड वेस्टर्न* विषय पर राज्य स्तरीय संगोष्ठी 1. *इंडियन फिलोसॉफी ऑफ़ लैंग्वेज* – प्रोफेसर प्रद्योत कुमार मंडल 2. *रिलीजियस लैंग्वेज इन दी वेस्टर्न फिलोसोफिकल पर्सपेक्टिव* –प्रोफेसर सिराजुल इस्लाम 3. *वेस्टर्न फिलोसॉफी ऑफ़ लैंग्वेज* – डॉ. तफजोल हुसैन 4. *न्याय थ्योरी ऑफ़ लैंग्वेज* – डॉ. दीपनयन पट्टनायक	15 जनवरी 2018
5. डॉ. ज्योत्सना साहा, दर्शन विभाग, गौर बंग विश्वविद्यालय पोस्ट : मकदुमपुर, जिलाः मालदा – 732103	*फिलोसॉफी ऑफ़ मैन एंड एनवायरनमेंट* पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी। 1. *कैन मन जो बियॉन्ड अन्थ्रोपोसेंट्रिस्म? : ए डिस्कोर्स फ्रॉम इंडियन फिलोसोफिकल पर्सपेक्टिव्स ऑन एनवायरनमेंट* – प्रोफेसर उमा चट्टोपाध्याय द्वारा व्याख्यान। 2. *मन एंड एनवायरनमेंटः दी स्पिरिट एंगल* – प्रोफेसर सिबनाथ सरमा द्वारा	19 दिसंबर 2017
6. डॉ. पतितपावन दास, दर्शनशास्त्र विभाग, रेनशॉ विश्वविद्यालय, कटक – 753 003, ओडिशा	*मैन एंड एनवायरनमेंटः ए स्टडी इन दी लाइट ऑफ बुद्धिस्ट एथिक्स* – डॉ. तपन कुमार डे द्वारा	30 जनवरी 2018
7. डॉ. पी. बालाचंद्रन, एसोसिएट प्रोफेसर और अध्यक्ष, स्कूल ऑफ़ फिलोसॉफी, तमिल विश्वविद्यालय,	1. *फिलोसॉफी ऑफ़ मैन एंड एनवायरनमेंट* पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी (i) *फिलोसॉफी ऑफ़ मन एंड एनवायरनमेंट* – डॉ एस. राजेंद्रन द्वारा	

तंजावुर – 613010 तमिलनाडु	ii) *फिलोसॉफी ऑफ़ तमिल सिद्धास* – डॉ. टी.एन. गणपति द्वारा	7 फरवरी 2018
8. डॉ. नमिता निम्बालकर, सह–प्राध्यापक, दर्शन विभाग, मुंबई विश्वविद्यालय, जनेश्वर भवन, प्रथम तल विद्यानगरी परिसर, सांताक्रूज़ (पूर्व) मुंबई–400098	"कम्परिंग दी ट्रडिशन्स ऑफ़ श्री वैष्णविज़्म एंड वल्लभ वेदांत" विषय पर एक दिन की संगोष्ठी	1 दिसंबर 2019
9. डॉ. दीपायन पट्टनायक, एसोसिएट प्रोफेसर और सुश्री रुबाई साहा, सहायक प्रोफेसर, दर्शन शास्त्र विभाग, जादवपुर विश्वविद्यालय, दर्शन भवन, कोलकात्ता – 700032, पश्चिम बंगाल	*कम्परेटिव एंड क्रिटिकल स्टडी ऑफ़ दी फिलोसोफिकल सिस्टम्स* विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी 1. *क्रिटिकल रिफ्लेक्शन ऑन दी फिलोसॉफी ऑफ़ प्रोफेसर प्रणब कुमार सेन* – प्रोफेसर निर्माल्य नारायण चक्रबोर्ती द्वारा 2. *दी कांसेप्ट ऑफ़ चैतन्या इन न्याया फिलोसॉफी* – प्रोफेसर श्रीलेखा दत्ता	18 नवंबर 2018
10. श्री आशीष आर. सांगले सहायक प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग अम्बेडकर भवन, सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, गणेश खिंड रोड, पुणे–411007	*अन्सिएंट इंडियन पोलिटिकल थॉट्स इन अर्थशास्त्र* प्रोफेसर सुभदा जोशी द्वारा	5 फरवरी 2018
11. डॉ. ई. रवि कुमार सहायक प्रोफेसर और शैव सिद्धांत दर्शन शास्त्र विभाग के अध्यक्ष, मदुरै कामराज विश्वविद्यालय, मदुरै – 625021, तमिलनाडु	*ह्यूमन वैल्यूज एंड प्रोफेशनल एथिक्स* विषय पर संगोष्ठी 1. *ह्यूमन वैल्यूज* डॉ. एस. शेशुराजा द्वारा 2. *मेडिकल एथिक्स* डॉ. अरुल अरासौ द्वारा 3. *एथिक्स ऑफ़ टीचर्स* – डॉ. सी. प्रेमकुमार द्वारा	23 मार्च 2018
12. प्रोफेसर बिंदू पुरी चेयरपर्सन, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय स्कूल ऑफ़ सोशल साइंसेज, सेंटर फॉर फिलोसॉफी जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली–110067		1 मार्च ब
13. डॉ. राधिका मोहन पाठक, सहायक प्रोफेसर,	1. *वर्ल्ड फिलोसॉफी : नेचर एंड डेवलपमेंट*	6 मार्च

एन.एम.यू. का प्रताप सेंटर ऑफ फिलॉसफी, अमलनेर, जिलाः जलगाँव – 425 401, महराष्ट्र	– डॉ. ए.एन. माली द्वारा 2. *संत साहित्य द्वारा शिक्षण–कलाची गरज* –डॉ. सौ. अनुराधा सुधीर कुलकर्णी 3. *सध्यायी शिक्षण पद्धति कुलकामी ठरत आहे का.* – सौ. हेमलता जगन्नाथनवेट 4. *जीवन मुलयापासून विद्यार्थी* दूर जात *आहेत काय* –कमर शंकरराव सोनवणे 5. *वर्तमान शिक्षण पद्धति कुचकामी ठरत आहे का* –पूजा राजकोली	2018
14. डॉ. सिबी के. जॉर्ज, एसोसिएट प्रोफेसर, डिपार्टमेंट ऑफ़ हुमानिटीज़ एंड सोशल साइंसेज (एचएस एस), इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी बॉम्बे, पवई, मुंबई 400 076, महाराष्ट्र	विषय : फिलॉसॉफी एंड एवेरीडेनेस्स 1. *फेमिनिस्ट आर्ट एंड द एवेरी डे : रथिंकिंग दी पॉलिटिकल* – डॉ. कंचना महादेवन द्वारा 2. *लिविंग लाइफ केयर – फुल्ली रेकॉगनाईजेशन सरकंस्पेक्शन, बेनेडिक्शन* – डॉ. केथ डिसूजा द्वारा	17 नवंबर 2017
15. प्रोफेसर कंचन सक्सेना, अध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ–226 007	*सेल्फ रेस्पेक्ट ऐज ए बेसिक मार्क ऑफ़* मॉरेलिटी – प्रोफेसर आर.आर. वर्मा द्वारा	15 नवंबर 2017
16. प्रोफेसर प्रदीप कुमार, अध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला–147 002, पंजाब	*रेलेवंस एंड सिग्नीफिकेन्स ऑफ़ एवरीडे लाइफ* – प्रोफेसर सत्या पी. गौतम	16 नवंबर 2017
17. डॉ. भूपेंद्र चंद्र दास, प्रोफेसर, दर्शन शास्त्र विभाग और दी लाइफ–वर्ल्ड, विद्यासागर विश्वविद्यालय, मिदनापुर, पुलिस थाना–कोतवाली, पश्चिम मेदिनीपुर, पश्चिम बंगाल – 771102	*फिलॉसॉफी,साइंस एंड टेक्नोलॉजी* विषय पर राज्य स्तरीय संगोष्ठी 1. *फिलॉसॉफी,साइंस एंड टेक्नोलॉजी* – प्रोफेसर एन.एन. चक्रवर्ती द्वारा 2. *दी फिलॉसॉफी ऑफ़ साइंस"* – प्रोफेसर द्वारा ए.के. मिश्रा द्वारा	21 दिसंबर 2017
18. डॉ. कुहेली विश्वास, सहायक प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग, कल्याणी विश्वविद्यालय,	*थेओरिएस ऑफ़ ट्रूथ एंड नॉलेज* विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी	27 फरवरी, 2018

कल्याणी, जिलाः नादिया–741 235	1. *लैंग्वेज, कॉग्निशन, वर्ल्ड एंड मीनिंगः सम प्रोब्लेम्स* – प्रोफेसर प्रोबल कुमार सेन द्वारा 2. *ए प्ली फॉर फिलॉसॉफी* – प्रोफेसर गोपाल चंद्र खान द्वारा	
19. डॉ. भिखारी राम यादव, अध्यक्ष, पी.जी. दर्शनशास्त्र विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया–824234	विषय : *वर्तमान चुनौतियां एवं सांस्कृतिक मूल्य*	31 मार्च 2018
20. डॉ. निर्मल कुमार रॉय अध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग यूनिवर्सिटी ऑफ़ नार्थ बंगाल, उत्तर बंगाल विश्वविद्यालय राजा राममोहनपुर, जिलाः दार्जिलिंग, पश्चिम बंगाल – 734013	*दी थ्योरीज़ ऑफ़ ट्रूथ एंड नॉलेज : ए स्टडी इन लिंकेजस* – प्रोफेसर मंजुलिका घोष द्वारा	16 नवंबर 2017
21. प्रोफेसर अनिल कुमार तिवारी सहायक प्रोफ़ेसर दर्शन और संस्कृति विभाग श्री माता वैष्णो देवी विश्वविद्यालय, कटरा, जम्मू और कश्मीर–182320	1. *बेसिक वैल्यूज एम्बोडिएड इन इंडियन कल्चर एंड दियर रेलेवंस टू नेशनल रिकंस्ट्रक्शन* – डॉ. अनिल कुमार तिवारी द्वारा 2. *सोशल कल्चरल इश्यूज एंड देयर रेलेवंस टू नेशनल रेनोवेशन* – डॉ. रवि कुमार द्वारा 3. *द ग्रामर ऑफ़ सेक्युलारिसिंग* – डॉ. अनिल कुमार तिवारी द्वारा 4. *कॉम्परीजन एंड पीसफुल को–एक्सिस्टेंस* – ए. बर्नस्टेइन द्वारा 5. *ह्यूमन राइट्स* – डॉ. सुमंत शर्मा द्वारा	14 दिसंबर 2017
22. प्रोफेसर केदार नाथ शर्मा संस्कृत विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू	1. *बेसिक वैल्यूज इन इंडियन कल्चर टू नेशनल रिकंस्ट्रक्शन* – डॉ. अनिल तिवारी द्वारा	16 नवंबर 2017

1. 16 नवंबर 2017 को 'विश्व दर्शन दिवस' के उपलक्ष्य में दर्शनशास्त्र विभाग, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला ने विश्वविद्यालय के सीनेट हॉल में पर विशेष व्याख्यान का आयोजन करके कार्यक्रम

को उत्साह के साथ मनाया। व्याख्यान का विषय "रेलेवंस एंड सिग्नीफिकेन्स ऑफ़ फिलोसॉफी ऑफ़ एवेरीडे लाइफ" था। समारोह में मुख्य वक्ता प्रोफेसर सत्यपाल गौतम, पूर्व कुलपति, ज्योतिबा फुले रोहिलखंड विश्वविद्यालय, बरेली (यूपी) थे। दर्शनशास्त्र विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. जतिंदर कुमार ने दर्शकों के साथ-साथ मंच पर मौजूद गणमान्य लोगों का स्वागत किया। प्रोफेसर गुरदीप सिंह बत्रा, डीन रिसर्च, पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला ने समारोह की अध्यक्षता की। मुख्य वक्ता प्रोफेसर गौतम ने कहा, "दर्शन प्रत्यक्ष रूप से साफ-सुधरा काम करता है। यह विभिन्न विचारों या विचारों की वैचारिक अनुसंधान से संबंधित है जो कथन और तर्क के माध्यम से जीवन में अर्थ खोजने के लिए होता है जो कि साहित्य का क्षेत्र है।" डॉ. जी.एस. बत्रा, डीन रिसर्च, ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कहा कि दार्शनिक विचारों को बेहतर मानव रूप प्रदान करने लिए सही मार्ग दर्शन कराना चाहिए ताकि विभिन्न महत्वपूर्ण और जटिल सामाजिक समस्याओं का समाधान करने में मदद कर सकता है। डॉ. प्रमिंदर कौर, सहायक प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग, ने इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया।

2. 16 नवंबर 2017 को भारतीय दार्शनिक अनुसंधान, नई दिल्ली और दर्शनशास्त्र विभाग, नोर्थ बंगाल यूनिवर्सिटी, दार्जीलिंग, पश्चिम बंगाल द्वारा प्रायोजित दर्शनशास्त्र विभाग, नोर्थ बंगाल यूनिवर्सिटी के अवलोकन में विश्व दर्शन दिवस मनाया गया। कार्यक्रम को तीन भागों में आयोजित किया गया था। उद्घाटन सत्र में डीन ऑफ आर्ट्स, कॉन्फ्रेंस एंड लॉ, डीन ऑफ साइंस, विभागाध्यक्ष, नोर्थ बंगाल यूनिवर्सिटी उपस्थित थे। विभागाध्यक्ष द्वारा स्वागत भाषण के पश्चात दोनों डीन ने अपना भाषण प्रस्तुत किया।

   थोड़े समय के अंतराल के बाद मुख्य शैक्षिक सत्र शुरू हुआ। प्रोफेसर मंजुलिका घोष ने "दी थ्योरीज़ ऑफ़ ट्रूथ एंड नॉलेज" विषय पर भाषण दिया तथा सत्र की अध्यक्षता प्रोफेसर देबिका साहा ने की। बातचीत के अंत में, छात्रों और शिक्षकों ने चर्चा में सक्रिय रूप से भाग लिया।

   दोपहर का भोजनावकाश के बाद, शैक्षणिक सत्र फिर से शुरू हुआ। कार्यक्रम के मुख्य आकर्षण छात्रों और विद्वानों द्वारा भाषण और वाद-विवाद प्रतियोगिता रही। प्रतियोगिता के बाद विभाग के शिक्षकों द्वारा पुरस्कार वितरित किए गए। सत्र का समापन सभी प्रतिभागियों और प्रायोजक अधिकारियों के धन्यवाद के साथ हुआ।

3. 16 नवंबर 2017 को भा.दा.अ.प. द्वारा प्रायोजित दर्शनशास्त्र विभाग, एमएमडी कॉलेज ने 'विश्व दर्शन दिवस' मनाया। कार्यक्रम की अध्यक्षता एमएमडीसी के प्रधान-प्रभारी डॉ. थाई मोग ने की और कार्यक्रम के मुख्य व्याख्याता श्री अरपान दत्ता, एडवोकेट, सबरूम बार काउंसिल ने उद्घाटन

किया। डॉ. सुचरिता चौधरी, विभागाध्यक्ष, दर्शन शास्त्र विभाग ने अपने स्वागत भाषण में रीति–रिवाज के उद्देश्य और आकांक्षों की जानकारी दी। शिक्षक परिषद् के सचिव श्री सुबीर बसाक ने सभा को संबोधित किया, जिसमें तर्कसंगत सोच को विकसित करने के महत्व पर ध्यान केंद्रित किया गया, खासकर समाज के युवाओं के बीच। श्री अपान दत्ता, एडवोकेट, सबरूम बार काउंसिल ने सामाजिक जीवन में अनुशासन और व्यवस्था बनाए रखने में युवाओं की भूमिका पर चर्चा की। उन्होंने इस बात पर बल दिया की जहां तक व्यवहारिक हो सामाजिक कार्यों में युवा पीढ़ी की भागीदारी होनी चाहिए। डॉ. थाई मोग ने अपने अध्यक्षीय भाषण में, एक विश्वव्यापी संस्कार का हिस्सा बनने के लिए बहुत खुशी व्यक्त की। इसके अलावा, उन्होंने छात्रों को सुझाव दिया की जीवन के सभी कार्यों में तार्किक होना चाहिए।

4. 18 नवंबर 2017 को 'विश्व दर्शन दिवस के उपलक्ष्य में प्रणब कुमार सेन मेमोरियल अवार्ड सेरेमनी और भा.दा.अ.प. द्वारा प्रायोजित "कम्पेरेटिव एंड क्रिटिकल स्टडी ऑफ़ दी फिलॉसफिकल सिस्टम्स" विषय पर एक दिवसीय राज्य स्तरीय संगोष्ठी का आयोजन दर्शन भवन, दर्शन शास्त्र विभाग, जादवपुर विश्वविद्यालय में किया गया था। कार्यक्रम का उद्‌घाटन दर्शन शास्त्र विभाग के प्रमुख, जादवपुर विश्वविद्यालय द्वारा किया गया जिन्होंने एक स्वागत भाषण दिया। दर्शन के गीत को प्रोफेसर गंगाधर कार ने अपने साथियों के साथ गाया था। इसके पश्चात, गणमान्य व्यक्तियों द्वारा पुरस्कार का परिचय दिया गया। काजी नजरूल विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति प्रोफेसर साधना चक्रवर्ती ने स्वर्गीय प्रोफेसर प्रणव कुमार सेन पर बात रखी। प्रणब कुमार सेन मेमोरियल अवार्ड दो उम्मीदवारों को दिया गयाः सुश्री एनी मुखर्जी और सुश्री नंदना कर जो एम.ए. प्रथम और द्वितीय में टॉपर हैं। संयुक्त रूप से सेमेस्टर परीक्षाएं प्रोफेसर निर्मल्य नारायण चक्रवर्ती, दर्शनशास्त्र के प्रोफेसर और डीन, कला संकाय, रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय ने दिवंगत प्रोफेसर सेन के दर्शन, विज्ञान और विचारधारा पर व्याख्यान दिया। सत्र की अध्यक्षता जादवपुर विश्वविद्यालय के दर्शनशास्त्र के पूर्व प्रोफेसर माधवेन्द्रनाथ मित्रा ने की। चाय के बाद के सत्र में, पूर्व प्रोफेसर श्रीलेखा दत्ता, दर्शनशास्त्र, जादवपुर विश्वविद्यालय ने "ए क्रिटिकल अप्रैज़ल ऑन न्याय थ्योरी ऑफ़ कौन्सियसनेस्स" विषय पर व्याख्यान दिया। इस सत्र की अध्यक्षता पूर्व प्रोफेसर तपन कुमार चक्रवर्ती, दर्शनशास्त्र, जादवपुर विश्वविद्यालय ने की। दोपहर के भोजन के बाद के सत्र में, कलकत्ता विश्वविद्यालय के प्रोफेसर प्रियंबदा सरकार ने रवींद्रनाथ और विट्‌गेन्स्टाइन पर व्याख्यान दिया। इस सत्र की अध्यक्षता पूर्व प्रोफेसर शेफाली मोइत्रा, दर्शनशास्त्र, जादवपुर विश्वविद्यालय ने की। कार्यक्रम का समापन डॉ. दीपायन पट्टनायक तथा श्रीमती रुबाई साहा द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ।

5. 21 दिसंबर 2017 को फिलोसॉफी एंड दी लाइफ–वर्ल्ड डिपार्टमेंट, विद्यासागर विश्वविद्यालय, मिदनापुर, पश्चिम बंगाल ने "फिलोसॉफी, साइंस एंड टेक्नोलॉजी" विषय पर राज्य–स्तरीय संगोष्ठी का आयोजन किया। संगोष्ठी का आयोजन विश्व उत्सव दिवस के तहत किया गया था। प्रोफेसर सुब्रत कुमार डे, विज्ञान के डीन, पोस्ट–ग्रेजुएट स्टडीज, विद्यासागर विश्वविद्यालय, संगोष्ठी के अध्यक्ष थे। डॉ. पापिया गुप्ता, विभागाध्यक्ष, फिलोसॉफी एंड दी लाइफ–वर्ल्ड डिपार्टमेंट, विद्यासागर विश्वविद्यालय द्वारा स्वागत भाषण दिया। डॉ. तपन कुमार डे, एसोसिएट प्रोफेसर, फिलोसॉफी एंड दी लाइफ–वर्ल्ड डिपार्टमेंट, विद्यासागर विश्वविद्यालय ने धन्यवाद ज्ञापन दिया। विभाग ने विश्वविद्यालय के छात्रों में संगोष्ठी के उद्घाटन में पर्यावरण के प्रति जागरूकता पैदा करने के लिए, वृक्षारोपण ये आरम्भ संगोष्ठी का एक हिस्सा रहा। प्रोफेसर अजय कुमार मिश्रा, रसायन विज्ञान और रसायन प्रौद्योगिकी विभाग, विद्यासागर विश्वविद्यालय ने "द फिलॉसफी ऑन साइंस" विषय पर भाषण दिया। प्रोफेसर निर्मल्य नारायण चक्रवर्ती, दर्शनशास्त्र विभाग और डीन, कला संकाय, रवीन्द्र भारती विश्वविद्यालय ने "फिलॉसफी, साइंस एंड टेक्नोलॉजी" विषय पर अपना व्याख्यान दिया। इसके बाद प्रश्न–उत्तर सत्र हुआ।

6. 19 दिसंबर 2017 को दर्शनशास्त्र विभाग, यूनिवर्सिटी ऑफ़ गौर बंगा ने 'विश्व दर्शन दिवस' मनाने के लिए "फिलॉसफी ऑफ़ मैन एंड एनवायरनमेंट" विषय पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया। प्रोफेसर सिबनाथ सरमा और प्रोफेसर उमा चट्टोपाध्याय एवं प्रोफेसर अमित भट्टाचार्य, आई क्यू ए सी निदेशक के स्वागत करने के साथ 'विश्व दर्शन दिवस' समारोह शुरू हुआ। डॉ. झडेश्वर घोष, दर्शन विभाग के प्रमुख, यूजीबी ने विभिन्न विषयों और कॉलेजों के संसाधन व्यक्तियों और शिक्षकों का स्वागत किया। उन्होंने यूनेस्को द्वारा मान्यता प्राप्त विश्व दर्शन दिवस के महत्व पर ध्यान केंद्रित किया। उन्होंने भा.दा.अ.प. द्वारा वित्तीय सहायता विस्तारित करने के लिए उसकी सराहना की। प्रथम अकादमिक सत्र में, प्रोफेसर उमा चट्टोपाध्याय (कलकत्ता विश्वविद्यालय) ने "कैन मैन गो बियॉन्ड एंथ्रोपोस्ट्रिज्म?: ए डिस्कोर्स फ्रॉम इंडियन फिलोसोफिकल पर्सपेक्टिव ऑन एनवायरनमेंट" पर विद्वतापूर्ण भाषण दिया। दूसरे अकादमिक सत्र में, प्रोफेसर सिबनाथ सरमा (गौहाटी विश्वविद्यालय) ने "मैन एंड एनवायरनमेंटः दी स्पिरिचुअल एंगल" विषय पर व्याख्यान दिया। विश्वविद्यालय के अन्य विभागों के संकाय सदस्यों, कॉलेजों के शिक्षकों और छात्रों ने व्याख्यान पर अपनी–अपनी राय प्रदान करने के साथ प्रश्न पूछकर कार्यक्रम में भाग लिया और मेजबान विभाग के संकाय सदस्यों ने भी पूरी चर्चा में अपने दार्शनिक विचार दिए। डॉ. ज्योत्सना साहा, एसोसिएट प्रोफेसर और संगोष्ठी के समन्वयक ने अंत में धन्यवाद प्रस्ताव दिया।

7. 30 जनवरी 2018 को भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित दर्शनशास्त्र

विभाग, रॉवेनशा विश्वविद्यालय में विश्व दर्शन दिवस 2017 मनाने के उपलक्ष्य में "कंटेम्परारी रेलेवंस ऑफ़ बुद्धिस्ट एथिक्स" विषय पर व्याख्यान की प्रस्तुति के साथ एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। प्रोफेसर ईशान कुमार पात्रो, माननीय कुलपति, रॉवेनशा विश्वविद्यालय; प्रोफेसर प्रफुल्ल कुमार महापात्रा, पूर्व प्रमुख, दर्शनशास्त्र विभाग, उत्कल विश्वविद्यालय, वाणी विहार, भुवनेश्वर; प्रोफेसर तपन डे, दर्शनशास्त्र और धर्म विभाग, विद्यासागर विश्वविद्यालय, पश्चिम बंगाल ; डॉ. मनोज कुमार पांडा, प्रेसीडेंसी यूनिवर्सिटी, कोलकाता; डॉ. अत्रेयी मुखर्जी, दर्शनशास्त्र विभागवेस्ट बंगाल स्टेट यूनिवर्सिटी, कोलकाता के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। आयोजन में विभिन्न विश्वविद्यालयों और कॉलेजों के शिक्षकों के साथ–साथ रॉवेनशा विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों, विद्वानों, शोधकर्ताओं और छात्रों के विभिन्न संस्थानों और केंद्रों के शिक्षक भी मौजूद थे। डॉ. आर.सी. मांझी, दर्शनशास्त्र विभाग, द्वारा स्वागत भाषण दिया गया। डॉ. पतितपावन दास (प्रमुख) ने संगोष्ठी विषय की विषयवस्तु की प्रस्तावना की। प्रोफेसर पी.के. महापात्र मुख्य वक्ता ने कहा कि बौद्धों ने सोचा कि जीवन में मुख्य मुद्दा न तो अंतिम रहस्यों को सुलझाने के अर्थ में दार्शनिक है और न ही कामसूत्र, अनुग्रह और मोक्ष की भावना में धार्मिक है। प्रोफेसर ईशान कुमार पात्रो, कुलपति, रेनशॉ विश्वविद्यालय और संगोष्ठी के अध्यक्ष, ने 21वीं सदी में बौद्ध दर्शन की प्रासंगिकता के बारे में बात की। प्रोफेसर तपन कुमार डे ने "मैन एंड एनवायरमेंटः अ स्टडी इन द लाइट ऑफ़ बुद्धिस्ट एथिक्स" पर अपना व्याख्यान दिया। डॉ. अत्रेयी मुखर्जी ने "अनालाइसिंग बुद्धिस्ट कांसेप्ट ऑफ़ करुणा विस्–ए–विस् एम्पथी" के बारे में बात की। डॉ. मनोज कुमार पांडा ने "एक्सपीरियंस ,एथिकल एजेंसी एंड दी एक्ट ऑफ़ थेओरीज़िंग" विषय पर अपनी बात रखी। डॉ. प्रज्ञापारमिता महापात्र ने "व्हॉट वी ऑट टू बी? एथिकल सिग्नीफिकेन्स ऑफ़ बुद्धास टीचिंग्स" विषय पर बात की। डॉ. नंदिनी मिश्रा, दर्शनशास्त्र विभाग के द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव के साथ कार्यक्रम का समापत हुआ।

8. श्री चंद्रशेखरेंद्र सरस्वती विश्व महाविद्यालय (एस.सी.एस.वी.एम.वी. – डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी) के संस्कृत और भारतीय संस्कृति विभाग भा.दा.अ.प. के वित्तीय सहयोग से 'विश्व दर्शन दिवस' मनाया। इस अवसर पर विभाग द्वारा "वेदांतसार एंड संख्याकारिका" विषय पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। डॉ. मणि द्रविड़ शास्त्री, सहायक प्रोफेसर, मद्रास संस्कृत कॉलेज, चेन्नई, कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। प्रोफेसर वी.एस. विष्णु पॉटी, माननीय कुलपति, एस.सी.एस.वी.एम.वी. ने अध्यक्षीय भाषण दिया और प्रोफेसर जी. श्रीनिवासु, रजिस्ट्रार, एस.सी.एस.वी.एम.वी. तथा प्रोफेसर एस. रामकृष्ण पिसिपेटी, डीन, संस्कृत और भारतीय संस्कृति विभाग ने सभा का सम्मान किया। डॉ. देबज्योति जेना, प्रमुख, संस्कृत और भारतीय संस्कृति विभाग ने मेहमानों और

प्रतिभागियों का स्वागत किया। कार्यशाला में चार सत्र थे, जिनमें वेदांतसार और संख्यारिका ग्रंथ पर दो सत्रों में चर्चा हुई। पूर्वाह्न में, वेदांतसार पर चर्चा हुई। वेदांतसार के विशेषज्ञ डॉ. मणि द्रविड़ शास्त्री (सदानंद द्वारा रचित अद्वैत वेदांत दर्शन में शुरुआती के लिए पाठ) ने संक्षेप में विषयों को समझाया। दोपहर में, डॉ. के.ई. धरणीधरन, एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग, पांडिचेरी विश्वविद्यालय, सांख्यकारिका के विशेषज्ञ थे। प्रत्येक सत्र के अंत में, 'प्रश्न और उत्तर सत्र' का आयोजन किया गया। डॉ. एन. श्रीधर, सहायक प्रोफेसर, संस्कृत और भारतीय संस्कृति विभाग, कार्यक्रम के समन्वयक थे।

9. 5 फरवरी 2018 को दर्शनशास्त्र विभाग, सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय में 'विश्व दर्शन दिवस' का आयोजन किया गया था। समारोह का विषय "एन्सिएंट इंडियन पोलिटिकल थॉट्स" था। इस अवसर पर प्रोफेसर सुभद्रा जोशी (निदेशक, चाणक्य इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ लीडरशिप स्टडीज, मुंबई विश्वविद्यालय) और प्रोफेसर सदानंद मोरे (पूर्व प्रमुख, दर्शन विभाग, सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय) को आमंत्रित किया गया। कार्यक्रम में प्रोफेसर प्रदीप गोखले, प्रोफेसर मंगला चिंचोरे, प्रोफेसर के.सी. राउता, प्रोफेसर लता छत्रे और अन्य लोग शामिल हुए। प्रोफेसर सुभद्रा जोशी ने "पोलिटिकल थॉट्स इन अर्थशास्त्र" विषय पर बात की। उन्होंने मार्ग दर्शक के गुणों को विकसित करने के बारे में बात की, जो अर्थशास्त्री अध्ययन की मदद से पारिवारिक स्तर से लेकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक अनिवार्य हो सकते हैं। चेयरपर्सन, प्रोफेसर सदानंद मोरे ने जोशी की बातों पर टिप्पणी की और कहा कि प्राचीन काल के अन्य विद्यालयों और ग्रंथों में किस प्रकार की राजनीतिक विचार पाया गया है। इस कार्यक्रम में, सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय के विभाग के प्राध्यापकों तथा छात्रों और अन्य विभागों एवं विश्वविद्यालय के लोग शामिल हुए।

10. 6 मार्च 2018 को भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली और प्रताप सेंटर ऑफ फिलॉसफी द्वारा संयुक्त रूप से अमलनेर, महाराष्ट्र में विश्व दर्शन दिवस ऊर्जस्विता के साथ मनाया गया। डॉ डी.एस. सूर्यवंशी (प्रिंसिपल, विद्यावर्धिनी कॉलेज, धुले) और ज्योति राणे (प्रिंसिपल, प्रताप कॉलेज, अमलनेर) कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। डॉ. ए.एन. माली और डॉ. अनुराधा कुलकर्णी कार्यक्रम के मुख्य वक्ता थे। प्रताप सेंटर ऑफ फिलॉसफी के मानद निदेशक डॉ. एस.आर. चौधरी उद्घाटन समारोह के अध्यक्ष थे। डॉ. अर्चना देवगांवकर, विभागाध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान विभाग, नार्थ महाराष्ट्र यूनिवर्सिटी, जलगाँव और डॉ. राधामोहन पाठक, सहायक प्रोफेसर द्वारा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। डॉ. डी.एस. सूर्यवंशी ने अध्यक्षीय भाषण दिया और भारतीय संस्कृति में "गुरु–शिष्य" की परंपरा पर ध्यान केंद्रित किया। डॉ.

ज्योति राणे ने भारतीय संस्कृति में "गुरु–शिष्य" के महत्व पर विचार–विमर्श किया। डॉ. ज्योति राणे ने अपने भाषण में "फिलोसॉफी एंड लैंग्वेज" के महत्व पर प्रकाश डाला।

11. 27 फरवरी 2018 को, भा.दा.अ.प. द्वारा प्रायोजित "विश्व दर्शन दिवस" मनाने के लिए कल्याणी विश्वविद्यालय के दर्शनशास्त्र विभाग ने "थ्योरीज ऑफ़ ट्रूथ एंड नॉलेज" विषय पर विद्यासागर सभाग्रही, कल्याणी विश्वविद्यालय, प्रशासनिक भवन, भूतल पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। मुख्य भाषण प्रोफेसर प्रबल कुमार सेन, पूर्व प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय द्वारा दिया गया। दूसरे शैक्षणिक सत्र में, प्रोफेसर गोपाल चंद्र खान, भूतपूर्व प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग, बर्दवान विश्वविद्यालय ने "ए प्ले फॉर फिलॉसफी" विषय पर व्याख्यान दिया, जिसमें उन्होंने दर्शनशास्त्र की उपयोगिता और प्रासंगिकता पर चर्चा की। तीसरे शैक्षणिक सत्र में, प्रोफेसर बी.के. स्वैन, सेवानिवृत्त, संस्कृत विभाग, पुरी जगन्नाथ विश्वविद्यालय, ने "फिलॉसॉफी एंड इट्स डाईमेन्शन" विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। इस सत्र में विभिन्न विश्वविद्यालयों के शिक्षकों और शोध विभागों ने अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया। धन्यवाद प्रस्ताव के साथ संगोष्ठी का समापन हुआ।

13. आवधिक व्याख्यान

भा.दा.अ.प. कम लागत के बजट पर भारत के विभिन्न शहरों के युवा छात्रों के बीच दर्शनशास्त्र के समृद्धि के लिए विभिन्न कॉलेजों और विश्वविद्यालयों द्वारा प्रत्येक वर्ष समय–समय पर व्याख्यान का आयोजन किया जाता है। 2017–18 के दौरान, भा.दा.अ.प. ने प्रत्येक कॉलेज / संस्थान को विभिन्न स्थानों पर आवधिक व्याख्यान आयोजित करने के लिए 10,000 रुपये की वित्तीय सहायता प्रदान किया। इसका विवरण निम्नानुसार हैं:

क्र.सं.	नाम और पता	विषय	दिनांक
1.	डॉ. अनुपम जश, प्रमुख, दर्शनशास्त्र विभाग, बांकुरा क्रिश्चियन कॉलेज, बांकुरा, पश्चिम बंगाल – 722 101	1. "रेअलिस्म एंड द प्रिंसिपल ऑफ़ बिवालेन्स" प्रोफेसर ममता बंधोपाध्याय द्वारा 2. "इकोलॉजी एंड एनवायर्नमेंटल कॉन्सिसियसनेस्स फ्रॉम द पर्सपेक्टिव ऑफ़ बुद्धिस्ट ट्रेडिशन" डॉ. समर कुमार मंडल द्वारा	14 मार्च 2018
2.	डॉ. (मेजर) मदन मोहन दास, एसोसिएट प्रोफेसर और हेड ऑफ फिलॉसफी, सालिपुर	1. "एनवायर्नमेंट्स एथिक्स : एन ओवरव्यू" डॉ. हरीश चंद्र साहू द्वारा	

	ऑटोनोमस कॉलेज, सालिपुर–754 202	2. "प्रोफेशनल एथिक्स ऑफ़ डॉक्टर्स" डॉ. विभु प्रसाद पात्रा द्वारा	
3.	डॉ. पूर्णिमा दास सहायक प्रोफेसर मयनागुरी कॉलेज, मयनागुरी, जलपाईगुड़ी, पश्चिम बंगाल– 735224	1. "रोले ऑफ़ लैंग्वेज इन लॉजिक" प्रोफेसर कांतिलाल दास द्वारा 2. "दी कांसेप्ट ऑफ़ लक्षणा इन न्याय फिलोसॉफी" प्रोफेसर रघुनाथ गोष द्वारा	12 फरवरी 2018 से 10 मार्च 2018
4.	डॉ हरिश्चंद्र साहू विभागाध्यक्ष, दर्शन बी.जे.बी. (ए) कॉलेज भुवनेश्वर – 751014	1. "एनवायर्नमेंटल एथिक्स" प्रोफेसर एस.के. मोहंती द्वारा 2. "इंटर–रिलीजियस हार्मोनी एंड पीस" प्रोफेसर धनेश्वर साहू द्वारा 3. "बिजनेस एथिक्स एंड सीएसआर" डॉ. सुधीर कुमार दास द्वारा	15 जनवरी 2018
5.	डॉ. आर.के. बेहरा, एसोसिएट प्रोफेसर, प्रमुख, दर्शन विभाग, पटकाई क्रिश्चियन कॉलेज (ऑटोनोमस), चुमुकेदिमा, नागालैंड– 797 103	1. "गांधीज फिलोसॉफी ऑफ़ अहिंसा" डॉ. अंजन कर्म बेहरा द्वारा 2. "ह्यूमन एडवांसमेंट एंड इकोलॉजिकल कंसर्नः ए पर्सपेक्टिव फ्रॉम दी फिलोसॉफी ऑफ़ डीप इकोलॉजी" डॉ. पोलिकारप एक्सेल्सो द्वारा 3. "दी एथिक्स ऑफ़ सुसाइड" डॉ. सी.पी.	20 फरवरी 2018, 26 दिसंबर 2018 और 8 मार्च 2018 तक
6.	डॉ. निरंकुश चक्रवर्ती, सहायक प्रोफेसर और विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग, गज़ोले महाविद्यालय, मालदा, पश्चिम बंगाल	1. "गांधियन कन्सेप्शन ऑफ़ नॉन–वायलेंस एंड इट्स रेलेवंस टू एनवायरनमेंट क्राइसिस" डॉ. झाड़ेश्वर घोष द्वारा 2. "दी कांसेप्ट ऑफ़ अहिंसा इन इंडियन ट्रेडिशन" प्रोफेसर रघुनाथ घोष द्वारा	16 मार्च 2018
7.	श्रीमती सुमन महाजन, एसोसिएट प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग, एमसीएम डीएवी कॉलेज फॉर वूमेन, सेक्टर – 36 / ए, चंडीगढ़– 160 036	1. "एनवायर्नमेंटल एथिक्स ऑफ़ इंडिविजुअल एंड कलेक्टिव रेस्पॉन्सिबिल्टी टू सेव दी प्लेनेट अर्थ" प्रोफेसर पीतम सिंह द्वारा	18 जनवरी 2018
8.	डॉ. मोहिन मोहम्मद, दर्शनशास्त्र विभाग, क्राइस्ट कॉलेज, कटक– 753 008	1. "वर्ल्ड पीस एंड इंटर रिलीजियस हॉर्मोनी" प्रोफेसर धनेश्वर साहू द्वारा 2. "इज विट्गेन्स्टाइन पैराडोक्सिकल?" नीलमणि साहू द्वारा 3. "दी प्री–सोक्रेटिक्सः ए मोड ऑफ़	9 फरवरी 2018

		फिलॉसॉफिकल इन्क्वायरी" डॉ. सचिंद्र पॉल द्वारा	
9.	डॉ. अमिता पांडे, सह – प्राध्यापक, ईश्वर सरन डिग्री कॉलेज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद– 211 004	1. "धर्म निरपेक्षता पर प्रोफेसर संगम लाल पांडेय का दृष्टिकोण" प्रोफेसर जगत पाल द्वारा 2. "कश्मीर समस्या का नैतिक एवं दार्शनिक दृष्टिकोण" प्रोफेसर एच.के. शर्मा द्वारा 3. ''श्रीमदभगवद गीता का दार्शनिक दृष्टिकोण" प्रोफेसर जटा शंकर तिवारी द्वारा	19, 25 जनवरी 2018 और 8 फरवरी 2018
10.	डॉ. उमा माहेश्वरी शंकर, उप प्रधानचार्य और प्रमुख, दर्शनशास्त्र विभाग, एस.आई.ई.एस. कॉलेज ऑफ आर्ट्स, साइंस एंड कॉमर्स, 83/84, 106 और 107, जैन सोसाइटी, सायन (पश्चिम), मुंबई– 400 022।	1. "इपिस्टेमे एंड विजडमः डाइमेंशन्स ऑफ़ नॉलेज इन इंडियन ट्रेडिशन" डॉ. मीनल कटारिकर द्वारा 2. कौटिल्यस अर्थशास्त्रा–रेडिस्कवरिंग दी फिलॉसॉफिकल डायमेंशन" डॉ. राधाकृष्णन पिल्लई द्वारा 3. "एलनपुर एंड एस्थेटिक्सः ए कोन्फ़्लुएन्स" डॉ. राधा कुमार द्वारा 4. "फिलॉसॉफिकल कांसेल्लिग–ए ब्लूप्रिंट टू डु फिलॉसॉफि" डॉ. सुचित्रा नाइक द्वारा	8 जनवरी और 18 जनवरी 2018 और 1 फरवरी और 15 फरवरी 2018
11.	डॉ. भारत मालाकार, सहायक प्रोफेसर और प्रमुख, दर्शनशास्त्र विभाग, महिषादल गर्ल्स कॉलेज, विद्यासागर विश्वविद्यालय के vaxZ] VIII–रँगीबासन, जिला – पुरबा मेदिनीपुर, पश्चिम बंगाल – 721628	1. "रुसेल ऑन ट्रांसफॉर्मेशन ऑफ़ लैंग्वेज" प्रोफेसर तपन कुमार डे द्वारा 2. "दी इंडियन थ्योरिजस ऑन दी मेथड ऑफ़ डेटर्मिनिंग सेन्टेन्स––मीनिंग" डॉ. मैनक पाल द्वारा	22 दिसंबर 2017
12.	मेजर डॉ. मनमीत कौर सोढ़ी विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग, नवयुग कन्या महाविद्यालय, राजेंद्र नगर, लखनऊ–	1. "प्रॉब्लम ऑफ़ ईविल" प्रोफेसर राकेश चंद्रा द्वारा 2. "रोले ऑफ़ वीमेन इन हिस्ट्री" डॉ. योगेश प्रवीण द्वारा	16 फरवरी 2018
13.	डॉ. आर. लक्ष्मी सहायक प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग, कॉलेज फॉर विमेन, तिरुवनंतपुरम–695014,	1. "एनिमल राइट्स एंड वेलफेयर एंड इट्स एथिकल इम्प्लिकेशन्स विथ स्पेशल रेफेन्स टू पीटर सिंगर" डॉ. प्रभु द्वारा	18 दिसम्बर 2018 12 जनवरी

	केरल	2. "पराडोक्सेसः दी एसिड टेस्ट फॉर ट्रूथ" डॉ. ई. राजीवन द्वारा 3. "फिसोफ़िकल परादिग्म्स ऑफ़ दी डिसेबल्ड" डॉ सविता ए.आर. द्वारा	2018 और 12 फरवरी 2018
14.	डॉ. निरंजन हालोई, प्रमुख, दर्शन विभाग, डीकेडी कॉलेज, डरगाँव, जिलाः गोलाघाट (असम) – 785614	1. "रेलेवंस ऑफ़ दी टीचिंग्स ऑफ़ दी भागवद् गीता इन दी प्रेजेंट डे कॉन्टेक्स्ट" डॉ गिरीश बरुआ द्वारा	19 फरवरी 2018
15.	डॉ. रजनी सिन्हा प्रमुख, दर्शनशास्त्र विभाग, के सी इ सोसाइटीज़ मूलजी जैन्था कॉलेज, जलगाँव (एम एस)–425002	"सार्त्रेज कांसेप्ट ऑफ़ सेल्फ" डॉ. वैजयंती बेलसेरे द्वारा सारत्रीची स्व ची संकल्पना	28 फरवरी 2018
16.	डॉ.चेतना गुप्ता, सहायक प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग, श्यामा प्रसाद मुखर्जी कॉलेज फॉर विमेन, सड़क संख्याः 57, पश्चिम पंजाबी बाग, नई दिल्ली – 110026	1. "प्लेस ऑफ़ फिलोसॉफी इन काउंसलिंग" प्रोफेसर बालगणपति देवरकोंडा द्वारा 2. "कम्प्लेक्सिटीज़ एंड कन्फ्लिक्ट्स विदिन द पुरुषार्थ स्कीम : सर्चिंग फॉर रेज्यूलेशन" प्रोफेसर एच.एस. प्रसाद द्वारा	16 मार्च 2018
17.	डॉ. सुधांशु शेखर, सहायक प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग, टी.पी. कॉलेज, मधेपुरा, बिहार 852,113	1. "धर्मनिरपेक्षता की अवधारणा" डॉ. प्रभु नारायण मंडल द्वारा 2. "धार्मिक सहिष्णुता एवं सर्वधर्म सम्भाव" डॉ. नरेश कुमार अम्बस्ट द्वारा 3. "वेदांती समाजवाद" डॉ. जटा शंकर द्वारा 4. "सीमान्त नैतिक और सामाजिक न्याय" प्रोफेसर रमेश चन्द्र सिन्हा	20–21 मार्च 2018
18.	डॉ. रामा रानी, संयोजक और प्रमुख, दर्शनशास्त्र विभाग, सी.एम.पी. कॉलेज, महात्मा गांधी मार्ग, इलाहाबाद – 211002 18,	1. "रिलीजियस प्रैक्टिसेज : ए क्रिटिकल एग्जामिनेशन" प्रोफेसर ऋषि कांत पांडे द्वारा 2. ''गांधी एंड मार्क्सः ए कम्पेरेटिव स्टडी" प्रोफेसर एच.एस. उपाध्याय द्वारा 3. "फिलोसॉफि ऑफ़ योगा" प्रोफेसर जटा शंकर द्वारा	25 और 29 जनवरी 2018
19.	डॉ (श्रीमती) रेखा यादव, दर्शनशास्त्र विभाग, सम्राट पृथ्वी राज	1. ''भारतीय दर्शन के पाठक की भारतीय पद्धति एवं देशज आधुनिकता"	20 जनवरी 2018

	चौहान गवर्नमेंट कॉलेज, अजमेर, महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर	प्रोफेसर अम्बिका दत्त शर्मा द्वारा 2. ''बौद्ध दर्शन के प्रस्थानों के सैद्धांतिक मतभेद और एकवाक्यता के मूलभूत सूत्र" प्रोफेसर अम्बिका दत्त शर्मा द्वारा	
20.	डॉ. एस. मणिकंदन, अघुरचंद मन्मुल जैन कॉलेज, दर्शनशास्त्र विभाग, मीनांबक्कम, चेन्नई – 600114	1. "एनवायरनमेंट एंड रिलिजन" डॉ. एस कृष्णन द्वारा 2. "जैनिज़्म इन दी कंटेम्पररी वर्ल्ड" डॉ. उमापति जैन द्वारा 3. "फिलॉसॉफीः मेथड्स एंड प्रैक्टिस" डॉ. आर. मुरली द्वारा	8 फरवरी 2018
21.	डॉ. बिजय कुमार नायक, व्याख्याता, फिलॉसॉफि और क्रिटिकल थिंकिंग विभाग यू.एन. (ए यू टी ओ), कॉलेज ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी, प्रचुना पिथा, अदासपुर, कटक, ओडिशा – 754011	1. "दी ह्यूमन इकोलॉजी एंड फिलोसोफिकल कंसर्न" डॉ. बिजयनानंद कार द्वारा 2. "ऑन दी जैन व्यू ऑफ़ कर्मा" डॉ. नमिता कर द्वारा 3. "ए नोट ऑन प्लैटोस फिलॉसॉफी ऑफ़ मैथमेटिक्स" डॉ. सचिंद्र राउल द्वारा	16 नवंबर 2017
22.	डॉ तृप्ति धर, प्रमुख, दर्शनशास्त्र विभाग, 269, डायमंड हार्बर रोड, ठाकुरपुकुर, कोलार–700063	1. "ऐवोलुशनार्य कॉन्सेप्ट्स ऑफ़ बुद्धिस्ट एमानिसीपैशन एंड वीमेनः ए स्टडी फ्रॉम पाली लिटरेचर" प्रोफेसर ऐश्वर्या विश्वास द्वारा 2. "स्टेटस ऑफ़ वीमेन इन बुद्धिज़्मः एन ओवरव्यू" भिक्खु सुमनपाल द्वारा	30 जनवरी 2018
23.	डॉ. सौम्या आर.वी., सहायक प्रोफेसर, दर्शन विभाग, एस.एन. कॉलेज, चेरथला	*विषयः* प्रैक्टिकल इम्प्लिकेशन्स ऑफ़ इंडियन फिलॉसॉफि 1. "रेविजिटिंग प्रैक्टिकल आस्पेक्ट्स ऑफ़ इंडियन फिलोसॉफी" डॉ उन्नीकृष्णन पी द्वारा 2. "प्रैक्टिकल इम्प्लिकेशन्स ऑफ़ हेटेरोडॉक्स सिस्टम इन इंडिया" डॉ. राधारानी पी. द्वारा 3. "डूइंग फिलोसॉफी : ट्रडिशन्स इन इंडिया" डॉ. गैस्पर के.जे. द्वारा	19, 27 फरवरी 2018 और 2 मार्च 2018
24.	श्रीमती निबदिता बेजबोरूआह, एसोसिएट प्रोफेसर, विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र, जे.बी कॉलेज, (स्वायत्त), जोरहाट, असम – 785001	"रेलेवंस ऑफ़ दी फिलोसॉफी ऑफ़ गाँधी इन दी प्रेजेंट सोसाइटी" प्रोफेसर मनीषा बरुआ द्वारा	17 मार्च 2018

25.	डॉ. लक्ष्मण पात्रा, विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग वी.डी. (स्वायत्त) कॉलेज, जेपोर, कोरापोट	विषयः वैल्यू एजुकेशन 1. "कांसेप्ट एंड ओब्जेक्टिवेस ऑफ़ वैल्यू एजुकेशन" प्रोफेसर रतनकर गजेंद्र द्वारा 2. "वैल्यू एजुकेशनः ईस्टर्न एंड वेस्टर्न" प्रोफेसर अमूल्य महापात्रा द्वारा	28 फरवरी 2018
26.	डॉ. नृसिंह चरण सामंतरी, सीनियर लेक्चरर–दर्शनशास्त्र, एस.वी.एम (ए) कॉलेज, जगतसिंहपुर, ओडिशा– 754 103	1. "इंटीग्रल योग ऑफ़ श्री अरोबिन्दो" डॉ. एच.सी. साहू द्वारा 2. "स्वामी विवेकानंद ऑन प्रैक्टिकल वेदांत" डॉ. बी.के. दास द्वारा 3. "एक्शन, फ्रीडम एंड रिस्पांसिबिलिटी फ्रॉम दी पर्सपेक्टिव्स ऑफ़ श्रीभगवद् गीता" बी.एन. नायक द्वारा	20 मार्च 2018
27.	डॉ. नर्मदा कुमारी परिदा, सहायक प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग शैलबाला महिला स्वायत्त कॉलेज, पोस्टः बक्सी बुज़ार, कटक – 75300	1. "वैल्यू, नोर्मेटिवित्य एंड नेचुरल वर्ल्ड" डॉ. मनोज कुमार पांडा द्वारा 2. "वैल्यू इन एनवायरनमेंट" प्रोफेसर सरोज कुमार मोहंती द्वारा	1 5 जनवरी 2018
28.	डॉ. राजिंदर कौर, सहायक प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग पं. मोहन लाल एस.डी. कॉलेज फॉर विमेन, काहनूवान रोड, गुरदासपुर–143 521	"इम्बीबिंग ऑफ़ मॉराल वैल्यूज : नीड ऑफ़ दी ऑवर" विषय पर संगोष्ठी डॉ. नीरज कुमार शर्मा, डॉ. मनविंदर सिंह, और डॉ. पवन कुमार	24 फरवरी, 2018
29.	डॉ. जयंती पी. साहू, (संयोजक) सहायक प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग, जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, सर गंगा राम अस्पताल मार्ग, राजिंदर नगर, नई दिल्ली – 110060	1. "रीज़न, रिलिजन एंड धर्मा" डॉ. राकेश चंद्र द्वारा 2. "जगन्नाथ कॉन्ससियसनेस्स" डॉ. चिन्मयी सत्पथी द्वारा	22 सितंबर 2017 और 22 फरवरी 2018
30.	डॉ. आभा होल्कर, दर्शनशास्त्र विभाग, माता जीजाबाई गवर्नमेंट पी.जी. कॉलेज, इंदौर	1. "बौद्धिक अहिंसा का सिद्धांत––अनेकांतवाद" डॉ. विमल जैन द्वारा 2. "बुद्ध और बौद्ध दर्शन" डॉ. सूर्य प्रकाश व्यास द्वारा	31 मार्च 2018
31.	डॉ. खुंदोंगबम गोकुलचंद्र सिंह, दर्शनशास्त्र विभाग, डी.एम. कॉलेज ऑफ आर्ट्स, इंफाल – 795001	1. "दी एस्थेटिक मैस्टिसिस्म ऑफ़ मणिपुरी वैष्णविज़्म" प्रोफेसर लोकेशद्रजीत सिंह द्वारा 2. "कैनट्स कोपर्निकन रेवोलुशन इन	10 मार्च 2018

		एपिस्टेमोलॉजी" डॉ. ए. दोरेन्द्र सिंह द्वारा	
32.	डॉ. कल्याणी सारंगी, व्याख्याता, दर्शनशास्त्र विभाग, जीओपी, पुरी– 752110 उड़ीसा	1. "एनवायर्नमेंटल एथिक्स : व्हाट, व्हाई एंड हाऊ" प्रोफेसर एस.के. मोहंती द्वारा 2. "श्री अरविंदोस विज़न ऑफ़ नाउ अर्थ" डॉ. एच. साहू द्वारा 3. "मैन एंड एनवायरनमेंट" श्री पी.के. पांडा द्वारा	8 फरवरी 2018
33.	श्री भूपेन हजारिका, विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग, खेरजखत कॉलेज, पोस्टः देवटोला, जिलाः लखीमपुर, असम	"फिलोसॉफी फॉर लाइफ" डॉ. बोर्नली रोरा द्वारा	12 मार्च 2018
34.	डॉ. आशिमा खानिकर, सहायक प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग, अमगुरी कॉलेज, अमगुरी, शिवसागर, असम – 785 680	1. "सोशल एंड पोलिटिकल फिलॉसॉफी" डॉ पंचमी भट्टाचार्जी द्वारा 2. "एथिक्स ऑफ़ ह्यूमन राइट्स" डॉ. सुमित्रा पुरकायस्थ द्वारा	27 मार्च 2018
35.	डॉ. के. सुब्रमण्यन, सहायक प्रोफेसर, सरस्वती नारायणन कॉलेज, मदुरै – 625022	1. "इकोनॉमिक आइडियाज ऑफ़ तिरुवल्लुवर" डॉ. ई. रवि कुमार द्वारा 2. "गांधीयन फिलॉसॉफी एंड इकोनॉमिक डेवलपमेंट" डॉ. एस. वेंकटचलम द्वारा 3. "दी इकोनॉमिक्स ऑफ़ सोशल रेस्पॉन्सिबिल्टी" श्रीमती सी. उमामहेश्वरी द्वारा	24 जनवरी 2018
36.	डॉ. गुरजीत सिंह मान, विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग, गवर्नमेंट राजिंद्र कॉलेज, बठिंडा, पंजाब 151 001	1. 'मैनस एक्सिस्टेंस एंड क्रिएटिविटी : सम रेफ्लेक्शंस इन दी लाइट ऑफ़ एस्थेटिक्स" डॉ. सिवानी शर्मा द्वारा 2. शोर से संगीत की ओर.	15 मार्च 2018
37.	डॉ. कैलाश चंद्र मोहराना, दर्शनशास्त्र विभाग, बालूगाँव कॉलेज, बालुगाँव, जिलाः खोरदा, ओडिशा 752 030 13 दिसंबर2017	1. "ज्ञाना, दान एंड तपा ऐज मॉडल ऑफ़ कर्मा इन भगवद गीता" प्रोफेसर राज किशोर साहू द्वारा 2. "एक्सिस्टेंन्स–इट्स 'हाऊ' एंड 'व्हाई' इन इंटीग्रल आइडियलिज्म" प्रोफेसर रमाकांत नंदा द्वारा	

38.	श्रीमती ममता जना (रहमान) विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग, मिदनापुर कॉलेज (स्वायत्त) पोस्टः मिदनापुर, जिला : पश्चिम मेदिनीपुर, पश्चिम बंगाल, 721101	1. "बुद्धिस्ट एथिक्स एंड मोरालिटी : ए ब्रीफ स्केच डॉ. पाप्या गुप्ता द्वारा 2. "व्हाई वे शुड थिंक फॉर अदर्सः ए क्रिटिकल एस्टीमेट ऑफ़ यूंटिलिटरियंनिस्म" डॉ दीपायन पट्टनायक द्वारा	13 फरवरी 2018
39.	डॉ. आर. इंदिरा, सहायक प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग पूम्फुअर कॉलेज (स्वायत्त) मेलैयूर, तमिलनाडु 609,107 15 मार्च 2018	1. "एन आडीलिस्टिकव्यू ऑफ़ लाइफ" डॉ. एस. थंगाराजू द्वारा 2. "एन इम्पेक्ट ऑफ़ मॉडर्न इंडियन फिलोसॉफी ऑन सोशल चेंजस" डॉ. जे. थिरुमल द्वारा 3. "दी फिलोसॉफी ऑफ़ रामानुजन" डॉ. इ. रवि कुमार द्वारा	
40.	डॉ. अरुण गर्ग, सहायक प्रोफेसर, पी.जी. दर्शनशास्त्र विभाग, गया कॉलेज, गया 823001	1. "सब–आल्टर मोरालिटी" प्रोफेसर आर.सी. सिन्हा 2. "विमेंस इकनोमिक एम्पावरमेंट : एन इम्पेरटिवे फॉर इकनोमिक ग्रोथ" प्रोफेसर पूनम सिंह द्वारा	6 फरवरी 2018
41.	डॉ. सुचरिता चौधुरी, सह – प्राध्यापक, दर्शनशास्त्र विभाग, माइकल मधुसूदन दत्ता कॉलेज (एम एम डी सी) पोस्ट : सबरूम, दक्षिण त्रिपुरा–799145	1. "रोल ऑफ़ यूथ इन मैनटैनिंग आर्डर इन लाइफ" श्री तपन दत्ता द्वारा	16 नवंबर 2017
42.	डॉ. असोंगपु, सहायक प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग, आर्य महिला पी.जी. कॉलेज, चेतगंज, वाराणसी	1. "नॉलेज इन इंडियन फिलॉसॉफी" प्रोफेसर सचिदानंद मिश्रा द्वारा 2. "सेवन सोशल सीन्स अकॉर्डिंग टू गाँधी" प्रोफेसर आर.पी. द्विवेदी द्वारा 3. "वेदांत साहित्य" प्रोफेसर सुधाकर मिश्रा द्वारा 4. "न्याय दर्शन के सिद्धांत" प्रोफेसर रामपूजन पांडे द्वारा	6 फरवरी 2018 और 14 मार्च 2018
43.	डॉ. प्रसेनजीत बेरा, सहायक प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग, अघोर कामिनी प्रकाश चंद्र महाविद्यालय,	1. "स्कूल ऑफ़ इंडियन फिलॉसॉफी एंड देयर कंट्रिब्यूशंस" डॉ. दीपनयन पट्टनायक द्वारा	6 फरवरी 2018

सुभाष नगर, बेंगई, जिलाः हुगली, पश्चिम बंगाल	2. "दी डिफरेंट सिस्टम्स ऑफ़ इंडियन फिलॉसॉफी एंड दिअर इंटररिलेशन" डॉ. रतना दत्ता शर्मा	
44. श्रीमती अनु कंधारी, सहायक प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग, हिंदू कॉलेज, अमृतसर–143 001	डॉ अनीता मेनन, डॉ. मनविंदर सिंह और डॉ. मोहब्बत सिंह द्वारा "रेलेवंस ऑफ़ एथिक्स इन मॉडर्न टाइम्स" विषय पर व्याख्यान	27 फरवरी 2018

1. 16 नवंबर 2017 को भा.दा.अ.प. द्वारा प्रायोजित, विश्व दर्शन दिवस 2017 के महत्वपूर्ण अवसर पर उदयनाथ कॉलेज ऑफ़ साइंस एंड टेक्नोलॉजी, आडसपूर, कटक द्वारा 'पीरियॉडिक लेक्चर प्रोग्राम' के तहत डॉ. गणेश प्रसाद दास, पूर्व प्रोफेसर और अध्यक्ष, पीजी दर्शनशास्त्र विभाग, उत्कल विश्वविद्यालय की अध्यक्षता में आवधिक व्याख्यान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। तीन प्रतिष्ठित विद्वानों, डॉ बिजयानंद कर, दर्शनशास्त्र के पूर्व रीडर, कमला नेहरू महिला कॉलेज, भुवनेश्वर ने "दी ह्यूमन इकोलॉजी एंड फिलोसोफिकल कंसर्न", "ए नोट ऑन प्लेटोस फिलॉसॉफी" और "दी जैन व्यू ऑफ़ कर्म" पर क्रमानुसार व्याख्यान दिया। कॉलेज के प्राचार्य प्रोफेसर डी. सिंह ने दीप प्रज्वलित करके कार्यक्रम का उद्‌घाटन किया। विभाग के अध्यक्ष श्री बिजय कुमार नायक ने स्वागत भाषण दिया और विभाग की ओर से संकाय सदस्य श्रीमती चारुलता दास ने धन्यवाद प्रस्ताव रखा तथा वित्तीय सहायता के लिए भा.दा.अ.प. का आभार व्यक्त किया।
2. 13 दिसंबर 2017 को प्राचार्य डॉ. प्रशांत कुमार आचार्य की अध्यक्षता के अंतर्गत दर्शनशास्त्र विभाग, बालूगाँव कॉलेज में भा.दा.अ.प. द्वारा प्रायोजित आवधिक व्याख्यान को आयोजित किया गया। प्रोफेसर राजा किशोर साहू, पूर्व विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग और प्रिंसिपल, आर.सी. कॉलेज, और प्रोफेसर रमाकांत नंदा, पूर्व विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग, गोदावरी महाविद्यालय ने इस अवसर पर आमंत्रित वक्ता थे। प्रोफेसर पूर्ण चंद्र दास, विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग, द्वारा मूल विषय पर शोध पत्र प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्रोफेसर आर.के. साहू ने भागवत् गीता में ज्ञान, दान और तप तथा कर्म पर बात की। प्रोफेसर आर.के. नंदा ने "एक्सिस्टेंन्स–इट्स हाउ एंड व्हाई इन इंटीग्रल आईडियालिस्मः एन अप्रैज़ल" विषय पर विस्तार से बताया। डॉ के. चौधरी मोहराना द्वारा धन्यवाद ज्ञापन दिया गया। 5 फरवरी 2018 को एक अन्य व्याख्यान का आयोजित किया गया श्री भागीरथी महापात्र ने श्री अरबिंदो के दर्शनशास्त्र पर अपना भाषण दिया। दोनों कार्यक्रमों में, आस–पास के कॉलेज के छात्रों और शिक्षकों ने भी भाग लिया।

3. 24 फरवरी 2018 को दर्शनशास्त्र विभाग, पंडित मोहन लाल एस.डी. कॉलेज फॉर वूमेन, गुरदासपुर ने भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद द्वारा प्रायोजित "इमम्बिबिंग ऑफ़ मोरल वैल्यूजः नीड ऑफ़ दी हॉर्स" विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया। इस आयोजन में डॉ. मनविंदर सिंह, गुरु नानक स्टडीज विभाग, जीएनडीयू, अमृतसर, डॉ. पवन कुमार, सहायक प्रोफेसर, गुरु नानक स्टडीज विभाग, जीएनडीयू अमृतसर और श्री नीरज कुमार शर्मा (दर्शनशास्त्र विभाग में सहायक प्रोफेसर), बीयूसी कॉलेज, बटाला आमंत्रित विद्वान वक्ता थे। डॉ. मनविंदर सिंह ने छात्रों को नैतिक मूल्यों को अपनाने के लिए प्रेरित किया जो आजकल आवश्यक है। डॉ. पवन कुमार ने कहा कि भारतीय संस्कृति और परंपरा हमारी बहुमूल्य धरोहर है। डॉ. नीरज कुमार ने दार्शनिक विश्लेषण के बारे में बात की जो महत्वपूर्ण है। उन्होंने आगे "नैतिक" शब्द का विस्तार किया, जिसका अर्थ है आचरण, चरित्र या उचित व्यवहार। सुश्री राजिंदर (दर्शनशास्त्र में सहायक प्रोफेसर) ने अतिथि का धन्यवाद किया जिन्होंने नैतिक मूल्यों के बारे में ज्ञान प्रदान करने में छात्रों को अपना बहुमूल्य समय दिया।

4. 28 फरवरी 2018 को छात्रों के बीच दार्शनिक विचारों को बढ़ावा देने और सामान्य तरीके से विषय को लोकप्रिय बनाने के लिए दर्शनशास्त्र विभाग द्वारा मूलजी जैथा कॉलेज, जलगांव (महाराष्ट्र) में व्याख्यान का आयोजन किया गया। प्रोफेसर (डॉ.) वैजयंती बेलसारे, प्रोफेसर और प्रमुख, दर्शनशास्त्र विभाग, एस. रजनी सिन्हा, दर्शनशास्त्र विभाग की प्रमुख, ने वक्ता का परिचय दर्शकों कराया। दोपहर के भोजन के पहले और बाद के सत्रों में 100 से अधिक श्रोतागण जिसमें कॉलेज के विभिन्न विभागों के छात्र और अध्यापक शामिल थे। छात्रों ने दोपहर के भोजन के बाद के सत्र में अपने शोध पत्र प्रस्तुत किया। अच्छा शोध पत्र प्रस्तुत करने वाले छात्रों को पुरस्कार वितरण किया गया।

5. 18 दिसंबर 2017 को भारतीय दर्शन अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित दर्शनशास्त्र विभाग, गवर्नमेंट कॉलेज फॉर वुमन, तिरुवनंतपुरम ने सेमिनार हॉल, गवर्नमेंट कॉलेज फॉर वुमन, तिरुवनंतपुरम में पहला आवधिक व्याख्यान कार्यक्रम आयोजित किया। डॉ. प्रभु वी., एसोसिएट प्रोफेसर, डिपार्टमेंट ऑफ़ ह्यूमेनिटीज़ एंड सोशल साइंसेज, आईआईटी गुवाहाटी, असम, व्याख्यान के लिए साधन जुटाने वाले व्यक्ति थे। डॉ. आर. लक्ष्मी, विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग ने प्रतिभागियों एवं अतिथि वक्ताओं का भी स्वागत किया। डॉ. जी. विजयलक्ष्मी, प्रिंसिपल, गवर्नमेंट कॉलेज फॉर वीमेन, तिरुवनंतपुरम, ने अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि इस तरह के कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं ताकि छात्रों को उनकी शैक्षणिक गतिविधियों में अधिक से अधिक अवसर मिलें। व्याख्यान का विषय "एनिमल राइट्स एंड वेलफेयर एंड इट्स एथिकल इम्प्लिकेशन्स विथ स्पेशल रिफरेन्स टू पीटर सिंगर" था। इस कार्यक्रम में दर्शनशास्त्र विभाग, केरल विश्वविद्यालय,

यूनिवर्सिटी कॉलेज, तिरुवनंतपुरम के साथ–साथ गवर्नमेंट कॉलेज फॉर वुमन, तिरुवनंतपुरम के छात्रों और फैकल्टी ने कार्यक्रम में भाग लिया। दर्शनशास्त्र विभाग के डॉ. एल. विजई ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

6. 5 जनवरी 2018 को भा.दा.अ.प. द्वारा प्रायोजित शैलबाला विमेंस (स्वायत्त) कॉलेज ने "एनवायर्नमेंटल एंड ह्यूमन वैल्यूज" विषय पर आवधिक व्याख्यान का आयोजन किया गया। स्वागत भाषण डॉ कादम्बिनी दास (प्राचार्य) ने दिया। श्रीमती मधुलिता साहू ने अतिथियों का परिचय कराया और श्रीमती नर्मदा कुमारी परिदा, विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग, ने व्याख्यान का विषय प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के वक्ता डॉ. मनोज कुमार पांडा ने "वैल्यू, नोर्मेटिविटी एंड नेचुरल वर्ल्ड" विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। प्रोफेसर सरोज कुमार मोहंती ने "वैल्यू इन एनवायरनमेंट" विषय पर बात की। महाविद्यालय की ओर से श्रीमती नर्मदा कुमार परिदा द्वारा धन्यवाद–प्रस्ताव दिया गया।

7. 8 जनवरी 2018 को डॉ. राधा कुमार, एसोसिएट प्रोफेसर, प्राचीन इतिहास, संस्कृति और पुरातत्व सेंट जेवियर्स कॉलेज, मुंबई द्वारा आवधिक व्याख्यान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। व्याख्यान "आलमपुर एंड एस्थेटिक्स–ए कोन्फ़्लुएन्स" का संबंध भारतीय सौंदर्यशास्त्र पर था। डॉ. राधा ने संगीत और नृत्य के माध्यम से छात्रों के लिए कार्यक्रम को रुचिकर बनाया।

   18 जनवरी 2018 को दूसरा व्याख्यान, डॉ. राधाकृष्णन पिल्लई, संयुक्त निदेशक, सी.आई.आई.आई., यूनिवर्सिटी ऑफ़ मुंबई द्वारा "कौटिल्यास अर्थशास्त्र–रेडिस्कवरिंग दी फिलोसोफिकल डाईमेन्शन" विषय पर संबोधित किया गया। उन्होंने चाणक्य के जीवन की एक झलक प्रस्तुत किया और मूलग्रंथ के अध्ययन पर जोर दिया।

   1 फरवरी 2018 को तीसरा व्याख्यान डॉ. मीनल कातरनिकर, एसोसिएट प्रोफेसर, मुंबई विश्वविद्यालय द्वारा "एपिस्टेम एंड विजडमः डाईमेन्शन्स ऑफ़ नॉलेज इन इंडियन ट्रेडिशन" विषय पर दिया गया जिसमे ज्ञान प्राप्त करने में उद्देश्यपूर्ण समझ और भारतीय तत्वमीमांसा को समझने में इसकी सक्रिय भूमिका को प्रस्तुत किया।

   15 फरवरी 2018 को चौथा व्याख्यान, डॉ. सुचित्रा नाइक, प्रिंसिपल, जोशी बेडेकर कॉलेज, ठाणे द्वारा "फिलोसोफिकल काउंसलिंग – ए ब्लूप्रिंट टू डु फिलॉसॉफी" पर दिया गया। उन्होने शास्त्रीय दर्शन के अनुप्रयोग और मनोविज्ञान के साथ अपने संबंधों को समझाकर इसे आगामी व्यवसाय विकल्प के रूप में प्रस्तुत किया गया।

   सहकर्मी, स्नातक और स्नातकोत्तर छात्र भी इन व्याख्यानों में शामिल हुए।

8. दर्शनशास्त्र विभाग, बी.जे.बी. (ऑटोनॉमस) कॉलेज, भुवनेश्वर ने कॉलेज के हॉल में 15 जनवरी 2018 को भा.दा.अ.प., नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित आवधिक व्याख्यान कार्यक्रम का आयोजित किया। कार्यक्रम के आरम्भ में ही, कॉलेज के प्रिंसिपल डॉ. प्रसन्ना कुमार मोहंती ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया और राज्य के विभिन्न हिस्सों से आए दर्शनशास्त्र के शिक्षक–प्रतिभागियों, सहयोगी विभागों के सदस्यों और संकाय सदस्यों को संगोष्ठी में स्वागत किया। डॉ. हरिश्चंद्र साहू, विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र, ने विषयों का विवरण पेश किया और वक्ताओं का औपचारिक परिचय दिया। प्रोफेसर सरोज कुमार मोहंती, पूर्व प्रोफेसर और विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र, उत्कल विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर ने "दी एनवायरनमेंटल एथिक्स" विषय पर व्याख्यान करते हुए मानवशास्त्रीय, जैव–केंद्रित और ईको–केंद्रित विचारों की सीमाओं पर चर्चा की। ये सभी विचार अपर्याप्त हैं। इसलिए, पूरे जैविक समुदाय को पुनर्स्थापित करने, उनकी सुरक्षा और संरक्षण के लिए पर्यावरणीय नैतिकता के लिए समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता है। डॉ. सुधीर कुमार दास ने "बिजनेस–एथिक्स एंड सीएसआर" विषय पर चर्चा किया। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि अच्छा व्यवसाय नैतिकता पर आधारित होना चाहिए। कॉर्पोरेट क्षेत्र में समाज के विकास के प्रति कुछ कर्तव्य और जिम्मेदारियां हैं। प्रोफ़ेसर धनेश्वर साहू ने "इंटररिलिजियस हार्मनी एंड पीस" विषय पर बात की। उन्होंने धर्मनिरपेक्षता, तर्कसंगत और मानवतावादी दृष्टिकोण पर आधारित एक वास्तविक समाज की संभावना के पक्ष में वकालत की। व्याख्यान के अंत में, दुविधाओं को स्पष्ट करने के लिए प्रश्न–उत्तर सत्र था। डॉ. रीता पति, वाइस–प्रिंसिपल ने सभी प्रतिभागियों को शिष्टाचार के अनुकूल धन्यवाद दिया।

9. 18 जनवरी 2018 को प्रोफेसर प्रीतम सिंह द्वारा दर्शनशास्त्र और अर्थशास्त्र विभाग, मेहर चंद महाजन डीएवी कॉलेज फॉर विमेन, चंडीगढ़ ने व्याख्यान का आयोजन किया। प्रोफेसर प्रीतम सिंह, 'ऑक्सफोर्ड ब्रूक्स बिजनेस स्कूल, हेडिंगटन स्कूल, ऑक्सफोर्ड में अर्थशास्त्र के प्रतिष्ठित प्रोफेसर हैं। उन्होने "एनवायर्नमेंटल एथिक्स ऑफ़ इंडिविजुअल एंड कलेक्टिव रिस्पांसिबिलिटी टू सेव दी प्लेनेट अर्थ" विषय पर शोध परक व्याख्यान किया।

   महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ. निशा भार्गव ने समारोह की अध्यक्षता की। उन्होंने समारोह के आयोजन में अर्थशास्त्र और दर्शनशास्त्र विभाग के संयुक्त प्रयास की सराहना की तथा वित्तीय सहायता के लिए भा.दा.अ.प., नई दिल्ली को धन्यवाद दिया। व्याख्यान में इस कॉलेज के छात्रों, संकाय सदस्यों के साथ–साथ विभिन्न कॉलेजों के शिक्षक एवं विद्यार्थीयों ने भाग लिया।

10. 18 जनवरी 2018 को दर्शनशास्त्र विभाग, सालिपुर स्वायत्त महाविद्यालय, सलीपुर ने "एनवायर्नमेंटल

एथिक्स" विषय पर सामयिक व्याख्यान कार्यक्रम का आयोजन किया। डॉ. हरीश चंद्र साहू, एसोसिएट प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र, बी.जे.बी. ऑटोनोमस कॉलेज, भुवनेश्वर द्वारा व्याख्यान दिया गया। अपने भाषण में, उन्होंने "पर्यावरण" के साथ–साथ "नैतिकता" की धारणा को विस्तार से स्पष्ट किया। उनके लिए, पर्यावरण नैतिकता ऐसे आधुनिक समाज के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उन्होंने पर्यावरण नैतिकता के तीन अलग–अलग तरीकों जैसे जैव–केंद्रवाद, मानवशास्त्र और पर्यावरण–केंद्रितवाद के बारे में बात की। उनमें से 'पर्यावरण–केंद्रवाद' दृष्टिकोण उत्कृष्ट है और इसे अपनाया जाना चाहिए। उन्होंने छात्रों द्वारा उठाए गए संदेह को स्पष्ट किया। दोपहर के सत्र में, एक अन्य सामयिक व्याख्यान में डॉ बिधू प्रसाद पात्रा, एक्स.आई.बी.एम., भुवनेश्वर में प्रोफेसर द्वारा "प्रोफेशनल एथिक्स" विषय पर विशेष रूप से चिकित्सा नैतिकता पर व्याख्यान दिया। अपने भाषण में, उन्होंने डॉक्टर और रोगी के बीच उचित संबंध को बताया। उन्होंने इस मामले पर तीन तरह के विचारों, जैसे पैतृकवाद, व्यक्तिवाद और पारस्परिक दृष्टिकोण के बारे में विस्तार से चर्चा की। उनमें से पारस्परिक दृष्टिकोण अधिक नैतिक है और सभी मामलों में अपनाया जाना चाहिए। उन्होंने छात्रों द्वारा उठाए गए संदेह को स्पष्ट किया।

11. पोस्ट ग्रेजुएट एंड रिसर्च डिपार्टमेंट ऑफ इकोनॉमिक्स, सरस्वती नारायणन कॉलेज, मदुरै द्वारा "इकनोमिक थॉट्स ऑफ़ तिरुवल्लुवर, गांधीयन फिलॉसॉफी एंड इकॉनोमिक डेवलपमेंट, इकोनॉमिक्स ऑफ़ सोशल रिस्पांसिबिलिटी एंड एथिक्स" विषय पर 24 जनवरी 2018 को भा.दा.अ.प. द्वारा प्रायोजित एक दिवसीय सामयिक व्याख्यान का आयोजित किया गया। श्री एम. जयकुमार, एसोसिएट प्रोफेसर और अर्थशास्त्र विभाग के प्रमुख, ने सभा का स्वागत किया। डॉ. एम. कन्नन, प्राचार्य, ने अपने उद्घाटन भाषण में ट्रस्टीशिप और सर्वोदय के सिद्धांत के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने अर्थशास्त्र विषय की सराहना करते हुए इस विषय को चुना जो वैश्विक अर्थव्यवस्था के युग में अधिक प्रासंगिक है। डॉ. एस. वेंकटचलम ने अपने मुख्य भाषण में कहा कि भारतीय संस्कृति के पश्चिमीकरण के वर्तमान चलन को रोकने के लिए महात्मा गांधी के आर्थिक दर्शन का अभ्यास करने की तत्काल आवश्यकता है। डॉ. ई. रविकुमार ने थ्रूवल्लुवर के आर्थिक विचारों पर बात की। उन्होंने कहा कि थिरुक्कुरल में प्रतिपादित किए गए आर्थिक विचार व्यापक और पूर्ण हैं। आयोजन सचिव डॉ. के. सुब्रमण्यन ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया।

12. दर्शनशास्त्र विभाग, विवेकानंद कॉलेज, ठाकुरपुकुर, कोलकाता में दर्शनशास्त्र विभाग द्वारा "दी स्टेटस ऑफ़ वीमेन इन बुद्धिज़्म" विषय पर 30 जनवरी 2018 को भा.दा.अ.प. द्वारा प्रायोजित आवधिक व्याख्यान आयोजित किया गया। प्रोफेसर डॉ. ऐश्वर्या विश्वास, प्रमुख, बुद्धिस्ट स्टडी विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता ने "ऐवोलुशनरी कॉन्सेप्ट्स ऑफ़ बुद्धिस्ट इमांसपेशन

एंड वीमेनःए स्टडी फ्रॉम पाली लिटरेचर" विषय पर व्याख्यान दिया, जबकि डॉ. सुभासिस बरुआ (सुमनपाल भिक्खु), प्रोफेसर, पाली विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय, ने "दी स्टेटस ऑफ़ वीमेन इन बुद्धिज़्म : एन ओवरव्यू" विषय पर भाषण दिया। व्याख्यान श्रृंखला में संकाय सदस्यों और अनुसंधान विद्वानों के साथ दर्शनशास्त्र विभाग के लगभग 100 छात्रों ने भाग लिया। कॉलेज के अकादमिक समन्वयक डॉ. अरविंद पान ने स्वागत भाषण दिया। प्रोफेसर प्रज्ञा भट्टाचार्य ने विशिष्ट वक्ताओं का श्रोताओं से परिचय कराया। कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष और समन्वयक डॉ. तृप्ति धर ने वर्तमान परिदृश्य में विषय की प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला और इस बात पर भी बल दिया कि इस कॉलेज के छात्रों की समझ और विकास के लिए, मुख्य रूप से पहली पीढ़ी के विद्यार्थियों के लिए इस प्रकार की व्याख्यान श्रृंखला की आवश्यकता है।

डॉ. धर ने धन्यवाद प्रस्ताव दिया और इस तरह के महत्वपूर्ण तथा प्रासंगिक विषय पर विशिष्ट वक्ताओं द्वारा परिचर्चा को आयोजित करने के हेतु भा.दा.अ.प. द्वारा वित्तीय सहायता के लिए आभार व्यक्त किया।

13. 6 फरवरी 2018 को भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित और दर्शनशास्त्र विभाग, गया कॉलेज, गया द्वारा मुंशी प्रेमचंद सभागार, गया कॉलेज, गया में आवधिक व्याख्यान कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रोफेसर (डॉ.) क़मर एहसान, कुलपति, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया, कार्यक्रम के मुख्य अतिथि और उप कुलपति प्रोफेसर (डॉ) के.एन. पासवान की अनुपस्थित में रजिस्ट्रार प्रोफेसर (डॉ) शैलेश कुमार सिंह सम्मानीय अतिथि थे।। आमंत्रित वक्ताओं में प्रोफेसर (डॉ.) रमेश चंद्र सिन्हा, पूर्व अध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना और प्रोफेसर (डॉ.) पूनम सिंह, प्रमुख, दर्शनशास्त्र विभाग, पटना विश्वविद्यालय, पटना शामिल थे। कार्यक्रम के दौरान मंच पर मौजूद प्रोफेसर (डॉ.) बी. आर. यादव, अध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया; प्रोफेसर (डॉ.) डी.के. सिन्हा, प्राचार्य, गया कॉलेज, गया और प्रोफेसर (डॉ.) शशि सिंह, अध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग, गया कॉलेज, गया। दर्शनशास्त्र विभाग के अध्यक्ष डॉ. शशि सिंह ने श्रोताओं और अतिथि को व्याख्यान के विषय को प्रस्तुत किया। मगध विश्वविद्यालय, बोध गया, के कुलपति प्रोफेसर (डॉ.) क़मर एहसान ने श्रोताओं को संबोधित किया तथा अपने विचार प्रस्तुत किए और छात्रों को अपने–अपने क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए प्रेरित किया। इसके पश्चात, प्रथम वक्ता प्रोफेसर (डॉ.) रमेश चंद्र सिन्हा, भूतपूर्व विभागाध्यक्ष, पटना विश्वविद्यालय, पटना द्वारा व्याख्यान प्रस्तुति की गई। उन्होंने "मार्जिनल मोरालिटी एंड मॉडर्न एथिकल प्रोब्लेम्स" विषय पर बात की। इसके बाद (डॉ) पूनम सिंह, विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग, पटना विश्वविद्यालय, का व्याख्यान हुआ। उन्होंने "वीमेन

पावरः एन एसेंशियल एलिमेंट ऑफ़ इकोनोमिक ग्रोथ" विषय पर बात की। ये व्याख्यान छात्रों और अन्य विभागों के संकाय सदस्यों द्वारा प्रश्न और उत्तर सत्र के बाद किए गए थे। अंत में, प्रोफेसर (डॉ.) बी.आर. यादव, प्रमुख, दर्शनशास्त्र विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोध गया ने अपने विचार प्रस्तुत किए और प्रोफेसर (डॉ.) गौतम कुमार सिन्हा, दर्शनशास्त्र विभाग, गया कॉलेज, गया ने शिष्टाचार के अनुकूल धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

14. 13 फरवरी 2018 को भारतीय दर्शनशास्त्र अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित और दर्शनशास्त्र विभाग, मिदनापुर कॉलेज (स्वायत्तशासी) ने आवधिक व्याख्यान आयोजित किया, ताकि दर्शनशास्त्र के विषय में ऑनर्स और सामान्य दोनों के ज्ञान को समृद्ध किया जा सके। डॉ. दीपायन पट्टनायक, दर्शनशास्त्र के एसोसिएट प्रोफेसर, जादवपुर विश्वविद्यालय को विद्वान वक्त के रूप में आमंत्रित किया गया था। डॉ. पापिया गुप्ता ने "बुद्धिस्ट एथिक्स एंड मोरालिटी : ए ब्रीफ स्केच" विषय पर व्याख्यान दिया। उन्होंने छात्रों को यह समझाने की कोशिश किया कि बुद्ध द्वारा तैयार किए गए श्रमण के लिए आचरण (पंच–शिला) के पांच प्रमुख नियम आज भी समाज में शांति से रहने के लिए प्रासंगिक हैं। व्याख्यान के अंत में, उन्होंने छात्रों के साथ बातचीत की। डॉ. दीपायन पट्टनायक ने "व्हाई वी शुड थिंक ऑदर्सः ए क्रिटिकल एस्टीमेट ऑफ़ यूंटिलिटरियनिस्म" शीर्षक से व्याख्यान दिया। उन्होंने छात्रों को स्पष्ट रूप से समझाया कि उन्होंने इस संसार में जन्म लिया है तो समाज के लिए उनके कुछ कर्तव्य एवं जिम्मेदारियां हैं। डॉ. गोपाल चंद्र बेरा, प्रिंसिपल, मिदनापुर कॉलेज; डॉ. सुधामॉय घोष, प्रोफेसर सुधींद्रनाथ बाग, विभागाध्यक्ष, राजनीति विज्ञान; इतिहास विभाग के प्रोफेसर सत्य रंजन घोष कार्यक्रम में उपस्थित थे। दर्शनशास्त्र के सभी संकायों, 120 छात्रों और 2 एम. फिल छात्रों (जादवपुर विश्वविद्यालय) ने कार्यक्रम में भाग लिया।

15. 15 फरवरी 2018 को भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित और दर्शनशास्त्र विभाग, डी.के.डी. कॉलेज, डरगाँव, द्वारा कॉलेज के जे.एन. हजारिका मेमोरियल कॉन्फ्रेंस हॉल में आवधिक कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत श्री निरंजन हालोई, विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग द्वारा किया गया। डॉ. गिरीश बरुआ ने आमंत्रित विद्वान वक्ता व्यक्ति के रूप में भाग लिया और कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. पुणेश्वर बोरा, सेवानिवृत्त प्राचार्य, डी.के.डी. कॉलेज, डरगाँव द्वारा किया गया। इसके अतिरिक्त, श्री एन.सी. दास, कॉलेज के उप–प्राचार्य ने स्वागत भाषण दिया। श्री एन. हलोई ने आमंत्रित विद्वान वक्ता का परिचय दिया। डॉ. बरुआ ने भगवत् गीता की उत्पत्ति और विकास के बारे में संक्षिप्त जानकारी दी। डॉ. बरुआ ने कहा कि स्वधर्म की गीता की अवधारणा सभी लोगों के लिए एक

सार्वकालीन मूल्य है। यह मनुष्य को सिखाता है कि कर्तव्य के लिए स्वयं का कर्तव्य कैसे निभाया जाए। डॉ. बरुआ के व्याख्यान के बाद छात्रों और संकाय सदस्यों के साथ दिलचस्प बातचीत हुई, जिन्होंने कुछ प्रासंगिक सवाल उठाए। डॉ. बिटोपन बोरा (छात्र), निरंजन हालोई, अबुल कलाम आदि ने बातचीत में भाग लिया। इस अवसर पर श्री बोधेश्वर काकाती, वैष्णव विद्वान और अध्यक्ष, डी.के.डी. कॉलेज शासी निकाय, विशिष्ट अतिथि थे और इस तरह के दिलचस्प विषय के चयन के लिए आयोजक की सराहना की। वित्तीय सहायता देने के लिए भा.दा.अ.प. को भी धन्यवाद दिया गया। कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ. पुणेश्वर बोरा, सेवानिवृत्त प्राचार्य, डी.के.डी. कॉलेज, ने भी गीता के शिक्षण के महत्व और प्रासंगिकता के बारे में संक्षिप्त विवरण की सराहना की।

16. 14 और 16 मार्च 2018 को भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित और दर्शनशास्त्र विभाग, आर्य महिला पी.जी. कॉलेज ने व्याख्यान श्रृंखला 2017–18 का आयोजन किया। विभिन्न संस्थानों से प्रमुख विद्वानों द्वारा चार व्याख्यान दिए गए। व्याख्यान में कॉलेज के विभिन्न विभागों के शिक्षकों और लगभग 150 छात्रों ने भाग लिया। हर व्याख्यान के बाद, प्रश्न और चर्चाएँ की गईं। 16 फरवरी 2018 को, प्रोफेसर सच्चिदानंद मिश्रा, दर्शनशास्त्र और धर्म विभाग, बीएचयू द्वारा "नॉलेज ऑफ़ इंडियन फिलॉसॉफी" और प्रोफेसर आर.पी. द्विवेदी, गांधीयन स्टडी सेंटर, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के लिए "सेवन सोशल सीन्स अकॉर्डिंग टू गाँधी" विषय पर पहला व्याख्यान दिया। अन्य दो व्याख्यान 14 मार्च 2018 को आयोजित किए गए। प्रोफेसर सुधाकर मिश्रा, पूर्व प्रमुख, वेदांत विभाग, सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी ने "वेदांत साहित्य" विषय पर और प्रोफेसर रामपाल पांडे, विभागाध्यक्ष, न्याय–वैशेषिका विभाग सपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी ने "न्याय दर्शन के सिद्धान्त" विषय पर व्याख्यान दिया।

17. 27 फरवरी 2018 को भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित, द हिंदू कॉलेज, अमृतसर ने "रेलेवंस ऑफ़ एथिक्स इन मॉडर्न टाइम्स" शीर्षक से आवधिक व्याख्यान आयोजित किया गया। प्रोफेसर अनु कंधारी ने व्याख्यान के विषय का परिचय दिया और आदरणीय अतिथि का स्वागत किया। डॉ. मनविंदर सिंह (वरिष्ठ सहायक प्रोफेसर) और डॉ. मोहबत सिंह (सहायक प्रोफेसर), गुरु नानक अध्ययन विभाग, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय; डॉ. अनीता मेनन, प्रिंसिपल, डी.ए.वी. कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन फॉर वीमेन, अमृतसर; डॉ. विपन कुमार, प्रमुख, दर्शनशास्त्र विभाग तथा डॉ. कुलदीप सिंह आर्य, प्रमुख, संस्कृत विभाग ने व्याख्यान में भाग लिया। सभागार में लगभग 120 छात्र उपस्थित थे। प्राचार्य, डॉ. पी.के. शर्मा ने सभी आदरणीय अतिथियों को सम्मानित किया। प्रथम वक्ता डॉ. मनविंदर सिंह थे, जिन्होंने युवाओं के

लिए अर्थ, परिभाषा की नैतिकता और उसकी प्रासंगिकता को आलोकित किया। दूसरे वक्ता डॉ. मोहबत सिंह थे जिन्होंने नैतिकता की प्रकृति पर प्रकाश डाला और छात्रों को प्रेरित किया कि शिक्षा का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति के अपने आचरण को बेहतर करना और योग्य नागरिक बनाना है तथा नैतिकता का मुख्य कार्य मानवीय आचरण का आत्मीय आदर्श को प्राप्त करना है। तीसरी वक्ता डॉ अनीता मेनन, प्रिंसिपल, डी.ए.वी. कॉलेज ऑफ एजुकेशन फॉर विमेन, अमृतसर। उन्होंने छात्रों को व्यावहारिक जीवन में नैतिक मूल्यों को लागू करने के लिए प्रेरित किया जो जीवन के प्रति मनुष्य के दृष्टिकोण के आंतरिक परिवर्तन से संभव है। अंत में, हिंदू कॉलेज के प्राचार्य, डॉ. पी.के. शर्मा ने सभी सम्मानित विद्वानों को धन्यवाद दिया और छात्रों को प्रेरित किया कि अच्छे आचरण के दर्शन का अर्थ है स्वयं का पूर्ण एकीकरण, जो वर्तमान जीवन में आदर्श और अभ्यास का समन्वय है।

18. 19 फरवरी 2018 को भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित तथा दर्शनशास्त्र विभाग, श्री नारायण कॉलेज, चेरतला, अलाप्पुझा द्वारा आवधिक व्याख्यान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। व्याख्यानमाला का शीर्षक "प्रैक्टिकल इम्प्लिमेंट्स ऑफ इंडियन फिलॉसफी" था। पहले व्याख्यान के लिए संसाधन व्यक्ति डॉ. उन्नीकृष्णन पी., सहायक प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग, श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, कलदी थे। व्याख्यान का स्थान गुरुवर सेमिनार हॉल, श्री नारायण कॉलेज, चेरथला चुना गया था। डॉ. सौम्या आर.वी., विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग, ने संसाधन व्यक्ति के साथ–साथ प्रतिभागियों का स्वागत किया। डॉ. उन्नीकृष्णन पी. द्वारा "रेविसिटिंग दी प्रैक्टिकल आस्पेक्ट्स ऑन इंडियन फिलॉसॉफी" विषय का चुनाव किया गया था।

डॉ. राधारानी पी. द्वारा व्याख्यान के लिए दूसरा विषय "प्रैक्टिकल इम्प्लिकेशन्स ऑफ़ हेटेरोडॉक्स सिस्टम इन इंडिया" का चुनाव किया गया। हालांकि शीर्षक में अभिव्यक्ति धर्म–विरूद्ध पद्धतियां शामिल हैं, लेकिन उन्होंने अपने व्याख्यान के दायरे को जैन धर्म के व्यावहारिक प्रभाव तक सीमित कर दिया। बातचीत में, उन्होंने जैन धर्म के तत्वमीमांसा के सिद्धांतों के बारे में विस्तार से बताया। चार्वाक, जैन धर्म और बौद्ध धर्म इनकी दार्शनिक अवधारणाओं को इसके व्यावहारिक दृष्टिकोण से समझा जा सकता है। श्रीमती जयलक्ष्मी अम्मा एस., संकाय, दर्शनशास्त्र विभाग, ने कार्यक्रम के लिए धन्यवाद प्रस्ताव रखा।

तीसरा व्याख्यान का विषय "डूइंग फिलॉसफीः ट्रेडिशन्स इन इंडिया" डॉ. गैस्पर के.जे. द्वारा चुना गया। कार्यक्रम की शुरुआत दर्शनशास्त्र विभाग के प्रमुख डॉ. सौम्या आर.वी. के स्वागत

भाषण से हुई। व्याख्यान में इस बात पर महत्त्व दिया कि दर्शनशास्त्र को समझा जा सकता है, अभ्यास किया जा सकता है और दूसरों को अभ्यास कराया जा सकता है। व्याख्यान ने वैश्विक स्तर पर एक अकादमिक अनुशासन के रूप में दर्शनशास्त्र की संभावना पर एक स्पष्ट तस्वीर दी।

19. 10 मार्च 2018 को प्रोफेसर रघुनाथ घोष, प्रोफेसर एमेरिटस ऑफ फिलॉसफी, यूनिवर्सिटी ऑफ नॉर्थ बंगाल, ने मयनागुरी कॉलेज में "द कॉन्सेप्ट ऑफ लक्षण इन न्याय फिलॉसफी" विषय पर व्याख्यान दिया और 12 फरवरी 2018 को प्रोफेसर कांतिलाल दास, दर्शनशास्त्र विभाग, ऑफ नॉर्थ बंगाल यूनिवर्सिटी, मयनागुरी कॉलेज में "रोल ऑफ़ लैंग्वेज इन लॉजिक" विषय पर व्याख्यान दिया। आरम्भ में, मयनागुरी कॉलेज के शिक्षक सुष्मिता पंडित, शिक्षक–प्रभारी, ने स्वागत भाषण दिया। व्याख्यान कार्यक्रम में कॉलेज के छात्रों और शिक्षकों ने बड़ी संख्या में भाग लिया। प्रोफेसर रघुनाथ घोष ने किसी शब्द या वाक्य का निहितार्थ अर्थ और हमारे जीवन और दिन–प्रतिदिन के व्यवहार में इसकी उपयोगिता पर चर्चा की। प्रोफेसर कांतिलाल दास, दर्शनशास्त्र विभाग, यूनिवर्सिटी ऑफ नॉर्थ बंगाल, ने व्याख्यान में तर्क के माध्यम से भाषा के महत्व को समझाया।

20. 10 मार्च 2018 को भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद द्वारा प्रायोजित तथा दर्शनशास्त्र विभाग, डी.एम. कॉलेज ऑफ आर्ट्स, इम्फाल ने कॉलेज आई.क्यू.ए.सी.ए. सभागार में आवधिक व्याख्यान आयोजित किया गया। महाविद्यालय के प्राचार्य, श्री सरगजीत खुंदरकपम व्याख्यान के मुख्य अतिथि थे और डॉ. ख. गोकुलचंद्र सिंह, दर्शनशास्त्र विभाग के प्रमुख समारोह के अध्यक्ष थे। आवधिक व्याख्यान दो प्रतिष्ठित विद्वानों द्वारा दिया गया था। डॉ. ए. दोरेन्द्र सिंह, सेवानिवृत प्राचार्य, डी.एम. कॉलेज ऑफ आर्ट्स, इम्फाल और वर्तमान में अतिथि संकाय, दर्शनशास्त्र विभाग, मणिपुर विश्वविद्यालय, कांचीपुर द्वारा पहला व्याख्यान "कान्ट्स कॉपर्निकन रेवोल्यूशन इन एपिस्टेमोलॉजी" विषय पर दिया गया था। उन्होंने कांट के जीवन और सामान्य रूप से काम करने की संक्षिप्त पृष्ठभूमि के बारे में तथा कांट के ज्ञानवाद पर चर्चा किया।

    दूसरा व्याख्यान प्रोफेसर एस. लोकेंद्रजीत सिंह, सेवानिवृत्त, दर्शनशास्त्र और मानविकी विभाग के डीन, मणिपुर विश्वविद्यालय द्वारा दूसरा व्याख्यान "दी एस्थेटिक मैस्टिसिस्म ऑफ़ मणिपुरी वैष्णविज्म" विषय पर था। मणिपुर की वैष्णव परंपरा देश के अन्य हिस्सों के वैष्णववाद से बहुत भिन्न है। उन्होंने धर्मशास्त्र और रहस्यवाद की पश्चिमी परंपरा से अपना व्याख्यान शुरू किया, विशेष रूप से सोरेन कीर्केगार्ड का और बाद में इसे मणिपुरी वैष्णववाद के रहस्यवाद से जोड़ा।

कार्यक्रम का समापन दर्शनशास्त्र विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर एन. राजेन सिंह द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव के साथ किया गया।

21. 12 मार्च 2018 को भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद द्वारा प्रायोजित तथा दर्शनशास्त्र विभाग, खेराजाखट कॉलेज, लखीमपुर, असम के साथ आई.क्यू.ए.सी. के सहयोग से खेराजकहाट कॉलेज कॉन्फ्रेंस हॉल में आवधिक व्याख्यान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम शुरू करने से पहले महात्मा गांधी, सर्वपल्ली राधाकृष्णन और स्वामी विवेकानंद को भारतीय दर्शन में योगदान के लिए स्मरण में पुष्पांजलि दी गई। कार्यक्रम का आरम्भ खेरजाखट कॉलेज के पूर्व प्राचार्य डॉ. हेमचंद्र गोस्वामी ने दीप प्रज्ज्वलित से हुआ। अपने संक्षिप्त भाषण में, डॉ. हेमचंद्र गोस्वामी ने विशेष रूप से बताया कि दर्शन, पढ़ने, लिखने, सुनने और दूसरों से बात करने का बौद्धिक अभ्यास केवल अधिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए नहीं था, बल्कि इस ज्ञान को प्रयोग में लाना भी था। उद्घाटन भाषण खेरजाखट कॉलेज की प्रिंसिपल डॉ. कल्पना गोस्वामी द्वारा दिया गया। अपने संबोधन में, उन्होंने हमारे जीवन के दार्शनिक दृष्टिकोण पर ध्यान केंद्रित किया और सभी से बेहतर दार्शनिक अर्थ के लिए आग्रह किया। श्री भूपेन हजारिका, प्रमुख, दर्शनशास्त्र विभाग, खराजकाट कॉलेज ने स्वागत भाषण दिया। नॉर्थ लखीमपुर कॉलेज (स्वायत्त) की सहायक प्रोफेसर डॉ. बोर्नाली बोराह ने "फिलॉसफी फॉर लाइफ" विशिष्ट विषय पर भाषण दिया। डॉ. दिलीप कुमार भुइयां ने अध्यक्ष के रूप में ज्ञानवर्धक भाषण दिया। उन्होंने टिप्पणीस्वरूप कहा कि एक दार्शनिक प्रणाली अस्तित्व का एक एकीकृत दृष्टिकोण है। यह एक अध्ययन है जो अस्तित्व और वास्तविकता के रहस्यों को समझना चाहता है। अध्यक्ष ने विदाई कार्यक्रम में प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र बांटे। अंत में, कार्यक्रम का समापन डॉ. तिलिका बरुआ द्वारा प्रस्तुत धन्यवाद प्रस्ताव के साथ समाप्त हुआ।

22. 14 मार्च 2018 को भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद द्वारा प्रायोजित तथा दर्शनशास्त्र विभाग, बांकुरा क्रिश्चियन कॉलेज, पश्चिम बंगाल द्वारा "सम मेन प्रोब्लेम्स ऑफ़ इंडियन एंड वेस्टर्न फिलॉसॉफी" विषय पर आवधिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के आयोजन सचिव डॉ. अनुपम जश, प्रमुख, दर्शनशास्त्र विभाग, बांकुरा क्रिश्चियन कॉलेज, पश्चिम बंगाल ने प्रतिष्ठित वक्ताओं, अतिथियों का स्वागत किया और कार्यक्रम की विषयवस्तु का संक्षिप्त परिचय भी दिया। डॉ. फाटिक बरन मंडल, प्रिंसिपल, बांकुरा क्रिश्चियन कॉलेज, और कार्यक्रम के अध्यक्ष तथा प्रोफेसर ममता बंद्योपाध्याय, पूर्व प्रोफेसर, यूनिवर्सिटी ऑफ़ बर्दवान और मुख्य अतिथि एवं कार्यक्रम के संसाधन व्यक्ति, ने दीप प्रज्जवलित किया और औपचारिक रूप से सेमिनार का उद्घाटन किया। प्रोफेसर बंद्योपाध्याय ने दर्शनशास्त्र और उसके विभिन्न पहलुओं, समस्याओं

और संभावनाओं के अध्ययन की प्रासंगिकता और महत्व का वर्णन किया। डॉ. समर कुमार मंडल, एसोसिएट प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग, जादवपुर विश्वविद्यालय ने अपना भाषण दिया और आवधिक व्याख्यान कार्यक्रम के मुख्य विषय पर प्रकाश डाला। बंकुरा विश्वविद्यालय के दर्शनशास्त्र विभाग के प्रमुख डॉ. कल्याण बनर्जी ने भी इस चर्चा में भाग लिया। छात्रों और प्रतिभागियों द्वारा पूछे गए सवालों के साथ उपयोगी चर्चा हुई।

23. 15 मार्च 2018 को भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद द्वारा प्रायोजित तथा पीजी एंड रिसर्च डिपार्टमेंट ऑफ फिलॉसफी, रिलिजन एंड कल्चर, पूमपुहर कॉलेज (ऑटोनॉमस), मेलैयूर, तमिलनाडु ने आवधिक व्याख्यान का आयोजन किया। प्राचार्य, पूमपुहर कॉलेज, के द्वारा व्याख्यान शुरू किया गया।

    कार्यक्रम में तमिल विभाग के प्रमुख को सम्मानित किया गया। आमंत्रित विद्वान वक्ता ने "एन आइडियलिस्टिक व्यू ऑफ लाइफ, इम्पैक्ट ऑफ मॉडर्न इंडियन फिलॉसफी ऑन सोशल चेंजेज एंड द फिलॉसफी ऑफ रामानुज" विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किए। अंततः,राष्ट्रीय गान के साथ कार्यक्रम समाप्त हुआ।

24. 20 मार्च 2018 को भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद द्वारा प्रायोजित तथा फिलॉसॉफी एंड साइकोलॉजी एसोसिएशन ऑफ गवर्नमेंट राजिंद्र कॉलेज द्वारा आवधिक व्याख्यान का आयोजन किया। प्रिंसिपल मुकेश कुमार अग्रवाल ने कार्यक्रम की अध्यक्षता किया। डॉ. शिवानी शर्मा (एसोसिएट प्रोफेसर) पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़ और डॉ. रविंदर पुरी (एसोसिएट प्रोफेसर), नेशनल कॉलेज, सिरसा आमंत्रित विद्वान वक्ता थे। डॉ. गुरजीत मान, विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग, ने व्याख्यान का विषय–वस्तु प्रस्तुत किया। उन्होंने वर्तमान समाज में गिरते नैतिक मूल्यों पर अपनी चिंता व्यक्त की। प्रधानाचार्य मुकेश कुमार अग्रवाल ने छात्रों को ऐसे कार्यक्रमों से सीखने और बहुमूल्य विचारों को ग्रहण करने के लिए प्रोत्साहित किया।

    डॉ. शिवानी शर्मा ने इस विषय पर बोलते हुए कहा, "मेन्स एक्सिस्टेंस एंड क्रेटिविटी : सम रेफ्लेक्शंस इन दी लाइट ऑफ़ एस्थेटिक्स" ने बताया कि अस्तित्व के तीन पहलू हैं, अर्थात् संज्ञानात्मक, सकारात्मक और प्रभावकारी।

    डॉ. रविंदर पुरी का विषय "शोर से संगीत की ओर" था। डॉ. पुरी ने कहा कि सभी मनुष्यों में शोर या संगीत हैं। जो लोग शोर करते हैं वे दूसरों के मन में भय, चिंता, घृणा और क्रोध की भावनाओं को जन्म देते हैं, जबकि जिस मनुष्य में संगीत हैं वे जीवन, आत्मविश्वास और स्नेह की भावनाओं को जन्म देते हैं।

कार्यकर्म में 200 से अधिक छात्र उपस्थित थे। आमंत्रित विद्वान वक्ता से प्रश्न पूछकर छात्रों ने उत्साह व्यक्त किया।

25. 27 मार्च 2018 को दर्शनशास्त्र विभाग और आई.क्यू.ए.सी.ए., अंगूरी कॉलेज, अंगुरु द्वारा आवधिक व्याख्यान का आयोजन किया गया। आवधिक व्याख्यान के समन्वयक और संसाधन व्यक्ति श्रीमती आशिमा खानिकर, सहायक प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग, जे.बी. कॉलेज, जोरहाट ने कहा कि वर्तमान समय के संदर्भ में, सामाजिक और राजनीतिक दर्शनशास्त्र बहुत महत्वपूर्ण विषय है। उन्होंने आवधिक व्याख्यान आयोजित करने के लिए आयोजक और कॉलेज का भी धन्यवाद किया। डॉ. सुमिता पुरक्षय, एसोसिएट प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग, जे.बी. कॉलेज, जोरहाट ने "ह्यूमन राइट्स" के मुद्दे पर अपना भाषण दिया। उन्होंने मानवाधिकार आंदोलन (पहली पीढ़ी, दूसरी पीढ़ी और तीसरी पीढ़ी) की उत्पत्ति और विकास के बारे में विचार विमर्श किया। डॉ. साहिदुल अहमद, सहायक प्रोफेसर, शिक्षा विभाग ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तावित किया।

26. 16 मार्च 2018 को भा.दा.अ.प. द्वारा प्रायोजित तथा दर्शन शास्त्र विभाग, गज़ोले महाविद्यालय, गज़ोले, मालदा, ने आवधिक व्याख्यान का आयोजन किया। दर्शन शास्त्र विभाग के प्रमुख डॉ. निरंकुश चक्रवर्ती ने वक्ताओं प्रोफेसर रघुनाथ घोष, नोर्थ बंगाल यूनिवर्सिटी, दार्जिलिंग, पश्चिम बंगाल का परिचय और डॉ. झाडेश्वर घोष, एसोसिएट प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र विभाग, गौर बंग विश्वविद्यालय, मालदा, पश्चिम बंगाल का परिचय कराया। उन्होंने कहा कि इस तरह के आयोजनों की इस समय अत्यन्त आवश्यक है तथा छात्रों को संबंधित विषय में उचित मार्गदर्शन और प्रेरणा दी जानी चाहिए। डॉ. शमसुल हक, प्रिंसिपल, गज़ोले महाविद्यालय, द्वारा कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता किया गया। डॉ. झाडेश्वर घोष ने "गांधीयन कन्सेप्शन ऑफ़ नॉन–वायलेंस एंड इट्स रेलेवंस टू एनवायर्नमेंटल क्राईसेस" विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। प्रोफेसर रघुनाथ घोष ने "दी कांसेप्ट ऑफ़ अहिंसा इन इंडियन ट्रेडिशन" विषय पर व्याख्यान दिया। कार्यक्रम के समाप्ति में, डॉ. निरंकुश चक्रवर्ती ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तावित किया और संकेत किया कि भा.दा.अ.प.–प्रायोजित आवधिक व्याख्यान विद्वान विशेषज्ञों के माध्यम से विषय के बुनियादी विषयों को सिखाने और परिचित करने के लिए महत्वपूर्ण कदम है।

14. पुस्तक अनुदान 2017–18

भा.दा.अ.प. पुस्तक अनुदान 2017–18 के लिए निम्नलिखित आवेदकों पर विचार किया गया है। पुस्तकों का अनुदान, संबंधित संस्थानों के पुस्तकालय में पुस्तकों को पहुंचाने और उपयोग करने के उद्देश्य से दिया जाता है, न कि व्यक्तिगत उपयोग के लिए।

क्र.सं.	पुस्तक अनुदान 2017–18 का अनुदान ग्राही नाम और पता
1.	टीचर–इन–चार्ज समुक्ताला सिधू कान्हु कॉलेज पीओः समुक्ताला, जि.ः अलीपुरद्वार पश्चिम बंगाल – 736206
2.	प्राचार्य एमसीएम डीएवी कॉलेज फॉर विमेन सेक्टर 36–ए चंडीगढ़
3.	सहायक निदेशक भारतीय भाषाओं का केंद्रीय संस्थान मानव संसाधन विकास मंत्रालय उच्च शिक्षा विभाग, भारत सरकार मानस गंगोत्री मैसूर –580 006
4.	प्रधानाचार्य रंगाची महाविद्यालय माजुली, असम
5.	प्रधानाचार्य उदलगुरी कॉलेज पीओ. उदलगुरी, जिला असम–784,509
6.	प्रधानाचार्य महिला महाविद्यालय तिनसुकिया –786125, असम

7. प्रभारी प्रधानाचार्य
कछार कॉलेज
प्रधान मार्ग
सिलचर–788,001

---

8. प्रधानाचार्य
अमृता स्कूल ऑफ आर्ट्स एंड साइंसेज
अमृता विश्व विद्यापीठम्
अमृतपुरी परिसर, क्लप्पना
पो. कोल्लम –690 525

---

9. प्रभारी प्रधानाचार्य
मयनागुरी कॉलेज
पोस्ट : मयनागुरी
जिलाः जलपाईगुड़ी, पश्चिम बंगाल –735224

---

10. कुल सचिव
राजीव गांधी राष्ट्रीय विधि विश्वविद्यालय
सिद्धूवाल, भादसों रोड
पटियाला –147 006

---

11. प्रधानाचार्य
बर्दवान राज कॉलेज
आफताब हाउस, फ्रेज़र एवेन्यू
पोस्ट और जिला : बर्दवान–713,104 पश्चिम बंगाल

---

12. प्रधानाचार्य
सिलीगुड़ी कॉलेज
सिलीगुड़ी पारा
जिलाः दार्जिलिंग, पश्चिम बंगाल –734001

---

13. प्रधानाचार्य
मिदनापुर कॉलेज (स्वायत्त)
मिदनापुर, पासीम मेदिनीपुर
पश्चिम बंगाल 721101

---

14. प्रधानाचार्य (कार्यकारी)
सत्यवती कॉलेज (साय)

	दिल्ली विश्वविद्यालय अशोक विहार, दिल्ली –110052
15.	प्रधानाचार्य संभु नाथ कॉलेज पोस्ट – लबपुर, बीरभूम पश्चिम बंगाल –731303
16.	प्रधानाचार्य एलीएज़र जॉर्डन मेमोरियल कॉलेज लेह–194,101
17.	कुल सचिव देव संस्कृति विश्वविद्यालय हरिद्वार

15. अंतर्राष्ट्रीय सहयोग

इस कार्यक्रम के तहत, निम्नलिखित चार देशों के साथ सहयोग प्रक्रियाधीन है।

यू.एस.ए. – काउंसिल फॉर रिसर्च इन वैल्यूज एंड फिलॉसफी, वाशिंगटन डीसी, अमेरीका

पीपल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना – गांधीवादी और भारतीय अध्ययन केंद्र, फुडन विश्वविद्यालय, पीपल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना

पीपल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना – स्कूल ऑफ सोशल साइंसेज, शंघाई यूनिवर्सिटी, पीपल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना के साथ सहयोग

वियतनाम – वियतनाम बौद्ध विश्वविद्यालय, एच.सी.एम.सी., वियतनाम

इरान – दर्शन शास्त्र में अनुसंधान के लिए संस्थान

16. भा.दा.अ.प. समग्र जीवनोपलब्धि सम्मान लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड 2017–18

प्रतिवेदन वर्ष के दौरान, भा.दा.अ.प. ने देश के प्रतिष्ठित विद्वान श्री यशदेव शल्य को दर्शनशास्त्र में उनकी उपलब्धियों और योगदान के लिए समग्र जीवनोपलब्धि सम्मान से सम्मानित किया।

भा.दा.अ.प. लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड कार्यक्रम 15 फरवरी 2018 को सेमिनार हॉल, सेंटर ऑफ एडवांस्ड स्टडी इन फिलॉसफी, राजस्थान यूनिवर्सिटी, जयपुर में आयोजित किया गया था। कार्यक्रम की शुरुआत सुबह 11:00 बजे दीप प्रज्ज्वलित करके हुई। राजस्थान विश्वविद्यालय के पी.जी. स्टडीज एंड रिसर्च विभाग के प्रमुख प्रोफेसर ए.वी. सिंह द्वारा स्वागत भाषण दिया गया। राजस्थान विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर आर.के. कोठारी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। श्री यशदेव शल्य के सम्मान में भा.दा.अ.प. की ओर से प्रोफेसर रजनीश कुमार शुक्ला, सदस्य सचिव, भा.दा.अ.प. की ओर से प्रशस्ति पत्र पढ़ा गया और श्री यशदेव शल्य को प्रोफेसर एस.आर. भट्ट, अध्यक्ष, भा.दा.अ.प., और राजस्थान विश्वविद्यालय के कुलपति द्वारा एक लाख रुपये की पुरस्कार राशि के चेक के साथ भेंट किया गया। प्रोफेसर आर.के. कोठारी ने सभा को संबोधित करते हुए युवा विद्वानों और शिक्षकों को श्री यशदेव शल्य के विशिष्ट शैक्षिक योगदान से प्रेरणा लेने के लिए प्रोत्साहित किया। प्रोफेसर एस.आर. भट्ट ने श्री यशदेव शल्य के महत्वपूर्ण योगदान और उन्हें सम्मानित करने के बारे में बात की। प्रोफेसर ए.डी.शर्मा, जिन्हें विशेष अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया था, ने श्री यशदेव शल्य के साथ अपने लंबे अकादमिक सहयोग और दर्शन के क्षेत्र में शोध पत्रों की विशिष्ट उपलब्धियों के बारे में बात की, विशेष रूप से हिंदी में मूल लेखन की।

कार्यक्रम में कई वरिष्ठ प्रोफेसरों और श्री शल्य के सहयोगियों ने भाग लिया। दर्शनशास्त्र के क्षेत्र में उनकी शानदार स्मृति, शैली और महत्वपूर्ण योगदान के बारे में बात की। प्रोफेसर बी. पाही, प्रोफेसर योगेश जैन, प्रोफेसर आर.के. शर्मा, प्रोफेसर कुसुम जैन (दर्शनशास्त्र, राजस्थान विश्वविद्यालय के सभी

पूर्व विभागाध्यक्ष) ने श्री शैल्य की शैक्षणिक उत्कृष्टता के बारे में बताया। इस अवसर पर अन्य विभागों और आसपास के कॉलेजों के संकाय सदस्य भी उपस्थित थे। श्री शल्य ने इस अवसर पर सभा को संबोधित करते हुए प्रोफेसर एस. आर. भट्ट, प्रोफेसर आर.के. शुक्ला और भा.दा.अ.प. के सदस्यों को इस पुरस्कार से सम्मानित करने के लिए धन्यवाद दिया। कार्यक्रम में श्री शल्य के परिजन भी उपस्थित थे। कार्यक्रम का समापन भा.दा.अ.प. के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. सुशीम दुबे द्वारा प्रस्तावित धन्यवाद प्रस्ताव से हुआ।

(प्रशस्ति पत्र)

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्

समग्र जीवनोपलब्धि सम्मान 2017–18

प्रशस्ति–पत्र

श्री यशदेव शल्य भारत के दार्शनिकों में अनन्यतम चिन्तक हैं। भारत में भारतीयता के मूल से जुड़े दार्शनिक के रूप में आपकी पहचान समकालीन दार्शनिक जगत् में आपको विशिष्ट स्थान प्रदान करती है।

दार्शनिक प्रतिभा के पारावार श्री शल्य एक ऐसे विचारक हैं जो स्वातन्त्र्योत्तर भारतीय दर्शन को पश्चिम के दार्शनिक प्रभामण्डल से मुक्त कर उसे भारत की पारम्परिक दार्शनिक परम्परा में रूपायित करते हैं। भारतीय दार्शनिक दृष्टि का समकालीन परिप्रेक्ष्य में उपवृंहण करते हुए समकालीन दार्शनिक चिन्तन को भाषिक स्वराज प्रदान करने वाले मूलान्वेषी और विशिष्टातिशय से युक्त एक चिन्तक के रूप में आपने दर्शन और अनुषङ्गी विद्यास्थानों को आपने गंभीरता से प्रभावित एवं परिष्कृत किया है। भारत की वैचारिकी को राष्ट्रभाषा 'हिन्दी' के राजपथ पर अग्रसर करते हुये आपने जो दार्शनिक स्थापनायें की हैं वह न केवल एक अनुपम बौद्धिक सम्पदा हैं बल्कि पाश्चात्य विचारों के अन्तराय से सींची हुई समसामयिक औपनिवेशिक भारतीयता का अपवाद भी हैं। आपके लिये 'दर्शन' ज्ञान की अन्यान्य विधाओं की तरह कोई विषयमूलक–व्यवस्था नहीं बल्कि ज्ञान का एक आत्मोन्मुख व्यापार है जो निरन्तर अपने आरंभ बिन्दु से प्रारंभ कर उसी पर लौटता है। दर्शन के स्वरूप विषयक इसी व्यावर्तक अन्तर्दृष्टि को आत्मसात् करते हुये आपने मानवीय स्तर पर आत्मचेतन हुई चेतना की प्रत्यङ्मुख और पराङ्मुख अभिवृत्ति को अपने दार्शनिक अध्यावसाय का प्रस्थान–बिन्दु बनाया है। प्रख्यात चिन्तक एवं शल्य जी के समकालिक प्रो. गोविन्दचन्द्र पाण्डे जी के अनुसार "शल्य जी के दर्शन का केन्द्र चैतन्य की सर्जकता का गम्भीर विवेचन है जो मानवीय सर्जकता की विवेचना में पूरी तरह से चरितार्थ होता है और संस्कृति–विमर्श को एक ठोस दार्शनिक आधार देता है"।

26 जून 1928 को आपका जन्म फरीदकोट, पंजाब में हुआ। आधी–अधूरी आपकी प्रारंभिक शिक्षा गुरूकुल पद्धति से हुई। कुछ दिनों तक आप हाईस्कूल में हिन्दी के अध्यापक भी रहे और तब स्वाध्यायी तौर पर आपकी अभिरुचि हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में रही। 1951 में प्रकाशित 'पंत का काव्य और युग' नामक पुस्तक आपकी इसी अभिरुचि की

फलश्रुति है। तत्पश्चात् दर्शन के क्षेत्र में आपका पदार्पण एक प्रायोजित संयोगवश हुआ और वह अप्रतिम संयोग एक स्वतंत्र दर्शन–प्रस्थान के विभिन्न कल्प एवं सोपानों से गुजरते हुये अपनी भवितव्यता को अद्यतन 'चिदद्वैतवाद' के रूप में चरितार्थ करता है। आपकी दर्शन–साधना जिन पुस्तकों के माध्यम से वाग्–विग्रहित हुई है उनमें मनस्तत्त्व (1957), *दार्शनिक विश्लेषण* (1961), *ज्ञान और सत्* (1967), *संस्कृतिः मानव कर्तृत्व की व्याख्या* (1969), *विषय और आत्म* (1972), *चिद्–विमर्श* (1986), *सत्ताविषयक अन्वीक्षा* (1987), *नागार्जुन कृत मध्यमकशास्त्र और विग्रहव्यावर्तनीः युक्तिपरीक्षा एवं सिद्धान्त विमर्श* (1990), *समाजः दार्शनिक परिशीलन* (1992), *मूल्य–तत्त्व मीमांसा* (1994), *युग चिन्तन एवं साहित्य चिन्तन* (1998), *मुख्य भारतीय एवं पाश्चात्य चिन्तन धाराएँ* (1999), *तत्त्व–चिन्तन* (2003), *काव्य–विमर्श* (2003), *समसामयिक चिन्ताएँ* (2004) और *चित् की आत्मगवेषणा* (2009) इत्यादि प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त आपने *अनुभववाद* (1960), *समकालीन दार्शनिक समस्याएँ* (1966) और *समकालीन पाश्चात्य दर्शन* (1970) जैसी अति गम्भीर पुस्तकों का सम्पादन भी किया है। अपने सघन चिन्तन और सृजनात्मक लेखन के साथ–साथ आप विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं जैसे *दार्शनिक त्रैमासिक, दर्शन समीक्षा, तत्त्व चिन्तन* और *उन्मीलन* इत्यादि के संस्थापक एवं सम्पादक भी रहे। आपने **अखिल भारतीय दर्शन परिषद्** और **दर्शन प्रतिष्ठान** जैसी सस्थाओं की स्थापना एवं लम्बे समय तक उनका संचालन भी किया है। विश्वविद्यालयीय शिक्षा की किसी भी उपाधि से वियुक्त रहने के बावजूद आपको पंजाब विश्वविद्यालय ने 'विजिटिंग फैलो' (1978), **भारतीय दार्शनिक अनुसंधान** परिषद् ने 'वरिष्ठ फैलो (1983–1986), **भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् ने** 'वरिष्ठ फैलो (1988–1990), और पुनः **भारतीय दार्शनिक अनुसन्धान परिषद् ने 'वरिष्ठ फैलो** (1991–1993) बनाकर सम्मानित किया है। आप **हिन्दी समिति,** उत्तर–प्रदेश द्वारा डॉ भगवानदास पुरस्कार (1962), **अखिल भारतीय दर्शन परिषद् द्वारा स्वामी प्रणवानन्द दर्शन पुरस्कार** (1988), बिड़ला फाउण्डेशन द्वारा शंकर पुरस्कार (1995), **हिन्दी साहित्य सम्मेलन,** प्रयाग द्वारा *मंगलाप्रसाद पुरस्कार* (2002), **राष्ट्रभाषा प्रचार समिति,** मध्य–प्रदेश द्वारा *नरेश मेहता स्मृति वाङ्मय पुरस्कार* (2003), **भारतीय ज्ञानपीठ** द्वारा *मूर्तिदेवी पुरस्कार* (2004) एवं **अखिल भारतीय दर्शन परिषद्** द्वारा *आजीवन परिलब्धि पुरस्कार* (2017) से पुरस्कृत भी हुये हैं।

अर्द्ध शताब्दी से भी अधिक की आपकी अनवरत् दर्शन–साधना आज एक स्वतंत्र और सम्पूर्ण दार्शनिक–तंत्र का रूप ग्रहण कर लिया है। आत्मचेतन चित् की आत्मव्यवधान–निवारक पुरुषार्थ–साधना के रूप में दर्शन, धर्म, नीति, साहित्य, समाज, संस्कृति, इतिहास, कला और यहाँ तक कि मनुष्य की वैज्ञानिक प्रवृत्ति की व्याख्या ही आपके चिदद्वैतवादी दार्शनिक चिन्तन का पार्यन्तिक स्वरूप है। राष्ट्रभाषा 'हिन्दी' के माध्यम से आपने भारतीय दार्शनिक चिन्तन को जैसा उत्कर्ष प्रदान किया है वह किसी विचार–परम्परा को उसका पुरुषार्थ प्रदान करने जैसा है। एक संस्थापक भारतीय दार्शनिक के रूप में आप भारतीय चिन्तन की उस गौरवशाली परम्परा के अंगभूत माने जा सकते हैं जिसके लिये 'मुनिनां उत्तरोत्तर प्रामाण्यम' कहा जाता है। एतदर्थ आज दिनांक 15 फरवरी 2018 को भारतीय दार्शनिक अनुसन्धान परिषद् (अन्तर्गत् मानव संसाधन मंत्रालय, भारत सरकार) नई दिल्ली श्री यशदेव शल्य को समग्र जीवनोपलब्धि सम्मान प्रदान करते हुये हर्षाभिभूत है।

17. शैक्षणिक केंद्र, लखनऊ (कार्यक्रम और गतिविधियाँ)

"टीचिंग फिलॉसॉफी इन दी इंडियन यूनिवर्सिटीज एंड कॉलेजेस" विषय पर कार्यशाला 13 – 17 जुलाई 2017

कार्यशाला का प्राथमिक उद्देश्य विश्वविद्यालयों के साथ–साथ भारत में कॉलेजों में वर्तमान दार्शनिक पाठ्यक्रम के पुनरीक्षण और पुनः निर्धारण की आवश्यकता पर चर्चा करना था। दर्शनशास्त्र के शिक्षकों का दायित्व है कि वे छात्र समुदाय के लिए पाठ्यक्रम को व्यावहारिक, व्यवहार्य, उपयोगी और प्रासंगिक बनाएं। यह आवश्यक है कि दार्शनिक पाठ्यक्रम वर्तमान ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक आवश्यकताओं के अनुसार हों। इसे ध्यान में रखते हुए, स्नातक और स्नातकोत्तर दोनों स्तरों पर पाठ्यक्रम को अद्यतन करने के लिए कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला ने इस बात पर जोर दिया कि दर्शन मानव समाज पर अधिक लागू होना चाहिए और भारतीय दार्शनिक परंपरा और वर्तमान ऐतिहासिक, सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ में इसकी प्रासंगिकता पर जोर दिया जाना चाहिए। यह सुझाव दिया गया था कि 50 प्रतिशत पाठ्यक्रम प्राचीन भारतीय दार्शनिक परंपरा और संस्कृति पर प्रतिबिंबित करते हैं।

5 दिनों के लिए आयोजित की गई कार्यशाला में 16 शोध पत्र प्रस्तुत किया गया। प्रोफेसर पनीरसेल्वम कार्यशाला के समन्वयक थे। देश के विभिन्न हिस्सों के विद्वानों को आमंत्रित किया गया था। संसाधन व्यक्तियों के सभी शोधपत्र अग्रिम में प्राप्त किए गए थे और सभी को देश के विभिन्न भागों में दिया गया था। शोध पत्र की प्रस्तुति के अलावा, दो विषयों "हाउ टू मेक फिलॉसॉफी मोर रेलेवंस?" और "गाइडलाइन्स प्रेपरिंग सिलेबस फॉर यूजी एंड पीजी" पर पैनल चर्चा का आयोजन किया गया। संसाधन व्यक्तियों ने भी विस्तार से अपनी बातों को साझा किए।

भा.दा.अ.प. के अध्यक्ष प्रोफेसर भट्ट ने कहा कि दर्शन की वर्तमान स्थिति के लिए हम लोग जिम्मेदार हैं। उन्होंने कहा कि वर्तमान में दर्शन सामाजिक समस्याओं से कट गया है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि शिक्षाविदों की युवा पीढ़ी के प्रति सामाजिक जिम्मेदारी है। आगे कहा कि दक्षिण कोरिया और चीन जैसे एशियाई देशों में, पाठ्यक्रम अपनी दार्शनिक परंपराओं को दर्शाते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि चीन में, उदाहरण के लिए, मार्क्सवाद की पुष्टि कन्फ्यूशीवाद के संदर्भ में की गई है।

इस कार्यशाला में, प्रोफेसर आर. बालासुब्रमण्यम के योगदान को याद किया गया और उनके शोध पत्र

"द फिलॉसफी फॉर लिबरेशन" को प्रस्तुत किया गया और चर्चा की गई। प्रोफेसर एस.आर. भट्ट ने प्रोफेसर आर. बालासुब्रमण्यम के लेख को पढ़ा और उनके महत्वपूर्ण योगदान पर प्रकाश डालते हुए, दिवंगत प्रोफेसर आर. बालासुब्रमण्यन की विरासत को श्रद्धांजलि दी। पाठ्यक्रम के कुछ मूल सिद्धांतों पर विचार किया गया : (1) अनुभव केंद्रीयता, (2) लक्ष्य–उन्मुख मूल्य योजना, (3) संस्कृति अंतर्निहित, और (4) समग्र और एकीकृत दृष्टिकोण। इन सभी सिद्धांतों पर प्रोफेसर एस.आर. भट्ट के मार्गदर्शन में सभी संसाधन व्यक्तियों द्वारा विस्तार से विचार–विमर्श किया गया।

उपर्युक्त मुख्य विषय के आधार पर (1) कोर पेपर, (2) वैकल्पिक शोध पत्र के बीच अंतर किया गया और निम्नानुसार पहचाना गया:

कोर पेपर (मूलभूत विषय)

तर्क और वैज्ञानिक विधि

नैतिकता (सामान्य और लागू)

सामाजिक और राजनीतिक दर्शनशास्त्र

मूल्य सिद्धांत

तत्त्वमीमांसा

ज्ञानमीमांसा

ऐच्छिक विषय

कानून का दर्शनशास्त्र

शिक्षा का दर्शनशास्त्र

शांति अध्ययन और सद्भाव

लिंग संवेदनशीलता

धर्म का दर्शनशास्त्र

सौंदर्यशास्त्र

मन / चेतना का दर्शनशास्त्र

भाषा का दर्शनशास्त्र

संस्कृति का दर्शनशास्त्र

कार्यशाला में पाठ्यक्रम की तैयारी से संबंधित सभी मामलों पर विचार–विमर्श किया गया और संसाधन व्यक्तियों के काम के अनुभवों को सही दिशा दी गई।

जैन तर्कशास्त्र पर कार्यशाला

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्, लखनऊ परिसर में दिनांक 3.4.2018 से 12.4.2018 तक आयोजित दस दिवसीय कार्यशाला का उद्घाटन दिनांक 3.4.2018 को प्रातः 10 बजे से आरम्भ हुआ। भारतीय दर्शनिक अनुसंधान परिषद् के अध्यक्ष सम्माननीय प्रो. एस.आर. भट्ट ने इस कार्यक्रम की अध्यक्षता की। प्रो. भट्ट जी ने जैन तर्कभाषा का महत्व बतलाते हुए मूल ग्रंथ का मंगलाचरण तथा इसी ग्रथ का आरम्भिक विषय प्रमाण का मूल ग्रंथ के आधार पर प्रतिपादन् कर के इस कार्यशाला का शुभारम्भ किया।

कार्यशाला के संयोजक प्रो. फूलचन्द जैन प्रेमी, वाराणसी में कार्यशाला के महत्व, जैन तर्क शास्त्र और उनके आचार्यों की सुदीर्घ परम्परा का परिचय देते हुए जैन तर्कभाषा पर आयोजित इस कार्यशाला हेतु प्रसन्नता व्यक्त करते हुए

कार्यशाला के संयोजक ने अपने वक्तव्य में कहा कि प्राचीन भारतीय विद्याओं में तर्क शास्त्र का अपना विशेष महत्व है। इसे आन्वीक्षिकी, न्यायविद्या, हेतुविद्या या हेतुवाद और न्यायशास्त्र भी कहा जाता है। वस्तुतः भारतीय मनीषा में तर्क या हेतु को वही तक प्रश्रय या महत्व दिया जाता है, जहॉ तक वह शास्त्र का समर्थक है। क्योंकि भारतीय प्रमाणशास्त्र में आगम अर्थात् शास्त्रीय तथ्यों (प्रमाणों) का महत्वपूर्ण स्थान है। इसीलिए भारत की प्राचीन वैदिक, जैन एवं बौद्ध–इन तीनों दार्शनिक परम्पराओं में तर्कविद्या की महत्ता प्राचीनकाल से ही रही है।

आगे जैन तर्कभाषा का महत्व प्रतिपादित करने हुए आपने कहा कि संस्कृत भाषा में रचित जैन न्याय शास्त्रों की सुदीर्घ समृद्ध परम्परा में 'जैनतर्क भाषा' और इसके कर्ता यशस्वी विद्वान् उपाध्याय यशोविजय (17 वीं शती) का जैन न्यायविद्या के लिए बहुमूल्य अवदान का हम ससम्मान स्मरण करते हैं, जिन्होंने अनेक भारतीय न्याय शास्त्रियों द्वारा अपनी–अपनी परम्परा के न्याय शास्त्रों को नव्यन्याय में प्रस्तुत करने की चुनौती स्वीकार करते हुए, जैनन्याय को भी यहा कुछ–कुछ नव्यन्याय शैली में प्रस्तुत करने हेतु "जैन तर्कभाषा' नामक ग्रन्थ का श्रेष्ठता के साथ प्रणयन किया।

जैन तर्कभाषा जैसे महत्वपूर्ण ग्रंथ पर इस प्रकार कार्यशाला के आयोजन की परिकल्पना प्रो. एस.आर. भट्ट जी ने बहुत पहले से की थी जिसे यहॉ डॉ. पूजा व्यास जी के प्रयासों से सम्पन्न किया जा सका।

इस कार्यशाला में सम्पूर्ण देश के प्रायः प्रमुख क्षेत्रों के विद्वान् प्रतिभागियों ने सम्मिलित होकर मूल संस्कृत भाषा में निबन्ध जैन तर्कभाषा जैसे प्रौढ एवं मूल ग्रंथ का गहन अध्ययन बाहर से पधारे विषय विशेषज्ञ विद्वानों द्वारा किया गया।

इस कार्यशाला में मूल ग्रंथ का अध्यापन कराने हेतु देश के अनेक श्रेष्ठ विद्वानों ने अपनी सहभागिता से इसे उच्चतम् सफलता पूर्वक सम्पन्न कराने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इनमे प्रमुख है– (1) प्रो0. एस. आर. भट्ट, नई दिल्ली (2) प्रो. फूलचन्द जैन प्रेमी, वाराणसी, (3) प्रो. जितेन्द्र भाई भाह, अहमदाबाद, (4) प्रो. धर्मचन्द्र जैन, जोधपुर (5) प्रो. वीर सागर जैन, नई दिल्ली, (6) प्रो. विजय कुमार जैन, लखनऊ (7) प्रो. रामपूजन पाण्डेय, वाराणसी, (8) प्रो. अनेकान्त कुमार जैन, नई दिल्ली प्रमुख है।

विद्वानों द्वारा मूल ग्रंथ के विषयों के अध्यापन कार्य का विवरण

(1) प्रो. जितेन्द्रभाई शाह ने दिनांक 3 अप्रैल 2018 से 5 अप्रैल 2018 तक प्रस्तुत मूल शास्त्र में आधार पंक्तिशः एवं शब्दशः ग्रंथकार के भावों को स्पष्ट करते हुए जैन तर्क शास्त्र का इतिहास जैन तर्कभाषा में प्रमाण प्रत्यक्ष परोक्ष प्रमाण का अध्ययन कराया।

(2) प्रो. अनेकान्त कुमार जैन ने दिनांक 3 अप्रैल 2018 से 6 अप्रैल 2018 तक प्रस्तुत मूल शास्त्र में आधार पंक्तिशः एवं शब्दशः ग्रंथकार के भावों को स्पष्ट करते हुए जैन तर्कभाषा में नये द्रवयार्थिक पर्यायार्थिक नैगम संग्रह व्यवहार ऋजुसूत्र, शब्द समभीरूड, एवंभूत निश्रय ववहार, नयाभास का अध्ययन कराया।

(3) प्रो. फूलचन्द जैन प्रेमी ने दिनांक 6 अप्रैल 2018 को प्रस्तुत मूल शास्त्र में आधार पंक्तिशः एवं शब्दशः ग्रंथकार के भावों को स्पष्ट करते हुए जैन तर्कभाषा की ज्ञान मीमांसा का अध्ययन कराया।

(4) प्रो. धर्मचन्द्र जैन ने दिनांक 7 अप्रैल 2018 से 10 अप्रैल 2018 तक प्रस्तुत मूल शास्त्र में आधार पंक्तिशः एवं शब्दशः ग्रंथकार के भावों को स्पष्ट करते हुए जैन तर्कभाषा में अनुमान प्रमाण, हेतुवाद, सप्तभंगी नय का अध्ययन कराया।

(5) प्रो. विजय कुमार जैन ने दिनांक 7 अप्रैल 2018 को प्रस्तुत मूल शास्त्र में आधार पंक्तिशः एवं शब्दशः ग्रंथकार के भावों को स्पष्ट करते हुए मतिज्ञान अवग्रह आदि भेद का अध्ययन कराया।

(6) प्रो. रामपूजन पाण्डेय ने दिनांक 9 अप्रैल 2018 से 12 अप्रैल 2018 तक प्रस्तुत मूल शास्त्र में आधार पंक्तिशः एवं शब्दशः ग्रंथकार के भावों को स्पष्ट करते हुए जैन तर्कभाषा में हेत्वाभास–1 स्मृति प्रत्यभिज्ञान तर्क आगम प्रमाण का अध्ययन कराया।

(7) प्रो. वीर सागर जैन ने दिनांक 10 अप्रैल 2018 से 12 अप्रैल 2018 तक प्रस्तुत मूल शास्त्र में आधार पंक्तिशः एवं शब्दशः ग्रंथकार के भावों को स्पष्ट करते हुए जैन तर्कभाषा में निक्षेप नाम, स्थापना द्रव्य, भाव का अध्ययन कराया।

''इंडियन आइडेंटिटी एंड कल्चरल कॉन्टिनुइटी'' पर निबंध प्रतियोगिता–सह–युवा विद्वानों की संगोष्ठी की रिपोर्ट

भा.दा.अ.प., लखनऊ के अकादमिक केंद्र, ने युवा दार्शनिक पुरस्कार के समारोह के साथ–साथ 11–13 अप्रैल 2017 के दौरान एक निबंध प्रतियोगिता–सह–युवा विद्वानों की संगोष्ठी का आयोजन किया। आयोजन की प्रारंभिक तिथि 15–17 मार्च 2017 निर्धारित की गई, लेकिन कुछ आकस्मिक कारणों से उसे रद्द कर दिया गया और 11 अप्रैल 2017 को आयोजित किया गया।

'इंडियन आइडेंटिटी एंड कल्चरल कॉन्टिनुइटी' विषय पर देश भर के विद्वानों से 35 निबंध प्राप्त हुए। निबंधों मूल्यांकन प्रोफेसर के.सी. पांडे और लखनऊ विश्वविद्यालय, पूर्व प्रोफेसर ओ.पी. पाण्डेय, प्रोफेसर भुवन चंदेल और प्रोफेसर यू.एस. बिष्ट थे, जबकि निर्णयकारों में से प्रोफेसर आर.पी. श्रीवास्तव कार्यक्रम में शामिल नहीं हो सके। प्रत्येक ने प्रतिभागियों को पूरा होने के विषय पर संबोधित किया और प्रस्तुति के नियमों और शर्तों की घोषणा किया।

प्रत्येक प्रस्तुति के बाद साथी प्रतिभागियों द्वारा बातचीत की गई। निर्णायकों ने विषय की गुण, प्रस्तुति का तरीका, उदाहरणों का उपयोग, उपाख्यानों, चित्रों, प्रस्तुतियों की आकर्षकता के आधार पर व्यक्तिगत अंक दिए। तार्किक सामंजस्य, भाषण–संबंधी भावना और बातचीत के तरीके को भी मूल्यांकन हेतु देखा गया था। निर्णायकों द्वारा दिए गए अलग–अलग अंक उनके लिपिबद्ध निबंधों में प्राप्त अंकों के साथ जोड़े गए थे। निम्नलिखित प्रतिभागियों को प्रथम, द्वितीय और तृतीय घोषित किया गया।

प्रथम पुरस्कार	सुश्री श्रुति शर्मा, दिल्ली
द्वितीय पुरस्कार	सुश्री मृदुला वी.वी., केरल
तश्तीय पुरस्कार	सुश्री निधि आर. टेके, महाराष्ट्र

पहला पुरस्कार 25,000 रुपये, दूसरा पुरस्कार 20,000 और तीसरा पुरस्कार 15,000 रुपये था। पुरस्कार राशि प्रमाणपत्रों के साथ सौंपी गई। सभी प्रतिभागियों को भागीदारी–सह–प्रस्तुति प्रमाणपत्र भी दिए गए।

वाद–विवाद और प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता की रिपोर्ट

28 नवंबर 2017 को राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, लखनऊ के साथ भा.दा.अ.प., लखनऊ के अकादमिक केंद्र ने संस्कृत संस्थान के सभागार में स्नातक और स्नातकोत्तर छात्रों के लिए एक प्रश्नोत्तरी–सह–वाद–विवाद प्रतियोगिता का आयोजन किया था। संस्कृत भारती के महासचिव डॉ. श्रीश देव पुजारी कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे और आचार्य वाचस्पति मिश्र विशेष आमंत्रित सदस्य थे। डॉ. पूजा व्यास, निदेशक (ए) भा.दा.अ.प. और प्रोफेसर विजय कुमार जैन, प्राचार्य, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान भी उपस्थित थे। प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के विजेता आनंद प्रकाश पाठक (प्रथम), समस राय (द्वितीय) और अंकित शुक्ला (तृतीय) थे। श्री मंगरु प्रसाद वर्मा और श्री बेलवाल वाद–विवाद प्रतियोगिता के विजेता थे। उन सभी को नकद पुरस्कार प्राप्त हुआ।

डॉ. श्रीश देव का विचार था कि दर्शनशास्त्र को आज के युवाओं में लोकप्रिय होना चाहिए क्योंकि वे पश्चिमी संस्कृति की अंधानुकरण कर रहे हैं। उन्होंने यह भी कहा कि वैज्ञानिक विकास के लिए दर्शनशास्त्र महत्वपूर्ण है। डॉ. वाचस्पति मिश्र ने अपने व्याख्यान में बताया कि कंप्यूटर तकनीक पाणिनी से प्रेरित थी। डॉ. पवन कुमार दीक्षित द्वारा प्रस्तावित धन्यवाद प्रस्ताव के बाद कार्यक्रम संपन्न हुआ।

‘मणिकर्ण’ पर कार्यशाला
4 अक्टूबर 2017 से 10 अक्टूबर 2017

4 अक्टूबर 2017 को भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद के तत्वावधान में, मणिकर्ण पर कार्यशाला का आयोजन किया गया। प्रोफेसर सच्चिदानंद मिश्रा ने कार्यशाला का उद्घाटन किया जो समन्वयक भी रहें। भारतीय परंपरा के अनुसार, मंगलाचारण का पाठ किया गया। डॉ. पूजा व्यास ने गणमान्य लोगों का स्वागत किया। कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में भा.दा.अ.प. के सदस्य सचिव प्रोफेसर रजनीश कुमार शुक्ला उपस्थित थे। इस सत्र के मुख्य अतिथि प्रोफेसर वशिष्ठ त्रिपाठी ने सभी प्रतिभागियों का ध्यान अपनी विद्वत शैली से आकर्षित किया। प्रोफेसर ए.के. कालिया, सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी के पूर्व कुलपति ने सत्र की अध्यक्षता किया। सत्र में न्याय, नव्य–विज्ञान, विशिष्टाद्वैत, वेदांत और व्याकरण के विद्वान मौजूद थे। अपने उद्घाटन भाषण में, प्रोफेसर रजनीश शुक्ला ने सूत्र, भाष्य, वृतिकार और प्रवेश ग्रंथ की परंपरा पर प्रकाश डाला। इसके अलावा, मणिकर्ण को प्रवेश ग्रन्थ के रूप में देखा जाता है। प्रोफेसर वशिष्ठ त्रिपाठी ने नव्य–न्याय की परंपरा में मणिकर्ण की जगह के बारे में कहा। इसके बाद, प्रोफेसर एस. मिश्रा ने अपने मुख्य भाषण में, न्याय की परंपरा के साथ–साथ इस परंपरा के नए संस्करण की शुरुआत की। प्रोफेसर ए.के. कालिया ने अपने अध्यक्षीय भाषण में, प्रतिभागियों को सूचित किया कि न्याय ने विद्या–स्तवन में अपना स्थान सुरक्षित कर लिया है।

कार्यशाला के सात दिनों के दौरान व्यापक रूप से चर्चा किए गए विषयों की सूची निम्नलिखित है।

मंगलवाद पर–प्रोफेसर राम किशोर त्रिपाठी

प्रमाण्यवाद पर–प्रोफेसर वशिष्ठ त्रिपाठी

सन्निकर्ष–प्रोफेसर वशिष्ठ त्रिपाठी

प्रत्यक्षवाद –प्रोफेसर राम किशोर त्रिपाठी

अनुमान परिच्छेद–प्रोफेसर हरे राम त्रिपाठी

व्याप्ती, व्यपत्ति– ग्रहोपास्या–प्रोफेसर एच. आर. त्रिपाठी

तर्कप्रकरण और उपाधिप्रकारण–प्रोफेसर एच. आर. त्रिपाठी

हेतु–प्राभेदा–प्रोफेसर एच. आर. त्रिपाठी

पक्षता–प्रकारण, परामर्स–प्रकारण, अर्थापत्ति–प्रकारण और परार्थनुमान–प्रोफेसर सच्चिदानंद मिश्रा

उपमान परीक्षित, प्रोफेसर पी. के. मुखोपाध्याय

शब्द परिच्छेद–प्रोफेसर पी. के. मुखोपाध्याय

शब्द–प्रामान्यवाद, योगतत्व और मोक्षवाद–प्रोफेसर पी.के. मुखोपाध्याय

धतुवाद और मोक्षवाद–प्रोफेसर–सच्चिदानंद मिश्रा

विधिवाद, अपूर्ववाद–प्रोफेसर पी.के. मुखोपाध्याय

मंगलवाद पर, प्रोफेसर राम किशोर त्रिपाठी ने मंगलाचरण से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर बात की। मंगलाचरण की प्रासंगिकता क्या है? विद्वानों ने मंगलाचरण के साथ एक शास्त्र क्यों शुरू किया? क्या यह शास्त्र का एक हिस्सा है? यदि हाँ, तो विद्वान इसे पाठ का एक भाग क्यों मानते हैं?

जैसा कि परंपरा में वर्णित है, *मंगल–पदार्थ* शुभ है। कुछ विद्वान इसे ईस्ट–स्मरण के रूप में लेते हैं। फिर, यह किस अर्थ में बहस–योग्य विषय है, इसे यहाँ स्पष्ट किया जाना था। *प्रामान्यवाद* पर, प्रोफेसर वशिष्ठ त्रिपाठी ने चर्चा की "क्या विघ्न का कोई माप है?" "क्या उपाधि अविकसित हो सकती है?" प्रोफेसर मिश्रा से पूछा गया। उन्होंने इसका उत्तर विस्तृत रूप से उपाधीष और *कृष्ण–अवच्छेदका* की धारणाओं पर विस्तार से दिया। प्रो. राम किशोर त्रिपाठी ने *प्रमा, प्रमात्व* आदि पर चर्चा कीः प्रमाण क्या है? *प्रमाण* क्या है? उन्होंने *प्रत्यक्षवाद* पर भी चर्चा की। *सर्व–दर्शन* विभागाध्यक्ष, लाल बहादुर शास्त्री विद्यापीठ, नई दिल्ली के प्रोफेसर हरे राम त्रिपाठी ने अनुमान परीक्षा *अवधारणा* का व्याख्यान किया

और विस्तार किया। उन्होंने व्याप्ति *प्रकारण, तर्कप्रकरण* और *उपाधिप्रकारण*, मूल–ग्रन्थ के हेतु–*प्रभेद* की भी चर्चा की। प्रोफ़ेसर सच्चिदानंद मिश्रा ने मूल–ग्रन्थके बारे में *पक्षता–प्रकारण, परामर्श–प्रकारण, अर्थार्थि प्रकारण* और *परार्थनुमान* पर चर्चा की। प्रोफ़ेसर पीयूष कांत दीक्षित ने अपना व्याख्यान हेत्वाभास पर दिया। उन्होंने तीन प्रकार के व्यभिचार की भी चर्चा कीः साधारणा, असाधारणा और अनुपसंहारी। इन तीनों में से प्रत्येक को मूलशब्द के बाद परिभाषित किया गया था। भा.दा.अ.प. के अध्यक्ष प्रोफेसर एस.आर. भट्ट के साथ वार्तालाप–सत्र भी आयोजित किया गया था। प्रोफेसर भट्ट ने कार्यशाला के अन्य प्रतिभागियों से बातचीत की।

'रुडोल्फ कार्नाप के अनुसार अर्थ और आवश्यकता' पर कार्यशाला 17 मार्च से 23 मार्च 2018 तक

17 मार्च से 23 मार्च 2018 तक भा.दा.अ.प. शैक्षणिक केंद्र, लखनऊ में सात दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का उद्देश्य रुडोल्फ कार्नाप के अर्थ और आवश्यकता से योग्य छात्रों और विद्वानों को अवगत कराना था। उद्घाटन सत्र कार्यशाला के सलाहकार प्रोफेसर के. सी. पांडेय द्वारा सरस्वती वंदना के पाठ के साथ शुरू हुआ। भा.दा.अ.प. की निदेशक डॉ. पूजा व्यास ने सभी प्रतिनिधियों का स्वागत किया। कार्यशाला का उद्घाटन व्याख्यान प्रोफेसर ममता बंदोपाध्याय द्वारा दिया गया था जिन्होंने मूलपाठ (अर्थ और आवश्यकता) के बारे में 'कैसे और क्यों' समझाया और बताया। इसके बाद कार्यशाला के समन्वयक प्रोफेसर पी.के. खरे ने इसका संक्षिप्त परिचय दिया। इस सत्र की अध्यक्षता प्रोफेसर डी.एन. यादव गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर द्वारा किया गया। दूसरे सत्र की शुरुआत प्रोफेसर मिहिर के. चक्रवर्ती के व्याख्यान से हुई। उन्होंने स्थान के रूप में (मोडल लॉजिक) की एक मानक परिभाषा देकर अपने व्याख्यान की शुरुआत की, जो आवश्यकता, संभावना, अप्रसिद्धता आदि से जुड़ा हुआ है। यहां, उन्होंने यह स्थापित करने का प्रयास किया कि सत्य एक पूर्ण नहीं है, लेकिन एक संभावित दुनिया का उल्लेख करने वाला एक करीबी शब्द है। प्रोफेसर ममता बंधोपाध्या ने "द मेथडऑफ़ दी नेम–रिलेशन" पर अपना व्याख्यान दिया। आपने भाषा के तीन घटकों और भाषाई अभिव्यक्तियों और वस्तुओं/संस्थाओं/विषयों के बीच संबंध के बारे में बात की। इस 'नाम संबंध को चार दार्शनिकों के संदर्भ में स्पष्ट किया गया। फ्रीज, अलोंजो चर्च, बर्ट्रेंड रसेल और डब्ल्यू. वी.ओ. क्वीन। बाद में, उन्होंने फ्रीज के पूर्ण और अधूरे भावों के भेद, निश्चित और अनिश्चित विवरणों के बारे में बात की। पांडे ने कार्नेप के शोध पत्र "एम्पिरिज्म, सिमेंटिक एंड ओन्टोलॉजी" पर बात की। कार्नाप के इस मौलिक शोध पत्र का उल्लेख करते हुए, प्रोफेसर पांडे ने मुद्दों पर अर्थ, और दमन के

बारे में बात की। उन्होंने विट्गेन्स्टाइन के विशेष संदर्भ के साथ लॉजिकल पोजिटिविज्म, वियना सर्कल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और मेटाफ़िज़िक्स की अस्वीकृति के बारे में भी बात की। प्रोफेसर टी. हुसैन ने आर. कार्नाप के "मीन एंड नेसेसिटी" के प्रायिकता (मोडल) तर्क पर व्याख्यान दिया। उन्होंने "तर्क क्या है" विषय की व्याख्या किया और तीन प्रकार के तर्क का वर्णन कियाः (1) अरिस्टोटेलियन लॉजिक, (2) ट्रेडिशनल लॉजिक और (3) मॉडर्न लॉजिक। कार्नैप ने प्रायिकता (मोडल) तर्क को रूपात्मकता के सिद्धांत के रूप में वर्णित किया, अर्थात्, आवश्यकता, आकस्मिकता, संभावना, असंभवता, आदि। हुसैन के अनुसार, प्रत्येक प्रायिकता (मोडल) अवधारणा को स्पष्ट करने के लिए, हमें संबंधित प्रायिकता (मोडल) अवधारणा के साथ प्रत्येक प्रायिकता अवधारणा को सहसंबंधित करना होगा।

प्रोफेसर के.एल. दास का व्याख्यान कार्नाप के अर्थ और आवश्यकता के अध्याय 1 पर था। इस खंड में, तर्कसम्मत प्रत्यक्षवाद (लॉजिकल पोसिटिविज़्म) भावना की प्रासंगिकता को नकारता है। उद्देश्य/विस्तार, पदावनति/लक्ष्यार्थ, अनुभव/प्रसंग के बीच अंतर किया जाता है। दो महत्वपूर्ण अवधारणाएं हैंः संपत्ति और वर्ग। उन्होंने कुछ बिंदुओं जैसे व्यक्तिगत अवधारणाओं, व्यक्तिगत विधेय, व्यक्तिगत परिवर्ती पर चर्चा की। प्रोफेसर आर.सी. प्रधान ने समकालीन अर्थ और आवश्यकता की समस्या पर व्याख्यान दिया। प्रोफेसर प्रधान के अनुसार, शब्दार्थ भाषा को दो भागों में विभाजित किया जा सकता हैः (1) औपचारिक भाषा शब्दार्थ और (2) प्राकृतिक भाषा। अंतिम दिन, विदाई सत्र का आयोजित किया गया । प्रोफेसर खरे ने सभी सात दिनों के लिए कार्यशाला की संक्षिप्त रिपोर्ट प्रस्तुत की। प्रोफेसर आर.सी. प्रधान ने विदाई भाषण दिया।

सात दिवसीय भा.दा.अ.प. कार्यशाला
"डेलिनेटिंग पोस्ट–मॉडर्निज़्म थ्रू इंडियन फिलॉसॉफी"
1 से 7 मई 2017

20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध और विशेष रूप से पिछले 20 वर्षों में, को विभिन्न रूप से पोस्ट–इंडस्ट्रियल, पोस्ट–मेटाफिजिकल, पोस्ट–स्ट्रक्चरल, पोस्ट–ऐज और अंत में, पोस्ट–मॉडर्न कहा जाता है। शर्तों का यह मील का पत्थर एक अंत की या साझा भावना को दर्शाता है, या कम से कम, "कुछ अखंड संरचना" की गिरावट जो कई शताब्दियों से पश्चिम में सर्वोच्च शासन कर रही है। यह "पोस्ट" क्या है जिसका उदय हो रहा रहा है? क्या यह केवल परिवर्तनकाल है? और भारतीय दर्शन के दृष्टिकोण से इस तरह के परिवर्तनकाल को देखना कहाँ तक संभव है? ये कुछ सटीक प्रश्न हैं, जो संभवतः "डेलिनेटिंग पोस्ट–मॉडर्निज़्म थ्रू इंडियन फिलॉसॉफी" विषय पर 7–दिवसीय कार्यशाला आयोजित करने के पीछे के भा.दा.अ.प. के विचार का कारण बना ।

1 मई 2017 को उद्‌घाटन सत्र के साथ कार्यशाला शुरू हुई जिसमें प्रोफेसर एस.आर. भट्ट, अध्यक्ष (भा.दा.अ.प.), प्रोफेसर रजनीश शुक्ला, सदस्य सचिव (भा.दा.अ.प.), प्रोफेसर ओ.पी. पांडे, प्रोफेसर आर. पी. सिंह, प्रोफेसर पन्नेर सेल्वम, प्रोफेसर आर.सी. सिन्हा थे। उद्‌घाटन भाषण और परिचयात्मक भाषण कार्यशाला के समन्वयक / निदेशक डॉ. प्रशांत शुक्ला द्वारा इस कार्यशाला के विषय, उद्देश्यों और अपेक्षाओं का विस्तृत परिचय दिया गया।

प्रोफेसर आर.पी. सिंह, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली ने कहा कि तर्कसंगत होने का क्या मतलब है, यूरोपीय आधुनिकता, आधुनिकता के केंद्रीय मुद्दे, आधुनिकता के प्रमुख संकेतक आदि जैसे मुद्दे। उन्होंने परंपराओं और आधुनिकता, पूर्व–आधुनिकता और आधुनिकता जैसे शब्दों को स्पष्ट किया।

अगले दिन, मद्रास विश्वविद्यालय के प्रोफेसर पनेर सेल्वम ने उत्तर आधुनिकतावाद के व्याख्यात्मक (हेर्मेनेयुटिक्स) के साथ सत्र की शुरुआत की। उन्होंने एक विषय वस्तु के निर्माण और बनाने में ऐतिहासिकता, संस्कृति और परंपरा की भूमिका पर चर्चा की। प्रोफेसर पनेर सेल्वम ने उत्तर–आधुनिक दृष्टिकोण से भारतीय दर्शन के मूल्यांकन पर ध्यान केंद्रित किया। उन्होंने बताया कि भारतीय परंपरा से हमारा क्या अभिप्राय है, भारतीय दर्शन में बदलाव, प्रोफेसर दया कृष्ण द्वारा भारतीय दर्शन के तीन मिथकों, प्रोफेसर राजेंद्र प्रसाद द्वारा आध्यात्मिक और पारलौकिक अवधारणा आदि पर चर्चा की।

प्रोफेसर आर.सी. सिन्हा ने संस्कृति और संदर्भ और भारतीय विद्यालयों के महत्वपूर्ण और तुलनात्मक विश्लेषण के विषयों पर विस्तार से चर्चा की कि दर्शन का उद्देश्य क्या है, दर्शन करने का उद्देश्य, और हम इस उत्तर आधुनिक दुनिया में भारतीय दर्शन से क्या उम्मीद करते हैं। डॉ. आलोक टंडन ने उत्तर आधुनिकतावाद और विज्ञान विषय पर चर्चा की। प्रोफेसर राकेश चन्द्रा ने "रिचर्ड रोर्टी और उत्तर आधुनिकता" पर बात की। उन्होंने एक विश्लेषणात्मक दार्शनिक के दृष्टिकोण से समझ के रूप में उत्तर–आधुनिक स्थिति को स्पष्ट किया। इविंग क्रिश्चियन कॉलेज, इलाहाबाद से प्रोफेसर संजय शुक्ला ने "मेटाफिसिको–एपिस्टेमोलॉजिकल एंड एथिकल इश्यूज ऑफ़ पोस्टमॉडर्निटी" पर बात की। उन्होंने उत्तर–आधुनिकता के कुछ प्रमुख मुद्दों पर चर्चा की दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर बालगणपति देवरकोंडा ने उत्तर–आधुनिकतावाद और भारतीय इतिहास लेखन का विषय लिया, जहाँ उन्होंने भारतीय इतिहास और इतिहास लेखन का गहन विश्लेषण किया और इतिहास को अलग–अलग दृष्टिकोणों से समझा जाता है। उन्होंने भारतीय दर्शन की विभिन्न समझ और उसमें शामिल मापदंडों के बीच अंतर का एक विस्तृत विवरण दिया। इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रोफेसर देबाशीष गुहा ने "डेलिनटिंग पोस्टमॉडर्न एप्लाइड एथिक्स" पर बात की। अंतिम सत्र कार्यशाला के समन्वयक डॉ. प्रशांत शुक्ला और सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र के वितरण द्वारा अंतिम भाषण के साथ समाप्त हुआ।

"कंटेक्सचुअलिज़म इन कंटेम्परारी एपिस्टेमोलॉजी"
दो दिवसीय भा.दा.अ.प. राष्ट्रीय संगोष्ठी
26–27 मार्च 2018

26 से 27 मार्च 2018 तक भा.दा.अ.प. अकादमिक केंद्र, लखनऊ में "कंटेक्सचुअलिज़म इन कंटेम्परारी एपिस्टेमोलॉजी" विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी की समन्वयक प्रोफेसर श्रीकला नायर ने केंद्रीय विषय और संबंधित मुद्दों की एक विस्तृत रूपरेखा प्रस्तुत की। उन्होंने "मूल" और "अर्थ" संदर्भवाद के बीच के अंतर को स्पष्ट किया और जोर दिया कि संगोष्ठी का ध्यान केंद्रित संदर्भवाद पर है न कि संदर्भवाद की अन्य किस्मों पर।

अपने अध्यक्षीय संबोधन में, प्रोफेसर पनीर सेल्वम ने संदर्भ को कभी भी तय नहीं करने के लिए संदर्भ को संदर्भीकरण (डिकॉन्सेक्शुअल) करने की आवश्यकता पर जोर दिया। गड्डामर और राउर की "समझ के दो तरीके" के "कट्टरपंथी संदर्भवाद" से अंतर्दृष्टि खींचते हुए, उन्होंने अर्थ के स्थगन के बारे में बात की क्योंकि संदर्भ से अधिक अर्थ निकलते हैं। उन्होंने इस संबंध में विश्लेषणात्मक और महाद्वीपीय दार्शनिकों के बीच विभाजन को भी इंगित किया।

प्रोफेसर राकेश चंद्रा ने मुख्य भाषण देते हुए संगोष्ठी के विषय से संबंधित विभिन्न प्रश्न / मुद्दे उठाए। उन्होंने सवाल किया कि संदर्भ को कहां रखा जाए, व्याख्या के भीतर या वाक्य के संदर्भ में? उन्होंने यह भी सवाल उठाया कि क्या संदर्भ के नियम भी संदर्भ के प्रति संवेदनशील हैं? विश्लेषणात्मक दार्शनिकों का पक्ष लेते हुए, उन्होंने बताया कि संदर्भ संवेदनशीलता में है, लेकिन इसे मनोवैज्ञानिकता के रूप में नहीं माना जाना चाहिए, क्योंकि इससे निजी भाषा और बोलचाल की भाषा हो सकती है। प्रोफेसर चंद्रा ने लिंग, दलित, जाति और वर्ग से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर भी ध्यान दिलाया, जहां संदर्भ की समझ महत्वपूर्ण है। लेकिन यहां उन्होंने खोज के संदर्भ और औचित्य के संदर्भ के बीच अच्छे पुराने अंतर से जुड़े रहने की सलाह दी। 'जिन समस्याओं को हम संदर्भवाद को अपनाते हैं, विशेष रूप से धार्मिक बयानों के मामले में उजागर करना' के शब्दों के साथ उन्होंने अपने संबोधन को समाप्त कर दिया।

संगोष्ठी के पहले सत्र की अध्यक्षता डॉ. आलोक टंडन ने की, जिसमें दो शोधपत्र प्रस्तुत किए गए। डॉ. सी. प्रेम कुमार द्वारा "कॉन्टेक्स्ट स्पेसिफिक नॉलेज कंस्ट्रक्शन इन दी सोशल कंस्ट्रक्टिविस्ट पोजीशन ऑफ़ रिचर्ड रोर्टी" शीर्षक से पहला शोध पत्र प्रस्तुत किया गया था, जिसमें उन्होंने सामाजिक, मूल्यपरक, संवाद सामाजिक की प्रकृति पर जोर देने के लिए सामाजिक रचनावाद के संदर्भों को विस्तार से चित्रित किया था। रिचर्ड रोर्टी के दृष्टिकोण के बारे में बताते हुए, उन्होंने आधुनिक ज्ञान की नींव

पर सवाल उठाया, निष्पक्षता की धारणा को खारिज कर दिया और ज्ञान निर्माण में वार्ताकारों, बातचीत और उपदेशात्मक समाज की भूमिका पर जोर दिया। डॉ. प्रशांत शुक्ला ने अनुभव की सीमाओं का सवाल उठाया और प्रोफेसर पनीर सेल्वम ने डॉ कुमार के शोध पत्र में नैतिकतावाद के खतरे को इंगित किया। डॉ. आलोक टंडन ने अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में वैज्ञानिक ज्ञान की स्थिति पर सवाल उठाया और क्या इसे ज्ञान के अन्य रूपों के समान माना जा सकता है?

दूसरे सत्र की अध्यक्षता प्रोफेसर प्रजीत के. बसु ने की, जिसमें दो शोध पत्र प्रस्तुत किए गए। डॉ. श्यामाश्री भट्टाचार्य ने "कोंटेक्सुअलिस्म इन नॉलेज एट्रीब्यूशन", विषय पर शोध पत्र में ज्ञान के विषय में संशयवाद पर चर्चा की, जहाँ दावा है कि हम किसी भी ज्ञान को नहीं जान सकते और किसी भी प्रकार के सत्य को नहीं जान सकते हैं, इसलिए मुद्दे हमारे प्रस्तावों पर विश्वास करने के औचित्य के बारे में हैं। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि प्रसंगवादी संदर्भवाद के संशयपूर्ण अनुकूल संस्करण को ग्रहण कर सकते हैं जो इसे एक खुला प्रश्न बना सकता है कि क्या संशय वास्तव में ज्ञानात्मक मानक को बढ़ाने में सफल होता है। इस सत्र में दूसरा शोध पत्र डॉ. आयशा गौतम द्वारा "एन इंक्वायरी इन द कंटेक्स्टुलिस्ट एप्रोच टू विरचे एपिस्टेमोलॉजी" शीर्षक से प्रस्तुत किया गया था। उन्होंने पुण्य सापेक्षतावाद और सदाचार जवाबदेही के बारे में बात की और इस मुद्दे को उठाया कि "क्या संदर्भवाद के मानक संस्करण के खिलाफ विकसित चुनौती का उपयोग पुण्य ज्ञानात्मक विज्ञान के संदर्भ दृ ष्टिकोण के खिलाफ किया जा सकता है या नहीं?"

पहले दिन के तीसरे सत्र की अध्यक्षता प्रोफेसर राकेश चंद्रा ने की और इसमें दो शोध पत्र प्रस्तुत किए गए। "कॉनटेक्सुअलिसिंग, ऑब्जेक्टिविटी एंड साइंस" नामक पहले पेपर में, प्रोफेसर प्रजीत के. बसु ने विज्ञान और तकनीकी–विज्ञान के बीच अंतर करने के सात तरीकों पर विस्तार से बताया। विज्ञान का प्रयास दुनिया का वर्णन करना है, जबकि तकनीकी–विज्ञान दुनिया को झलक दिखाने की कोशिश करता है। इस प्रकार, संदर्भवाद का कोई भव्य एकीकृत सिद्धांत नहीं हो सकता है, उन्होंने कहा। उन्होंने तकनीकी–विज्ञान में शामिल अज्ञानता, अनिश्चितता और जोखिमों के बारे में भी बात की और इस विषय पर प्रतिभागियों द्वारा उठाए गए कई सवालों के जवाब दिए। डॉ. वर्बी रॉय द्वारा "हेलन लोंगिनोस क्रिटिकल कटक्च्युलिज्म एम्पिरिसिस्म : एन एक्सप्लनेशन" शीर्षक से अंतिम शोध पत्र प्रस्तुत किया गया।

दूसरे दिन आयोजित चौथे सत्र की अध्यक्षता प्रोफेसर प्रजीत के. बसु ने की, जिसमें प्रोफेसर पनीर सेल्वम ने "गाड़मेरस एप्रोच टू रेडिकल कंटेक्सटुअलिस्म एंड ओकाजन सेंसिटिविटी" शीर्षक से अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया। गाड़मेर के काम पर ध्यान केंद्रित करते हुए, उन्होंने प्रासंगिक समझ में तालमेल, व्याख्या और आवेदन की त्रि–एकता पर जोर दिया। इसके अनुसार, भाषा एक अनुभव का माध्यम है,

यह केवल शब्दों और वाक्यों का अध्ययन नहीं है। उनके अनुसार ऐसा कट्टरपंथी संदर्भवाद, सामाजिक समस्याओं के बारे में बात करने के लिए जगह देता है, जो विश्लेषणात्मक ढांचे में उपलब्ध नहीं है।

पांचवें सत्र की अध्यक्षता डॉ. प्रेम कुमार इमैनुअल ने की और इसमें दो शोध पत्र प्रस्तुत किए गए। प्रोफेसर श्रीकला नायर ने "व्हाट इज रॉग विथ कोंटेक्सुअलिस्म" शीर्षक वाले अपने शोध पत्र में संदर्भवाद के विभिन्न संस्करणों की विस्तृत ऐतिहासिक पृष्ठभूमि दी लेकिन संदर्भवाद पर उनकी चर्चा को सीमित कर दिया, जो कि शब्दार्थ निबंध के रूप में कार्य करता है, "एट्रीब्यूटर कोंटेक्सुअलिस्म"। अपने तर्कों को समझने के लिए, उन्होंने कहा कि ज्ञान का आरोपण स्पष्टीकरण पर निर्भर करता है और कारण स्पष्टीकरण संदर्भ के प्रति संवेदनशील होते हैं। बदले में इसका मतलब है कि एक ज्ञान रोपण का सत्य मूल्य, अंशदाता द्वारा चुने गए स्पष्टीकरणों के धैर्य के साथ है। डॉ. पद्मधर चौधरी द्वारा प्रस्तुत दूसरे शोध पत्र में, "रेकॉन्टेक्सुअलिसशन ऑफ़ कॉन्टेक्स्ट : कॉन्टेक्स्ट सेंसिटिवटी फ्रॉम एन एथिकल पर्सपेक्टिव", उन्होंने अरस्तू के सदाचार नैतिकता में प्रासंगिकता को सही ठहराने की कोशिश की। उन्होंने सवाल उठाया कि "नैतिक संदर्भवाद में नैतिक एजेंट की भूमिका क्या है?"

छठे सत्र की अध्यक्षता प्रोफेसर राजेंद्र प्रसाद ने की और इसमें तीन पत्र प्रस्तुत किए गए। पहले एक में, "नॉलेज कॉन्टेक्स्ट एंड स्पेस फॉर रीजन्स" शीर्षक से, डॉ. मनोज पांडा ने दो सवालों के साथ शुरुआत की–हम बाहरी दुनिया के बारे में कैसे ज्ञान रख सकते हैं? और हम कारणों के स्थान पर अपने ज्ञान को कैसे रख सकते हैं? सफलतापूर्वक संदेहपूर्ण चुनौती को पूरा करने के लिए जिम्मेदार संदर्भवाद की प्रभावकारिता पर सवाल उठाते हुए, उन्होंने मैकडोवेल के आलोचकों के स्थान के आधुनिकीकरण के साथ संदर्भवादी खाते को पूरक करने का सुझाव दिया। इस प्रकार, मैकडॉवेलियन ज्ञानमीमांसा सहजगुण संदर्भवाद से बेहतर है। दूसरी प्रस्तुति में, डॉ. प्रशांत शुक्ला ने अपने पत्र में "क्योंतेक्सुअलिस्ट डाउट इन हाबरमास" का हवाला देते हुए, हेबरमास की नई पुस्तक, *ट्रुथ एंड जस्टिफ़िकेशन* का हवाला दिया, जहाँ उन्होंने यथार्थवाद और प्रकृतिवाद के सैद्धांतिक प्रश्नों के युगानुक्रमिक प्रश्न पर बात की और निष्कर्ष निकाला कि दो अलग–अलग स्तरों पर सत्य और निष्पक्षता के बीच एक आंतरिक संबंध है, क्रिया और प्रवचन। एक ही प्रसंग है जो वस्तुगत दुनिया है। तीसरा और अंतिम शोध पत्र सबीना पी.एस. द्वारा प्रस्तुत किया गया था। "जस्टिफाईंग लॉजिकल प्ल्यूरिज्मः द कॉन्टेक्स्टुलिस्ट एप्रोच" शीर्षक के उनके शोध पत्र में, उन्होंने तार्किक बहुलवाद को तार्किक मूल्यों की बहुलता के रूप में परिभाषित किया, इसके परिणामों के आधार पर इसका मूल्य। उनका निष्कर्ष यह था कि यद्यपि कुछ आलोचकों का तर्क है कि तार्किक बहुवादवाद "पतन" समस्या से ग्रस्त है, उनका तर्क यह था कि संदर्भवादी इस समस्या को हल कर सकते हैं।

अंतिम सत्र विदाई सत्र था, जिसमें प्रोफेसर राजेंद्र प्रसाद ने विदाई भाषण दिया था। उन्होंने निष्पक्षता और विश्लेषणात्मक दर्शन के खिलाफ बढ़ते संशयपूर्ण वातावरण के संदर्भ में संगोष्ठी के विषय की प्रासंगिकता की ओर इशारा किया। अंत में प्रोफेसर श्रीकला नायर ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

''कान्ट्स पोलिटिकल थॉट ऑन पर्पेच्युअल पीस'' विषय पर कार्यशाला 15 से 24 जनवरी 2018

15 से 24 जनवरी 2018 तक भा.दा.अ.प. शैक्षणिक केंद्र, लखनऊ में एम.ए., एमफिल और पीएचडी स्कॉलर्स के लिए दस दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का उद्देश्य छात्रों और विद्वानों को कांट के राजनीतिक विचारों पर प्रेरित करना है, जिन्हें दर्शन और सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में नियोजित किया जा सकता है। पाठ्यक्रम प्रतिभागियों और विशेषज्ञों के बीच बातचीत सुनिश्चित करने का प्रयास करता है।

कार्यशाला के दस दिन तक वैचारिक सिद्धांतों की स्पष्टता, प्रगति, विश्लेषण, प्रत्येक अनुभाग की समकालीन प्रासंगिकता, और प्रतिभागियों और विशेषज्ञो के बीच चर्चा हुई।

उद्‌घाटन सत्र में, प्रोफेसर के.सी. पांडे ने कार्यशाला का संक्षिप्त परिचय दिया। अपना निबंध लिखने के लिए कांट ने जो प्रेरणा दी, वह प्रशिया और क्रांतिकारी फ्रांस के बीच बेसल (1795) की संधि पर हस्ताक्षर था। उन्होंने शाश्वत शांति के विचार से संबंधित कई मुद्दों पर बात की। प्रोफेसर एस. राय ने कांट की राजनीतिक सोच पर सदा के लिए अमल करने का संक्षिप्त परिचय दिया। प्रोफ़ेसर रॉय ने तीन गुना अर्थों में संदर्भ पर बात की। कांट मानव जाति के आदर्श के रूप में सदा शांति स्थापित करते हैं, यानी सदा शांति एक आदर्श है। इस विशेष निबंध में, उनका अर्थ था दार्शनिक प्रणाली में तार्किक भूगोल की प्राप्ति। कांट 1746 में प्रकाशित ''थोट्स ऑन दा ट्रू इस्टीमेशन ऑफ लिविंग फर्सिज''। वह क्रांतिकारी विचार रखते थे लेकिन अपने समय में जर्मन भाषा उनके क्रांतिकारी विचारों को बनाए रखने के लिए बहुत विकसित नहीं थी। इन सभी कठिनाइयों के बावजूद, कांट के दर्शन को समझाने और समझने का एक लाभ है। प्रोफेसर रॉय ने मुक्त राज्यों के महासंघ की ओर व्याख्यान दिया। कांट शाश्वत शांति बनाए रखने के लिए मुक्त राज्यों के महासंघ की ओर बात करता है। कांट फ्रांसीसी क्रांति से प्रेरित था। 1499 में कांट का तत्काल हित शांति का आधार था और वह खुद को सीमित नहीं कर सका। वह इन दोनों युद्धों के पक्ष में नहीं था। उनका विचार था कि हमारा उद्देश्य स्थायी शांति और शत्रुता का निलंबन होना चाहिए। उनके अनुसार, राष्ट्र सर्वोच्च अधिकार है जिसके माध्यम से नागरिकों की इच्छाएं उत्पन्न होती हैं। कांट युद्ध को समाप्त करने की बात करता है। हमें युद्धों से सबक लेना

चाहिए और क्रांतियों से दूर रहना चाहिए।

प्रोफेसर के.सी. पांडेय ने भाषण का सार प्रस्तुत करते हुए कहा की कांट के सर्वकालिक शांति पर अमेरिकी गृहयुद्ध और फ्रांसीसी क्रांति का क्या प्रभाव पड़ा। आजादी, समानता और भाईचारा कांट की हमेशा की शांति के लिए मुख्य दिलचस्पी थी और मानवता के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, और ये विचार संविधान में निहित थे। लोगों की इच्छा सभी न्याय का स्रोत है। न्याय अपने आप में दार्शनिक क्षेत्र में एक संदिग्ध अवधारणा है।

प्रोफेसर आर.पी. सिंह, जेएनयू, नई दिल्ली ने धारा II (तीन निश्चित लेख) पर व्याख्यान दिया। प्रोफेसर सिंह ने युद्ध और शांति की बुनियादी अवधारणाओं पर चर्चा की, प्रमुख शब्द थेः गंभीर, सहज, प्राकृतिक, समुद्री डकैती, सचेत, सभ्यता, गणतंत्र, शक्ति का विभाजन, स्वतंत्रता कानून, राष्ट्र की लीग, आतिथ्य, शत्रुता, स्वभाव। डॉ. टी. हुसैन ने अपना व्याख्यान "फर्स्ट सप्लीमेंट ऑफ़ दी गारंटी फॉर पेर्पेतुअल पीस (नेचर ऐज गारंटी ऑफ़ पीस) (भाग II)" पर दिया। प्रोफ़ेसर शुक्ला ने दूसरे परिशिष्ट पर मूल पाठ पढ़ाः सीक्रेट आर्टिकल फ़ॉर पेराप्चुअल पीस। प्रोफेसर के.एल. दास ने चर्चा की कि नैतिक कानूनों और संवैधानिक कानूनों के बीच अंतर किया जा सकता है। संवैधानिक कानूनों की तुलना में नैतिक कानून इस अर्थ में प्राथमिक है कि यह बहुत ही आधार है जिस पर संवैधानिक कानूनों का निर्माण किया जाता है। दूसरी ओर, संवैधानिक कानून माध्यमिक है क्योंकि यह नैतिक कानूनों की नींव पर आधारित है। विचारों के प्रति हमेशा श्रद्धा रखनी चाहिए और प्राप्ति के लिए प्रयास करना चाहिए, भले ही हम इस तथ्य से काफी अवगत हों कि इसे कभी प्राप्त नहीं किया जा सकता है या पूरी तरह से प्राप्त नहीं किया जा सकता है। आदर्शों के लिए हमेशा प्रयास करना चाहिए क्योंकि आदर्श प्रकृति में परिपूर्ण होते हैं और हम पूर्णता चाहते हैं। कार्यशाला के अंतिम दिन विदाई सत्र आयोजित किया गया जिसमें प्रोफेसर के.सी. पांडे ने मुख्य अतिथि प्रोफेसर डी.एन. यादव और प्रोफेसर रजनीश शुक्ला, सदस्य सचिव, का परिचय दिया। प्रोफेसर डी. एन. यादव ने ओजस्वी भाषण प्रस्तुत किया जिसमें उन्होंने कांट के राजनीतिक विचारों के सभी विचारों को ध्यान में रखा। उन्होंने कांट के राजनीतिक विचार पर प्रकाश डाला और इसकी तुलना सामाजिक अनुबंध सिद्धांतों से की। प्रोफेसर रजनीश शुक्ला ने व्यावहारिक दर्शन और लोकतांत्रिक स्थापित विश्व व्यवस्था पर चर्चा की। प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र के वितरण के साथ कार्यशाला समाप्त हो गई।

"गाँधी, मार्क्स एंड हाइडेगर ऑन दी क्रिटिक ऑफ़ मॉडर्न सिविलाइज़ेशन" विषय पर वार्षिक व्याख्यान की रिपोर्ट

6 दिसंबर 2017 को भा.दा.अ.प. द्वारा वार्षिक व्याख्यान कार्यक्रम का आयोजन अकादमिक केंद्र, लखनऊ में किया गया और प्रोफेसर अंबिका दत्त शर्मा, डॉ. हरि सिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर द्वारा व्याख्यान दिया गया । लखनऊ और आस–पास के शहरों से आये विद्वानों ने व्याख्यान में भाग लिया। प्रोफेसर रजनीश कुमार शुक्ल, सदस्य सचिव, भा.दा.अ.प. को कार्यक्रम में सम्मानित किया गया। डॉ पूजा व्यास, निदेशक भा.दा.अ.प. द्वारा स्वागत भाषण दिया गया।

''त्रिक शैविज्म ऑफ काश्मीर'' लेवल 3 वर्कशाप (फेज 2) अभिनवगुप्तकृत ईश्वरप्रत्यभिज्ञा विमर्शिनी ज्ञानाधिकार : 5–8 आह्निक रिपोर्ट

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद द्वारा, लखनऊ केन्द्र के तत्त्वावधान में प्रत्यभिज्ञा दर्शन जो कि त्रिक शैविज्म का प्रमाणमीमांसीय सम्प्रदाय है, के विषय में इस विषय के अधिकारी विद्वान् प्रो. नवजीवन रस्तोगी के निर्देशन और संयोजन में 15 फरवरी से 28 फरवरी तक चौदह दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला आचार्य उत्पलदेव के ग्रंथ ईश्वरप्रत्यभिज्ञाकारिका पर प्रत्यभिज्ञा सम्प्रदाय के प्रतिष्ठित विद्वान् अभिनवगुप्त की टीका ईश्वर प्रत्यभिज्ञा विमर्शिनी के अध्ययन की चार वर्षीय परियोजना के अंतर्गत तीन वर्षीय कार्यक्रम के फेज दो के रूप में आयोजित की गयी। यह कार्यशाला विगत वर्षों–2011, 2012, 2016 में सम्पन्न हुईं कार्यशालाओं के ही क्रम में आयोजित की गयी । इस कार्यशाला में कश्मीर से लेकर केरल तक के विविध क्षेत्रों से आये लगभग चालीस प्रतिभागियों ने भाग लिया जिनकी इस दर्शन में विशेष रुचि है और जिन्होंने किसी न किसी रूप में इस चिंतन से अपने को जोड़े रखा है।

इस कार्यशाला के दौरान इस ग्रंथ के ज्ञानाधिकार के पाँचवें से लेकर आठवें आह्निक तक का पंक्ति वाचन पद्धति अपनाते हुये शास्त्रीय विधि से अध्यापन किया गया। यह विमर्शिनी टीका उत्पल की कारिकाओं का विशद व्याख्यान है और तांत्रिक परम्परा में विकसित कश्मीर शैव चिंतन को तार्किक आधार पर प्रतिष्ठित कर आचार्य उत्पल और अभिनवगुप्त को यौक्तिक– तत्त्वमीमांसक के रूप में स्थापित करती है। यह पूरा ग्रंथ परार्थानुमान की शैली में लिखा गया ग्रंथ है जिसमें आद्योपांत निगमनात्मक शैली में विविध पूर्वपक्षों को लेकर उनका युक्तिपूर्वक खण्डन करते हुये अपने सम्प्रदाय की

प्रस्थापनाओं को प्रस्तुत किया गया है।

इस कार्यशाला में मूल ग्रंथ के अध्ययन के अतिरिक्त ग्रंथ में आये सिद्धांतों के सम्यक ग्रहण के लिये आवश्यक विषयों पर उन विषयों से सम्बद्ध अधिकारी विद्वानों के व्याख्यान भी आयोजित किये गये। इस कार्यशाला का प्रारम्भ प्रतिदिन सुश्री शालिनी माथुर के द्वारा अभिनवगुप्त के स्तोत्रों के संगीतमय पाठ से हुआ और प्रतिदिन की शास्त्र चर्चा का संक्षिप्त विवरण नित्य कार्यक्रम के अंत में डा. मीरा रस्तोगी के द्वारा प्रस्तुत किया गया। प्रतिभागियों के परस्पर विचार विमर्श के लिये प्रतिदिन एक घंटे का सत्र मध्याह्न भोजन के बाद रखा गया जिससे वे परस्पर चर्चा कर इस शास्त्र की मूल धारणाओं का सम्यक् ग्रहण कर सकें।

इस कार्यशाला का मुख्य प्रयोजन था नयी पीढ़ी को शास्त्रों के स्वरूप तथा विषय प्रस्तुति की विशिष्ट प्रणाली से परिचित कराना जिससे वे सम्प्रदाय के मूल सिद्धांतों से मौलिक रूप से परिचित हो सकें, साथ ही भारतीय दर्शन के उभरते हुये युवा चिंतकों का सही मार्गदर्शन हो कर उनको आगे विचार मंथन हेतु प्रोत्साहित किया जा सके।

इस कार्यशाला के प्रथम सत्र में सर्वप्रथम इस कार्यशाला के निर्देशक प्रो. नवजीवन रस्तोगी ने इस कार्यशाला के प्रयोजन और विषय से प्रतिभागियों को परिचित कराया। उसके बाद आपने आचार्य अभिनवगुप्त के व्यक्तित्व के विविध पक्षों का उल्लेख करते हुये बताया कि यद्यपि अभिनवगुप्त को साहित्यशास्त्री के रूप में विशेष ख्याति प्राप्त हुई है, एक योगी, साधक और रहस्यवित् के रूप में भी उनकी चर्चा मिलती है पर एक सशक्त दार्शनिक के रूप में उनको उतनी प्रतिष्ठा अभी तक प्राप्त नहीं हो सकी है जिसके वह अधिकारी हैं। इस कार्यशाला का लक्ष्य उनके उसी रूप को सबके सामने लाना हैं। इस दृष्टि से भी इस कार्यशाला की उपयोगिता है। गुरु शिष्य परम्परा के उच्छिन्न हो जाने से शास्त्र चिंतन आगे विकसित नहीं हो पा रहा है, अतः शास्त्र संरक्षण की दिशा में भी यह एक कदम है। इसके बाद आपने इस आगम परम्परा के शास्त्र के अध्ययन की क्या शैली होनी चाहिये, इस पर चर्चा की और बताया कि किसी शास्त्र ग्रंथ का अध्ययन परम्परा से सम्बद्ध करते हुये ही किया जाना चाहियें उसकी वाचन की, लेखन की शैली पर विशेष ध्यान देना चाहिये शास्त्राध्ययन के लिये आवश्यक वाक्यशास्त्र, प्रमाणशास्त्र, पदशास्त्र के ज्ञान को भी उस शास्त्र विशेष के संदर्भ में ही रख कर प्रयोग किया जाना चाहिये।

द्वितीय सत्र में पुनः प्रो. नवजीवन रस्तोगी ने विषय को आगे बढ़ाते हुये इस ग्रंथ की विशिष्टताओं का परिचय दिया। आपने इस प्रत्यभिज्ञा शास्त्र के अंतर्गत गृहीत पाँच ग्रंथों के स्वरूप से सबको परिचित कराते हुये बताया कि यह प्रत्यभिज्ञाचिंतन इन ग्रंथों के अतिरिक्त धाराओं से भी प्रवर्तित दिखायी देता है, एक ओर उत्पल के अपने शिष्य रामकण्ठ द्वारा स्पंद कारिकाओं पर प्रस्तुत स्पंद विवृति टीका में प्रत्यभिज्ञा सिद्धांतों का पर्याप्त प्रयोग उपलब्ध होता है, दूसरी ओर एक अन्य रामकण्ठ द्वारा गीता की सर्वतोभद्र नामक टीका में प्रस्तुत ज्ञान क्रिया समुच्चय पर भी इस प्रत्यभिज्ञा चिंतन की स्पष्ट छाप दिखायी देती है। इसके अतिरिक्त आचार्य उत्पल अपनी अन्य रचनाओं में भी इन प्रत्यभिज्ञा सिद्धांतों को आगे बढ़ाते दिखते हैं। आपने बताया कि यह चिंतन सोमानंद के माध्यम से त्र्यम्बक परम्परा से जुडता हुआ वर्तमान समय तक किसी न किसी रूप में प्रवर्तित रहा है। इसके बाद आपने इस शास्त्र के वर्गीकरण के विविध आधारों का परिचय दिया। आपने यह भी बताया कि इस ग्रंथ में अनेक स्थलों पर प्राप्त 'अन्ये तु' आदि वाक्यांशों से यह स्पष्ट है कि इस शास्त्र की व्याख्या की अन्य समानांतर परम्परायें भी विद्यमान थीं। साथ ही उल्लेखों से यह भी स्पष्ट है कि इस शास्त्र के पाठ में भी तंत्रालोक के टीकाकार के समय तक आते– आते कई परिवर्तन हुये हैं । इसके बाद आपने अभिनवगुप्त की विशिष्ट व्याख्या शैली से सभी प्रतिभागियों को परिचित कराया। उसके बाद आपने इससे पहले की कार्यशाला में अध्ययन किये गये चार आह्निकों की विषयवस्तु का संक्षिप्त परिचय दिया।

कार्यशाला के दूसरे दिन के प्रथम सत्र में प्रो. रस्तोगी ने पाँचवें आह्निक का अध्यापन प्रारम्भ करते हुये बताया कि यह सम्प्रदाय प्रत्ययवादी चिंतन के विशिष्ट प्ररूप को प्रस्तुत करता है अतः यहाँ की शब्दावली को समझना बहुत आवश्यक है क्यों कि यहाँ कई धारणाओं का विविध स्तरों पर अलग अलग अभिप्राय में प्रयोग मिलता है। जैसे यहाँ ज्ञान शब्द का कई स्तरों– ज्ञानमीमांसीय, तत्त्वमीमांसीय, ज्ञान प्रक्रिया, प्रत्यक्ष अनुभव आदि के रूप में प्रयोग किया गया है। आपने बताया कि प्रकाश विमर्श की जिस शब्दावली में यहाँ सत् के स्वरूप को परिभाषित किया गया है वह शब्दावली परम्परा से गृहीत है। यह प्रकाश शब्द विज्ञानाद्वैत और शब्दाद्वैत में समान रूप से प्रयुक्त है पर यह सम्प्रदाय इस धारणा को वहाँ से ग्रहण कर भी अपनी विशिष्ट दृष्टि से विकसित करता है। अखण्ड चैतन्य जो सतत गतिशील है, ही यहाँ परमसत् है। समस्त जगत् उसी से विकसित होता है। वह स्वतंत्र गतिशील चेतना जिस रूप में चयन करती है उसी रूप में भासित होती है । चेतना के इसी व्यापार विशेष को बताता है प्रकाश शब्द। यही भासन सत्ता है। इस सत्ता के परिघटन के बिना विमर्शन व्यापार प्रवृत्त नहीं हो

सकता अतः पहले प्रकाश पक्ष को तथा उसके व्यापार को स्पष्ट करना आवश्यक है। इस तरह ज्ञानात्मक चेतना प्रकाश है और ज्ञान की क्रियात्मक चेतना विमर्श है। इस प्रकाश तत्त्व का विवेचन यहाँ कई स्तरों पर किया गया है–प्रकाश अर्थ का स्वरूप है, प्रकाश प्रमाता का स्वरूप है, प्रकाश ज्ञाता, ज्ञान और ज्ञेय तीनों का स्वरूप है। पर इससे प्रकाश के अपने स्वरूप में कभी कोई भेद नहीं घटित होता, इसी कारण यह अखण्ड तथा एक है जिसे महाप्रकाश भी कह कर बताया गया है। सारी सृष्टि प्रकाश रूप है । यह प्रकाश ही भावाभावव्यवस्था का निर्धारक है।आपने बताया कि ज्ञान शक्ति से पूर्व स्मृतिशक्ति का विवेचन आवश्यक है क्यों कि स्मृति के माध्यम से ही विषय का पूर्ण स्वरूप प्रकाशित होता है अन्यथा वस्तु के दर्शन मात्र से किसी भी लोक व्यवहार की सिद्धि नहीं हो सकती।

कार्यशाला के दूसरे दिन के अपराह्ण के सत्र में वाराणसी से आये प्रो. कमलेशदत्त त्रिपाठी ने बताया कि भारत में शास्त्र की दो तरह की परम्परायें हैं– श्रुतिप्रधान और लिखित। पश्चिमी जगत् में भी इसकी चर्चा प्राप्त होती है पर इन दोनों दृष्टियों में मुख्य भेद यह है कि जहाँ पश्चिम में एक टेक्स्ट को लेकर उपलब्ध विविध पांडुलिपियों के आधार पर उसके रूप को परिशोधित कर एक मानक रूप प्रस्तुत कर अपनी– अपनी समझ के अनुसार उसका अध्ययन किया जाता है जिससे उनके अध्ययन में उन विद्वानों के अपने प्रतिमान ही उस टेक्स्ट पर आरोपित हो जाते हैं और उस टेक्स्ट की अपनी मूल दृष्टि कहीं छिप जाती है, वहीं भारतीय चिंतन का यह वैशिष्ट्य है कि यहाँ टेक्स्ट को पूर्वपरम्पराओं तथा सहगामी परम्पराओं के संदर्भ में रख कर ही अध्ययन किया जाता है।

प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा ने दो सत्रों में दो व्याख्यान दिये। प्रथम व्याख्यान में उन्होंने बाह्यार्थानुमेयवाद को आधार बना कर विज्ञानवाद तथा प्रत्यभिज्ञा आचार्यों ने जिन युक्तियों को प्रस्तुत कर अपने–अपने मत की स्थापना की है, उनसे सबको परिचित करवाया। आपने अपने व्याख्यान में यह रेखांकित करने का प्रयास किया कि शिवदृष्टि में आचार्य सोमानंद की उक्ति दृ 'घटो मदात्मना वेत्ति वेद्म्यहं वा घटात्मना' के आधार पर प्रस्तुत 'सर्वं सर्वात्मक' की विचारधारा का ही परिनिष्ठित रूप प्रत्यभिज्ञा चिंतकों के द्वारा विकसित यौक्तिक मीमांसा में परिलक्षित होता है। अपने दूसरे व्याख्यान में उन्होंने अपोहवाद के सिद्धांत को लेकर बौद्ध चिंतन तथा प्रत्यभिज्ञा सिद्धांत के मध्य के भेद को रेखांकित करने का प्रयास किया ।

बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से आये भारतीय न्याय शास्त्र व तर्कमीमांसा के विशिष्ट विद्वान प्रो.

सच्चिदानन्द मिश्र ने दो सत्रों में प्रस्तुत अपने दो व्याख्यानों में भारतीय वस्तुवादी चिन्तन के विविध रूपों को प्रस्तुत कर उसके सन्दर्भ में इस प्रत्यभिज्ञा चिन्तन को प्रस्तुत करने का प्रयास किया।

दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष एवं भर्तृहरि के चिन्तन के समर्थ विद्वान प्रो. मिथिलेश चतुर्वेदी ने एक सत्र में अपने वक्तव्य में भर्तृहरि की मान्यताओं से हम सभी को परिचित कराया। आपने बताया कि कश्मीर शिवाद्वयवादी आचार्य अभिनवगुप्त भर्तृहरि को अत्यन्त श्रद्धा व सम्मान से उद्धृत कर यह संकेत करते हैं कि भर्तृहरि के शब्दाद्वयवाद से प्रत्यभिज्ञा चिन्तन पर्याप्त प्रभावित है और उनसे बीज रूप में कई मान्यताओं को ग्रहण कर उन्हें अपनी दृष्टि से आगे बढाता है, यद्यपि सोमानन्द शिवदृष्टि में एक आह्निक में शब्दाद्वयवाद की मान्यताओं की प्रखर आलोचना करते हैं। इस तरह परम्परा में एक अन्तर्विरोध दिखाई देता है जिसका विश्लेषण आवश्यक है

एक अन्य सत्र में दिल्ली विश्वविद्यालय से ही आये डा. बलराम शुक्ला ने संस्कृत शास्त्राध्ययन में व्याकरण सिद्धान्तों का कैसे उपयोग होता है, इसको इस ईश्वरप्रत्यभिज्ञाविमर्शिनी में अभिनवगुप्त के द्वारा प्रस्तुत प्रयोगों के आधार पर स्थापित करने का प्रयास।

प्रो. नवजीवन रस्तोगी ने अपने सात सत्रों में इस ईश्वरप्रत्यभिज्ञाविमर्शिनी ग्रंथ के पाँचवे आह्निक में विवेचित विषय का शब्दशः पङक्तिवाचन पद्धति से प्रतिपादन किया । इस आह्निक में 21 कारिकायें हैं जिनमें इस दर्शन की आधार भूत मीमांसा को स्थापित किया गया है।

वैष्णव देवी विश्वविद्यालय, जम्मू से आये डा. वरुण कुमार त्रिपाठी ने अपने तीन सत्रों में इस ग्रन्थ के छठे आह्निक का अभिप्राय शास्त्रीय ढंग से प्रतिपादित करने की चेष्टा की । उन्होंने अपने तर्कशास्त्र के विशिष्ट ज्ञान से इस सम्प्रदाय की मान्यताओं को परख कर उनके पुष्ट स्वरूप को सबके सम्मुख रखा और बताया कि भारतीय तथा पश्चिमी दोनों ही परम्पराओं में इस सम्प्रदाय जैसा चिन्तन का उत्कर्ष अन्यत्र कहीं दिखाई नहीं देता ।

उसके बाद चार सत्रों में लखनऊ विश्वविद्यालय, संस्कृत विभाग की पूर्व प्राध्यापिका डा. मीरा रस्तोगी ने इस ग्रन्थ के सातवें आह्निक के विषय का शास्त्रशः प्रतिपादन किया । इस आह्निक में उन स्मृति, ज्ञान, अपोहन शक्तियों के के एक आश्रय की स्थापना की गयी है और उसे प्रतिभा कह कर प्रस्तुत करते हुये भी माहेश्वर्ययुक्त प्रमातृतत्त्व के रूप में उपस्थापित किया गया है ।

अन्तिम सत्र समापन सत्र के रूप में आयोजित हुआ जिसमें सबसे पहले डा. मीरा रस्तोगी ने पूरी कार्यशाला के इतिवृत्त की संक्षिप्त रिपोर्ट प्रस्तुत की। तदुपरान्त प्रो. नवजीवन रस्तोगी ने अपने समापन वक्तव्य में कहा कि आज यह चिंतन परम्परा उच्छेद के स्तर पर पहुँच रही है, वर्तमान समय में न तो विश्वविद्यालयों में दर्शन विभागों में इसे पाठ्यक्रम का अंग बनाया गया है, न ही स्वतंत्र रूप से ही अध्येता इसके अध्ययन में रुचि लेते दिखायी दे रहे हैं। भारतीय दर्शन शास्त्र के इतिहास ग्रंथों में जिस विभाजक दृष्टि का आश्रय लेकर वर्गीकरण प्रस्तुत किये गये हैं, उनमें भी अभिनवगुप्त के इस चिंतन को खोज पाना अति दुर्लभ है। अतः आज हमारा बहुत बड़ा दायित्व है कि हम इसके अध्ययन की ओर लोगों को आकृष्ट कर उनमें इसको जानने की रुचि जगायें जिससे इस चिंतन की दुर्लभ विधा को सुरक्षित रखा जा सके।

इसके बाद भारतीय अनुसंधान परिषद् के सदस्य सचिव, प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने कहा कि यह प्रचलित छह दर्शन परम्पराओं का वर्गीकरण भ्रामक है और पाश्चात्य परम्परा के प्रभाव में स्वीकार किया गया है। भारतीय चिंतन में छह दृष्टियों का उल्लेख था षड् दर्शनों का नहीं। त्रिक चिंतन चिंतन का शिखर है जिसे आज लगभग विस्मृत कर दिया गया है । किसी परम्परा को बनाये रखने के लिये जिस निस्पृह चिंतन की, समर्पित व्यक्तित्व की, एकांतिक निष्ठाभाव की आवश्यकता होती है आज की पीढी में उसका पर्याप्त अभाव दिखायी देता है अतः आज हमारा दायित्व और बढ जाता है। आज बहुत आवश्यक है कि हम अपनी दुर्लभ ज्ञान परम्पराओं को सुरक्षित करने के लिये यथासंभव प्रयास करें और अपने सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा हेतु कटिबद्ध हो तत्पर रहें।

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस

21 जून 2017

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद एवं राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) के संयुक्त तत्त्वावधान में गोमती नगर, लखनऊ परिसर में 21 जून 2017 को मनाया गया। कार्यक्रम के प्रथम चरण में प्रातः 7 बजे योगाभ्यास सत्र हुआ। इसमें लन्दन की सुश्री लूसी गेस्ट के कुशल निर्देशन में यह सम्पन्न हुआ। इसमें वर्षा के बावजूद संस्थान एवं दर्शन परिषद के सदस्यों एवं अन्य नगर के गणमान्य नागरिक उपस्थित हुए। द्वितीय सत्र कार्यशाला एवं परिचर्चा सत्र में सुश्री लूसी गेस्ट, (सचिव चन्द्रमौलि फाउण्डेशन वाराणसी) ने ही योग के विविध पक्षों पर अपना विशिष्ट उद्बोधन दिया। जिसमें

योग के कारण ही आज भारत को विश्वगुरु बतलाया तथा कहा कि योग से ही आज विश्व की समस्याएं सुलझाई जा सकती हैं। राष्ट्रीय कार्यशाला–सामंजस्य तथा शांति के लिए योग विषय पर बीज व्याख्यान देते हुए आई.सी.पी.आर. के सचिव सदस्य प्रो. रजनीश शुक्ल ने योग के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डाला तथा वर्तमान परिस्थितियों में प्रासंगिक बतलाया। लखनऊ वि.वि. के कला संकायाध्यक्ष प्रो. पी. सी. मिश्र ने वर्तमान में समस्याओं को दूर करने के लिए योग को कारगर बतलाया।

प्रो. रामलखन पाण्डेय ने वर्तमान स्थिति में भी शास्त्रों को प्रमाण बतलाया। राज्यपाल के कानूनी सलाहकार श्री एस. एस. उपाध्याय ने योग पर और शोध की आवश्यकता बतलायी, जिससे चिकित्सा के क्षेत्र में और अधिक प्रामाणिक बनाया जा सके। सभा की अध्यक्षता करते हुए प्रो. विजय कुमार जैन (प्राचार्य) ने भारतीय संस्कृति में योग को सूर्य के समान सबके लिए उपयोगी बतलाया तथा जैनधर्म/बौद्धधर्म एवं पतंजलि के योग में समानता पर प्रकाश डालते हुए ध्यान एवं योग विविध पक्षों को प्रासंगिक बतलाई।

योग चिकित्सा सत्र– तृतीय सत्र में ब्रह्मकुमारी स्वर्णलता ने योग का महत्व बतलाते हुए क्रोध को शमन करने के लिए योग को उपयोगी बतलाया। प्रो. लोकमान्य मिश्र अध्यक्ष शिक्षाशास्त्र विभाग के अध्यक्ष ने कहा कि योग 'स्वास्थ्य' के लिए तो आवश्यक है ही भारतीय संस्कृति भी उजागर होती है। निरोगी रहने के लिए पाठ्यक्रम में भी इसे सम्मिलित करने की आवश्यकता है।

संभाषण प्रतियोगिता में संस्थान के 20 शोधछात्रों ने 'जीवन के विविध आयामों में योग का महत्व' विषय पर अपने विचार रखे। निर्णायक श्री आर. के. राठौर ने भी योग के महत्व पर प्रकाश डाला। भा.द.अ.प. की निदेशक डॉ. पूजा व्यास ने योग दिवस की पूरी संकल्पना का महत्व बतलाया। इस अवसर पर प्रतियोगियों को पुरस्कृत भी किया गया।

समन्वयक श्री पवन कुमार ने सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन करते हुए कार्यक्रम में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई तथा परिसर एवं अनुसंधान परिषद के सभी सदस्यों ने इसमें उत्साह से भाग लिया।

समापन सत्र में कार्यक्रम के उपलब्धियों का वर्णन करते हुए डॉ. गुरुचरण सिंह नेगी ने कार्यक्रम का संचालन किया।

तीसरी स्टडी सर्कल की रिपोर्ट
"कांसेप्ट ऑफ़ ह्यूमन राइट्स इन हिन्दुइज़्म"
आरंभकर्ता: डॉ. पवन कुमार यादव
23 जून 2017 को दोपहर 3:00 बजे एकेडमिक सेंटर में

हिंदू धर्म में मानव अधिकार के संकल्पना पर अध्ययन चक्र 23 जून 2017 को दोपहर 3:00 बजे शैक्षणिक केंद्र में आयोजित किया गया था। डॉ. पवन कुमार यादव कार्यक्रम के आरंभकर्ता थे। इस अवसर पर भाग लेने वाले प्रतिभागियों में प्रोफेसर नवजीवन रस्तोगी थे।

डॉ. यादव ने यह बताकर प्रस्तुति की शुरुआत की कि मानव के अधिकार पूरी तरह से आधुनिक नहीं हैं और न ही पश्चिमी हैं क्योंकि ऋग्वेद में भी नागरिक अधिकारों के संदर्भ हैं। महाभारत में भी धर्म अधिकारों की अवधारणा थी। लेकिन अर्थशास्त्र में, नागरिक और कानूनी अधिकारों को पहली बार तैयार किया गया था जिसमें आर्थिक अधिकार भी शामिल थे। मूल मानवाधिकार को स्मृति और पुराणों में शामिल किया गया था।

डॉ. यादव ने भारतीय संविधान के मौलिक अधिकारों के बारे में भी बताया और बात की। उन्होंने अनुच्छेद 17 का संदर्भ भी दिया जिसके माध्यम से अस्पृश्यता को समाप्त किया जाता है। उन्होंने हिंदू धर्मशास्त्र में वर्णित कर्तव्यों के बारे में भी चर्चा की। हिंदू धर्मग्रंथों और भारतीय संविधान के संदर्भ में समानता का अधिकार, शिक्षा का अधिकार, धर्म का अधिकार, सुरक्षा का अधिकार, उपचार का अधिकार, न्याय का अधिकार आदि पर चर्चा की गई।

चौथे स्टडी सर्कल की रिपोर्ट
"भारतीय दर्शन मे सत्य की अवधरणा"
आरंभकर्ता: प्रोफेसर विजय कुमार जैन
31 जुलाई 2017 को अपराह्न 3:00 बजे
राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, लखनऊ परिसर

चौथे स्टडी सर्कल 31 जुलाई 2017 को राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान में आयोजित किया गया था और इसके प्रमुख प्रोफेसर विजय कुमार जैन अध्ययन मंडल के सर्जक थे। विषय था *भारतीय दर्शन में सत्य की अवधारणा*। कार्यक्रम दोपहर 3:00 बजे शुरू हुआ। व्याख्यान में कई विद्वान और प्रोफेसर उपस्थित थे,

जिनमें प्रोफेसर राजेंद्र प्रसाद, प्रोफेसर नवजीवन रस्तोगी, डॉ. पवन दीक्षित आदि शामिल थे। डॉ पूजा व्यास ने अतिथियों का स्वागत किया। प्रोफेसर जैन ने यह कहकर अपनी प्रस्तुति की शुरुआत की कि भारतीय दर्शन ने हमेशा सत्य (सत्य) को उच्च स्थान पर रखा है। कोई भी व्यक्ति सच बोलने वाले को दबा नहीं सकता है। शांति पर्व के अनुसार, सत्य स्वर्ग की प्रतिष्ठा है।

जैन संप्रदाय में, स्यादवाद में सत्य और अनेकांतवाद की विस्तार पर चर्चा की गई है। बुद्ध दर्शन में, झूठ को हतोत्साहित किया जाता है। सत्य के प्रकाश में भारतीय दर्शन के सभी रूपों में चर्चा की गई।

कई विद्वानों द्वारा चर्चा के बाद कार्यक्रम का समापन किया गया और धन्यवाद ज्ञापन डॉ. पवन दीक्षित ने किया।

5 वें स्टडी सर्कल की रिपोर्ट
''दी स्पिरिट ऑफ़ योग''
आरंभकर्ताः प्रोफेसर कंचन सक्सेना
विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय
28 अगस्त 2017 को अपराह्न 3:00 बजे
दर्शनशास्त्र विभाग का संगोष्ठी कक्ष, लखनऊ यूनिवर्सिटी कैंपस

28 अगस्त 2017 को 5वीं स्टडी सर्कल का आयोजन दर्शनशास्त्र विभाग, लखनऊ यूनिवर्सिटी कैंपस में हुआ। प्रोफेसर कंचन सक्सेना, विभागाध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग कार्यक्रम के आरंभकर्ता थी। उन्होंने योग की भावना के बारे में बताया। उन्होंने दैनिक जीवन में योग के महत्व और मानसिक, शारीरिक और भावनात्मक समस्याओं से निपटने के बारे में चर्चा करके अपने विषय को विस्तृत किया। कार्य स्थल, अध्ययन आदि से संबंधित समस्याओं से न केवल शारीरिक बल्कि मानसिक रोग से भी निपटा जा सकता है।

डॉ. आलोक टंडन के अलावा विश्वविद्यालय के शिक्षक और विद्वान भी व्याख्यान में उपस्थित थे और अन्य प्रतिभागियों के साथ चर्चा में सक्रिय रूप से भाग लिया। डॉ. पूजा व्यास, निदेशक, भा. दा.अ.प. द्वारा धन्यवाद ज्ञापन दिया गया।

6 वें स्टडी सर्कल कार्यक्रम पर रिपोर्ट
"दी कांसेप्ट ऑफ़ गुड टीचर इन फिलॉसॉफी"
आरंभकर्ताः प्रोफेसर राजेंद्र प्रसाद
22 सितंबर 2017

22 सितंबर 2017 को अपराह्न 3.00 बजे से शाम 5.00 बजे के बीच भा.दा.अ.प. शैक्षणिक केंद्र में "द कॉन्सेप्ट ऑफ द गुड टीचर इन फिलॉसफी" विषय पर 6वें स्टडी सर्कल कार्यक्रम का आयोजित किया गया था जिसके प्रोफेसर राजेंद्र प्रसाद कार्यक्रम के आरंभकर्ता थे। प्रतिभागियों में लखनऊ विश्वविद्यालय के प्रोफेसर के.सी. पांडे भी उपस्थित थे।

प्रोफ़ेसर प्रसाद ने शिक्षक–छात्र संबंधों की परंपरा पर विचार किया।

प्रोफेसर पांडे ने अपनी बातचीत में, शिक्षकों की सम्मोहक स्थितियों पर न केवल प्रशासन और समाज द्वारा, बल्कि स्वयं शिक्षण समुदाय द्वारा भी प्रकाश डाला।

प्रोफेसर प्रसाद ने पाठ्यक्रम रूप–रेखा, प्रश्नपत्र समायोजन, सुधारों के नाम पर प्रथागत बैठकें, दर्शनशास्त्र शिक्षण की नींव रखने वाले शिक्षकों के गुणों के बारे में बताया।

7 वें स्टडी सर्कल कार्यक्रम पर रिपोर्ट
"भगवद् गीता और योग दर्शन"
आरंभकर्ताः डॉ. विजय कुमार कर्ण
31 अक्टूबर 2017 को
पर
भाऊराव देवरस सेवा न्यास, लखनऊ

"भगवद् गीता और योग दर्शन" विषय पर भा.दा.अ.प. 7वें स्टडी सर्कल कार्यक्रम का आयोजन 31 अक्टूबर 2017 को अपराह्न 3.00 बजे से 5.00 बजे के बीच भाऊराव देवास सेवा न्यास, लखनऊ में किया गया था। डॉ. विजय कुमार कर्ण कार्यक्रम के के आरंभकर्ता थे। कार्यक्रम ने विभिन्न श्रोताओं को आकर्षित किया।

शुरुआत में, निदेशक (ए) डॉ. पूजा व्यास का स्मृति चिन्ह देकर स्वागत किया गया। उन्होंने अतिथियों का स्वागत किया और भा.दा.अ.प. के स्टडी सर्कल कार्यक्रम के बारे में जानकारी दी।

डॉ. कर्ण ने योग दर्शन को 'युज्' शब्द से एक वैचारिक विश्लेषण करने के लिए जोड़ा जिससे अर्थ जुड़ा हो। किसी भी रूप में, योग दर्शन में सांसारिक और अन्य–सांसारिक दोनों तरह के लाभ हैं, अभ्युदय

और निःश्रेयस के तरीके में, और वह भी केवल मनुष्यों के लिए ही नहीं, बल्कि पूरे ब्रह्मांड के लिए भी। डॉ. कर्ण ने श्रोताओं के लिए विभिन्न शास्त्रों से विभिन्न उदाहरणों के साथ इस बिंदु को उजागर किया।

योग दर्शन के लिए अनुभव, तर्क और शास्त्र ज्ञानात्मक आदर्शों पर चर्चा की गई। उन्होंने बताया कि किस तरह योग से समर्पण किए बिना ईश्वर और योग मार्ग में सांसारिक कर्म किए जा सकते हैं। अंत में, उन्होंने राज योग, योग सिद्धियाँ और योग भस्त्रिका और समाधियों के विभिन्न पहलुओं पर विचारव्यक्त किया।

8वें स्टडी सर्कल की रिपोर्ट
''रेटूर्न टू प्यूरिटी : थेओरिटिकल एंड प्रैक्टिकल एप्रोच टू योग सूत्र''
आरंभकर्ताः डॉ. राम किशोर
29 नवंबर 2017 को दोपहर 3:00 बजे
शैक्षणिक केंद्र, लखनऊ

आठवें स्टडी सर्कल का आयोजन 29 सितंबर 2017 को भा.दा.अ.प. के शैक्षणिक केंद्र में किया गया था। डॉ. राम किशोर कार्यक्रम के आरंभकर्ता थे। उन्होंने योगसूत्र में सैद्धांतिक और व्यावहारिक दृष्टिकोण में शुद्धता के बारे में चर्चा की, न केवल व्यक्ति की पवित्रता बल्कि ज्ञान के अनुसार दृष्टि और दृष्टि की शक्ति भी। व्यावहारिक योग 8 प्रकार के हैं: यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि। व्याख्यान के दौरान प्रोफेसर राजेंद्र प्रसाद और प्रोफेसर राकेश चंद्रा मौजूद थे।

9 वें स्टडी सर्कल की रिपोर्ट
''निश्चितता में निश्चितता की अवधारणा''
आरंभकर्ताः डॉ. मंजेश कुमार 2 दिसंबर 2017 को अपराह्न 3:00 बजे
दर्शनशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय

नौवीं स्टडी सर्कल का आयोजन लखनऊ विश्वविद्यालय के दर्शनशास्त्र विभाग में किया गया था। प्रोफेसर राकेश चंद्रा ने कार्यक्रम के आरंभकर्ता डॉ. मंजेश कुमार का परिचय कराया। उन्होंने लुडविग विट्गेन्स्टाइन का परिचय देकर अपना व्याख्यान शुरू किया, जिसमें उल्लेख किया गया कि विट्गेन्स्टाइन 20वीं सदी के सबसे प्रभावशाली दार्शनिक थे। अन्य समकालीन दार्शनिक, अर्थात् जी.ई. मूर और बर्टेंड रसेल उनकी सोच और व्यक्तित्व से प्रभावित थे। निश्चितता पर विट्गेन्स्टाइन और मूर के काम की निरंतर चर्चा है। डॉ. मंजेश ने बहुत प्रभावी ढंग से अपने शोध पत्र का उल्लेख करते हुए कहा कि विट्गेन्स्टाइन की शुरुआती और अंतिम चिंता थीः कुछ कहने का क्या मतलब है?

प्रोफेसर राजेंद्र प्रसाद और विभाग के अन्य शिक्षक व्याख्यान के दौरान उपस्थित थे, जो भा.दा.अ.प. की ओर से डॉ. सरोज कांत कर द्वारा दिए गए धन्यवाद के बाद संपन्न हुआ था।

10वीं स्टडी सर्कल की रिपोर्ट
''व्हाई मॉडर्न माइंड फाइंड्स इट् डिफिकल्ट टू अंडरस्टैंड''
आरंभकर्ताः प्रोफेसर बी.के. अग्रवाल
25 जनवरी 2018 को दोपहर 3:00 बजे भा.दा.अ.प. शैक्षणिक केंद्र

प्रोफेसर बी.के. अग्रवाल ने प्रोफेसर नवजीवन रस्तोगी, डॉ. पूजा व्यास (निदेशक ए) और अन्य विद्वानों की उपस्थिति में इस विषय पर अपना व्याख्यान दिया। प्रस्तुति का सार यह था कि आधुनिकविचार के लिए पारम्परिक भारतीय सोच को समझना असंभव है, जब तक कि कोई व्यक्ति पारम्परिक भारतीय सोच के धर्म के अनुसार सोचने के लिए नहीं सीखता है।

11 वें स्टडी सर्कल की रिपोर्ट
''सावित्री बाई फुले की शिक्षा दर्शनः नारी शिक्षा''
नारी सशक्तिकरण
आरंभकर्ताः डॉ. ममता सिंह
27 फरवरी 2018 को दोपहर 3:00 बजे भा.दा.अ.प. शैक्षणिक केंद्र में

डॉ. ममता सिंह लखनऊ विश्वविद्यालय के दर्शनशास्त्र विभाग में सहायक प्रोफेसर हैं। उन्होंने श्रीमती सावित्री बाई फूले और उनके पति महात्मा ज्योति राव फूले द्वारा 19वीं सदी में गाँवों की महिलाओं को शिक्षित करने के क्षेत्र में किए गए प्रयासों पर अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया। श्रीमती फूले ने भी अस्पृश्यता, अंध विश्वास, महिलाओं की स्थिति आदि के खिलाफ अपनी आवाज उठाई, महिला उत्थान के प्रति उनके योगदान को भारत के लोगों द्वारा हमेशा याद किया जाएगा।

12वें स्टडी सर्कल की रिपोर्ट
''टैगोरः विश्व मानव (द यूनिवर्सल मैन)''
आरंभकर्ताः प्रोफेसर नुपुर सेन
22 मार्च 2018 अपराह्न 3:00 बजे
शिक्षा विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय

प्रोफेसर नुपुर सेन शिक्षा विभाग लखनऊ वि.वि., लखनऊ, में पढ़ाती हैं और उन्होंने कई लेख लिखा

है। उन्होंने रवीन्द्र नाथ टैगोर पर एक सार्वलौकिक व्यक्ति के रूप में शोध पत्र प्रस्तुत किया। प्रोफेसर सेन के अनुसार, टैगोरियन दर्शन में सार्वभौमिक पुरुष परम वास्तविकता है और गीता में दिव्य की लौकिक दृष्टि से सहमत है। टैगोर का दर्शन मानव जीवन, समाज, संस्कृति और इतिहास से अविभाज्य रूप से जुड़ा हुआ है।

व्याख्यान के दौरान बड़ी संख्या में विद्वान और शिक्षक उपस्थित थे।

18. हिंदी पखवाड़ा

परिषद् ने वर्ष 2017 के लिए हिंदी पखवाडा का आयोजन दिल्ली एवं लखनऊ कार्यालय में किया गया। यह पखवाड़ा परिषद् के कर्मियों की भागीदारी के साथ 16–30 सितम्बर 2017 के बीच मनाया गया। पखवाड़े के अन्तर्गत कई प्रतियोगितायों यथा अस्नातक और स्नातक निबंध प्रतियोगिता, एमटीएस के लिए सुलेख प्रतियोगिता, अहिन्दी प्रदेश भाषीय की सुलेख प्रतियोगिता, टिप्पणी एवं प्रारूप प्रतियोगिता, टंकण प्रतियोगिता, एवं कविता प्रतियोगिता आयोजित की गई। ये सभी प्रतियोगिताएं हिंदी में आयोजित की गई।

सुश्री सुनीति शर्मा, निदेशक (राजभाषा) मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली एवं प्रो. रामनाथ झा सस्कृत अध्ययन केन्द्र, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली तथा श्री आशुतोष भट्टनागर, जम्मू एवं कश्मीर अध्ययन केन्द्र, प्रवासी भवन, दीन दयाल उपाध्ययाय मार्ग ने कार्यक्रम की शोभा बढाई। सभी ने माना कि हिंदी के प्रोत्साहन की आवश्यकता है। हमें हिंदी को अपनाने के लिए दूसरों पर निर्भर नही रहना चाहिए शुरूआत स्वयं से ही करनी होगी। अभी राजभाषा को लेकर जो वातावरण है वह स्वर्णिम अवसर है। उसका हमें लाभ उठाना चाहिए और हिंदी को रोजगार से जोड़ना चाहिए ताकि युवा इसकी तरफ आकर्षित हो।

हिंदी पखवाड़े में निम्नलिखित कर्मियों को पुरस्कार दे कर सम्मानित किया गया। जिनकी सूची इस प्रकार है।

टिप्पण एवं प्रारूप

प्रथम पुरस्कार–श्रीमती नीता वर्मा

द्वितीय पुरस्कार–श्री सोनू राय

तृतीय पुरस्कार–श्री देवेन्द्र कुमार

टंकण प्रतियोगिता

प्रथम पुरस्कार–श्री राजेश धानिया

द्वितीय पुरस्कार–श्री सोनू राय

तृतीय पुरस्कार–श्री अनीश कुमार

सुलेख प्रतियोगिता, एमटीएस वर्ग के लिए

प्रथम पुरस्कार–श्री अश्वनी कुमार मिश्र

द्वितीय पुरस्कार–श्री रोहताश

तृतीय पुरस्कार–श्री लाल बाबू मिश्रा

गैर–हिंदी प्रदेश के लिए सुलेख प्रतियोगिता

प्रथम पुरस्कार–श्री मोहन दास

द्वितीय पुरस्कार–डॉ. मर्सी हेलन

तृतीय पुरस्कार–श्रीमती वेदावल्ली

निबंध प्रतियोगिता

(सभी अस्नातक वर्ग के कर्मचारियों के लिए)

प्रथम पुरस्कार–श्री गणेश चंद्र भट्ट

द्वितीय पुरस्कार–श्री लाल बाबू

तृतीय पुरस्कार–श्री रोहताश

निबंध प्रतियोगिता

(सभी स्नातक वर्ग के कर्मचारियों के लिए)

प्रथम पुरस्कार–श्री सोनू राय

द्वितीय पुरस्कार–श्री संदीप

तृतीय पुरस्कार–श्री देवेन्द्र कुमार

कविता पाठ

प्रथम पुरस्कार–श्री देवेन्द्र कुमार, हिंदी अनुवादक

द्वितीय पुरस्कार–श्री अश्वनी कुमार

तृतीय पुरस्कार–डॉ. सुशिम दुबे और श्री सुनील सब्बरवाल

हिंदी तिमाहीवार निबंध प्रतियोगिता

परिषद् के राजभाषा से संबंधित अन्य कार्याक्रमों के अन्तर्गत तिमाहीबार कार्यक्रम का आयोजन किया गया। अस्नातक और स्नातक वर्ग के लिए निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

दोनो वर्गों के प्रतिभागियों को अधिक से अधिक 700 शब्दों का निबंध लिखना था जिनका विषय इस प्रकार था।

अस्नातक वर्ग	1. *राजभाषा में कार्य करना सरल या कठिन* अथवा 2. *भारतीय समाज में जातिवाद की भूमिका*
स्नातक वर्ग	1. *सरकारी कार्यालयों में हिंदी की स्थिति* अथवा 2. *जाति आधारित आरक्षण : सही या गलत*

अगली तिमाहीबार के प्रतिभागियों को सुश्री सुनीति शर्मा के हाथों से पुरस्कृत किया गया ।

अस्नातक वर्ग	प्रथम–श्री जगदेव सिंह, द्वितीय–श्री लाल बाबू
स्नातक वर्ग	प्रथम–श्री राहुल रंजन, द्वितीय–श्री विशाल एवं श्री एस.बी. सिंह, तृतीय श्री सुनील कुमार

एक अन्य प्रतियोगिता ''*कार्यालय कामकाज में हिंदी : समस्या एवं समाधान''* विषय पर तिमाहीबार निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया । जिसमें पुरस्कार की चार श्रेणी रखी गई। प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं सांत्वना प्रतियोगिता को भी जोड़ा गया । जो इस प्रकार है ।

प्रथम	श्री राहुल रंजन	रु. 1000
द्वितीय	श्री रोहताश	750
तृतीय	श्री अश्वनी मिश्रा	500
सांत्वना	श्री सोनू राय	300
सांत्वना	श्री हरेन्दर	300

19. परिषद् के सदस्य (2016–2019)

क्र.सं.	नाम और पता	नामित	ई–मेल
1.	प्रोफेसर एस.आर. भट्ट अध्यक्ष, भा.दा.अ.प. नई दिल्ली	अध्यक्ष, भा.दा.अ.प. (21.10.15 से)	srbhatt39@gmail.com
2.	प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल सदस्य सचिव, भा.दा.अ.प. नई दिल्ली	सदस्य सचिव, भा.दा.अ.प.	rksphilosophy@gmail.com
3.	प्रोफेसर वी कुटुंब शास्त्री पूर्व कुलपति, रा.सं. सस्थान, नई दिल्ली मारफत श्रीमती सी. सुषमा 1बी003, कृष्णा आइकन अपार्टमेंट्स,	मानव संसाधन विकास मंत्रालय	kutumba10@gmail.com

	अन्नासैंड्रापलय विमानपुरा पोस्ट एचएएल बेंगलुरु 560017		
4.	प्रोफेसर आर.सी. सिन्हा भूतपूर्व अध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग, पटना विश्वविद्यालय 201 सप्तर्षि अपार्टमेंट, राजकिशोरी कॉम्प्लेक्स कंकरबाग, पटना 800020	मानव संसाधन विकास मंत्रालय	rcsinha22@gmail.com
5.	प्रोफेसर धर्मानंद शर्मा भूतपूर्व अध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग जे–54, पीजी1 एन्क्लेव, जीएच–94, सेक्टर 20 पंचकुला, हरियाणा – 134117	मानव संसाधन विकास मंत्रालय	dharmanandsharma@gmail.com
6.	प्रोफेसर जटाशंकर तिवारी भूतपूर्व अध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद 211001	मानव संसाधन विकास मंत्रालय	profjatashankar@gmail.com
7.	प्रोफेसर कुसुम जैन 139, मुक्तानंद नगर गोपालपुरा बाइपास, टोंक रोड, जयपुर – 302017	मानव संसाधन विकास मंत्रालय	kusumonnet@yahoo.com
8.	प्रोफेसर ओम प्रकाश पांडेय भूतपूर्व अध्यक्ष, संस्कृत एवं प्राकृत भाषा विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय बी–1/4 विक्रांट खंड, गोमती नगर, लखनऊ – 226010	मानव संसाधन विकास मंत्रालय	profomprakash1949@gmail.com
9.	प्रोफेसर हरे राम त्रिपाठी श्री लाल बहादुर शास्त्री, राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ 13–4, कुतुब इंस्टिट्यूशनल एरिया कटवारिय सराय नई दिल्ली – 110066	मानव संसाधन विकास मंत्रालय	hrtripathi2014@gmail.com
10.	प्रोफेसर नरेश कुमार अम्बष्ठ अध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग		

	पीकेआरएम कॉलेज, सीएमपीएफ कॉलोनी धनबाद, झारखंड – 826004	मानव संसाधन विकास मंत्रालय	nkambasta@yahoo.com
11.	प्रोफेसर राजाराम शुक्ल प्रोफेसर – वैदिक दर्शन, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय वाराणरी, उत्तर प्रदेश – 221005	मानव संसाधन विकास मंत्रालय	rrsvns@gmail.com
12.	प्रोफेसर एस.आर. लीला भूतपूर्व प्रोफेसर व अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, एनएनएमकेआरवी कॉलेज बेंगलुरू आवास : # 30 धारिणी, 1 मेन, तीसरा क्रॉस, के.ई.बी लेआउट बेंगलुरु – 560085	मानव संसाधन विकास मंत्रालय	bharati_trust@yahoo.co.in srleela@mrinaal.com
13.	प्रोफेसर एक्स.पी. माओ दर्शनशास्त्र विभाग नॉर्थ–ईस्टर्न हिल युनिवर्सिटी उमशिंग मॉकिनरोह शिलांग, मेघालय – 793022	मानव संसाधन विकास मंत्रालय	xavmao@gmail.com
14.	प्रोफेसर भुवन चंदेल सेंटर फॉर स्टडीज इन सिविलाइजेशन्स डीडी–16, कालकाजी (नेहरू एन्क्लेव के निकट), नई दिल्ली – 110019	विश्वविद्यालय अनुदान आयोग	chandelbhuvan@gmail.com
15.	डॉ. बृजबिहारी कुमार अध्यक्ष, भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद्, जेएनयू संस्थागत क्षेत्र, अरुणा आसफ अली मार्ग नई दिल्ली – 110067	भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान संस्थान	chairman@icssr.org ps e-mail id: smadanpotra@gmail.com
16.	प्रो. अरविंद पी. जामखेड़कर अध्यक्ष, भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, 35 फिरोजशाह रोड,		

	नई दिल्ली – 110001	भा.इ.अ.प.	chairman@ichr.ac.in
17.	प्रोफेसर एस.के. सोपोरी एफ.एन.ए. मकान नं. 584 सेक्टर 14, फरीदाबाद हरियाणा–120007	आई.एन.एस.ए.	sopory@gmail.com
18.	सचिव माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा विभाग मानव संसाधन विकास मंत्रालय शास्त्री भवन, नई दिल्ली		secy.dhe@nic.in
19.	वित्तीय सलाहकार माध्यमिक उच्च शिक्षा मानव संसाधन विकास मंत्रालय शास्त्री भवन, नई दिल्ली	मानव संसाधन विकास मंत्रालय	jsfa.edu@gov.in
20.	प्रोफेसर यू.एस. बिष्ट ग्राम – रीथाचौरा पोस्ट – भाटकोट जिला – अल्मोड़ा उत्तराखंड – 263656	नामित	umraobist@gmail.com
21.	प्रोफेसर एस.के. सिंह 1, विश्वविद्यालय कवार्टर्स, खाब्रा रोड, मुजफ्फरपुर, बिहार – 842001	नामित	sksingh_ipc@rediffmail.com
22.	प्रोफेसर श्रीकला नायर प्रोफेसर व अध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग, श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय कालडी, एर्नाकुलम, केरल – 683574	नामित	sreekala_nair@yahoo.com
23.	प्रोफेसर यज्ञेश्वर शास्त्री कुलपति, सांची युनिवर्सिटी ऑफ बुद्धिस्टं–इंडिक स्टडीज बरला, विदिशा–रायसेन रोड़ एन.एच. 86, जिला–रायसेन–465551 मध्य प्रदेश (भारत)	नामित	yajnashastri@yahoo.com

24.	प्रोफेसर तारिख इसलाम अध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग, अलिगढ़ मुसलिम विश्वविद्यालय अलिगढ़–35	उ.प्र. सरकार द्वारा नामित	tariq43@gmail.com
25.	प्रोफेसर डी.एन. यादव अध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग, दीन दयाल उपध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, (उत्तर प्रदेश)	उ.प्र. सरकार द्वारा नामित	dny_prof@yahoo.co.in

20. शासी निकाय
(2016–2019)
(31 मार्च 2018 को)

क्र.सं.	नाम और पता	नामित	ई–मेल
1.	प्रोफेसर एस.आर. भट्ट अध्यक्ष, भा.दा.अ.प. नई दिल्ली	अध्यक्ष, भा.दा.अ.प. (21.10.15 से)	srbhatt39@gmail.com
2.	प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल सदस्य सचिव, भा.दा.अ.प. नई दिल्ली	सदस्य सचिव, भा.दा.अ.प.	rksphilosophy@gmail.com
3.	प्रोफेसर कुसुम जैन 139, मुक्तानंद नगर गोपालपुरा बाइपास, टोंक रोड, जयपुर – 302017	मानव संसाधन विकास मंत्रालय	kusumonnet@yahoo.com
4.	प्रोफेसर वी कुटुंब शास्त्री पूर्व कुलपति मारफत श्रीमती सी. सुषमा 1बी003, कृष्णा आइकन अपार्टमेंट्स, अन्नासैंड्रापलय विमानपुरा पोस्ट एचएएल बेंगलुरु 560017	मानव संसाधन विकास मंत्रालय	kutumba10@gmail.com

5. प्रोफेसर आर.सी. सिन्हा भूतपूर्व अध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग, पटना विश्वविद्यालय 201 सप्तर्षि अपार्टमेंट, राजकिशोरी कॉम्प्लेक्स कंकरबाग, पटना 800020	मानव संसाधन विकास मंत्रालय	rcsinha22@gmail.com
6. प्रोफेसर जटाशंकर तिवारी भूतपूर्व अध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद 211001	मानव संसाधन विकास मंत्रालय	profjatashankar@gmail.com
7. प्रोफेसर भुवन चंदेल एफ–9, एसएफएस फ्लेट्स सेक्टर–8, जुसोला नई दिल्ली –110025	मानव संसाधन विकास	chandelbhuvan@gmail.com
8. प्रोफेसर एस.के.सिंह 1, विश्वविद्यालय क्वार्टर्स, खाब्रा रोड, मुजफ्फरपुर, बिहार – 842001	नामित	sksingh_ipc@rediffmail.com
9. प्रोफेसर यू.एस. बिष्ट ग्राम – रीथाचौरा पोस्ट – भाटकोट जिला – अल्मोड़ा उत्तराखंड – 263656	नामित	umraobist@gmail.com
10. सचिव माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा विभाग मानव संसाधन विकास मंत्रालय शास्त्री भवन, नई दिल्ली		secy.dhe@nic.in
11. श्रीमती दर्शन एम. डबराल वित्तीय सलाहकार मानव संसाधन विकास मंत्रालय शास्त्री भवन, नई दिल्ली	(मानव संसाधन विकास मंत्रालय)	jsfa.edu@gov.in
12. प्रोफेसर तारिख इसलाम अध्यक्ष दर्शनशास्त्र विभाग,		

	अलिगढ़ मुसलिम विश्वविद्यालय अलिगढ़–35	उ.प्र. सरकार द्वारा नामित	tariq43@gmail.com
13.	प्रोफेसर डी.एन. यादव अध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग, दि.द. उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, (उत्तर प्रदेश)	उ.प्र. सरकार द्वारा नामित	dny_prof@yahoo.com

21. वित्त समिति

क्र.सं	नाम और पता	नामित	ई–मेल
1.	प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल सदस्य सचिव, भा.दा.अ.प. नई दिल्ली	सदस्य सचिव, भा.दा.अ.प.	rksphilosophy@gmail.com
2.	निदेशक, दर्शन भवन, 36, तुगलकाबाद इंस्टीटयूशलन एरिया एम.बी. रोड, नई दिल्ली	निदेशक (ए एंड एफ) भा.दा.अ.प.	
3.	प्रोफेसर भुवन चंदेल सेंटर फॉर स्टडीज इन सिविलाइजेशन्स डीडी–16, कालकाजी (नेहरू एन्क्लेव के निकट), नई दिल्ली – 110019	विश्वविद्यालय अनुदान आयोग	chandelbhuvan@gmail.com
4.	सचिव माध्यमिक और उच्चतर शिक्षा विभाग मानव संसाधन विकास मंत्रालय शास्त्री भवन, नई दिल्ली		secy.dhe@nic.in
5.	वित्तीय सलाहकार माध्यमिक उच्च शिक्षा मानव संसाधन विकास मंत्रालय शास्त्री भवन, नई दिल्ली	मानव संसाधन विकास मंत्रालय	jsfa.edu@gov.in

22. शोध परियोजना समिति (2016—19)

क्र.सं.	नाम और पता	नामित	ई—मेल
1.	प्रोफेसर एस.आर. भट्ट अध्यक्ष, भा.दा.अ.प. नई दिल्ली	अध्यक्ष, भा.दा.अ.प. (21.10.15 से)	srbhatt39@gmail.com
2.	प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल सदस्य सचिव, भा.दा.अ.प. नई दिल्ली	सदस्य सचिव, भा.दा.अ.प.	rksphilosophy@gmail.com
3.	प्रोफेसर धर्मानंद शर्मा भूतपूर्व अध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग जे—54, पीजी1 एन्क्लेव, जीएच—94, सेक्टर 20 पंचकुला, हरियाणा — 134117	मानव संसाधन विकास मंत्रालय	dharmanandsharma@gmail.com
4.	प्रोफेसर राजाराम शुक्ल प्रोफेसर — वैदिक दर्शन, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय वाराणसी, उत्तर प्रदेश — 221005	मानव संसाधन विकास मंत्रालय	rrsvns@gmail.com
5.	प्रोफेसर एक्स.पी. माओ दर्शनशास्त्र विभाग नॉर्थ—ईस्टर्न हिल युनिवर्सिटी उमशिंग मॉकिनरोह शिलांग, मेघालय — 793022	मानव संसाधन विकास मंत्रालय	xavmao@gmail.com
6.	प्रोफेसर यज्ञेश्वर शास्त्री कुलपति, सांची युनिवर्सिटी ऑफ बुद्धिस्टं—इंडिक स्टडीज बरला, विदिशा—रायसेन रोड एन.एच. 86, जिला रायसेन—465551 मध्य प्रदेश (भारत)	नामित	yajnashastri@yahoo.com
7.	प्रोफेसर श्रीकला नायर प्रोफेसर व अध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग, श्री शंकराचार्य संस्कृत		

	विश्वविद्यालय कालडी, एर्नाकुलम, केरल – 683574	नामित	sreekala_nair@yahoo.com
8.	प्रोफेसर एस.आर. लीला भूतपूर्व प्रोफेसर व अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, एनएनएमकेआरवी कॉलेज बेंगलुरू आवास : # 30 धारिणी, 1 मेन तीसरा क्रॉस, के.ई.बी लेआउट बेंगलुरु – 560085	मानव संसाधन विकास मंत्रालय	bharati_trust @yahoo.co.in srleela@ mrinaal.com
9.	प्रोफेसर दिलीप कुमार मोहंता फ्लैट नं. 2 एएल 2, ग्रीनवुड नूक 369/2 कालीतल पूर्वांचल रोड, कोलकाता – 700 078	नामित	dkmphil@gmail.com
10.	प्रोफेसर बिजयानंद कार, सेवानिवृत्त प्रोफेसर, दर्शन शास्त्र, एएम/26, वीएसएस नगर, भुवनेश्वर, ओडिशा – 751001	नामित	bkar.nkar@gmail.com
11.	प्रोफेसर समणी चैतन्य प्रज्ञा अध्यक्ष, डिपार्टमेंट ऑफ जैनोलॉजी ऐंड कंपैरेटिव रिलीजन ऐंड फिलॉसफी, इंटरनेशनल रिसर्च सेंटर, जैन विश्व भारती इंस्टीट्यूट लाडनूं, राजस्थान – 341306	नामित	cpragya108@gmail.com

23. वार्षिक लेखा

अनुलग्नक-क

तुलन पत्र

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्

36, तुगलकाबाद इंस्टीट्युशनल एरिया, एम.बी. रोड़, नई दिल्ली-110062

31 मार्च 2018 की समाप्त वर्ष का तुलन पत्र

(राशि रु० में)

पूंजी कोष और देनदारियाँ	*तालिका*	*31.3.218 तक*	*31.3.217 तक*
पूंजीगत कोष	1	63,951,896.13	44,286,866.15
वर्तमान देनदारियाँ और प्रबंध	2	120,408,517.07	982,402,242.07
कुल		184,360,413.20	142,527,108.22
सम्पत्तियाँ			
अचल सम्पत्तियाँ	3	16,308,194.57	7,884,876,.58
वर्तमान सम्पत्तियाँ, कर्ज और अग्रिम	4	168,052,218.63	134,642,231.64
कुल		184,360,413.20	142,527,108.22

ह./-
(श्रीकुमारन एस.)
निदेशक (ले. और वि.)

ह./-
(प्रो. आर.के. शुक्ला)
सदस्य सचिव

स्थानः नई दिल्ली
दिनांक : 30.06.2018

अनुलग्नक-ख

आय एवं व्यय का लेखा

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्

36, तुगलकाबाद इंस्टीट्युशनल एरिया, एम.बी. रोड़, नई दिल्ली-110062

(राशि रु० में)

वर्ष 2017-2018 के लिए आय व व्यय लेखा

आय	तालिका	31.03.2018 तक	31.03.2017 को	
			योजनागत	गैर-योजनागत
प्राप्त अनुदान	5	181,708,000.00	55,326,700.00	91,997,700.00
प्रकाशन, रायल्टी आदि से आय	6	236,510.49	609,475.00	141,859.39
शुल्क/ग्राहकी प्राप्त किया	7	381,000.00	70,000.00	520,000.00
ब्याज प्राप्त	8	676,231.00	28,055.00	3,412,379.00
विविध आय	9	9,211,708.00	20,022.00	211,837.00
स्टॉक में घटाया/बढ़ाया	10	-	-	-
कुल (क)		**192,213,449.49**	**56,054,252.00**	**96,283,775.39**
व्यय				
वेतन और गैर वेतन व्यर्थ व्यय	11	76,200,937.00	-	56,819,444.00
अन्य प्रशासनिक खर्च इत्यादि	12	91,206,359.50	50,168,114.98	40,088,603.00
मूल्य ह्रास	3	5,141,123.01	7,404,148.00	-
कुल (ख)		**172,548,419.51**	**57,572,262.98**	**96,908,047.00**
आय से अधिक(व्यय) (क-ख)		**19,665,029.98**	**(1,518,010.98)**	**(624,271.61)**
पूंजी निधि में ले जाया गया				
अधिशेष (घाटा)		**19,665,029.98**	**(1,518,010.98)**	**(624,271.61)**

ह./-
(श्रीकुमारन एस.)
निदेशक (ले. और वि.)

ह./-
(प्रो. आर.के. शुक्ला)
सदस्य सचिव

स्थान: नई दिल्ली
दिनांक : 30.06.2018

अनुलग्नक- ग

अनुसूचियाँ

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद् 36, तुगलकाबाद इंस्टीट्युशनल एरिया, एम.बी. रोड़, नई दिल्ली-110062 (राशि रु० में)		
तालिका 1 से 4 तुलन पत्र का अंगभूत भाग और उससे संलग्न		
तालिकाएं	*31.03.2018 की तरह*	*31.03.2017 की तरह*
तालिका 1		
पूंजीगत कोष		
आरंभिक शेष	44,286,866.15	44,308,370.74
जोड़ो: इस वर्ष के दौरान वृद्धि	–	2,120,778.00
घटाया: इस वर्ष के दौरान घटाई राशि	_	–
जोड़ों/घटाओ: निवल आय का शेष/व्यय आय और व्यय		
लेखा से स्थांतरित	19,665,029.98	(2,142,282.59)
वर्ष के अंत में शेष	63,951,896.13	44,286,866.15
तालिका 2		
वर्तमान देनदारियाँ एवं प्रबंध		
(क) वर्तमान देनदारियाँ		
1. विविध लेनदारः समूह-ज	-	43,407,038.07
1) ज-I(क-10) विविध लेनदार: अ.ज.जा. पूंजी	700,000.00	-
2) ज-I(क-1) विविध लेनदार: वेतन	8,585,430.00	-
3) ज-I (क-2) विविध लेनदार: पेंशनभोगी	-	-
4) ज-I(क-3) विविध लेनदार: गैर-वेतन	72,110.00	-
5) ज-I(क-4) विविध लेनदार: सामान्य	32,588,099.07	-
6) ज-I(क-5) विविध लेनदार: पूंजी	5,524,055.00	-

7) ज-I(क-6) विविध लेनदार: अ.जा. सामान्य	4,036,329.00	-
8) ज-I(क-7) विविध लेनदार: अ.जा. पूंजी	1,500,000.00	-
9) ज-I(क-8) विविध लेनदार: अ.जा. वेतन	4,388.00	-
10) ज-I(क-9) विविध लेनदार: अ.ज.जा. सामान्य	4,078,750.00	-
2. समूह-झ: प्रावधान		
1) झ-I(क-1) वेतन और भत्ता देय का प्रावधान	8,822,164.00	8,112,488.00
2) झ-I(ख-1) ग्रेचुटी देय का प्रावधान	33,615,584.00	27,424,651.00
3) झ-I(ख-3) एल.टी.सी. के दौरान छुट्टी नकदी करने का प्रावधान	18,231,869.00	16,630,177.00
4) झ-I(ग-2) सी.पी.एफ. का प्रावधान	32,757.00	6,847.00
5) झ-I(ग-1) जी.पी.एफ. का प्रावधान	426,698.00	373,117.00
6) झ-I(ग-3) एल.आई.सी.-जीएसएलआईसी का प्रावधान	1,774.00	2,389.00
7) झ-I(ग-4) एल.आई.सी.-एस.एस.एस. का प्रावधान	10,301.00	2,638.00
8) झ-I(ग-5) ओ.टी.ए. देय का प्रावधान	1,436.00	6,068.00
9) झ-I(ग-9) मासिक पेंशन और अन्य पेंशनरों का प्रावधान	539,778.00	490,904.00
10) झ-I (ग-10) अन्य प्रेषणों के लिए प्रावधान	9,104.00	6,942.00
11) सुरक्षा जमा राशि	-	12,600.00
12) झ-I (घ-1) अन्य फेलोशिप का प्रावधान	214,460.00	214,460.00
13) झ-I (ग-2) एन.पी.एफ. का प्रावधान	44,909.00	31,100.00
14) झ-I (ग-1) अन्य का प्रावधान	1,319,866.00	1,420,722.00
15) झ-I (घ-3) टेलिफोन का प्रावधान	-	21,615.00
समूह-ञ		
1) ञ-I(ग-2) आय कर (ठेकेदार)	23,215.00	76,486.00
2) ञ-I(ग-3) आय कर (व्ययसायी)	15,937.00	-
3) ञ-I(ख-1) समूह बीमा योजना (जी.एस.एल.आई.एस.)	400.00	-
4) ञ-I(ङ-3) अन्य प्रेषण	9,104.00	-
कुल	**120,408,517.07**	**98,163,756.07**

तालिका 4		
वर्तमान संपत्तियां, कर्ज और अग्रिम		
क. वर्तमान संपत्तियां		
1. हाथ में स्टाक		
परिषद् के प्रकाशन का भंडार	6,291,441.00	6,291,441.00
जेआईसीपीआर पत्रिका का भंडार	445,250.00	445,250.00
कुल 'क'	**6,736,691.00**	**6,736,691.00**
2. अन्य देनदार		
क) छः माह से अधिक अवधि के लिए बकाया ऋण	372,502.00	372,502.00
b) अन्य ऋण	-	-
3. हाथ में बकाया नगद		
क) हाथ में नगद	8,139.62	12,900.62
ख) लखनऊ कार्य का अधिशेष शेष	13,927.00	13,927.00
4. **बैंक बकाया**		
सूचीबद्ध बैंकों में :		
क) बचत खाता		
(1) स्टेट बैंक ऑफ पटियाला में बचत खाता संख्या 32319	4,965,469.71	4,217,562.21
(ख) केनरा बैंक में बचत खाता संख्या 16377	96,240,115.29	66,054,975.80
(ग) ओरिंटल बैंक ऑफ कॉमर्स में बचत खाता संख्या 11048	431,081.00	328,460.00
कुल (ख)	**102,031,234.62**	**71,000,327.63**
कुल ''क + ख'' = ''ग''	**108,767,925.62**	**77,737,018.63**

ख. ऋण अग्रिम तथा अन्य परिसम्पत्तियाँ		
1. नगद या किस्म में वसूलने योग्य अग्रिम या उस मूल्य की प्राप्ति		
(क) अन्य अग्रिम		
- शैक्षिक कार्यक्रम के लिए अग्रिम (मार्च 02 से पहले)	5,884,811.01	5,884,811.01
- शैक्षिण कार्यक्रम के लिए अग्रिम (अप्रैल 02 से मार्च 2017)	30,606,451.00	26,255,268.00
- शैक्षिक कार्यक्रम के लिए (वर्ष के लिए)	9,561,983.00	15,082,410.00
(ख) कर्मचारियों के लिए अग्रिम		
- कर्मचारियों को पूर्व वर्ष का अग्रिम	80,053.00	70,523.00
- कर्मचारियों को अग्रिम (वर्ष के लिए)	50,900.00	70,580.00
(ग) आकस्मिक अग्रिम		
- पूर्व वर्ष का आकस्मिक अग्रिम	684,920.00	684,920.00
- आकस्मिक अग्रिम (वर्ष के लिए)	-	-
(घ) अग्रिम - अन्य		
- अग्रिम-अन्य (अप्रैल 02 से मार्च 2017	6,984,390.00	6,080,287.00
- अग्रिम - अन्य (वर्ष के लिए)	-	-
(ड़) सीपीडब्लूडी में जमा - लखनऊ	-	-
(च) सीपीडब्लूडी में जमा - दिल्ली	3,279,397.00	689,375.00
(छ) टेलिफोन विभाग के पास जमा	124,945.00	125,445.00
(ज) बी.एस.ई.एस. के पास जमा	348,365.00	348,365.00
(झ) ईंधन के लिए जमा	10,000.00	10,000.00
(ञ) पूर्व भुगतान खर्च	1,623,169.00	1,603,229.00

(त) एन.पी.एफ.	44,909.00	-
(थ) सुरक्षा जमाधन लौटाने योग्य	-	-
(ध) ब्याज प्रति व्यय		
कुल ''घ''	**59,284,293.01**	**56,905,213.01**
कुल (ग + घ)	**168,052,218.63**	**134,642,231.64**

ह./-
(श्रीकुमारन एस.)
निदेशक (ले. और वि.)

ह./-
(प्रो. आर.के. शुक्ला)
सदस्य सचिव

स्थानः नई दिल्ली
दिनांक : 30.06.2018

तालिका 3

अचल सम्पत्ति

विवरण	*सकल खण्ड*				*मूल्य ह्रास*				*कुल खण्ड*	
	31.03.2017 तक	*अतिरिक्त*	*वर्ष के दौरान कटौती*	*31.03.2018 तक*	*31.03.2017 तक*	*वर्ष के लिए*	*वर्ष के दौरान कटौती*	*31.03.2018 तक*	*31.03.2018 तक*	*31.03.2017 तक*
1. जमीन	733,770.20	-	-	733,770.20	-	-	-	-	733,770.20	733,770.20
2. बिल्डिंग	9,709,600.00	-	-	9,709,600.00	7,524,064.41	88,057.31	-	7,612,121.72	2,097,478.28	2,185,535.59
3. मशीन और सामान	4,695,074.60	-	-	4,695,074.60	3,513,456.11	211,719.13	-	3,725,175.24	969,899.36	1,181,618.49
4. वाहन	2,282,906.21	-	-	2,282,906.21	1,611,656.49	202,056.85	-	1,813,713.34	469,192.87	671,249.72
5. फर्नीचर एवं जुड़ी हुई वस्तुएं	9,080,588.37	76,101.00	-	9,156,689.37	7,899,069.41	403,102.51	-	8,302,171.91	854,517.46	1,181,518.96
6. कार्यालय उपकरण	11,115,624.83	1,997,402.00	-	13,113,026.83	10,069,428.64	615,060.83	-	10,684,489.46	2,428,537.37	1,046,196.19
7. कम्प्यूटर/बाह उपकरण	6,146,684.50	901,080.00	-	7,047,764.50	6,025,353.61	111,142.67	-	6,136,496.28	911,268.22	121,330.89
8. इलेक्ट्रीक उपकरण	1,384,193.53	25,488.00	-	1,409,681.53	1,320,919.04	42,994.95	-	1,363,913.99	45,767.54	63,274.49
9. लाइब्रेरी पुस्तकें/पत्रिकाएं	70,450,414.92	9,023,370.00	-	79,473,784.92	69,853,750.28	3,466,988.75	-	73,320,739.03	6,153,046.29	596,665.04
10. टयुबेल एवं जल वितरण	408,123.00	-	-	408,123.00	304,406.00	-	-	304,406.00	103,717.00	103,717.00
डब्ल्यू.आई.पी.										
1. कैमरा	-	1,541,000.00	-	1,541,000.00	-	-	-	-	1,541,000.00	-
कुल	**116,006,980.16**	**13,564,441.00**	**-**	**129,571,421.16**	**108,122,103.98**	**5,141,123.01**	**-**	**113,263,226.99**	**16,308,194.57**	**7,884,876.98**

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्

36, तुगलकाबाद इंस्टीट्युशनल एरिया, एम.बी. रोड़, नई दिल्ली-110062

(राशि रु० में)

तालिका 5 से 12 तुलन पत्र का आय व व्यय और उससे संलग्न सूची

अनुसूचियां	दिनांक 31 मार्च, 2018 वर्ष के अंत तक	दिनांक 31 मार्च, 2017 वर्ष के अंत तक	
		योजनागत	गैर–योजनागत
अनुसूची-5			
समूह - क			
प्राप्त अनुदान			
ट - I			
मानव संसाधन विकास मंत्रालय, केन्द्र सरकार से प्राप्त अनुदान			
1) ट– I (क-4) (मासंविमं) से प्राप्त अनुदान–योजनागत–सामान्य	65,814,100.00	40,026,700.00	-
2) ट– I (क-5) (मासंविमं) से प्राप्त अनुदान–योजनागत पूंजीगत	16,637,200.00	3,487,500.00	-
3) ट– I (क-6) (मासंविमं) से प्राप्त अनुदान–योजनागत–सामान्य अ.जा.	4,205,600.00	7,200,000.00	-
4) ट– I (क-7) (मासंविमं) से प्राप्त अनुदान–योजनागत–सामान्य अ.ज.जा.	1,558,100.00	675,000.00	-
5) ट– I (क-9) (मासंविमं) से प्राप्त अनुदान–योजनागत–सामान्य अ.ज.जा.	1,440,000.00	3,600,000.00	-
6) ट– I (क-10) (मासंविमं) से प्राप्त अनुदान–योजनागत पूंजीगत अ.ज.जा.	770,300.00	337,500.00	-
7) ट– I (क-3) (मासंविमं) से प्राप्त अनुदान–गैर-योजनागत वेतन	2,150,000.00	-	70,687,700.00
8) ट– I (क-2) (मासंविमं) से प्राप्त अनुदान–गैर-वेतन पेंशन	540,000.00	-	21,310,000.00
9) ट– I (क-1) (मासंविमं) से प्राप्त अनुदान–अ.ज.जा. वेतन	3,320,100.00	-	-
10) ट–I (क-8) (मासंविमं) से प्राप्त अनुदान–वेतन	77,752,700.00	-	-
11) ट–I (क-8) (मासंविमं) से प्राप्त अनुदान–अ.ज. वेतन	7,519,900.00	-	-
कुल	**181,708,000.00**	**55,326,700.00**	**91,997,700.00**
अनूसची-6			
ट-IV			
1) ट-IV(क-1) बिक्री परिणाम (प्रकाशन) पुस्तक	127,947.49	609,475.00	141,859.39
2) ट-IV(क-2) बिक्री परिणाम (रॉयल्टी) पत्रिकाएं	108,563.00	-	-
कुल	**236,510.49**	**609,475.00**	**141,859.39**

अनुसूचियां	दिनांक 31 मार्च, 2018 वर्ष के अंत तक	दिनांक 31 मार्च, 2017 वर्ष के अंत तक	
		योजनागत	गैर–योजनागत
अनुसूची-7			
ट-V			
1) ट-V(क-1) आजीवन सदस्यता-जे.आई.सी.पी.आर.	380,000.00	70,000.00	520,000.00
2) ट-V(क-3) पुस्तकालय ऊधार सदस्यता शुल्क	1,000.00	-	-
कुल	**381,000.00**	**70,000.00**	**520,000.00**
अनुसूची-8			
ट-VI			
1) ट-VI(ख) विविध प्राप्तियां-बचत तथा जमा	676,231.00	28,055.00	3,113,379.00
2) ट-VI(ग) विभिन्न प्राप्तियां-अतिथी गृह शुल्क	-	-	299,000.00
कुल	**676,231.00**	**28,055.00**	**3,412,379.00**
अनुसूची-9			
ट-VI			
1) ख-III(क) छुट्टी वेतन हेतु अंशदान	151,806.00	-	11,557.00
2) ख-III(ख) पेंशन अंशदान	57,555.00	-	20,752.00
3) ट-VI(क-1) विविध प्राप्तियां-रेप्रोग्राफी सेवाएं	33,210.00	-	28,503.00
4) ट-VI(क-2) विविध प्राप्तियां-ठीक न किये जा सकने वाले/ अप्रचलित हो चुके उपकरण	6,483.00	-	1,900.00
5) ट-VI(ख-1) विविध प्राप्तियां-कर्मचारियों को दिए गए अग्रिम पर ब्याज	16,254.00	-	22,059.00
6) ट-VI(ग-2) विविध प्राप्तियां-अन्य	7,448,638.00	20,022.00	118,116.00
7) ट-VI(ग-1) अध्येतावृत्ति हेतु फार्मो की बिक्री	119,000.00	-	8,950.00
8) ट-VI(घ-1) अप्रचलित बिक्री के खिलाफ आय	158,000.00	-	-
9) ट-VI(एल) विभिन्न प्राप्तियां-सम्मेलन कक्ष के लिए भाड़ा	5,000.00	-	-
10) छ-I(ग-4) पूर्व अवधि समायोजन-सामान्य	729,371.00	-	-
11) छ-I(ग-6) पूर्व अवधि समायोजन-अ.जा. सामान्य	482,609.00	-	-
12) छ-I(घ-3) अकादमिक लखनऊ	3,782.00	-	-
कुल	**9,211,708.00**	**20,022.00**	**211,837.00**

अनुसूचियां	*दिनांक 31 मार्च, 2018 वर्ष के अंत तक*	*दिनांक 31 मार्च, 2017 वर्ष के अंत तक*	
		योजनागत	*गैर–योजनागत*
अनुसूची-10			
स्टॉक में वृद्धि/कमी			
क) अंत स्टॉक			
- आई.सी.पी.आर. प्रकाशन का स्टॉक	6,291,441.00	-	6,291,441.00
- जे.आई.सी.पी.आर. पत्रिकाओं का स्टॉक	445,250.00	-	445,250.00
कुल	**6,736,691.00**	**-**	**6,736,691.00**
क) आरंभिक स्टॉक			
- आई.सी.पी.आर. प्रकाशन का स्टॉक	6,291,441.00	-	6,291,441.00
- जे.आई.सी.पी.आर. पत्रिकाओं का स्टॉक	445,250.00	-	445,250.00
कुल	**6,736,691.00**	**-**	**6,736,691.00**
स्टॉक में वृद्धि/(कमी)	-	-	-
अनुसूची-11			
समूह-क			
क-I			
वेतन घटक			
1) क-I(क) अधिकारियों तथा कर्मचारियों को वेतन तथा भत्ते	42,389,303.00	-	42,163,270.00
2) क-I(ख) ग्रेजुटी	9,972,047.00	-	2,872,703.00
3) क-I(ग) छुट्टी का नकदीकरण	3,628,306.00	-	2,949,601.00
4) क-I(घ) पेंशन रूपांतरण	4,832,158.00	-	2,009,927.00
5) क-I(ड) मानदेय	4,561.00	-	23,503.00
6) क-I(छ) छुट्टी यात्रा रियायत के दौरान छुट्टी का नकदीकरण	135,422.00	-	181,112.00
7) क-I(च) बोनस	317,768.00	-	542,892.00
8) क-I(जे) परामर्श शुल्क	1,468,417.00	-	-
9) क-I(ट) शिशु शिक्षण भत्ता	123,927.00	-	36,000.00

अनुसूचियां	दिनांक 31 मार्च, 2018 वर्ष के अंत तक	दिनांक 31 मार्च, 2017 वर्ष के अंत तक	
		योजनागत	गैर–योजनागत
क-II			
1) क-II(क) अधिकारियों तथा कर्मचारियों का वेतन और भत्ता-अ.जा.	6,601,916.00	-	-
2) क-II(ग) अधिक समय काम का भत्ता-अ.ज.	4,262.00	-	-
3) क-II((ञ) शिशु शिक्षण भत्ता-अ.जा.	61,762.00	-	-
समूह-ख			
गैर-वेतन पेंशन	-	-	-
ख-I			
1) ख-I(क) पेंशन और पेंशनभोगी लाभ	5,845,255.00	-	4,678,101.00
ख-II			
1) ख-II(क) सी.पी.एफ. में नियोक्ता का अंशदान	219,240.00	-	40,926.00
2) ख-II(ख) सी.पी.एफ. में नियोक्ता के अंशदान पर ब्याज	-	-	3,274.00
3) ख-II(एफ) एन.पी.एफ. में नियोक्ता के अंशदान	571,326.00	-	1,318,135.00
4) ख-II(एफ) एन.पी.एस. में नियोक्ता के अंशदान	25,267.00	-	-
ख-III			
1) ख-III(क) छुट्टी वेतन हेतु अंशदान	-	-	-
2) ख-III(ख) पेंशन अंशदान	-	-	-
कुल	***76,200,937.00***	**-**	**56,819,444.00**
अनुसूची-12			
समूह-ग			
ग-I			
1) ग-I(क) अधिकारियों को यात्रा भत्ता	238,378.00	-	209,523.00
2) ग-I(ख) कर्मचारियों को यात्रा भत्ता	172,972.00	-	96,130.00
3) ग-I(कग) यात्रा भत्ता	18,155.00	-	17,856.00

अनुसूचियां	दिनांक 31 मार्च, 2018 वर्ष के अंत तक	दिनांक 31 मार्च, 2017 वर्ष के अंत तक	
		योजनागत	गैर-योजनागत
ग-II			
1) ग-II(क) चिकित्सा बीमा प्रीमियम	2,035,709.00	1,243,254.00	-
2) ग-II(ख) अन्य चिकित्सा व्यय	-	-	-
ग-III			
1) ग-III(क) छुट्टी यात्रा रियायत	188,437.00	-	236,048.00
ग-IV			
1) म-IV(क) विज्ञापन	201,657.00	-	42,231.00
ग-V			
1) ग-V(क) सांविधिक लेखापरीक्षा शुल्क	131,285.00	-	37,520.00
2) ग-V(ख) आंतरिक लेखापरीक्षा शुल्क	91,868.00	-	89,885.00
ग-VI			
1) ग-VI(क) विद्युत प्रभार (नई दिल्ली)	1,220,240.00	-	1,225,200.00
2) ग-VI(ख) विद्युत प्रभार (लखनऊ)	424,146.00	-	430,662.00
3) ग-VI(ग) जल प्रभार (नई दिल्ली)	92,850.00	-	90,520.00
4) ग-VI(घ) जल प्रभार (लखनऊ)	19,541.00	-	17,718.00
ग-VII			
1) ग-VII(क) स्टाफ कार को चलाने पर होने वाला व्यय-(डीएलसी-1993)	10,622.00	-	94,572.00
2) ग-VII(ख) स्टाफ कार चलाने पर होने वाला व्यय-(डीएलसी-0989)	160,917.00	-	109,156.00
3) ग-VII(ग) स्टाफ कार की मरम्मत तथा रखरखाव (डीएलसी-1993)	4,976.00	-	141,411.00
4) ग-VII(घ) स्टाफ कार की मरम्मत तथा रखरखाव (डलएलसी-0989)	88,137.00	-	46,951.00
5) ग-VII(ड़) स्टाफ कार बीमा (डीएल-1993)	3,652.00	-	7,430.00
6) ग-VII(च) स्टाफ कार बीमा व्यय (डीएल/3बीसीएम)	10,982.00	-	9,545.00
7) ग-VII(छ) स्टाफ कार के चलने वाला क्रस (9503)	133,456.00	-	66,562.00

अनुसूचियां	दिनांक 31 मार्च, 2018 वर्ष के अंत तक	दिनांक 31 मार्च, 2017 वर्ष के अंत तक	
		योजनागत	गैर–योजनागत
8) ग-VII(ज) स्टाफ कार की मरम्मत तथा रखरखाव पर खर्च (नई दिल्ली)	-	-	33,039.00
9) ग-VII(एच) स्टाफ कार मरम्मत खर्च (DL-3C-9503)	22,910.00	-	-
10) ग-VII(आई) स्टाफ कार बीमा खर्च (DL3C-9503)	6,609.00	-	-
ग-VIII			
1) ग-VIII(क) लेखन सामग्री पर होने वाला खर्च -(नई दिल्ली)	360,881.00	-	407,351.00
2) ग-VIII(ख) लेखन सामग्री पर होने वाला व्यय (लखनऊ)	30,851.00	-	34,866.00
3) ग-VIII(ग) मुद्रण व्यय	55,261.00	-	-
4) ग-VIII(घ) नई दिल्ली स्थित कार्यालय में कम्प्यूटर उपभोज्य सामग्री तथा उपकरण	76,264.00	-	120,204.00
5) ग-VIII(ङ) लखनऊ स्थित कार्यालय में कम्प्यूटर उपभोज्य सामग्री तथा उपकरण	3,500.00	-	8,925.00
ग-IX			
1) ग-IX(क) डाक तथा कोरियर (नई दिल्ली)	53,339.00	-	50,363.00
2) ग-IX(ख) डाक तथा कोरियर (लखनऊ)	1,190.00	-	15,000.00
ग-X			
1) ग-X(क) कार्यालय के उपकरणों की मरम्मत तथा रखरखाव (नई दिल्ली)	92,428.00	-	142,178.00
2) ग-X(ख) कार्यालय के उपकरणों की मरम्मत तथा रखरखाव (लखनऊ)	3,300.00	-	26,004.00
3) ग-X(ग) कार्यालय के उपकरणों की मरम्मत हेतु वार्षिक अनुरक्षण प्रभार (नई दिल्ली)	619,683.00	522,431.00	12,584.00
4) ग-X(घ) कार्यालय के उपकरणों की मरम्मत हेतु वार्षिक अनुरक्षण प्रभार (लखनऊ)	234,375.00	134,439.00	12,296.00
ग-XI			
1) ग-XI(क) टेलीफोन प्रभार-29901550	97,080.00	-	114,416.00

अनुसूचियां	दिनांक 31 मार्च, 2018 वर्ष के अंत तक	दिनांक 31 मार्च, 2017 वर्ष के अंत तक	
		योजनागत	गैर–योजनागत
2) ग-XI(ख) टेलीफोल प्रभार-29964758- फैक्स-सीएम कार्यालय	4,980.00	-	6,786.00
3) ग-XI(ग) टेलीफोन प्रभार-29964750-सीएम कार्यालय	10,267.00	-	-
4) ग-XI(घ) टेलीफोन प्रभार मोबाइल–(एमएस)	1,624.00	-	9,814.00
5) ग-XI(ङ) टेलीफोन प्रभार–अध्यक्ष मोबाइल	30,822.00	-	12,727.00
6) ग-XI(च) टेलीफोन प्रभार–अध्यक्ष (मोबाइल)	-	-	30,182.00
7) ग-XI(छ) टेलीफोन प्रभार–निदेशक (पी एण्ड आर)	9,879.00	-	10,842.00
8) ग-XI(ज) टेलीफोन प्रभार-9810223396-	6,013.00	-	21,195.00
9) ग-XI(छ) टेलीफोन प्रभार नं.-8004922772 (Mobile)	12,384.00	-	-
10) ग-XI(त) टेलीफोन प्रभार 29961262 निदेशक (पी एण्ड आर)	9,765.00	-	-
11) ग-XI(थ) टेलीफोन प्रभार-2395349-(लखनऊ)	3,934.00	-	9,135.00
ग-XII			
1) ग-XII(ग) अतिथि गृह से संबंधित व्यय	-	203,226.00	-
2) ग-XII(क) किराया आईसीपीआर लखनऊ	67,500.00	-	270,000.00
ग-XIII			
1) ग-XIII(क) वर्दी (नई दिल्ली)	-	-	23,850.00
2) ग-XIII(ख) वर्दी (लखनऊ)	-	-	12,693.00
ग-XIV			
1) ग-XIV(क) आकस्मिताएं (नई दिल्ली स्थित कार्यालय के विविध व्यय)	585,802.00	-	590,754.00
2) ग-XIV(ख) आकस्मिताएं (लखनऊ स्थित कार्यालय के विविध व्यय)	152,956.00	7,078.00	45,189.00
3) ग-XIV(ग) परिसर की मरम्मत और देखभाल	553,668.00	12,750.00	-
4) ग-XIV(ङ) परिसर की मरम्मत और देखभाल	-	6,170.00	-
5) ग-XIV(च) सम्पत्ति कर	155,258.00	-	155,258.00
6) ग-XIV(छ) डीडीए को भूमि का किराया	17,589.00	-	17,589.00
7) ग-XIV(ज) कर्मचारी प्रशिक्षण शुल्क	64,105.00	-	49,229.00
8) ग-XIV(झ) कर्मचारी कल्याण व्यय	26,000.00	-	25,124.00
9) ग-XIV(ञ) सुरक्षा हेतु प्रभार	2,080,483.00	1,174,107.00	-

अनुसूचियां	दिनांक 31 मार्च, 2018 वर्ष के अंत तक	दिनांक 31 मार्च, 2017 वर्ष के अंत तक	
		योजनागत	गैर–योजनागत
10)C-XIV(ट) अन्य व्यय	-	-	416,143.00
ग-XV			
1) ग-XV(ब) वेबाइट संबंधी व्यय	55,365.00	-	56,079.00
2) ग-XV(ख) इंटरनेट कनेक्शन दिल्ली-29964751	48,971.00	-	56,176.00
3) ग-XV(ग) इंटरनेट प्रभार-2392636 (लखनऊ)	54,336.00	-	60,329.00
ग-XVI			
1) ङ-XVI(क) बागवानी संबंधी व्यय-दिल्ली कार्यालय	14,585.00	-	8,370.00
2) ङ-XVI(ख) बागवानी संबंधी व्यय-लखनऊ कार्यालय	6,440.00	-	-
ग-XVII			
1) ग-XVII(ख) जेनसेट को चलाने का व्यय-लखनऊ	-	-	5,380.00
2) ग-XVII(ग) भ.दा.अ.प. का सी.पी.डब्ल्यू.डी. विद्युत/अग्नि/रखरखाव	447,198.00	49,709.00	32,200.00
ग-XVIII			
1) ग-XVIII(क) विधिक प्रभार	-	543,500.00	-
2) ग-XVIII(ख) पेशेवर प्रभार	237,869.00	1,243,330.00	-
3) ग-XVIII(ग) मजदूरी	*1,000.00*	-	4,690.00
ग-XIX			
1) ग-XIX (क) आईआईसी का वार्षिक अभिदान	87,000.00	-	-
2) ग-XIX (ख) एफआईएसपी/एसआईसीआई सदस्यता	-	-	99,041.00
3) ग-XIX(ग) बैंक प्रभार	13,366.50	577.60	8,482.00

अनुसूचियां	दिनांक 31 मार्च, 2018 वर्ष के अंत तक	दिनांक 31 मार्च, 2017 वर्ष के अंत तक	
		योजनागत	गैर–योजनागत
ग-XX			
1) ग-XX(क) आधिकारिक/गैर अधिकारिक अतिथियों का सत्कार	46,043.00	-	29,247.00
ग-XXI			
1) ग-XXII(क) विविध शेष राशि खारिज करना	17,420.00	-	-
ग-XXII			
1) ग-XXI (क) परिषद समिति के सदस्यों को यात्रा भत्ता	69,932.00	209,968.00	-
2) ग-XXI (ख) परिषद् समिति सदस्यों को आतिथ्य प्रभार	-	61,959.00	-
3) ग-XXI (ग) बैठक शुल्क परिषद् समिति	32,000.00	66,000.00	-
4) ग-XXI (घ) शासी निकाय को बैठक शुल्क	60,462.00	161,861.00	
5) ग-XXI (ङ) शासी निकाय के सदस्यों हेतु भव्य भत्ता	202,428.00	36,000.00	-
6) ग-XXI (च) शासी निकाय हेतु आतिथ्य	94,999.00	63,893.00	-
7) ग-XXI (छ) आरपीसी बैठक हेतु यात्रा भत्ता	338,812.00	403,019.00	-
8) ग-XXI (ज) आरपीसी सदस्यों हेतु आतिथ्य	33,310.00	129,097.00	-
9) ग-XXI (झ) आरपीसी सदस्यों हेतु सिटिंग भत्ता	50,000.00	56,000.00	-
10) ग-XXI (ञ) वित्त समिति की बैठक हेतु यात्रा भत्ता	19,353.00	2,949.00	-
11) ग-XXI (ट) वित्त समिति की बैठक हेतु आतिथ्य	11,613.00	8,580.00	-
12) ग-XXI (ठ) वित्त समिति के सदस्यों को सिटिंग शुल्क	10,000.00	6,000.00	
13) ग-XXI (ड) अन्य समिति के सदस्यों को यात्रा भत्ता	93,035.00	118,843.00	-
14) ग-XXI (ढ) अन्य समिति के सदस्यों को आतिथ्य	14,422.00	56,507.00	-
15) ग-XXI (ण) अन्य समिति के सदस्यों को सिटिंग शुल्क	64,000.00	17,000.00	-
16) ग-XXI (त) गैर आधिकारिक सदस्यों को यात्रा भत्ता	27,823.00	-	-
17) ग-XXI (थ) गैर आधिकारिक सदस्यों हेतु आतिथ्य	-	1,987.00	-
समूह-घ			
घ-I			
1) घ-I(क) राष्ट्रीय अध्येतावृत्तियां	575,296.00	-	1,455,728.00
2) घ-I(ख) वरिष्ठ अध्येतावृत्तियां	3,130,600.00	-	2,247,142.00

अनुसूचियां	*दिनांक 31 मार्च, 2018 वर्ष के अंत तक*	*दिनांक 31 मार्च, 2017 वर्ष के अंत तक*	
		योजनागत	*गैर–योजनागत*
3) घ-I(ग) सामान्य अध्येतावृत्तियां	6,399,967.00	-	6,562,853.00
4) घ-I(घ) कनिष्ठ शोध अध्येतावृत्तियां	15,886,198.00	306,000.00	23,554,427.00
5) घ-I(ङ) अध्येतावृत्तियों संबंधी अन्य व्यय	540,338.00	-	255,803.00
6) घ-I(च) अध्येताओं के अभिविन्यास के संबंध में बैठक	-	10,000.00	-
घ-II			
1) घ-II(क) आ.दा.अ.प. द्वारा आयोजित संगोष्ठियां	15,528,722.00	10,202,435.00	-
2) घ-II(ख) सम्मेलन	900,000.00	317.00	-
3) घ-II(ग) कार्यशालाएं	4,620,816.00	4,944,264.00	-
4) घ-II(घ) अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन	806,082.00	400,000.00	-
5) घ-II(ङ) समीक्षा हेतु बैठकें/अध्येताओं हेतु बैठकें	355,502.00	27,665.00	-
6) घ-II(ज) वार्तालाप	-	9,000.00	-
7) घ-II(झ) अन्य औपचारिक वार्तालाप	104,884.00	-	-
8) घ-II(छ) ऐशियन फिलॉसफी कांग्रेस	-	31,210.00	-
9) घ-II(त) गांधी रामा सेमिनार/सम्मेलन	-	776,700.00	-
घ-IV			
1) घ-IV(क) संगोष्ठि हेतु अनुदान	6,872,257.00	7,362,788.00	-
2) घ-IV(ख) कार्यशालाओं हेतु अनुदान	2,941,070.00	1,206,000.00	-
3) घ-IV(ग) सम्मेलन/वार्षिक सत्रों हेतु अनुदान	1,100,000.00	525,000.00	-
घ-V			
1) घ-V(क) यात्रा अनुदान	-	73,475.00	-
2) घ-V(ख) यात्रा अनुदान हेतु अन्य व्यय	-	16,541.00	-
घ-VI			
1) घ-VI(क) प्रदर्शनी/प्रचार	6,815.00	-	-

अनुसूचियां	दिनांक 31 मार्च, 2018 वर्ष के अंत तक	दिनांक 31 मार्च, 2017 वर्ष के अंत तक	
		योजनागत	गैर–योजनागत
2) घ-VI(ख) पुस्तक मेला	90,767.00	60,000.00	-
घ-VII			
1) घ-VII(क) व्याख्यान-राष्ट्रीय	480,045.00	288,257.00	-
2) घ-VII(ख) व्याख्यान-अन्तर्राष्ट्रीय	393,077.00	727,460.00	-
3) घ-VII(ग) व्याख्यान-पत्रिकाएं	1,021,814.00	924,292.00	-
घ-VIII			
1) घ-VIII(क) अंतर्राष्ट्रीय सहयोग तथा शैक्षणिक संबंध	699,507.00	96,086.38	-
घ-IX			
1) घ-IX(क) आजीवन उपलब्धि पुरस्कार	163,000.00	190,000.00	-
2) घ-IX(ख) श्रेष्ठ पुस्तक पुरस्कार	3,000.00	-	-
3) घ-IX(ग) युवा दार्शनिक पुरस्कार	-	15,918.00	-
4) घ-IX(घ) परियोजना/अनुवाद परियोजना	4,716,105.00	1,000,000.00	-
5) घ-IX(ङ) परियोजना-अन्य	-	160,332.00	-
6) घ-IX(च) आ.दा.अ.प. विशेष कार्यक्रम-अन्य	54,788.00	-	-
घ-X	-	-	-
1) घ-X(क) परियोजना/अनुवाद परियोजना	102,600.00	993,604.00	-
2) घ-X(ग) पुस्तक अनुदान	2,200,000.00	39,048.00	-
3) घ-X(घ) अन्य विशेष कार्यक्रम	124,493.00	63,255.00	-
घ-XI अनुसूचित जाति			
1) घ-XI(क) अध्येतावृत्ति अनुसूचित जाति	2,543,748.00	2,642,625.00	-
2) घ-XI(क1) अध्येतावृत्ति सामान्य (एन.ई.आर.)	-	1,371,450.00	-
3) घ-XI(ख) सेमिनार/सम्मेलन अनुसूचित जनजाति	1,943,725.00	1,705,000.00	-
4) घ-XI(छ) अन्य शैक्षिक व्यय के लिए अनुदान-अ.ज.जा	-	200.00	-
5) घ-XI(छ) अन्य शैक्षिक व्यय के लिए अनुदान-अ.जा.	10,976.00	-	-
6) घ-XI(ग) व्याख्यान-अनुसूचित जाति	50,000.00	40,000.00	-

अनुसूचियां	दिनांक 31 मार्च, 2018 वर्ष के अंत तक	दिनांक 31 मार्च, 2017 वर्ष के अंत तक	
		योजनागत	गैर–योजनागत
7) घ-XI(घ) कार्यशाला और पुनश्चर्या पाठ्यक्रम-अनूसूचित जाति	890,401.00	700,000.00	-
8) घ-XI(घ) कार्यशाला और पुनश्चर्या-पाठ्यक्रम-अनुसूचित जनजाति	-	2,026,063.00	-
9) घ-XI(ग) व्याख्यान-अनुसूचित जनजाति	-	10,000.00	-
घ-XII अनुसूचित जनजाति			
1) D-XII(क) अध्येतावृत्ति-अ.ज.जा.	633,865.00	1,137,800.00	-
2) D-XII(ख) सेमिनार/सम्मेलन सामान्य अ.ज.जा.	1,900,000.00	1,211,515.00	-
घ-XIII			
1) घ-XIII(घ) अन्य शैक्षणिक कार्यक्रम-एनईआर	26,000.00	1,755,253.00	-
समूह-ङ			
ङ-I			
1) ङ-I(ख) प्रकाशन प्रभार	41,698.00	-	-
2) ङ-I(ख) मानदेय	61,000.00	3,000.00	-
3) ङ-I(घ) सह प्रकाशकों को प्रकाशन का भुगतान	-	16,093.00	-
4) ङ-I(छ) वितरकों को भुगतान	-	-	-
5) ङ-I(छ) समाचार पत्रों/वार्षिक रिपोर्ट के अन्य व्यय	-	194,498.00	-
ङ-II			
2) ङ-II(क) उत्पादन संबंधी व्यय	-	208,820.00	-
3) ङ-II(ख) संपादन संबंधी व्यय	233,741.00	155,916.00	-
4) ङ-II(छ) अन्य व्यय	203,000.00	-	-
	91,206,359.50	**50,168,114.98**	**40,088,603.00**

अनुलग्नक- घ

प्राप्तियाँ और भुगतान की तालिका

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्

36, तुगलकाबाद इंस्टीट्युशनल एरिया, एम.बी. रोड़, नई दिल्ली-110062

31 मार्च 2018 की समाप्त वर्ष की प्राप्तियाँ और भुगतान लेखा

(राशि रु० में)

प्राप्तियाँ	31.03.2018	31.03.2017 वर्ष अंत		भुगतान	31.03.2018	31.03.2017 वर्ष अंत	
	वर्ष अंत	योजना	गैर-योजना		वर्ष अंत	योजना	गैर-योजना
I. आरंभिक शेष:				**I. व्ययः**			
क) हस्तगत नकदी				**समूह-क**			
1) हस्तगत नकदी	26,827.62	53.00	2,693.62	**वेतन घटक**			
2) अग्रदाय नकदी	-	-	13,927.00	1) ए-I(क) अधिकारियों तथा कर्मचारियों को वेतन			
				तथा भत्तें	23,041,748.00	-	22,512,382.00
				2) ए-I(ख) समयोपरी भत्ता	625,778.00	-	-
				3) ए-I(ग) छुट्टी नकदीकरण	151,894.00	-	-
				4) ए-I(घ) रुपांतप्ति पेंशन	4,832,158.00	-	2,009,927.00
ख) बैंकों में शेष राशि				5) ए-I(छ) ओ.टी.ए.	4,358.00	-	17,435.00
1) बचत खातों में	70,600,998.01	26,140,987.49	28,781,573.11	6) ए-I(ज) बोनस	317,768.00	-	542,892.00
				7) ए-I(ज) परामर्श शुल्क	1,321,574.00	-	-
समूह-ख				8) ए-I(झ) एलटीसी के दौरान छुट्टी नकदीकरण	135,422.00	-	167,087.00
1) ख-I(क) पेंशन और पेंशनकारी लाभ	-	-	-	9) ए-I(ञ) शिशु शिक्षण भत्ता	123,927.00	-	36,000.00
2) ख-II(घ) ए.पी.एफ. में नियोक्ता का अंशदान	45,436.00	-	-	**क-II**			
3) ख-II(ड) ए.पी.एफ. में नियोक्ता का अंशदान				1) क-II(क) अधिकारियों तथा कर्मचारियों का			
(अ.जा.)	2,090.00	-	-	वेतन तथा भत्ते (अ.जा.)	4,954,660.00	-	-
4) ख-III(क) छुट्टी वेतन अंशदान	151,806.00	-	11,557.00	2) क-II(ङ) ओ.टी.ए.-अ.जा.	3,029.00	-	-
5) ख-III(ख) पेंशन अंशदान	113,848.00	-	20,752.00	3) क-II(ध) शिशु शिक्षण भत्ता	61,762.00	-	-
समूह-ग				**समूह-ख**			
1) ग-VI (ख) विद्युत शुल्क (लखनऊ)	50,742.00	-	-	1) ख-I(ङ) पेंशन और पेंशन संबंधी लाभ	5,251,544.00	-	4,167,563.00
समूह-घ				2) ख-II(क) अंशदायी पेंशन निधि में नियोक्ता का अशंदान	208,330.00	-	40,926.00
1) घ-I (घ) कनिष्ठ शोध अध्येतावृत्ति	17,600.00	-	-	3) ख-II(ख) अंशदायी पेंशन निधि में नियोक्ता के			
2) घ-II (क) भा.दा.अ.ज. द्वारा आयोजित सेमिनार	60,044.00	-	-	पर ब्याज	-	-	3,274.00
3) घ-IV (क) सेमिनार के लिए अनुदान	35,541.00	-	-	4) ख-II(ख) एनपीएफ में कर्मचारी का अंशदान	574,047.00	-	287,035.00
4) घ-VI (ख) पुस्तक मेला व्यय	35,000.00	-	-	5) ख-II(ए) एनपीएफ में कर्मचारी का अंशदान (अंजा.)	25,163.00	-	-
5) घ-VII (ग) व्याख्यान-पत्रिकाएं	32,140.00	-	-	6) ख-III(बी) पेंशन अंशदान	56,293.00	-	-
6) घ-VIII (क) अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और अकादमिक	11,602.00	-	-	**समूह-ग**			
7) घ-XI (क) अध्येतावृत्ति	4,400.00	-	-	**ग-I**			
समूह-घ				1) ग-I(क) अधिकारियों को यात्रा भत्ता	170,888.00	-	196,782.00
1) ड-I (ख) मानदेय	3,000.00			2) ग-I(ख) कर्मचारियों को यात्रा भत्ता	172,972.00	-	96,130.00
समूह-छ				3) ग-I(ग) यात्रा भत्ता	18,155.00	-	17,856.00
छ-1				**ग-II**			
1) ध-I(घ-1) पूर्व अवधि का समायोजना-				1) ग-II(क) चिकित्सा बीमा प्रीमियम	581,273.00	521,971.00	-

प्राप्तियाँ	31.03.2018	31.03.2017 वर्ष अंत		भुगतान	31.03.2018	31.03.2017 वर्ष अंत	
	वर्ष अंत	योजना	गैर–योजना		वर्ष अंत	योजना	गैर–योजना
वेतन गैर योजना	-	-	293,666.00	**ग-III**			
2) ध-I(घ-3) पूर्व अवधि का समायोजना–गैर–योजना	-	-	80,725.00	1) ग-III(क) छुट्टी यात्रा रियायत	119,370.00	-	103,888.00
3) ध-I(घ-4) पूर्व अवधि का समायोजना: योजनागत सामान्य	109,428.00	824,602.00	-	**ग-IV**			
4) ध-I(च-3) पूर्व अवधि समायोजन–योजनागत पूंजीगत	3,782.00	-	-	1) ग-IV(क) विज्ञापन	175,585.00	-	42,231.00
5) ध-I(छ-6) पूर्व अवधि का समायोजना–सामान्य अनुसूचित जाति	-	334,496.00	-				
6) ध-I(ट) पूर्व अवधि का समायोजना–योजनागत–(एनईआर)	-	261,684.00	-	**ग-V**			
				1) ग-V(क) सांविधिक लेखापरीक्षा शुल्क	131,285.00	-	37,520.00
				2) ग-V(ख)- आंतरिक लेखापरिक्षा शुल्क	82,681.00	-	80,897.00
	-	-	-				
समूह-एच				**ग-VI**			
1) एच-I(क-4) विविध देनदार–सामान्य	70,600.00	-	-	1) ग-VI(क) विद्युत प्रभार (नई दिल्ली)	1,148,130.00	-	1,156,190.00
				2) ग-VI(ख) विद्युत प्रभान (लखनऊ)	419,673.00	-	429,462.00
समूह-ञ				3) ग-VI(ग) जल प्रभार (नई दिल्ली)	92,850.00	-	90,520.00
				4) ग-VI(घ) जल प्रभार (लखनऊ)	19,541.00	-	16,619.00
समूह-ट							
भारत सरकार से अनुदान				**ग-VII**			
1)ट-I(क-1) (मासंविम) से प्राप्त अनुदान–वेतन	77,752,700.00	-	70,687,700.00	1) ग-VII(क) स्टाफ कार की चलाने पर होने वाला व्यय–(डीएलसी–1993)	10,622.00	-	85,423.00
2)ट-I(क-2) (मासंविम) से प्राप्त वेतन–पेंशन	540,000.00	-	21,310,000.00	2) ग-VII(ख) स्टाफ कार बीमा की मरम्मत तथा अनुरक्षण पर होने वाला व्यय–(डीएलसी–1993)	4,976.00	-	138,583.00
3) ट-I(क-3) (मासंविम) से प्राप्त गैर वेतन	2,150,000.00	-	-	3) ग-VII(ग) स्टाफ कार बीमा (डीएलसी–1993)	-	-	4,340.00
4)ट-I(क-4) (मासंविम) से प्राप्त सामान्य	65,814,100.00	40,026,700.00	-	4) ग-VII(घ) स्टाफ कार को चलाने पर होने वाना व्यय (डीएल/3सी–0989)	144,917.00	-	101,545.00
5)ट-I(क-5) (मासंविम) से प्राप्त पूंजीगत	16,637,200.00	3,487,500.00	-	5) ग-VII(ङ) स्टाफ कार की मरम्मत तथा अनुरक्षण पर होने वाला व्यय–0989)	86,375.00	-	46,034.00
6)ट-I(क-6) (मासंविम) से प्राप्त सामान्य अ.आ.	4,205,600.00	7,875,000.00	-	6) ग-VII(च) स्टाफ कार बीमा व्यय (डीएल/3 सीबीएम–0989	9,200.00	-	8,380.00
7)ट-I(क-7) (मासंविम) से प्राप्त पूंजीगत अ.आ.	1,558,100.00	-	-	7) ग-VII(छ) स्टाफ कार चलने का व्यय (9503)	133,456.00	-	56,625.00
8)ट-I(क-8) (मासंविम) से प्राप्त वेतन–अ.जा.	7,519,900.00	-	-	8) ग-VII(ज) स्टाफ कार मरम्मत पर व्यय (नई दिल्ली)	22,910.00	-	33,039.00
9)ट-I(क-9) (मासंविम) से प्राप्त सामान्य अ.ज.जा.	1,440,000.00	3,937,500.00	-	9) ग-VII(झ) बीमा व्यय	6,609.00	-	-
10) ट-I(क-10) (मासंविम) से प्राप्त पूंजीगत अ.ज.जा.	770,300.00	-	-				
11) ट-I(क-11) (मासंविम) से प्राप्त							

प्राप्तियाँ	31.03.2018 वर्ष अंत	31.03.2017 वर्ष अंत योजना	31.03.2017 वर्ष अंत गैर-योजना
वेतन अ.ज.जा.	3,320,100.00	-	-
भा.दा.अ.प. के प्रकाशन और (पत्रिकाओं से आय)			
1) ट-IV(क-1) विक्रय परिणाम और रॉयल्टी-पुस्तक	127,947.49	9,235.00	141,859.39
2) ट-IV(क-2) विक्रय परिणाम और रॉयल्टी-पत्रिकाएं रॉयल्टी-पत्रिकाएं	108,563.00	-	-
3) ट-V(क-1) आजीवन सदस्यता-जेआईसीपीआर	45,000.00	-	40,000.00
4) ट-V(क-3) पुस्तकालय से पुस्तक लेने की सदस्यता शुल्क	1,000.00	-	-
5) ट-VI(क-1) विभिन्न प्राप्तियां रेप्रोग्राफी सेवाएं	33,210.00	-	28,503.00
6) ट-VI(क-2) प्राप्तियां-ठीक न किय जा सकने वाले/ अप्रचलित उपकरण	4,790.00	-	-
7) ट-VI(ख-1) विविध प्राप्तियां-कर्मचारियों को दिए अग्रिम पर ब्याज	-	-	135.00
8) ट-VI(ख-2-6) विविध प्राप्तियां-बचत तथा जमा राशियों पर ब्याज	4,126,335.00	28,055.00	3,113,379.00
9) ट-VI(ग-1) विविध प्राप्तियां-मेहमान गृह कीमत	-	-	287,000.00
10) ट-VI(ग-2) विविध प्राप्तियां अन्य	64,436,381.00	22.00	109,104.00
11) ट-VI(घ-1) अध्येता वृतियां फार्म की बिक्री	119,000.00	-	8,950.00
12) ट-VI(घ-1) बिक्री अप्रचलित-वस्तुओं की	158,000.00	-	-
13) ट-VI(घ-2) विभिन्न प्राप्तियां-सभागृहों से प्राप्त किराया	5,000.00	-	-
समूह-ट			
शैक्षणिक कार्यक्रमों हेतु अग्रिम			
1) ठ-V(क-1) अग्रिम-अन्य अकादमिक (दिल्ली)	68,408.00	-	-
2) ठ-V(क-2) अग्रिम-अन्य अकादमिक (लखनऊ)	295,346.00	-	-
	-	-	-
अग्रिम-अन्य	-	-	-
1) ठ-VI(क-1) अग्रिम-आकस्मिकाएं (विविध)	5,002.00	-	-
2) ठ-VI(क-2) अग्रिम-अग्रदाय	1,733.00	-	-
3) ठ-VI(क-3) अग्रिम-अन्य	411.00	-	-
4) ठ-VI(क-5) प्राशसनिक-अग्रिम-लखनऊ	3,096.00	-	-
प्रतिभूतियां तथा जमा राशियां			
1) ठ-VII(क-1) के.लो.नि. विभाग के पास निक्षेप राशि	800,000.00	-	-
2) ठ-VII(घ) ईंधन हेतु जमा निक्षेप राशि	-	-	-

भुगतान	31.03.2018 वर्ष अंत	31.03.2017 वर्ष अंत योजना	31.03.2017 वर्ष अंत गैर-योजना
ग-VIII			
1) ग-VIII(क) लेखन सामग्री पर व्यय (नई दिल्ली)	359,583.00	-	407,351.00
2) ग-VIII(ख) लेखन सामग्री पर व्यय (लखनऊ)	30,851.00	-	31,931.00
3) ग-VIII(ग) मुद्रण व्यय	55,261.00	-	-
4) ग-VIII(घ) कार्यालय में कम्प्यूटर उपभोज्य सामग्री तथा उपकरण	76,264.00	-	119,884.00
5) ग-VIII(ङ) लखनऊ स्थित कार्यालय में कम्प्यूटर उपभोज्य सामग्री तथा उपकरण	3,500.00	-	5,925.00
ग-IX			
1) ग-IX(क) डाक तथा कोरियर प्रभार (नई दिल्ली)	53,339.00	-	50,363.00
2) ग-IX(ख) डाक तथा कोरियर प्रभार (लखनऊ)	1,190.00	-	15,000.00
ग-X			
1) ग-X(क) कार्यालय के उपकरणों की मरम्मत तथा रखरखाव (नई दिल्ली)	91,764.00	-	142,178.00
2) ग-X(ख) कार्यालय के उपकरणों की मरम्मत तथा रखरखाव (लखनऊ)	3,300.00	-	26,004.00
3) ग-X(ग) कार्यालय के उपकरणों की मरम्मत हेतु वार्षिक अनुरक्षण प्रभार (नई दिल्ली)	559,900.00	512,574.00	-
4) ग-X(घ) कार्यालय के उपकरणों की मरम्मत हेतु वार्षिक अनुरक्षण प्रभार (लखनऊ)	215,056.00	134,439.00	-
ग-XI			
1) ग-XI(क) टेलीफोन प्रभार-29901550	97,080.00	-	105,664.00
2) ग-XI(ख) अध्यक्ष के कार्यालय का फैक्स	-	-	6,119.00
3) ग-XI(ब) टेलीफोन प्रभार-29904755 सीएम कार्यालय	4,980.00	-	-
4) ग-XI(घ) टेलीफोन प्रभार-29904755 (एमएस)	10,267.00	-	8,745.00
5) ग-XI(ङ) टेलीफोन प्रभार-मोबाइल (एमएस)	1,624.00	-	11,718.00
6) ग-XI(च) टेलीफोन प्रभार-अध्यक्ष मोबाइल	30,822.00	-	28,679.00
7) ग-XI(ज) टेलीफोन प्रभार निदेशक (पीएण्डआर) मोबाइल	9,879.00	-	9,991.00
8) ग-XI(झ) टेलीफोन प्रभार निदेशक 8004922772 (मोबाइल)	12,384.00	-	-
9) ग-XI(ञ) टेलीफोन प्रभार -9810223396-	6,013.00	-	16,605.00
10) ग-XI(ट) टेलीफोन प्रभार -2395349-(लखनऊ)	3,934.00	-	8,117.00
11) ग-XI(ठ) टेलीफोन प्रभार -29961262 नि. और पी .एण्ड आर.	9,265.00	-	-
1) ग-XII(क) भा.दा.अ.प. लखनऊ का भाड़ा	-	-	-
2) ग-XII(ग) अतिथि गृह से संबंधित व्यय	-	132,903.00	-

प्राप्तियाँ	31.03.2018 वर्ष अंत	31.03.2017 वर्ष अंत योजना	31.03.2017 वर्ष अंत गैर-योजना
विविध देनदार			
1) ड-VII(क) विविध देनदार	-	-	-
समूह-ड			
1) ड-I(क-1) समयोजन पुनश्चर्या पाठ्यक्रम	-	214,100.00	-
2) ड-I(क-2) सामयोजन पुनश्चर्या पाठ्यक्रम	116,275.00	-	-
3) ड-I(छ-1) समायोजन-अन्य शैक्षणिक (दिल्ली)	2,620.00	212,009.00	-
4) ड-I(छ-2) समायोजन-अन्य शेक्षणिक (लखनऊ)	1,360,940.00	1,880,254.00	-
5) ड-II(क-1) समयोजन-पूर्व के वर्ष के त्योहार अग्रिम	-	-	2,700.00
6) ड-III(क-2) समयोजन-पूर्व के वर्ष के अन्य	216.00	131,793.00	-
7) ड-III(क-3) समयोजन-पूर्व	6,932.00	-	-
8) ड-III(क-5) समयोजन-पूर्व (Lucknow)	1,593.00		
समूह-ड			
1) ढ-III(ग) समयोजन-टेलीफोन प्रतिभूति जमा राशि	-	-	-
समूह ड			
1) ड-1(क-2) आयकर	38,020.00	-	-
2) ड-1(ख-1) एलआईसी-जीएसएलआईएस	100,303.00	-	-
3) ड-1(ख-2) एलआईसी-एसएसएस	90.00	-	-
4) ड-1(ख-3) सीपीएफ	633.00	-	-
5) ड-1(घ-3)- अन्य धन प्रेषण	9,104.00	-	-
6) ड-1(घ-4) दुर्घटना बीमा	47,526.00	-	-
अन्य प्रतिया			
1) अधिकारियों तथा कर्मचारी का यात्र भत्ता	-	-	-
2) वेतन तथा भत्तों का प्रावधान	-	-	-

भुगतान	31.03.2018 वर्ष अंत	31.03.2017 वर्ष अंत योजना	31.03.2017 वर्ष अंत गैर-योजना
ग-XIII			
1) ग-XIII(क) वर्दी (नई दिल्ली)	-	-	23,850.00
2) ग-XIII(ख) वर्दी (लखनऊ)	-	-	12,693.00
ग-XIV			
1) ग-XIV(क) आकस्मिताएं (नई दिल्ली स्थित कार्यालय के विविध व्यय)	546,820.00	-	544,694.00
2) ग-XIV(ख) आकस्मिताएं (लखनऊ स्थित कार्यालय के विविध व्यय	152,512.00	7,078.00	36,464.00
3) ग-XIV (ग) भवन की देखभाल और मरम्मत-दिल्ली	542,658.00	12,750.00	-
4) ग-XIV (घ) भवन की देखभाल और मरम्मत-लखनऊ	-	6,170.00	-
5) ग-XIV(ड) सम्पत्ति कर	155,258.00	-	155,258.00
6) ग-XIV(च) डीडीए को भूमि का किराया	17,589.00	-	17,589.00
7) ग-XIV(छ) कर्मचारिवृंद प्रशिक्षण शुल्क	64,105.00	-	49,229.00
8) ग-XIV(ज) कर्मचारिवृंद कल्याण व्यय	-	-	1,124.00
9) ग-XIV(झ) सुरक्षा हेतु प्रभार	2,039,739.00	1,150,624.00	-
10)ग-XIV(ञ) अन्य व्यय	-	-	6,169.00
ग-XIX			
1) ग-XIX (ख) एफआईएसपी/एसआईसीआई सदस्यता	-	-	13,166.00
2) ग-XIX(ग) बैंक प्रभार	13,366.50	577.60	8,482.00
ग-XV			
1) ग-XV(क) वेबसाइट	49,660.00	-	50,569.00
2) ग-XV(ख) इंटरनेट कनेक्शन दिल्ली-29964751	48,971.00	-	51,463.00
3) ग-XV(घ) इंटरनेट कनेक्शन-2392636 (लखनऊ)	54,336.00	-	55,949.00
ग-XVI			
1) ग-XVI(क) बागवानी संबंधी	8,890.00	-	7,790.00
2) ग-XVI(ख) बागवानी संबंधी व्यय-लखनऊ स्थित कार्यालय	6,440.00	-	-
ग-XVII			
1) ग-XVII(क) जेनसेट को चलाने पर व्यय-नई दिल्ली			
2) ग-XVII(ख) जेनसेट को चलाने पर व्यय-लखनऊ	-	-	5,380.00
3) ग-XVII(ग) सी.पी.डब्ल्यू.डी. (विद्युत/सिविल/अग्नि शमन की देखभाल)	-	49,709.00	32,200.00
ग-XVIII			
1) ग-XVIII(क) विधिक प्रभार	-	489,500.00	-
2) ग-XVIII(ख) पेशेवर प्रभार	225,588.00	1,095,613.00	-
3) ग-XVIII(ग) मजदूरी	1,000.00	-	4,690.00
ग-XX			
1) ग-XX(क) आधिकारिक/गैर-अधिकारिक आगन्तुकों का सत्कार	43,516.00	-	25,247.00
ग-XXI			
1) ग-XXI(क) परिषद् समिति के सदस्यों को यात्रा भत्ता	69,932.00	32,211.00	-

प्राप्तियाँ	31.03.2018 वर्ष अंत	31.03.2017 वर्ष अंत योजना	31.03.2017 वर्ष अंत गैर-योजना	भुगतान	31.03.2018 वर्ष अंत	31.03.2017 वर्ष अंत योजना	31.03.2017 वर्ष अंत गैर-योजना
				2) ग-XXI(ख) परिषद् समिति का आतिथ्य प्रभार	-	28,922.00	-
				3) ग-XXI(ग) बैठक शुल्क	32,000.00	32,000.00	-
				4) ग-XXI(घ) शासी निकाय का यात्रा भत्ता	202,322.00	18,000.00	-
				5) ग-XXI(ङ) शासी निकाय सदस्यों को आतिथ्य	93,694.00	44,610.00	-
				6) ग-XXI(च) शासी निकाय हेतु बैठक शुल्क	60,462.00	85,354.00	-
				7) ग-XXI(छ) आरपीसी बैठक हेतु यात्रा भत्ता	338,501.00	171,663.00	-
				8) ग-XXI(ज) आरपीसी सदस्यों हेतु आतिथ्य	33,019.00	91,995.00	-
				9) ग-XXI(झ) आरपीसी सदस्यों हेतु बैठक शुल्क	50,000.00	24,000.00	-
				10) ग-XXI(ञ) वित्त समिति की बैठक हेतु यात्रा भत्ता	19,290.00	1,849.00	-
				11) ग-XXI(ट) वित्त समिति की बैठक हेतु आतिथ्य	11,613.00	8,580.00	-
				12) ग-XXI(ठ) वित्त समिति के सदस्यों को बैठक शुल्क	10,000.00	4,000.00	-
				13) ग-XXI(ड) अन्य समिति के सदस्यों का यात्रा भत्ता	93,035.00	16,038.00	-
				14) ग-XXI(ढ) समिति के अन्य सदस्यों का आतिथ्य प्रभार	14,170.00	16,246.00	-
				15) ग-XXI(ण) समिति के अन्य सदस्यों को बैठक शुल्क	64,000.00	5,000.00	-
				16) ग-XXI(त) गैर-आधिकारिक सदस्यों को यात्रा भत्ता	27,823.00	-	-
				17) ग-XXI(थ) गैर-आधिकारिक सदस्यों हेतु आतिथ्य	-	1,947.00	-
				समूह-घ			
				1) घ-I(क) राष्ट्रीय अध्येतावृत्तियां	542,296.00	-	1,017,428.00
				2) घ-I(ख) वरिष्ठ अध्येतावृत्तियां	2,422,000.00	-	2,161,142.00
				3) घ-I(ग) सामान्य अध्येतावृत्तियां	5,261,302.00	-	4,652,419.00
				4) घ-I(घ) शोध अध्येतावृत्तियां	12,250,138.00	306,000.00	16,348,919.00
				5) घ-I(ङ) अध्येतावृत्तियों संबंधी अन्य व्यय	535,984.00	-	127,719.00
				6) घ-I(च) फैलो ओरिएंटल बैठक	-	10,000.00	-
				घ-II			
				1) घ-II(क) आईसीपीआर द्वारा आयोजित संगोष्ठि	4,353,172.00	7,152,418.00	-
				2) घ-II(ख) आईसीपीआर द्वारा आयोजित संगोष्ठियां	900,000.00	317.00	-
				3) घ-II(ग) कार्यशालाएं	765,320.00	2,218,656.00	-
				4) घ-II(घ) अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन	603,864.00	400,000.00	-
				5) घ-II(ङ) समीक्षा बैठके/अध्येताओं की बैठकें	-	14,440.00	-
				6) घ-II(च) औपचारिक वार्तालाप	-	-	
				7) घ-II(छ) अन्य अकादमिक व्यय	104,884.00		
				8) घ-II(ज) ऐशियन फिलोसफी कांग्रेस	-	31,210.00	
				9) घ-II(झ) गांधी रामा सेमिनार/सम्मेलन	-	-	-
				घ-III			
				घ-IV			
				1) घ-IV(क) संगोष्टि हेतु अनुदान	6,903,747.00	5,139,497.00	-
				2) घ-IV(ख) कार्यशालाओं हेतु अनुदान	2,292,710.00	450,000.00	-

प्राप्तियाँ	31.03.2018 वर्ष अंत	31.03.2017 वर्ष अंत योजना	31.03.2017 वर्ष अंत गैर-योजना	भुगतान	31.03.2018 वर्ष अंत	31.03.2017 वर्ष अंत योजना	31.03.2017 वर्ष अंत गैर-योजना
				3) घ-IV(ब) सभी शैक्षणिक कार्यक्रमों हेतु अनुदान-सामान्य अनुसूचित जनजाति	-	225,000.00	-
				4) ध-IV(ग) सम्मेलन/वार्षिक सत्रों हेतु अनुदान	787,500.00	-	-
				ध-V			
				1) ध-V(क) यात्रा अनुदान	-	73,475.00	-
				2) ध-V(ख) यात्रा अनुदान हेतु अन्य व्यय	-	16,541.00	-
				ध-VI			
				1) ध-VI(क) प्रदर्शनी/प्रचार	6,815.00	-	-
				2) ध-VI(ख) पुस्तक मेला	102,722.00	60,000.00	-
				ध-VII			
				1) ध-VII(क) व्याख्यान-राष्ट्रीय	418,944.00	284,436.00	-
				2) ध-VII(ख) व्याख्यान-अंतर्राष्टीय	367,884.00	725,950.00	-
				3) ध-VII(ग) व्याख्यान पत्रिकाएं	1,053,954.00	924,292.00	-
				ध-VIII			
				1) ध-VIII(क) अंतर्राष्ट्रीय सहयोग तथा शैक्षणिक शैक्षणिक संबंध	261,704.00	76,021.38	-
				ध-IX			
				आ.दा.अ.प. विशेष कार्यक्रम			
				1) ध-IX(क) आजीवन उपलब्धि पुरस्कार	163,000.00	190,000.00	-
				2) ध-IX(ख) श्रेंष्ठ पुस्तक पुरस्कार	3,000.00	-	-
				3) ध-IX(ग) युवा दार्शनिक पुरस्कार	-	15,918.00	-
				4) ध-IX(घ) परियोजना/अनुवाद योजना	1,616,105.00	1,000,000.00	-
				5) ध-IX(ङ) परियोजना अन्य	54,475.00	2,084.00	-
				ध-X			
				1) ध-X(क) परियोजना हेतु अनुदान/अनुवाद परियोजना	97,600.00	386,604.00	-
				2) ध-X(ख) अन्य विशेष कार्यक्रम	34,521.00	30,960.00	-
				3) ध-X(ग) पुस्तक अनुदान	-	-	-
				ध-XI(एनईआर)			
				1) ध-XI(क) अध्येतावृत्ति सामान्य एनईआर	-	874,600.00	-
				2) ध-XI(ध) अन्य शेक्षणिक कार्यक्रम-एनईआर	-	1,755,253.00	-
				ध-XI(अनुसूचित जाति)			
				1) ध-XI(क) अध्येतावृत्ति अनुसूचित जाति	2,032,994.00	2,105,800.00	-
				2) ध-XI(ख) संगोष्ठि/सम्मेलन अनुसूचित जाति	1,260,000.00	1,035,000.00	-
				3) ध-XI(ग) व्याख्यान-अनुसूचित जाति	50,000.00	40,000.00	-
				4) ध-XI(ङ) आईसीपीआर विशेष कार्यक्रम-अनुसूचति जाति	716,345.00	970,000.00	-
				D-XII(अनुसूचित जनजाति)			
				1) D-XII(क) अध्येतावृत्तियां अनुसूचित जाति	535,115.00	1,100,200.00	-
				2) D-XII(ख) संगोष्ठि/सम्मेलन-अनुसूचित जनजाति	1,400,000.00	911,515.00	-
				3) D-XII(ग) व्याख्याता-अनुसूचित जनजाति	-	10,000.00	-
				4) D-XII(ङ) शैक्षिण व्यय के लिए अनुदान-अनुसूचित जनजाति	-	200.00	-
				D-XIII			
				1) D-XIII(ङ) अन्य शैक्षणि कार्यक्रम	26,000.00	-	-
				ई-I			
				प्रकाशन व्यय:	-	-	-

प्राप्तियाँ	31.03.2018	31.03.2017 वर्ष अंत		भुगतान	31.03.2018	31.03.2017 वर्ष अंत	
	वर्ष अंत	योजना	गैर-योजना		वर्ष अंत	योजना	गैर-योजना
				1) ई-I(क) उत्पादन व्यय	40,864.00	-	-
				2) ई-I(ख) मानदेय	64,000.00	3,000.00	-
				3) ई-I(ग) सह-प्रकाशकों को प्रकाशन का भुगतान	-	16,093.00	-
				4) ई-I(ङ) वितरकों का भुगतान	-	-	-
				5) ई-I(च) समाचार पत्रों/वार्षिक रिपोर्ट के संबंध में अन्य व्यय	-	188,791.00	-
				ई-II			
				जेआईसीपीआर व्यय			
				1) ई-II(ङ) उत्पादन व्यय	-	204,644.00	-
				2) ई-II(ख) संपादन व्यय	138,838.00	105,916.00	-
				3) ई-II(ङ) अन्य व्यय	199,000.00	-	-
				समूह-च			
				1) च-I(ग-4) पूर्व अवधि समायोजन-सामान्य	12,495.00	-	-
				2) च-I(घ-3) पूर्व अवधि समायोजन-अकादमिक (लखनऊ)	-	-	-
				समूह-छ			
				1) छ-I(क) भवन	-	-	-
				2) छ-I(ग) वाहन	-	34,853.00	-
				3) छ-I(ङ) फर्नीचर और उपकरण	76,101.00	-	-
				4) छ-I(ख) कार्यालय से संबंधित उपकरण	531,012.00	5,751.00	-
				5) छ-I(ज) कम्प्यूटर, प्रिंटर और संबंधित उपकरण	881,230.00	36,674.00	-
				6) छ-I(च) बिजली की किस्त	25,488.00	-	-
				7) छ-I(झ) पुस्तकालय की पुस्तकें	2,795.00	317.00	-
				8) छ-I(ट) पुस्तकालच की पत्रिकाएं	735.00	-	-
				9) छ-I(ज) अचल सम्पत्तियां	19,850.00	-	-
				10) F-I(ङ) अन्य अचल परिसम्पत्तियां	1,466,390.00		
				समूह-झ			
				1) झ-I(क) विविध देनदान	-	3,321,035.00	140,197.00
				2) झ-I(क-1) विविध देनदान-वेतन	10,162,783.00	-	-
				3) झ-I(क-2) विविध देनदान-पेशनर	-	-	-
				4) झ-I(क-3) विविध देनदान-गैर-वेतन	31,068.00	-	-
				5) झ-I(क-4) विविध देनदान-सामान्य	6,816,650.00	-	-
				6) झ-I(क-5) विविध देनदान-पूंजीगत	555,945.00	-	-
				7) झ-I(क-6) विविध देनदान-अ.जा. सामान्य	1,887,291.00	-	-
				8) झ-I(क-9) विविध देनदान-अ.ज.जा. सामान्य	17,600.00	-	-
				9) झ-I(ख-2) (से.नि.) लाभ	146,672.00	-	-
				समूह-ञ			
				प्रावधान			
				1) ञ-I(क-1) वेत और भत्ता का प्रावधान	2,308,574.00	-	3,393,438.00
				2) ञ-I(ख-1) ग्रेजुटी का प्रावधान	3,155,336.00	-	4,417,193.00
				3) ञ-I(ख-3) एलटीसी के दौरान छुट्टी नकदीकरण का प्रावधान	1,874,720.00	-	3,206,587.00
				4) ञ-I(ग-1) जीपीएफ का प्रावधान	410,647.00	-	479,853.00
				5) ञ-I(ग-2) सीपीएफ का प्रावधान	-	-	23,202.00
				6) ञ-I(ग-3) जीएसएलआईएस का प्रावधान	1,989.00	-	2,204.00

प्राप्तियाँ	31.03.2018	31.03.2017 वर्ष अंत		भुगतान	31.03.2018	31.03.2017 वर्ष अंत	
	वर्ष अंत	योजना	गैर-योजना		वर्ष अंत	योजना	गैर-योजना
				7) ञ-I(ग-4) एलआईसी(एसएसएस) का प्रावधान	2,638.00	-	2,801.00
				8) ञ-I(ग-5) ओटीए का प्रावधान	6,068.00	-	1,477.00
				9) ञ-I(ग-6) शिशु शिक्षण भत्ता का प्रावधान	-	-	204,169.00
				10) ञ-I(ग-9) मासिक पेंशेनरों का प्रावधान	415,880.00	-	309,683.00
				11) ञ-I(ग-10) अन्य रेमिटेंसिस का प्रावधान	6,942.00	-	7,700.00
				12) ञ-I(च-3) टेलिफोन का प्रावधान	21,615.00	-	-
				13) ञ-I(ज-1) अनय प्रावधान	-	-	36,540.00
				14) ञ-I(ज-2) एनपीएफ का प्रावधान	31,100.00	-	1,018,689.00
				समूह-ट			
				1. अग्रिम शैक्षिण कार्यक्रः			
				1) ट-V(क-1) अग्रिम सेमिनार/सम्मेलन	83,000.00	-	-
				2) ट-V(ङ-2) अग्रिम पुर्नश्च कार्यशाला	-	700,000.00	-
				3) ट-V(ट-1) अग्रिम अंतर्राष्ट्रीय सहयोग	14,700.00		
				4) ट-V(ट-1) अग्रिम आईसीपीआर विशेष कार्यक्रम	-	902,500.00	-
				5) ट-V(च-1) अग्रिम शैक्षणिक कार्यक्रम-अ.जा.	-	1,900,458.00	-
				6) ट-V(च-2) अग्रिम शैक्षणिक कार्यक्रम-अ.ज.जा.	-	778,500.00	-
				7) ट-V(ध-1) अग्रिम-शैक्षणिक उद्देश्य (दिल्ली)	990,061.00	881,820.00	125,932.00
				8) ट-V(ध-2) अग्रिम-शैक्षणिक उद्देश्य (लखनऊ)	5,114,000.00	11,440,107.00	-
				9) ट-V(ण) अग्रिम प्रावधान के विरुद्ध	-	442,786.00	-
				2. अग्रिम-अन्यः			
				1) ट-IV(क-1) अग्रिम-त्यौहार	85,500.00	-	112,500.00
				1) ट-IV(क-8) अग्रिम-यात्रा भत्ता	77,490.00	-	14,330.00
				2) ट-IV(क-9) अग्रिम-एलटीसी	75,767.00	-	135,900.00
				3) ट-V(च) अग्रिम-अध्येतावृत्ति	-	-	-
				4) ट-VI(क-1) अग्रिम-आकस्मिकता	33,800.00	144,065.00	83,562.00
				5) ट-VI(क-2) अग्रिम-रकम	85,000.00	-	53,551.00
				6) ट-VI(क-3) अग्रिम-अन्य	2,400.00	377,114.00	10,256.00
				7) ट-VI(क-5) अग्रिम-लखनऊ प्रशासन से संबंधित	3,894,534.00	3,000,000.00	-
				8) ट-VII(क-1) सीपीडब्ल्यूडी में जमा	3,837,220.00	-	-
				9) ट-VII(क-5) सुरक्षा-ईंधन	15,000.00	-	15,000.00
				10)ट-VIII(क-1) प्रीपेड खर्चे	1,621,163.00	1,502,911.00	98,578.00
				11)ट-VIII(ट) प्रतिभूमि जमा राशि	-	-	-
				13) ट-IV(च) अग्रिम वेतन	-	-	426,000.00
				समूह-ठ			
				1) ट-VI(ख-3) बचत खाता से विभिन्न ब्याज प्राप्तियां-कनारा बैंक	3,051,730.00	-	-
				2) ट-VI(ख-6) बचत खाता से विभिन्न ब्याज प्राप्तियां-लखनऊ	398,374.00	-	-

प्राप्तियाँ	31.03.2018 वर्ष अंत	31.03.2017 वर्ष अंत योजना	31.03.2017 वर्ष अंत गैर-योजना	भुगतान	31.03.2018 वर्ष अंत	31.03.2017 वर्ष अंत योजना	31.03.2017 वर्ष अंत गैर-योजना
				3) ट-VI(ग-2) अन्य विभिन्न प्राप्तियां	62,985,609.00	-	-
				समूह-ड			
				समूह-ठ			
				धन प्रेषण			
				1) ण-1(क) आयकर	-	193,432.00	1,942,024.00
				2) ण-1(क-2) आयकर (ठेकेदार)	207,188.00	-	-
				3) ण-1(क-3) आयकर (व्यवसायिक)	215,961.00	-	-
				4) ण-1(क-4) आयकर (भाड़ा)	30,000.00	-	-
				1) ण-1(क-5) आयकर (वेतन)	3,567,307.00	-	-
				2) ण-1(ख-1) एलआईसी-जीएवसलआईएस	120,357.00	-	25,570.00
				3) ण-1(ख-2) एलआईसी-एसएसएस	97,414.00	-	30,322.00
				5) ण-I(झ) एनपीएफ	-	-	287,035.00
				6) ण-1(ख-3)-दुर्घटना बीमा प्रीमियम	38,613.00	-	-
				4) ण-1(ग-1)-सीपीएफ	144,550.00	-	135,000.00
				8) ण-I(ग-2) सामान्य भविष्य निधि	4,758,244.00	-	4,500,026.00
				7) ण-1(घ-3)-अन्य धन प्रेषण	99,535.00	-	87,100.00
				8) ण-I(ङ-4) नया भविष्य निधि	599,210.00	-	-
				V. अंत शेष			
				a) हस्तगस्त नकदी			
				1) हस्तगस्त नकदी	8,139.62	9,711.00	3,189.62
				2) अग्रदाय शेष	13,927.00	-	13,927.00
				b) बैंक शेष			
				- अनुसूचित बैंको में :	-	-	-
				- बचत खातों में:	101,636,666.00	25,940,801.51	44,660,196.50
कुल 'क'	**325,106,359.12**	**85,363,990.49**	**124,934,224.12**	**कुल 'ख'**	**325,106,359.12**	**85,363,990.49**	**124,934,224.12**

ह./-
(श्रीकुमारन एस.)
निदेशक (ले. और वि.)

ह./-
(प्रो. आर.के. शुक्ला)
सदस्य सचिव

स्थान: नई दिल्ली
दिनांक : 30.06.2018

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्

36, तुगलकाबाद इंस्टीट्युशनल एरिया, एम.बी. रोड़, नई दिल्ली-110062

(राशि रु० में)

सामान्य भविष्य निधि

31 मार्च 2018 को समाप्त वर्ष का तुलन पत्र

देनदारियाँ			सम्पत्ति		
विवरण	(रु०)	(रु०)	विवरण	(रु०)	(रु०)
1	2	3	4	5	6
1. अंशदान			**1. सावधि जमा**		
01.04.2017 को बकाया	29,332,722.00		जमा शेष	29,700,000.00	
			जमा: उपार्जित ब्याज	58,989.00	29,758,989.00
जमा:					
2017-18 के दौरान	5,408,891.00		**2. विशेष जमा**		712,519.00
जमा अंशदान	2,426,571.00				
	37,168,184.00		**3. बैंक में जमा**		
			इंडियन बैंक		6,292,229.99
कटौती :					
वर्ष के दौरान/वापसी					
और (अंतिम निपटारा)	3,851,933.00		**4. बैंक शुल्क**	377.00	
पूर्व समय समायोजना	1,991,888.00	31,324,363.00	**5. टीडीएस**		313,857.00
2. **जी.पी.एफ. में निवेश से आय की प्राप्ति**					
01.04.2017 को बकाया	4,028,504.99				
जमा :					
सावधी पर ब्याज	2,053,922.00				
बैंक ब्याज	105,865.00				
पूर्व समय समायोजन	1,991,888.00				
	8,180,179.99				
कटोती :					
अंशदान पर बयाज	2,426,571.00	5,753,608.99			
कुल योग		**37,077,971.99**	**कुल योग**	**37,077,971.99**	

ह./-
(श्रीकुमारन एस.)
निदेशक (ले. और वि.)

ह./-
(प्रो. आर.के. शुक्ला)
सदस्य सचिव

स्थान: नई दिल्ली
दिनांक : 30.06.2018

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्

36, तुगलकाबाद इंस्टीट्युशनल एरिया, एम.बी. रोड़, नई दिल्ली-110062

(राशि रु० में)

सामान्य भविष्य निधि

31 मार्च 2018 को समाप्त वर्ष की प्राप्तियाँ और भुगतान

देनदारियाँ		सम्पत्ति	
विवरण	*(रु०)*	*विवरण*	*(रु०)*
01.04.2017 को बकाया	14,22,114.99	वापसी/निकासी/अग्रिम जमा वर्ष के दौरान	38,51,933.00
अंशदान और अग्रिम राशि की वापसी	54,08,891.00		
		अतिरिक्त सावधिम जमा	2,97,00,000.00
सावधि के परिपक्व	3,09,12,418.00		
		बैंक शुल्क	957.00
एसबीआई बैंक खाता से ब्याज की प्राप्ति	1,06,763.00		
		31.03.17 के जमा	
विशेष जमा से ब्याज की प्राप्ति	57,003.00	इंडियन बैंक बचत खाता	62,92,229.99
सावधि से ब्याज की प्राप्ति	19,37,930.00		
कुल योग	**3,98,45,119.99**	**कुल योग**	**3,98,45,119.99**

ह./-
(श्रीकुमारन एस.)
निदेशक (ले. और वि.)

ह./-
(प्रो. आर.के. शुक्ला)
सदस्य सचिव

स्थान: नई दिल्ली
दिनांक : 30.06.2018

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्

36, तुगलकाबाद इंस्टीट्युशनल एरिया, एम.बी. रोड़, नई दिल्ली-110062

(राशि रु० में)

अंशदान भविष्य निधि

31 मार्च 2018 को समाप्त वर्ष का तुलन पत्र

देनदारियाँ			सम्पत्ति		
विवरण	(रु०)	(रु०)	विवरण	(रु०)	(रु०)
1	2	3	4	5	6
1. अंशदान			**1. सावधि जमा**		
01.04.2017 को बकाया	1,761,639.00		01.04.2017 को बकाया	-	
जमा:			कटौती:		
वर्ष के दोरान अतिरिक्त	144,550.00		वर्ष के दौरान सावधि के परिपक्व	-	-
अंशदान पर ब्याज	40,140.00	-	से प्राप्त		
कटौती:	1,946,329.00		**2. विशेष जमा**	59,844.00	
वापसी/अंतिम निकासी	1,796,872.00	149,457.00	**3. बैंक में बकाया-इंडियन बैंक**	1,439,485.40	
2. अंशदान			**4. बैंक शुल्क**	561.00	
01.04.2017 का बकाया	1,416,429.00		**5. टीडीएस**	44,627.00	
जमा:					
कर्मचारियों के हिस्से का अंशदान	120,010.00				
अंशदान पर ब्याज	32,998.00				
	1,569,437.00				
कटौती:					
वापसी/अंतिम निकासी	1,444,758.00	124,679.00			
3. सीपीएफ में निवेश से आय की प्राप्ति					
01.04.2017 का बकाया	1,251,348.40				
जमा:					
जमा तथा बचत खाते पर ब्याज		90,521.00			
	1,341,869.40				
कटौती:					
पूर्व अवधि का समायोजन	-				
कर्मचारियों के अंशदान पर ब्याज	40,140.00				
कर्मचारियों के योगदान पर ब्याज	32,998.00	1,268,731.40			
4. पूर्व अवधि का समायोजन	1,650.00				
कुल योग		**1,544,517.40**	**कुल योग**	**1,544,517.40**	

ह./-
(श्रीकुमारन एस.)
निदेशक (ले. और वि.)

ह./-
(प्रो. आर.के. शुक्ला)
सदस्य सचिव

स्थान: नई दिल्ली
दिनांक : 30.06.2018

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्

36, तुगलकाबाद इंस्टीट्युशनल एरिया, एम.बी. रोड़, नई दिल्ली-110062

(राशि रु० में)

अंशदान भविष्य निधि

31 मार्च 2018 को समाप्त वर्ष की प्राप्तियाँ और भुगतान

प्राप्तियाँ		*भुगतान*	
विवरण	*(रु०)*	*विवरण*	*(रु०)*
1	*2*	*3*	*4*
01.04.17 को आरंभिक शेष	4,326,034.40	वर्ष के दौरान वापसी/निकासी/ अग्रिम और अंतिम समझौता	3,241,630.00
कर्मचारियों का अंशदान	144,550.00		
		बैंक शुल्क	70.00
नियोजक के हिस्से का अंशदान	120,010.00		
बचत खाते से ब्याज प्राप्त किया	86,159.00		
विशेष जमा पर ब्याज	4,432.00		
सावधि जमा पर ब्याज	-		
एफडीआर परिपक्व -		31.03.18 तक अंतिम शेष	1,439,485.40
कुल योग	**4,681,185.40**	**कुल योग**	**4,681,185.40**

ह./-	ह./-
(श्रीकुमारन एस.)	(प्रो. आर.के. शुक्ला)
निदेशक (ले. और वि.)	सदस्य सचिव

स्थान: नई दिल्ली

दिनांक : 30.06.2018

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्

36, तुगलकाबाद इंस्टीट्युशनल एरिया, एम.बी. रोड़, नई दिल्ली-110062

(राशि रु० में)

नई पेंशन निधि

31 मार्च 2018 को समाप्त वर्ष का तुलन पत्र

देनदारियाँ			सम्पत्ति	
विवरण	*(रु०)*	*विवरण*	*(रु०)*	
1	2	3	4	5
1. अंशदान			**1. बैंक में बकाया**	
			इंडियन बैंक	4,12,215.00
01.04.2017 को आरंभिक शेष	3,95,394.00			
जमा:			**2. बैंक शुल्क**	163.00
वर्ष के दौरान अंशदान	1,01,219.00			
बचत खाता पर ब्याज	16,984.00			
	5,13,597.00			
कटौती:				
निकासी/भुगतान/समायोजन	1,01,219.00			
		4,12,378.00		
कुल योग		**4,12,378.00**	**कुल योग**	**4,12,378.00**

ह./-
(श्रीकुमारन एस.)
निदेशक (ले. और वि.)

ह./-
(प्रो. आर.के. शुक्ला)
सदस्य सचिव

स्थान: नई दिल्ली
दिनांक : 30.06.2018

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्

36, तुगलकाबाद इंस्टीट्युशनल एरिया, एम.बी. रोड़, नई दिल्ली–110062

(राशि रु० में)

नई पेंशन निधि

31 मार्च 2018 को समाप्त वर्ष की प्राप्तियाँ और भुगतान

प्राप्तियाँ		*भुगतान*	
विवरण	*(रु०)*	*विवरण*	*(रु०)*
1	*2*	*3*	*4*
01.04.17 को आरंभिक शेष	3,95,263.00	वर्ष के दौरान कर्मचारियों का अंशदान	1,01,219.00
वर्ष के दौरान कर्मचारियों का अंशदान	1,01,219.00	नियोजक के हिस्से का अंशदान	1,01,219.00
नियोजक के हिस्से का अंशदान	1,01,219.00	बैंक शुल्क	32.00
बचत खाते पर ब्याज की प्राप्ति	16,984.00	31.03.17 को अंतिम शेष	4,12,215.00
कुल योग	**6,14,685.00**	**कुल योग**	**6,14,685.00**

ह./–
(श्रीकुमारन एस.)
निदेशक (ले. और वि.)

ह./–
(प्रो. आर.के. शुक्ला)
सदस्य सचिव

स्थान: नई दिल्ली
दिनांक : 30.06.2018

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्

36, तुगलकाबाद इंस्टीट्युशनल एरिया, एम.बी. रोड़, नई दिल्ली-110062

(राशि रु० में)

31 मार्च 2018 को समाप्त वर्ष का तुलन पत्र (एफ.सी.आर.ए.)

प्राप्तियाँ	रु. 31.03.2018	*भुगतान*	रु. 31.03.2018
अधिक आय		नकद और बैंक शेष	
(i) 31.03.2016 के अंत तक	1,866.00	31.3.2017 बैंक में नकद	
		(कैनरा बैंक, त्रिवेणी फेस-2)	
(ii) वर्ष के दौरान कुल आय	60.00	शेख साराय, एनडी-एफसीआरए खाता-16491)	1,926.00
कुल	1,926.00	कुल	1,926.00

ह./-
(श्रीकुमारन एस.)
निदेशक (ले. और वि.)

ह./-
(प्रो. आर.के. शुक्ला)
सदस्य सचिव

स्थान: नई दिल्ली
दिनांक : 30.06.2018

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्

36, तुगलकाबाद इंस्टीट्युशनल एरिया, एम.बी. रोड़, नई दिल्ली–110062

(राशि रु० में)

31 मार्च 2018 को प्राप्तियाँ और भुगतान (एफ.सी.आर.ए.)

प्राप्तियाँ		*भुगतान*	
विवरण	*(रु०)*	*विवरण*	*(रु०)*
1	2	3	4
1.4.2017 को आरंभिक शेष	1,866.00	31.03.18 को अंतिम शेष	1,926.00
बचत खाते पर बैंक ब्याज प्राप्तियां	72.00	बैंक शुल्क	12.00
कुल योग	1,938.00	कुल योग	1,938.00

ह./–
(श्रीकुमारन एस.)
निदेशक (ले. और वि.)

ह./–
(प्रो. आर.के. शुक्ला)
सदस्य सचिव

स्थान: नई दिल्ली
दिनांक : 30.06.2018

अनुलग्नक- घ

लेखा नीतियाँ

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्,नई दिल्ली की महत्वपूर्ण लेखा नीतियाँ और टिप्पणियां

लेखा नीतियाँ

(1) लेखा प्रथा

भा०दा०अ०परिषद् का लेखा ऐतिहासिक लागत प्रथा और लेखा के संचित आधार पर किया जाता है।

(2) अचल संपत्ति और मूल्यह्रास

- अचल संपत्ति का निर्धारण लागत के आधार पर किया जाता है। समय-समय पर संशोधित नियम 1961 के तहत निर्धारित करों पर संमाप्ति के अनुसार मूल्य पर मूल्यह्रास प्रदान की जाती है। सभी अचल संपत्तियां फर्नीचर और फिक्चर खरीदी जो कि 2000/- रुपये से कम खरीदी गई है, जिन्हें वर्ष में 100% अवमूल्यन प्रदान किया गया है।
- पुस्तकालय की पुस्तकों पर निर्धारित दरों पर मूल्यहृास प्रदान की जाती है। यद्यपि वर्ष के दौरान जर्नल की खरीद/सदस्यता पर 100% अवमूल्यन प्रदान की गई है।
- संस्थान को अनुदान के रूप में कई पुस्तकें प्राप्त हुई हैं जो बाजार मूल्य से अचल संपत्तियों में दर्शाई गई हैं।

(3) प्रकाशनों का स्टॉक

जो सामग्री प्रकाशन की प्रक्रिया में है उसका निर्धारण लागत के आधार पर तय किया जाता है। प्रकाशन-भंडार का मूल्य प्रकाशक से प्राप्त कुल मूल्य के आधार पर लगाया जाता है।

(4) सेवानिवृत्ति लाभ

ग्रेच्युटी/अवकाश के बदले भुगतान की राशि वास्तविक आधार पर रखी जाती है। पेंशन की राशि संचित राशि के आधार पर रखी जाती है।

(5) बोनस की व्यवस्था

बोनस का हिसाब नकदी आधार पर किया जाता है।

(6) व्यय

व्यय का हिसाब, सामान्यत, संचित राशि के आधार पर किया है।

(7) राजस्व स्वीकरण

(अ) भा०दा०अ०परिषद् मुख्यत: मानव संसाधन विकास मंत्रालय के 100 प्रतिशत अनुदान पर निर्भर है जिसे स्वीकृत राशि के आधार पर लेखा में लिया गया है।

(ब) अनुदान के अलावा भा०दा०अ०परिषद् के प्रकाशनों की बिक्री, पुराने अनुपयोगी सामान की बिक्री, रिप्रोग्राफिक सेवाओं, किराया/अतिथिगृह सेवाओं के मूल्य आदि से आय होती है। इस सब का लेखा जोखा तभी किया जाता है जब इस तरह की आय की प्राप्ति का अधिकार स्थापित हो गया हो।

(8) कर

भा०दा०अ०परिषद् ने आयकर में छूट के लिए आयकर विभाग से यह सोच कर बात नहीं की भा०दा०अ०परिषद् को कोई आय नहीं होती है और वह भारत सरकार से मिले अनुदान के आधार पर शोध कार्य करवा रही है।

ह./-	ह./-
(श्रीकुमारन एस.)	(प्रो. आर.के. शुक्ला)
निदेशक (ले. और वि.)	सदस्य सचिव

अनुलग्नक-च

लेखा पर टिप्पणियाँ

लेखा पर टिप्पणियाँ

(31 मार्च 2018 को समाप्त होने वाले वर्ष के लेखा का निर्माण भाग और उसमें संलग्न)

1. प्रकाशन का स्टॉक बाजार मूल्य के 50 प्रतिशत पर आकलित किया जाता है। भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद् के प्रकाशन विभिन्न नियमों और शर्तों के आधार पर अनेक वितरकों/प्रकाशकों द्वारा संभाले जाते हैं। तद्नुरूप भा०दा०अ०परिषद् के प्रकाशनों को निम्न तीन वर्गों में वर्गीकृत किया जाता है।
   - भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद् द्वारा 100 प्रतिशत लागत वहन करते हुए प्रकाशित किए जाने वाले प्रकाशन।
   - भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद् सह-प्रकाशन के आधार पर प्रकाशित किए जाने वाले प्रकाशन जिनमें लागत 60 : 40 के आधार पर वाहन की गयी हो और उसे बेचकर हुई आय से लागत मूल्य का 40 प्रतिशत प्राप्त हो।
   - प्रकाशनों के व्यय और भा.दा.अ.प. द्वारा प्राप्त प्रकाशन मुद्रित को ध्यान में नहीं रखा गया हैं।

इस तरह भा०दा०अ०परिषद् के प्रकाशनों का आदि स्टॉक निम्नलिखित रूप में अंतिम लेखा में लिया गया और 2010-11 के अनुसार स्टॉक के आधार पर तुलन-पत्र के उद्देश्य के लिए आगे के स्टॉक को उपलब्ध नहीं कराया गया हैं।

(i) प्रकाशनों का कुल लागत मूल्य स्टॉक के आकलन के उद्देश्य से पुस्तक के बिक्री मूल्य के 50 प्रतिशत के आधार पर लिया जाएगा।
वर्ष 2017-18 के दौरान लेखा में पूर्व अवधि का समायोजन कर लिया गया है। वर्ष 2016-17 से पहले की संशोधन प्रविष्टियों को भी पूंजी लेखा में समायोजन कर लिया गया है।

(ii) जीपीएफ/सीपीएफ लेखा और एनपीएफ के तुलन पत्र और आय व व्यय लेखा परिषद् द्वारा रखी गयी कैशबुक के अनुसार तैयार किए गये हैं। तुलन पत्र और प्राप्ति व भुगतान लेखा में 31.03.2018 तक की अवधि के लिए दिए गये शेष परिषद् द्वारा जीपीएफ और सीपीएफ लेखा के संबंध में तैयार की गयी ब्रॉडशीट से मेल खाते हैं ।

(iii) लेखा में जहाँ भी अवश्य है पिछले वर्ष की संख्याओं को पुर्नवर्गीकृत/नवीनीकृत कर लिया गया है।

(iv) 31 मार्च 2018 के अंतिम नकदी शेष, प्रकाशन और म्युचूअल फंड में निवेश जैसा कि परिषद् द्वारा प्रमाणित किया गया।

(2) प्राप्ति/भुगतान लेखा

शैक्षिक और अन्य अग्रिमों के बदले किए गए ऋण व व्यय को समायोजित करने के लिए प्राप्ति और भुगतान तथा आय और व्यय लेखा को तैयार करते समय निम्नलिखित पद्धति अपनाई गई:

(क) वित्त वर्ष के दौरान शैक्षिक कार्यक्रमों के लिए दिए अग्रिमों और अन्य अग्रिमों के लिए दिए गए मूल भुगतान को प्राप्त और भुगतान लेखा भुगतान की ओर दिखाया गया है।

(ख) प्रत्येक अग्रिम खाते की नामे राशि को प्राप्ति माना गया है उसे प्राप्ति और भुगतान लेखा में उसी तरह दिया गया है।

अग्रिमों के विरुद्ध किए गए व्यय को अग्रिम को समायोजित करने के लिए खाता बही में जमा कर दिया जाता है। इसी प्रकार व्यय के अधिक और ऊपर प्राप्त शेष राशि भी खाते में जमा दी जाती है।

(ग) अग्रिम खाते के बकाया शेष को संपत्ति माना गया है। तुलन पत्र में उसे इसी तरह दिखाया गया है।

(घ) अग्रिमों के खाते किए गए सभी व्यय को विभिन्न व्यय मदों में डाला गया है। जैसे गोष्ठी, बैठक आदि। इस व्यय को आय और व्यय दर्शाया गया है तथा प्राप्ति भुगतान में भी भुगतान की ओर रखा गया है।

(v) प्राप्ति और भुगतान लेखा में ऋण और अग्रिमों के समायोजन को प्राप्ति दिखाया गया है क्योंकि इन अग्रिमों के खाते दिए गए व्यय को विभिन्न व्यय मदों में दिखाया गया है और उन्हें आय और व्यय लेखा में व्यय दर्शाया गया है तथा प्राप्ति भुगतान में भी भुगतान की ओर रखा गया है।

(vi) इस स्थायी संपत्ति के स्थापन और उपयोग को सोसाइटी द्वारा सत्यापित किया गया है और लेखा ने स्वीकार किया है क्योंकि यह एक तकनीकी मामला है।

मार्च 2017 के लिए रखे गए वेतन और भत्तों से शोध पर, कर नहीं काटा गया क्योंकि उसे तभी घटाया जाता है जब वेतन और भत्तों का भुगतान किया जाता है। संपादकीय अध्येताओं की अध्येतावृत्ति के भुगतान से भी कर नहीं घटाया गया।

ह./-
(श्रीकुमारन एस.)
निदेशक (ले. और वि.)

ह./-
(प्रो. आर.के. शुक्ल)
सदस्य सचिव

31 मार्च 2018 के समाप्त होने वाले वर्ष का भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद् के लेखा पर नियन्ता और भारत के महालेखा-परीक्षक की अलग ऑडिट रिपोर्ट

1. हमने भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद के संलग्न तुलन पत्र 31 मार्च 2018 तक है और आय और व्यय लेखा, प्राप्ति और भुगतान लेखा, प्राप्ति और भुगतान लेखा जो उसी तिथि को अन्त होने वाले वर्ष का है, का ऑडिट, लेखा-नियन्ता और महालेखा (कर्तव्य, अधिकार, एवं सेवा शर्तों संबंधित) अधिनियम 1971 के तहत किया है। हमे वित्त वर्ष 2017-18 के लिए लेखा का दायित्व सौंपा गया था। इन वित्तीय विवरणों का दायित्व भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद के प्रबंधन का है। हमारा दायित्व तो ऑडिट के आधार पर इन वित्तीय विवरणों के ऊपर अपनी राय देना है।
2. इस पृथक ऑडिट रिपोर्ट में वर्गीकरण, श्रेष्ठ लेखा मानकों और प्रकटीकरण मानकों आदि से संबंधित लेखा तैयार करने के बारे में लेखा नियंतक और महालेखाधिकारी की टिप्पणियाँ हैं वित्तीय लेन-देन से जुड़े हुए कानून, नियमों (औचित्य और नियन्ता) कार्यदक्षता व कार्य पालन संबंधी पहलू के बारे में ऑडिट टिप्पणियाँ अगर कोई है तो वे निरीक्षण रिपोर्ट/सीएजी (कैग की) ऑडिट रिपोर्ट के माध्यम से अलग से दी गई है।
3. मैंने अपना ऑडिट तत्-प्रयुक्त नियमों और भारत में सामान्यत: स्वीकृत ऑडिट के मानकों के अनुरूप किया है। इन मानकों के अनुसार मुझे ऑडिट इस तरह योजित और उसे लागू करना पड़ता है जिससे इसके बारे में तार्किक आश्वासन मिल सके कि वित्तीय विवरण किसी तरह की गलत वित्तीय बयानबाजी से रहित है। ऑडिट के वित्तीय विवरणों में किए गए खुलासे और विभिन्न राशियों के साक्ष्य की परीक्षा चुनिंदा आधार पर किए जाते हैं मुझे विश्वास है कि मेरा ऑडिट मेरे द्वारा व्यक्त की गयी राय का एक विश्वसनीय आधार प्रदान करता है।
4. अपने ऑडिट के आधार पर हमारा कहना है कि :
   - (i) मैंने वे सभी सूचनाएं और स्पष्टीकरण प्राप्त किए जो इस ऑडिट हेतु हमारी संपूर्ण जानकारी और विश्वास के लिए आवश्यक थे।
   - (ii) उन्हें वित्त मंत्रालय के व्यय विभाग, लेखा नियंत्रक महालेखा द्वारा स्वीकृति प्रारूप के अनुसार तैयार नहीं किया गया।
   - (iii) हमारी राय में भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद् द्वारा लेखा के उचित बही खाता और अन्य संबंधित रिकार्ड रखे गए हैं जैसा कि इन बही खाता की जाँच से पता लगता है।
   - (iv) हम निम्नलिखित रिपोर्ट करते हैं :

क. तुलन-पत्र

क.1 देयताएं

क.1.1. चालू संपत्तियां और प्रावधान (अनुसूची 2) रु. 12.04 करोड़

उपर्युक्त 2.53 करोड़ रुपये की अनुदान सहायता प्रादन नहीं की गई है। जिसके परिणाम स्वरूप मौजूदा देयताएं और

प्रावधान तथा पूंजी कोष की अधिकतम राशि 2.53 करोड़ रुपये से कम हो गई है।

क.2. संपत्तियां

क. 2.1 चालू संपत्तियां ऋण एवं अन्तिम (अनुसूची 4) 16.80 करोड़ रुपये

(i) उपरोक्त में भा.दा.अ.प. प्रकाशन और जे.आई.पी.आर. पत्रिकाओं का स्टॉक 67.37 लाख रु. है, जो वास्तव में वर्ष 2009-10 के लिए प्रकाशकों के समापन बकाया का मूल्य है तथा 31.3.2018 को समापन बाकी स्टॉक का वास्तविक मूल्य नहीं है। हालांकि, प्रकाशन के बिक्री के से 57.29 लाख रुपये की राशि प्राप्त हुई थी और 2010-11 के बाद से इन प्रकाशनों के लिए 71.37 लाख रुपये अलग-अलग उपलब्ध कराए गए थे, समापन स्टॉक का मूल्य अद्‌नतन नहीं किया गया है।

ऊपर बताई गई स्थिति को मद्देनजर ऑडिट खातों में दर्शाए गए आई.सी.पी.आर. प्रकाशन तथा जे.आईसी. पी.आर. पत्रिकाओं के समापन स्टॉक को स्त्यापित करने में सक्षम नहीं हैं और साथ थी आय और व्यय खातों में दिखाए गए प्रकाशकों से आप का सत्यापत करने में सक्षम नहीं है।

(ii) उपरोक्त में 58.85 लाख रुपये के शैक्षणिक कार्यक्रम (मार्च 2002 से पहले) के अग्रिम शामिल हैं जिनमें से भा.दा.अ.प. के पास विवरण उपलब्ध नहीं है। विवरण के शेष में इन अग्रिमों को ऑडिट में सत्यापित नहीं किया जा सकता है।

ख. तुलन पत्र (सामान्य भविष्य निधि)

ख.2.1 निवेश

ख. 1 वित्त मंत्रालय, भारत सरकार की दिनांक 02.03.2015 की अधिसूचना फा.सं. 11/4/2013-पी.आर. द्वारा विहित प्रतिमान के अनुसार सामान्य भविष्य निधि के निवेश नहीं नहीं किए गए थे।

(ख) अनुदान

परिषद् ने मानव संसाधन विकास मंत्रालय से इस वर्ष के दौरान 18.7 करोड़ रुपये की सहायता से अनुदान प्राप्त किया था जिसमें से 5.59 करोड़ रुपये मार्च 2018 में प्राप्त किया। इसमें 1.32 करोड़ रुपये की अयोजित शेश राशि थी और 0.52 करोड़ रुपये प्राप्त हुए। 20.01 करोड़ रुपये के कुल निधि में से 17.48 करोड़ रुपये व्यय किया गया और 2.53 करोड़ रुपये की शेश राशि छोड़ दिया गया।

(ग) प्रबन्धन पत्र

दोष जिसे ऑडिट रिपोर्ट में शामिल नहीं किया गया है, सदस्य सचिव आई.सी.पी.आर. के संज्ञान में एक प्रबंधन पत्र के माध्यम से सुधारात्मक/निर्देशात्मक कार्रवाई के लिए अलग से जारी किया गया है।

(5) कार्यवाही अनुच्छेदों में हमारी टिप्पणियों के अधीन हमारी रिपोर्ट इस प्रकार है— तुलन पत्र व आय और व्यय लेखा/प्राप्ति तथा देनदारी लेखा का लेन-देन इस रिपोर्ट में बताया है लेखा की बहियों का अनुबंध किया गया है।

(6) हमारे विचार, हमारी सर्वोत्तम जानकारी तथा हमें दिए गये स्पष्टीकरण के अनुसार ये लेखाओं के निर्धारित प्रारुप के अन्तर्गत जानकारी देते हैं। लेखांकन नीतियों और तत्संबंधी टिप्पणियों के साथ पठित तथा इसके साथ सलग्न लेखापरीक्षा प्रतिवेदन में वर्णित अन्य विज़यों के अध्याधीन कथित तुलनपत्र आय एवं व्यय लेखे प्राप्ति और भुगतान लेखे सही और उचित रूप प्रस्तुत करते हैं:

(क) जहाँ तक यह 31 मार्च 2018 को भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद् के तुलन पत्र की विवरण स्थिति से सम्बन्धित है।

(ख) और जहाँ तक इस तिथि को समाप्त वर्ष के आय एवं व्यय लेखे की कमी से सम्बन्धित हैं।

स्थान : नई दिल्ली

सी. और ए.जी.,
भारत की ओर से
ह०/-

दिनांक: 10.01.2019

महानिदेशक महालेखा
(केन्द्रिय व्यय)

ऑडिट रिपोर्ट का संलग्नक

1. आंतरिक लेखा पद्धति की पर्याप्तता

- परिषद् ने न तो अपना कोई लेखा कक्ष स्थापित किया है। और न ही ऐसा मंत्रालय द्वारा किया जा रहा है।

2. आंतरिक नियंत्रक पद्धति की पर्याप्त पर्यवेक्ष्य

- बाहरी लेखा के आपत्तियों के प्रबंधन की प्रतिक्रिया प्रभावी नहीं है क्योंकि पैरा 38 के अनुसार 2002-03 से 2011-12 तक की अवधि में 31 मार्च 2018 का बकाया था।
- अचल संपत्ति रजिस्टर का अनुचित रखरखाव
- प्रकाशन से संबंधित लेनदेन का अनुचित लेखा।

3. परिसंपत्तियों की प्रत्यक्ष जाँच की व्यवस्था

- आईसीपीआर मुख्यालय की अचल परिसंपत्तियों का सत्यापत 31 मार्च 2018 तक किया गया है।
- पुस्तकाकलय की पुस्तकों और प्रकाशनों का प्रत्यक्ष सत्यापन 2016-17 तक किया गया है।

4. प्रत्यक्ष जांच की विस्तृत सूची की विधि

वर्ष 2016-17 की विस्तृत सूची (इंवेन्टरी) की जाँच की जा चुकी है। परन्तु जांच को अभी तक अन्तिम रूप देना था।

5. भुगतान में नियमितता

31.03.2016 को कोई भुगतान 6 माह की अवधि से अधिक का बकाया नहीं था।

Indian Council of Philosophical Research

Annual Report 2017-18

(April 2017-March 2018)

Darshan Bhawan

36, Tughlakabad Institutional Area,

M.B. Road, New Delhi-110 062

Annual Report 2017-18

Published by
The Member Secretary
INDIAN COUNCIL OF PHILOSOPHICAL RESEARCH
Darshan Bhawan
36, Tughlakabad Institutional Area
M.B. Road, New Delhi-110062
011-29901505, 011-29901506
Web: www.icpr.in

FROM CHAIRMAN'S DESK

I am happy to place the Annual Report 2017-18 of Indian Council of Philosophical Research containing academic activities of the Council. This academic year was vibrant with different types of programme conducted by ICPR. Some were organized by ICPR and some were supported by ICPR. As the **Report by the MHRD Review Committee June 2018** pointed out (P.18.5.15), several academic programmes were held which included organizing more than 100 seminars and workshops, particularly on the textual studies and social issues, in every nook and corner of the country. The committee further remarked that ICPR has reached out to other countries of the world and collaborated with them. The Review Committee further opined that ICPR has played a useful role in promoting and publicizing Indian Philosophy in its various forms. This has given a great fillip to the research activities (P.18.5.16).

The Review Committee was happy to note that the Council has performed its function in a reasonably satisfactory manner (P.11.4.4). Since there was a move to merge or abolish ICPR, the Review Committee strongly repudiated such a happening. It wrote, "Should such an organization which can be the prime mover in India's bid to dominate the philosophical skies of the globe be allowed to disintegrate and be dissolved into a non-entiry. T**he answer is a bold and clear No**!" (P.10.3.10)

The Review committee worked for ......months, perused the office files and met several dignitaries all of whom opined that ICPR has done good work in promoting philosophy in general and Indian Philosophy in particular. It recommended that the budgetary support of ICPR should be about 200 crores (P.4.5.19 & 4.5.20) and suggested that the government should take a firm decision to support ICPR so that "India will succeed in

installing Indian Philosophy at the top showpiece of the universal philosophy which is very much about to explode into incandescence !"(P.13)

It is hoped that ICPR will continue its splendid task within and outside the country and guide people with regard to view of Reality and ways of life from Indian perspective which is its avowed aim. This can be done in collaboration and net working with sister organizations. It has been our experience that the world is looking towards India for newer insights and fresh approaches and ICPR has the responsibilities to fulfill this task.

Prof. S.R. Bhatt
Chairman, Indian Council of Philosophical Research
New Delhi

FOREWORD

It is immense pleasure to Foreword the 2017/18 Annual Report comprising activities of the Indian Council of Philosophical Research (ICPR). The whole year, the ICPR worked towards revival of core Philosophy, particularly Indian Philosophy, which was the basis of the formation of the Indian Council of Philosophical Research. Higher academic activities such as workshops focused on the textual study of original texts so that young researchers may be introduced and may develop their interest and study towards Indian Philosophy from original Sanskrit texts. Under the quality control measures of the ICPR, it was made necessary the seminars in that participants to submit their papers in advance and get approval such that only quality papers are presented. Under the motivation and support to researchers, the ICPR continued its support through its Fellowship programme. To ease paper work and expedite the process, the ICPR has started online submission of forms and introduced online conduction of test for Junior Research Fellowships. The ICPR supported the project research to scholars to initiate their research.

In the Academic Centre of the ICPR, which houses one of the largest collections of books in Philosophy, many activities such as workshops, seminars, study circles, etc. were conducted and have been separately reported in this Annual Report.

The ICPR revived its Dissemination of Knowledge series which aims to introduce philosophical knowledge through short monographs etc. to scholars and general readers of philosophy. This year too under report the ICPR has brought out *Journal of Indian Council of Philosophical Research*. The ICPR is also planning to bring a tri-lingual journal (in Hindi, English and Sanskrit).

The ICPR organized Foundation Day which took place after many years. Other programmes such as Fellows' Meet, Orientation Programme, International Yoga Day, and National Education Day were successfully organized. Schemes such as Periodic Lecture, World Philosophy Day, were organized. Foreign visiting professors and Indian visiting professors delivered some of the lectures.

Based on the activities and programmes conducted in 2017/18, the year can be regarded as a successful one.

(Professor Rajaneesh Kumar Shukla)

(Member Secretary)

CONTENTS

	Message from the Chairman	III
	Foreword from the Member Secretary	V
I	Aims and Objectives	1
II	Organisational Set up	4
III	Meetings	5
IV	Fellowships	5
V	Seminars/Workshops/Symposia/Conferences	18
VI	Projects	52
VII	Fellows' Meet	56
VIII	Publication	59
IX	Foundation Day Celebration	60
X	Lectures by International Scholars	62
XI	Lectures by National Scholars	66
XII	World Philosophy Day	68
XIII	Periodic Lectures	78
XIV	Book Grant 2017/18	100

XV	International Collaboration	101
XVI	Life Time Achievement Award	102
XVII	Academic Centre, Lucknow	105
XVIII	Hindi Pakhawara	132
XIX	Council	135
XX	Governing Body	140
XXI	Finance Committee	142
XXII	Research Project Committee	143
XXIII	Annual Accounts	145

INDIAN COUNCIL OF PHILOSOPHICAL RESEARCH
ANNUAL REPORT 2017–2018

I. AIMS AND OBJECTIVES

The Indian Council of Philosophical Research (ICPR) set up by the Ministry of Education, Government of India, was registered as a society in March 1977 under the Societies Act, 1860, but its actual functioning started in July 1981. The ICPR was set up with the following aims and objectives:

- To review the progress of research in Philosophy from time to time.
- To sponsor or assist projects or programmes of research in Philosophy.
- To give financial support to institutions and organizations engaged in the conduct of research in Philosophy.
- To provide technical assistance or guidance for the formulation of research projects and programmes in Philosophy, by individuals or institutions, and/or organize and support institutional or other arrangements for training in research methodology.
- To indicate, periodically, areas in and topics on which research in Philosophy should be promoted and to adopt special measures for the development of research in neglected or developing areas in Philosophy.

- To co-ordinate research activities in Philosophy and to encourage programme of interdisciplinary research.
- To organize, sponsor, and assist seminars, special courses, study circles, working groups/parties, and conferences for promoting research in Philosophy, and to establish institutes for the same purpose.
- To give grants for publication of digests, journals, periodicals, and scholarly works devoted to research in Philosophy and also to undertake their publication.
- To institute and administer fellowships, scholarships, and awards for research in Philosophy by students, teachers, and others
- To develop and support documentation services, including maintenance and supply of data, preparation of an inventory of current research in Philosophy, and compilation of a national register of philosophers.
- To promote collaboration in research between Indian philosophers and philosophical institutions and those from other countries.
- To take special steps to develop a group of talented young philosophers and to encourage research by young philosophers working in universities and other institutions.
- To advise the Government of India on all such matters pertaining to teaching and research in philosophy as may be referred to it by the Government of India from time to time.
- To enter into collaboration on mutually agreed terms, with other institutions, organizations, and agencies for the promotion of research in Philosophy.
- To promote teaching and research in Philosophy.
- Generally, to take all such measures as may be found necessary from time to time to promote research in Philosophy.
- To create academic, administrative, technical, ministerial, and other posts in the ICPR and to make appointments, thereto in accordance with the provisions of the Rules and Regulations.

THRUST AREAS

1. Theories of Truth and Knowledge.
2. Normative Inquiries – Ethics, including basic values embodied in Indian Culture and their relevance to National Reconstruction, and Aesthetics.
3. Interdisciplinary Inquiries on various aspects of Arts and Humanities.
4. Comparative and Critical Study in Philosophical Systems/Movements and Religion.
5. Logic and Philosophy of Logic
6. Philosophy of Mathematics
7. Philosophy of Language
8. Philosophy, Science and Technology
9. Philosophy of Man and the Environment
10. Social and Political Philosophy
11. Philosophy of Law
12. Metaphysics
13. Philosophy of Education
14. Philosophy of Social Sciences
15. Philosophy of Feminism

FUNDING/FINANCE

The funding/finance of the ICPR depends upon the grants allocated and released by the Ministry of Human Resource Development:

(a) During the year 2017-18, the ICPR received a grant of Rs 1817.08 lakh for academic activities.

Opening balance of previous year plan and non-plan	Grant received from MHRD	Budget/grant received	Total grant received plus receipts, etc.	Expenditure for the year	Opening balance of the f.y. (Col. 5-6)	
131.62	1817.08	1817.08	2000.86	1748.02	252.84	

II. ORGANIZATIONAL SET-UP

The ICPR has a broad-based membership, comprising distinguished philosophers, social scientists, representatives of the University Grants Commission, Indian Council of Social Science Research, Indian Council of Historical Research, Indian National Science Academy, the Central Government, and the Government of Uttar Pradesh. The Governing Body (GB) and the Research Project Committee (RPC) are the main decision making authorities of the ICPR. These authorities are vested with well-defined powers and functions. The Governing Body, which consists of Chairman, Member Secretary, not less than three and not more than eight members appointed by the ICPR, a representative each of the Ministry of Human Resource Development and Ministry of Finance, and two nominees of the Government of Uttar Pradesh, administers, directs, and controls the affairs of the ICPR. The Research Project Committee, which includes the Chairman, not less than five and not more than nine members appointed by the ICPR, and the Member Secretary, scrutinizes and sanctions grants-in-aid for the projects and seminars and other proposals received or planned by the ICPR.

The Finance Committee comprises Member-Secretary as Chairman, as member of the Governing Body nominated by its Member, two representatives of the Central Government as Members and Director (A&F) as Member-Secretary. The Finance Committee scrutinizes and guides the budget estimates and proposals involving expenditure by the ICPR.

The Chairman and the Member Secretary, appointed by the Central Government, are

vested with well-defined powers and duties.

During the year under report, Professor S. R. Bhatt continued as the Chairman of the ICPR. Professor Rajaneesh Kumar Shukla continued as the Member Secretary of the ICPR.

Dr. Pooja Vyas continued as the as Director (Academic). Shri Sreekumaran continued as Director (Administration and Finance) while his post is placed under advertisement. Dr. Sushim Dubey and Dr. Saroj Kanta Kar, the Programme Officers, continued in their positions at the ICPR in, New Delhi and Academic Centre, Lucknow, respectively.

III. MEETINGS

The ICPR, during the period under report, met only once on March 29, 2018. The Governing Body meetings were held three times, i.e. on April 30, 2017, September 25, 2017 and March 29, 2018. The Finance Committee meetings were also held three times on April 30, 2017, September 21, 2017 and March 24, 2018. The 'Research Project Committee' met four times during the period on April 18, 2017, September 11, 2017, November 13, 2017 and March 28, 2018.

IV. FELLOWSHIPS

The ICPR through its Fellowship Scheme aims to promote research in philosophy at various levels. It provides opportunities to scholars, especially the young, to engage on whole time basis in research projects on the themes of their interest and choice. The themes of research generally fall under the major areas of investigation in the field of philosophy and related disciplines as identified by the ICPR as the following.

- Theories of Truth and Knowledge
- Normative Inquiries – Ethics, including basic values embodied in Indian Culture

and their relevance to National Reconstruction, and Aesthetics.

- Interdisciplinary Inquiries on various aspects of arts and humanities.
- Comparative and critical study in philosophical systems/movements and religion.
- Logic and Philosophy of Logic
- Philosophy of Mathematics
- Philosophy of Language
- Philosophy, Science and Technology
- Philosophy of Human and the Environment
- Social and Political Philosophy
- Philosophy of Law
- Metaphysics
- Philosophy of Education
- Philosophy of Social Sciences
- Philosophy of Feminism

The ICPR invited applications for fellowships (excluding National Fellowships) through advertisement in leading national dailies. The ICPR increased the existing rate of all fellowships by 10%, with effect from 01 July 2015. The details are enumerated here.

National Fellowships

National Fellowships are awarded to eminent scholars who have made outstanding contribution in the field of Philosophy. The amount of fellowship is fixed at Rs.60,500 per month with an annual contingency of Rs.66,000. These fellowships are awarded without inviting applications and purely on the basis of merit and eminence, regardless of age and official status of the scholar.

The ICPR did not award any National Fellowship in 2016-17. Professor Paneer Selvam joined as National Fellow on 15 October 2015 and continues to work on the project titled "Understanding the Problems and Methods in Recent Indian Philosophy: A Hermeneutical Study" during the period under report.

In 2017-18, two National Fellows joined and are engaged in their research work:

1. Professor K. Ramakrishna Rao is working on " Bhagavad Gita: A Study in Psychological Counselling".
2. Professor Vashishth Tripathi is working on "सामान्य निरूक्ति गदाधरी की विवेचना".

Senior Fellowships

Senior Fellowships are usually awarded to scholars having publications of a very high order to their credit. These fellowships are meant for well-known senior professional scholars in philosophy who have made a significant contribution to philosophy and related disciplines of study as it is evident from publication of their research papers and books. The fellowship carries monthly emolument of Rs. 44,000 and a contingency grant of Rs. 44,000 per annum. The fellowship is offered for a period of two years.

In 2017-18, two Senior Fellows joined and are engaged in their research work. They are as follows:

1. Professor Mangala R. Chinchore is working on "Some Considerations Concerning Alternative Frameworks of Indian Epistemology: A Philosophical Inquiry".
2. Dr. Arun Kumar Singh is working on the project "म0 के0 गाँधी, डॉ बी0 आर0 अम्बेडकर एवम् पं0 दीनदयाल उपाध्याय–एक तुलनात्मक दार्शनिक विश्लेषण".

Since 2016/17, the following four Senior Fellows have continued to work:

1. Professor Amitabh Dasgupta is working on "Self, Self-Knowledge and Moral Agency".
2. Professor B. Sambasiva Prasad is working on the project "The Socio-economic Philosophy of Mahatma Gandhi with special reference to the concepts of Swaraj,

Swadeshi, Bread Labour, Trusteeship and Sarvodaya".

3. Professor S. Shyamkishore Singh is working on the project "Convergence of thought between the traditional Manipuri Philosophical and religious writings and some aspects of the Vedic, Puranic and Tantrik Scriptures";
4. Dr. Arun Mishra is working on the project "गोतमीय न्याय की मूलभूत अवधारणायें (मौलिक ग्रंथों पर आधारित न्याय की मूलभूत अवधारणाओं की विकास–यात्रा)"

General Fellowships

General Fellowships are awarded to scholars who have shown significant promise and competence for independent research evident from their publications in the form of books and/or research articles. These fellowships are awarded on the basis of quality of the candidates' research work produced in the form of published work (books or articles) or even in unpublished form. After examining, the eligible candidates are interviewed and the merit of their project proposals is assessed. The fellowship is offered for a period of two years and the amount in this category is Rs.30,800 per month and contingency grant is Rs. 22,000 per annum.

The following scholars were awarded General Fellowship during 2016/17 to work on the research projects. The status of their works is mentioned against their names:

GENERAL FELLOWSHIPS 2016/17

SL. No.	Category	Name of the Fellows	Title of Research	Remarks
1	GEN	Jai Shankar Singh	आधुनिक सन्दर्भ में तंत्र दर्शन की मूल्य मीमांसा	Continuing
2	GEN	Jayant Upadhyay	भारतीय दर्शन में वाक्यार्थ प्रविधि	Continuing
3	GEN	Shankar Kumar Lal	स्वस्थ समाज की रचना में योगदर्शन की भूमिका	Continuing
4	GEN	Satya Narayan Devlia	पुरुषार्थ व्यवस्था एवं उसका समसामयिक औचित्य	Continuing

5	GEN	Ravi Shankar Singh	Diachronic and Synchronic Study of Environmental Tranquillity with Buddhist Perspective	Resigned
6	GEN	Ishwar Singh	Concept of Human Nature and Philosophy of Education: A Study with Special Reference to Aurobindo, Krishnamurti and Tagore	Continuing
7	GEN	Rajeev Kumar Saraogi	Integral Human Philosophy: Modern Circumstances and Scientific Research Born in Perspective of the Worldview	Continuing
8	OBC	Jahira Khatun	आधुनिक शिक्षा पाठ्यक्रमों में नैतिक मूल्यों का स्वरूप, महत्व एवं अपेक्षित परिणाम मूलक चुनौतियाँ तथा समाधान	Continuing
9	OBC	Akyana Padmaja	Ethical Values of Bhagavad Gita and their Relevance to Contemporary Society	Continuing
10	OBC	Jayan J	Sikhism and Tamil Religious Tradition: A Socio-Philosophical Analysis	Continuing
11	OBC	Rishika Verma	भामती एवं विवरण प्रस्थान का तुलनात्मक अध्ययन	Continuing
12	SC	Mousmi Solanki	मानवकल्याण के लिए धर्म एवं पर्यावरण	Continuing
13	SC	Shaligram Ahirbar	आधुनिक भारतीय चिन्तन में नव्यवेदान्त : एक समालोचनात्मक अध्ययन (विवेकानंद एवं रामतीर्थ के विशेष संदर्भ में)	Continuing
14	SC	Rajiba Lochan Behera	Is Semantics Possible through Discourse Analysis and Cultural Unity?	Continuing
15	GEN	Jay Prakash Tiwari	Deep Ecological Insights of India: Reflection on the Vedic and Buddhist Philosophy	Continuing

The following scholars were awarded General Fellowships in 2017/18 on their respective research topics:

GENERAL FELLOWSHIPS 2017/18

SL. No.	Cate-gory	Name of the Fellows	Title of Research	Remarks
1.	GEN	Dr. Pawan Kumar Jain	प्राकृत आगम व्याख्याप्रज्ञप्ति सूत्र पर आचार्य अभयदेवसूरि (12वीं शती) विरचित संस्कृत वृत्ति के 25 शतकों का अनुवाद एवं उसमें प्राप्त दार्शनिक अवधारणाओं का समीक्षात्मक अध्ययन	Continuing
2.	GEN	Dr. Manoj Kumar	एकात्मनाववाद दर्शनः अंतिम समन्वय (विशेष संदर्भः पण्डित दीनदयाल उपाध्याय)	Continuing
3.	GEN	Dr. Jagdish Narayan Tiwari	आधुनिक सौन्दर्यशास्त्रालोके कालिदासस्य ग्रन्थेषु सौन्दर्यतत्त्व विवचनम्	Continuing
4.	GEN	Dr. Sunil Kumar Shukla	कौटिलीय लोक दर्शन की समकालिक समीक्षा	Continuing
5.	GEN	Dr. Sony Kumari	एकात्म–मानव दर्शन में अंत्योत्य की अवधारणा एक समीक्षात्मक अध्ययन (पण्डित दीनदयाल उपाध्याय के विशेष संदर्भ में)	Continuing
6.	GEN	Dr. Mahendra Prasad	कबीर–चिंतन में सामाजिक न्यायः एक दार्शनिक विवेचन	Continuing
7.	GEN	Dr. Smita Telang	आचार्य जयतीर्थ कृत 'प्रमाण–पद्धति' का समीक्षात्मक अध्ययन	Continuing
8.	GEN	Dr. Himanshu Shekhar Singh	पुरुषार्थ की अवधारणा में निहित मूल्यों का राष्ट्रीय पुनर्निर्माण में अवदानः एक समीक्षात्मक विमर्श	Continuing
9.	GEN	Dr. Alladi Veerabhadra Rao	The Necessity of Teaching Ethics to Medical and Paramedical Students in India	Continuing
10.	GEN	Dr. Sarim Abbas	A Comparative Study of Ethics in Existentialism and Jainism	Continuing
11.	GEN	Dr. Dharmendra Kumar Mishra	भारतीय ऋण व्यवस्था एवं मानव मूल्य : एक समीक्षात्मक अध्ययन	Continuing
12.	SC	Dr. A Subramanyamu	The Concept of Mind and Super-Mind in View of Sri Aurobindo: A Critical Study	Continuing
13.	SC	Dr. Om Prakash	भारतीय भक्ति दर्शन में सामाजिक चेतना संत रविदास के विशिष्ट के सन्दर्भ में	Continuing

JUNIOR RESEARCH FELLOWSHIPS

To be eligible for a Junior Research Fellowship, the candidate should have secured at least 55% in master's programme (5% relaxation to SC/ST candidate) and must be registered for a doctorate programme in Philosophy or allied areas of study. Institutional affiliation is essential for Junior Research Fellowship.

The fellowships are awarded for a period of two years, and carry a grant of Rs.17,600 per month and a contingency grant of Rs.16,500 per annum. There is no provision for pay protection in this category of fellowship category. However, if the work done by the Fellow during his/her tenure is found worthy of publication, then the fellowship may be extended to the third year in such exceptional cases.

The following scholars were awarded Junior Research Fellowships:

JUNIOR RESEARCH FELLOWSHIPS 2016/17

SL. No.	Cate-gory	Name of the Fellows	Title of Research	Remarks
1.	GEN	Sijo Sebastian	Epistemic Credentials of Religious Belief: A Contemporary of Reading of Religious Epistemology	Continuing
2.	GEN	Ghazala Rizvi	Interface Between Perfect Justice and Minimizing Injustice: A Critical Study	Continuing
3.	GEN	Abha Tripathi	मानव मूल्य के सन्दर्भ में वैज्ञानिक दृष्टिकोण : एक दार्शनिक गवेषणा	Continuing
4.	OBC	Saroj Yadav	मनुष्य की नियति एवं स्वतंत्रता की अस्तित्ववादी अवधारणा: एक आलोचनात्मक अध्ययन	Continuing
5.	GEN	Panu Sharma	The Vedanta Philosophy of Narayana Guru and its Relevance to the Contemporary Society	Continuing
6.	GEN	Gurpreet Kaur	An Epistemological Study of Sabda Pramana with Special Reference to Purva-Mimamsa and Nyaya Schools of Thought	Continuing

7.	GEN	Snigdha Ketan Chavan	Understanding Androgynism in Buddhism: A Philosophical Study	Continuing
8.	GEN	Barun Kumar Choubey	Mahatama Gandhi Ke Naitik Darshan Ka Ek Samikshatamak Adhayayan	Continuing
9.	GEN	Saloni Singh	A Comparative Study of the Concept of Karma in Indian Philosophy with Special Reference to Buddhism, Jainism, Mimansa and Gita Darshana	Continuing
10.	OBC	Monalisa Saikia	Philosophy Perspective of Punishment: A Reference to Vinaya pitaka and Sutta pitaka	Continuing
11.	OBC	Ms. Aradhana Singh	डॉ. बी. आर. अम्बेडकर का धर्म दर्शनः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	Resigned
12.	GEN	Srirupa Datta Choudhury	Appearance and Reality (with Special Reference to Kant and Hegel)	Continuing
13.	GEN	Richa Kapoor	Meaning, Mind and the World: A Study of Donald Davidson	MSS Submitted
14.	ST	Gaichuimeilu Palmei	Messianism: A Study in Dialectics and Deconstruction	MSS Submitted
15.	GEN	Mansha Pandey	नागार्जुन एवं शंकराचार्य के दर्शन में संवृत्ति की अवधारणा : एक तुलनात्मक अध्ययन	Continuing
16.	GEN	Atia Latif	The Ethic of Authenticity: Existentialism and Beyond	Resigned
17.	OBC	Puja Kumari	काश्मीर शैव दर्शन का अद्वैतवाद	Resigned
18.	GEN	Partha S. Sharma	Kant's transcendental Deduction and Apodictic Certainty of Scientific Knowledge	Continuing
19.	OBC	Sahstrangad Kumar Yadav	वैश्विकरण एवं आतंकवाद के संदर्भ में महात्मा गांधी को सर्वोदय और अहिंसा सिद्धांत का एक समीक्षात्मक अध्ययन	Continuing
20.	GEN	Rakesh S	Matter-Spirit Integrality in Sri Aurobindo's Integral Yoga	Continuing
21.	GEN	Sheel Kamal Chaurasia	An Analysis of the Concept of 'Detachment' in Indian and Western Philosophy	Continuing

22.	SC	Manju Verma	संत रैदास के धार्मिक–सामाजिक दर्शन का समीक्षात्मक अनुशीलन	Continuing
23.	OBC	Reeshma E K	Machine Intelligence and the Nature of Consciousness: An Analytic Study	Continuing
24.	GEN	Bilal ahmad Dada	Political Philosophy of Richard Rorty: A Critical Study	Continuing
25.	GEN	Shagufta Jafri	Social Philosophy of Sant Kabir: A Critical Study	Continuing
26.	SC	Vijay Kumar	बौद्ध दर्शन के विकास में डॉ0 अम्बेडकर का योगदान	Continuing
27.	OBC	Kalpana Behera	A Study of Sri Ramaraya Kavi's Vedanta Sangraha	Continuing
28.	GEN	Arifa Ara Begum	The Ethics of Kants and the teachings of the Bhagavadgita— A Comparative Study	Continuing
29.	OBC	Chandra Kishor	काश्मीर शैव दर्शनस्य संप्रदाय परम्परा परिशीलनम्	Continuing
30.	GEN	Akber Chawdhry	Theory and Practice of Justice: A Comparison of Amartya Sen and Akeel Bilgrami	Continuing
31.	OBC	Tejram Pal	गांधी दर्शन के समदर्शी नीतिक्षेत्र के एकादश आधार (एक समीक्षात्मक अध्ययन)	Continuing
32.	OBC	Mansoor Alam	Reason, Revelation and Intuition in Ghazali's Philosophy	Continuing
33.	ST	Nazakit Hussain	Concept of Justice in Modern Islamic Political Thought	Continuing
34.	OBC	Raj Kishor Chaurasia	स्वामी विवेकानंद के दर्शन में योगी की अवधारणा : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	Continuing
35.	ST	Ramesh Dheeravath	17th Century Theories of Substance- Those of Descartes, Spinoza and Leibniz: A Comparative Analysis of Metaphysical Approch	Continuing
36.	OBC	Abdul Latif Mondal	Bertrand Russell's Philosophy of Neutral Monism	Continuing
37.	OBC	Pooja	गण्डव्यूहसूत्रस्य समीक्षात्मकमध्ययनम्	Continuing

38.	OBC	Vibhuti Kumar	एकादशोपनिशत्प्रतिपादितसांख्येन सह कापिलसांख्यस्य तुलनात्मकमध्ययनम्	Continuing
39.	OBC	Sarla Sahu	The Tendency of Synthesis between Materialism and Spiritualism in the Contemporary Indian Thought with Reference to Shri Aurobindo and Osho: A Comparative Study	Continuing
40.	OBC	Pano Kumari	वेदान्त दर्शन में परम सत्ता का विचार (शंकर, रामानुज, मध्व, निम्बार्क एवं वल्लभ के दर्शन के विशेष संदर्भ में)	Continuing
41.	OBC	Zoya Nigar	The Place of Reason and Revelation in Islamic Philosophy	Continuing
42.	OBC	Ravishankar Kumar	वैदिक एवं समकालीन अध्यात्मवाद : एक समीक्षात्मक अध्ययन	Continuing
43.	OBC	Anjali Barman	स्वामी विवेकानंद महात्मा गाँधी एवं सर्वपल्ली राधाकृष्णन के धर्म विषयक चिंतन की वर्तमान समस्याओं के परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता	Continuing
44.	OBC	Varsha Chaurasiya	स्वामी योगानंद का दर्शन – एक अनुशीलन	Continuing
45.	OBC	Chakrapani Pokhrel	व्याकरणाभिमतसंबंधतत्वस्य दर्शनान्तरीयसम्बन्धेन सह समीक्षात्मकमध्ययनम्	Continuing
46.	OBC	Avadesh Kumar	कबीर पंथ के विकास में पारख मार्ग की भूमिका	Continuing
47.	GEN	Jan Mohammad Lone	Concept of God and World in Ramanuja and Sirhindi: A Comparative Study	Continuing
48.	GEN	Prem Lata	विश्वेश्वरकतायाः अष्टावक्रगीताटीकायाः अध्यात्मप्रदीपिकायाः पाठसमीक्षात्मकं सम्पादनं दार्शनिकमध्ययनच्च	Continuing
49.	GEN	Shashikant Mishra	हिन्द स्वराज के संदर्भ में सामाजिक–राजनीतिक परिवर्तनों का समीक्षात्मक अनुशीलन	Continuing
50.	GEN	Reyaz Ahmad Bhat	An Analysis of Major Social Values of Quran	Continuing
51.	GEN	Beena Mishra	अमृतोदय नाटकस्य दार्शनिकं अध्ययन	Continuing
52.	GEN	Harish Kumar	श्री शंकराचार्य रचित विवेक चूड़ामणि का का समीक्षात्मक अध्ययन	Continuing

53.	GEN	Deepak Kumar Pandey	**दिनकार्याः गुणनिरुपणस्य समीक्षणम्**	Continuing
54.	GEN	Ashwani Kumar Kalra	Karma Yoga: A Philosophical Analysis in Vivekananda's and Gandhi's Perspective and its Educational Implication	Continuing
55.	GEN	Surinder Kumar Sharma	विज्ञानभिक्षुकृत योगवार्त्तिक का समीक्षात्मक अध्ययन	Continuing
56.	GEN	Shradha Kumari	महायान की साधना पद्धतिः एक दार्शनिक अध्ययन	Continuing
57.	GEN	Navneet Sharma	योगसाधनोपायों का सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक परिशीलन (पातञ्जल योगसूत्र के विशिष्ट सन्दर्भ में	Continuing
58.	GEN	Prince Kumar Singh	न्याय तर्कशास्त्र में हेतु एवं हेत्वाभास	Continuing
59.	GEN	Manjeet Kaur	Shrimatkeshavkaashmeeribhattavirachit Vedantakaustubhaprabhayah Samikshanam	Continuing
60.	GEN	Anjana E.P.	Environmental Ethics: Interpretive Prospects of Sāmkhya Yoga and Buddhism	Continuing

The following scholars were awarded Junior Research Fellowship for 2017/18. The current status is as follows:

JUNIOR RESEARCH FELLOWSHIPS 2017/18

SL. No.	Category	Name of the Fellows	Title of Research	Remarks
1.	GEN	Mr. Vinay Gopal Tripathi	आचार्यश्रीशान्तरक्षितविरचितस्य तत्त्वसंग्रहस्य मध्यमकशास्त्रेण सह तुलनात्मकमध्ययनम्	Continuing
2.	GEN	Mr. Digvijay Mishra	वेदान्त विरोध–निरास	Continuing
3.	GEN	Mr. Neeraj Kumar Pandey	The Holistic Vision of Jiddu Krishnamurti and its Contemporary Relevance	Continuing
4.	GEN	Ms. Debosmitha Chakraborty	Pragmatic Turn to Linguistic Philosophy: A Critical Study of Richard Rorty's Works	Continuing

5.	GEN	Ms. Debapriya Chakraborty	From Moral Philosophy To Political Thought An Exploration Of The Kantian Path	Continuing
6.	GEN	Mr. Aashish Kumar	नैतिक संज्ञानवाद का समीक्षात्मक सर्वेक्षण	Continuing
7.	GEN	Mr. Manoj Kumar Mishra	जयन्त भट्ट एवं विट्गेंस्टाइन के विशेष सन्दर्भ में भाषा–दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन	Continuing
8.	GEN	Ms. Pratima Shahi	गुरूनानक के अध्यात्म दर्शन का समीक्षात्मक अनुशीलन	Continuing
9.	GEN	Ms. K. Nirupama Singha	Capability Approach to Freedom: A Critical Appraisal	Resigned
10.	GEN	Ms. Manisha Singh	भारतीय दर्शन में आत्मा की वस्तुवादी अवधारणा का समीक्षात्मक अध्ययन	Continuing
11.	GEN	Mr. Shyam Ranjan Pandey	समसामयिक परिप्रेक्ष्य में अस्तित्ववादी दर्शन की प्रासंगिकताः सार्त्र के विशेष संदर्भ में एक समीक्षात्मक अध्ययन	Continuing
12.	GEN	Ms. Reshmee Sarkar	The Problem Of Meaning: A Fregean Account	Resigned
13.	GEN	Mr. Ajay Kumar Singh	उपनिषद् दर्शन में सम्पोष्य विकास की अवधारणाः एक अनुसंधान	Continuing
14.	GEN	Ms. Dayeeta Roy	Concept of Body: A Glimpse into the Nyāya and Buddhist Controversy (With Special Reference to Nyāya-Bhāsya and Laṅkāvatāra-Sūtra)	Continuing
15.	GEN	Ms. Reetu Sharma	Mindfulness in Education: To Assess the Impact of Meditation on Stress Level and Well Being in Higher Secondary Students	Continuing
16.	GEN	Mr. Arup Daripa	Feminist Philosophy of Tagore: An Exploration	Continuing
17.	GEN	Mr. Ankit Kumar	आर्य समाज का धर्मदर्शनः एक दार्शनिक विवेचना	Continuing
18.	GEN	Ms. Shashi Kala Yadav	महाभारत के शान्तिपर्व का नीतिशास्त्रीय अध्ययन (वर्तमान धार्मिक एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्य में)	Continuing
19.	GEN	Mr. Amit Kumar Dubey	The Dilemma of Tolerance and Violence in Abrahamic Cult	Continuing

20.	GEN	Mr. Shrikant Mishra	न्यानदर्शनाभिमतव्याप्तिस्वरूपस्य दर्शनान्तर दिशा समीक्षात्मकमध्ययनम्	Continuing
21.	GEN	Ms. Gaikwad Gouri Hemkant	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचा स्त्रीविषयक दृष्टिकोनः एक अभ्यास	Continuing
22.	GEN	Ms. Sandhya	Purusartha in the Context of Svasthya in Ayurveda: A Study in Medical Ethics	Continuing
23.	GEN	Mr. Nitin Kumar Gupta	तार्किक प्रत्यक्षवाद के सन्दर्भ में ज्ञान तथा अर्थ का आलोचनात्मक विश्लेषण	Continuing
24.	GEN	Mr. Salman Siddique	Gender Justice: A Genealogical Study	Continuing
25.	GEN	Mr. Rohit Sharma	A Critical Study of Shaktadvaita With Special Reference to Doctrine of Naada	Continuing
26.	GEN	Mr. Varun Bhatta	Philosophical Analysis of Matter in Contemporary Physics	Continuing
27.	GEN	Mr. Patel Niravkuamr Hiteshbhai	Gandhi Philosophy of Khadi: A Study of the Practice of Khadi in Gujarat Vidyapith	Continuing
28.	GEN	Ms. Satarupa Chakraborty	Meaning and Truth: A Critical Analysis of Michael Dummett's Anti'-Realism	hold
29.	GEN	Ms. Vandana Sharma	Adi Shankaracharya's Advait-Vedanta Philosophy: A Viable Solution to Environmental Disharmony	Continuing
30.	SC	Ms. Gudia Kumari	वर्तमान समय में योग की उपादेयताः एक वैज्ञानिक अध्ययन	Continuing
31.	SC	Mr. Ravi Kumar	Language and Social Reality : A Critical Study of Ludwig Wittgenstein and John Searle	Continuing
32.	SC	Mr. Honwadjkar Mahendra Baburao	रा.ना चव्हाण के धर्मविषयक विचारों का तात्वीक अध्ययन	Continuing
33.	SC	Ms. Rita Tetwal	सिंहस्थ महापर्व का अध्यात्म–एक दार्शनिक विश्लेषण (उज्जयनी के विशेष संदर्भ में)	Continuing
34.	SC	Ms. Rekharani Sethy	The Nature of Knowledge: A Comparative Study of Descartes' and Spinoza's Theory of Knowledge	Continuing

35.	SC	Mr. Chandan Kumar Chanchal	अपराध निवृत्ति और दण्ड सिद्धांतः एक सामाजिक एवं नैतिक अध्ययन	Continuing
36.	SC	Mr. Surajit Mandal	तर्कसंग्रहदीपिकायाः नीलकण्ठी–भास्करोदयाटीकयोस्तुल–नात्मकमध्ययनम्	Continuing
37.	SC	Ms. Shampu Rani	महाभारत में उपलब्ध सांख्य एवं योग दर्शन के संदर्भों की मीमांसा	Continuing
38.	SC	Mr. Surendra Singh Virhe	योग द्वारा मनोदैहिक आरोग्य एवं आध्यात्मिक स्वास्थ्य उत्कर्ष एक विश्लेषणात्मक अध्ययन	Continuing

V. SEMINARS/WORKSHOPS/SYMPOSIA/CONFERENCES

The ICPR organizes national seminars and participates in international seminars on a variety of themes in the field of philosophy and interdisciplinary studies with the aim of providing an opportunity to scholars to present their research work and express their views and interact with other scholars.

INTERNATIONAL GANGA MEKONG CONFERENCE, THIALAND

The Ganga Mekong Conference, 2018 Co-organised by Indian Council of Philosophical Research (ICPR), New Delhi, India in Collaboration with Pridi Banomyong International College (PBIC), Thammasat University was held on 22-23rd March 2018 at Bangkok, Thailand. The Conference was inaugurated on 22nd of March (Thursday), 2018. The venue of the Conference was Sanya Dhamasakti Meeting Room, Thammasat University, Bangkok, Thailand, The dignitaries who graced the inaugural ceremony included Hon'ble Shree Ram Madhav, General Seretary, Bhartiya Janata Party and Director India Foundation, New Delhi, H.E. Mr. Bhagawant Bishnoi, Ambassador of India to Thailand, Associate Professor Gasinee Witoonchart, Prof. S.R. Bhatt, Chairman, Indian Council of Philosophical Research and Dr. Nitinant Wisaweisuan, Dean PBIC, Thammasat University. The welcome remarks were delivered by Dr. Wisaweisuan, she said that the

co-operation between the Ganga- Mekong countries is need of the hour. She welcomed all delegates on behalf of Thammasat University. The inaugural speech was delivered by Associate Prof. Witoonchart, Rector of Thammasat University. The keynote speech was given by hon'ble Shri Ram Madhav. Dr. Madhav said that both the Ganga and the Mekong are lifeline of South and South East Asia and all the six countries of the Ganga-Mekong Valley have shared the same culture and religion through the ages. The guest of honour, H.E. Mr Bhagawant Singh Bishnoi, expressed his happiness on the occasion and congratulated the organizers for successfully organizing the conference on the great theme. He also highlighted the activities undertaken by Indian Embassy in strengthening relationship between India and Thailand.

The first Academic Session, whose theme was the Mekong-Ganga Economic partnership, was chaired by Asst. Prof. Akrapong Kamkoon. The first speaker was Prof. Dr. Jaran Maluleen. The title of his paper was 'Mekong Ganga Co-operation— An Overview'. The second speaker of the session was Dr. Supruet Thavornyutikarn. The title of his paper was 'Mekong Ganga Economic partnership'. The theme of the second Academic session was 'Language and Literature'. It was chaired by Dr. Anucha Thirakanon. The first speaker of the session was Prof. Satyavrat Shastri. The title of his paper was 'The Impact of Sanskrit Prosody on Thai Poetry'. Prof. Shastri presented a brilliant paper on the comparative study of Sanskrit and Thai Prosody. The second speaker was Dr. Rana Purushottam Kumar Singh. The title of his paper was 'Glimpses of the Ramayana Culture in Ganga- Mekong Region. The last session of the day was chaired by Prof. S.R. Bhatt. The first speaker of this session was Prof. S. Sahai. The title of his paper was 'The Ganga in the Mekong Valley'. The second speaker of the session was Prof. Baidyanath Labh. The title of his paper was 'Buddhism: A Uniting Force among the ASEAN Nations'. He presented his paper on the importance of Buddhism and its impact on the day-to-day life of the people of the Mekong Valley. The last speaker of the session was Prof. Chirapat Prapandvidya. The title of his paper was 'Early Religious Interface between India and the Mekong Regions'. The third session of the day was the valedictory ceremony. Prof. S.R. Bhatt and Prof. Satyavrat Shastri were the guests of honour. In the valedictory session. The draft resolution was passed and organizers shared their experience. The conference concluded with a vote of thanks.

International Inter-Religious Dialogue on Spirituality in Hinduism & Islam

International Inter Religious dialogue on Spirituality in Hinduism and Islam organized by Iran Culture House, Embassy of Iran and Indian Council of Philosophical Research and India Foundation, New Delhi was held on 25-26 October, 2017 at India International Centre, New Delhi. Professor S.R. Bhatt, Chairman, Indian Council of Philosophical Research, New Delhi, delivered the introductory remarks. Professor Bhatt explained that the main purpose of the Inter-Religious Conference is to emphasize that Indian thoughts are not materialistic but are holistic in which the welfare of not only the citizens of a state or members of a community is involved but the whole of humanity and entire cosmos is taken into consideration. After this Dr. Ali Dehgahi, Cultural Counsellor, Iran delivered his welcome address. As a distinguished Guest of the conference Dr. Abuzar Ibrahimi Turkaman, President Islamic Culture and Relations Organization and Chairman of the Council of Policy making and Coordination among Religions, said that a man with a superficial approach accepts whatever is visible in the arena of his physical sight, but a man with a semantic approach turns to intuition which is the task of heart. Dr. Mohsen Qomi, Deputy Inter. in Office of Supreme Leader, I.R. Iran, said that Iran and India have been two centers of world civilization to promote the world's cultural architecture and doctrine. And the followers of Islam and Hinduism constitute over one-third of the world population and this dialogue can be a foundation for a better world. The Inaugural Address was delivered by the H.H. Gurusharananadaji Maharaja (Head of Sri Udasin Karshni Ashram, Ramanreti, Vrindavan). He said that love is the only feeling by which we can connect with the other intimately. India is a country where we respect all religions. Mr. Ghulam Reza Ansari, Ambassador of Iran in India and Guests of Honors Swami Vishnu Hari Prasad, Vishnu Foundation, Chennai, Sri Yodhister Govinda Das, Deputy Director, ISKCON, Dr. Srivats Goswami, Vrindavan, Professor K.D. Tripathi, Emeritus BHU, Sri Suresh Soni attended the Inter-Religious Dialogue. Vote of Thanks was delivered by Professor Rajneesh Kumar Shukla, Member Secretary, ICPR, New Delhi

Swami Agnivesh, Sripad Shanta Maharaja, Sripad Bhakta Vijnana Muni, Dr. Kala Dhananjay Acharya, Professor Janak Dave and Sripad Bhakti Niskama Shanta Maharaja (all from India) and Dr. Ahmad Moballeghi, Dr. Hamid Parsania, Professor Hasan Bolkhari Ghehi, Professor Shamsollah Mariji (all from Iran) participated in this

international dialogue programme. A summing up of the Inter-Religious Dialogue on the Spirituality in Hinduism & Islam was presented by the Dr. Sushim Dubey, Programme Officer, ICPR with the end of the programme.

Two-Day International Seminar on Cultural Encounters and Confluences Between India and Korea

A two day International Seminar on "Cultural Encounters and Confluences Between India and Korea" war jointly organized by Indian Council of Philosophical Research, New Delhi and Korea Foundation, New Delhi from 29-30 June, 2017 at India International Centre, New Delhi. The inaugural speech was delivered by Hon'ble Mr. Lee Hae Kwang, Minister, Acting Ambassador of Republic of South Korea and welcome address was given by Professor Rajaneesh Kumar Shukla, Member Secretary, ICPR. Key note address– 'Cultural Encounters and Confluences between India and Korea' was delivered by Professor S.R. Bhatt, Chairman, ICPR.

Following were the academic presentations in the programme:

Prof. Seok Gil am Department of Buddhist Studies Dongguk University, Gyeongju Campus, Korea	-	*Won-hyo's Buddha, its Cultural and Ideological Image*
Prof. K.T.S. Sarao Department of Buddhist Studies University of Delhi, Delhi	-	*Buddhist Perspective on Inter-Faith Dialogue*
Prof Geo Lyong Lee Sun Moon University Korea	-	*Philosophy and Praxis of Reconciliation in Won-hyo and Ramanuja*
Prof. H.P. Gangnegi Department of Buddhist Studies University of Delhi, Delhi	-	*The Ultimate Reality of Buddhist Philosophy*
Prof. Jaejin Jang Tongmeong University, Korea	-	*The Spirit of Peace and Harmony in Won-hyo's Maitreya Ideology*

Dr. Ranjit Kumar Dhawan Department of East Asian Studies, University of Delhi, Delhi	-	*Korea's Cultural Diplomacy: An Analysis of the Korean Wave in India*
Prof. S.R.Bhatt Indian Council of Philosophical Research, New Delhi	-	*Peace, Sustainable Development, Well Being and Innovation*
Prof. Moon Eul-sik Seoul University of Buddhism, Korea	-	*Won-hyo's thought of 'Two- features and one Mind' in Dualism of Samkhya System*
Prof. Bindu Puri, Department of Philosophy, JNU, New Delhi	-	*Possibilities of Inter Cultural Communication: Sharing Moral Insights Across Linguistic Cultural and Religious Contexts*
Prof. Yun Jonggab Dong-a University of Korea, Korea	-	*Nagarjuna and Won-hyo*
Prof. Ranjan Ghosh Indian Council of Philosophical Research	-	*Some Recent Developments in Indian Aesthetical Tradition*
Ms. Hema Ph.D. Research ScholarUniversity of Delhi, Delhi	-	*A study on Enhancing Korean Language Skill thorough folktales: Focusing on Writing and Speaking skill*

In 2017/18, the ICPR, apart from organizing programmes, also released grants to different institutions. The details of all such grants as well as ICPR's own programmes are given here.

Seminars

Sl. No.	Date	Name of the Programme	Name of Director/ Place	Amount Sanctioned (in lakhs)
1.	July 1-3, 2017	Seminar on "Vulnerability Versus Sustainability : Revisiting the Tribal Life and Culture in the Wynad and Attapadi in Kerala"	Dr. K. Gopinath Pillai, Santhigiri Research Foundation, Santhigiri P.O., Thiruvananthapuram- 695 589, Kerala	5.0

2.	August 1-3, 2017	Seminar on "Interface between Science and Buddhism" (Buddhism in Laddhak Region)	Dr. Vipin Kumar, Central Institute of Buddhist Studies, Choglamsar, Leh- 194 101, Ladhak	5.0
3.	August 22-24, 2017	Seminar on "Navajyothissa Karunakara Guru: Paradigm Shift in India Spiritual Discourse on Dharma"	Dr. K. Gopinath Pillai, Santhigiri Research Foundation, Santhigiri P.O., Thiruvananthapuram- 695 589, Kerala	5.0
4.	August 25-27, 2017	Seminar on "Dharma and Praxis in the Emerging Global Scenario"	Dr. K. Gopinath Pillai, Santhigiri Research Foundation, Santhigiri P.O., Thiruvanan-thapuram- 695 589, Kerala	5.0
5.	November 6-8, 2017	Seminar on "Mystic Philosophies of Kashmir : Reconciliation of Theory and Practice in Srinagar"	Dr. Aushutosh Bhatnagar, Secretary, J&K Study Centre, New Delhi* The seminar was held in Srinagar.	5.0
6.	November 11-13, 2017	National Seminar on "On to Perfection: Inter Religious Dialogue"	Dr. Jai Shankar Singh, Karshni Gurusharananda Ashram (At Ramanreti, Gokul, Muthura)	5.0
7.	December 8-10, 2017	Seminar on "Contemporary Needs and Relevance of Philosophy Books"	President, Antharashtra Pusthakotsava Samithi, Kaloor, Kochi- 682 017	5.0
8.	January. 5-6, 2018	Seminar on "Revisiting the Hill-Valley Connection in North-East India"	Dr. Shiv Poojan Prasad Pathak, Department of Political Science, Aryabhatta College, Anand Niketan, Benito Nuarez Road, New Delhi- 110 021	1.0
9.	January 17-19, 2018	Seminar on "Tribes in Coorg: A Distinct Narrative in Indian Tribal World View"	Dr. Looke Kumari, Society for Social Empowerment, 24-C, Ebershine Apartments, D-Block, Vikaspuri, New Delhi- 110 018	5.0
10.	February 5-7, 2018	Seminar on "Philosophy of Acharya Vinoba Bhava"	Dr. Shambhu Joshi and Dr. Geeta Mehta, Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Gandhi Hills, Wardha- 442 001	5.0
11.	February 8-9, 2018	Seminar on "The Philosophy of Bipin Chandra Pal"	Professor Debika Saha, Department of Philosophy, University of North Bengal, P.O. Rajamohanpur, Dist. Darjeeling- 743 013	3.0
12.	February 9-10, 2018	Seminar on "Traditional Value: Its Relevance in the Era of Globalization with Special Reference to	Mrs. Nabanita Devi, B.N. College, Bhubri, P.O. Bidyapara, Assam- 783 324	3.0

		North-East India”		
13.	February 16-18, 2018	National Seminar on “Swami Dayanand Saraswati : A Visionary Reformer”	Professor Ranvir Singh, Chair Professor, Swami Dayanand Saraswati Chair, Academic Block No.- 4, Room No. 207, Central University of Haryana, Jant – Pali, Mahendergarh-123 031, Haryana	5.0
14.	February 19-22, 2018	Seminar on “Ramakrishna kathamrita”	Dr. Ranjan Kumar Ghosh Indias International Center New Delhi	3.84
15.	February 22-23, 2018	Seminar on “Dharma, Universality and the Contingencies of Human Life”.	Dr. Rajshree Roy, Assistant Professor, Department of Philosophy, Lakshmi Bai College, University of Delhi, Ashok Vihar- III, Delhi- 110 052	4.0
16.	February 22-24, 2018	Seminar on “Madhya Pradesh Ki Jan Jaatiyon ki Tattva Drishti Evem Jeevan Dristi Ke Dashainik Aadhar	Dr. Rishi Paathak, Madhya Pradesh State, Scheduled Tribe commission, Rajiv Gandhi Bhawan, Basement, 35 Shyamala Hills, Bhopal-462013 M.P.	5.0
17.	February 26-28, 2018	Seminar on “Morality and Politics: The Perspective of Jai Prakash Narayan”	Dr. Sanjay Paswan, Professor and Director, Jagjivan Ram Chair, Department of PMIR, Patna University, Kashi Gurusharananda Ashram	5.0
18.	March 4-7, 2018	National Seminar on “Anand Mimansa”	Raman Rati, Gokul, Muthura.	5.0
19.	March 8-10, 2018	Seminar on “Philosophy of Love in Sufism and Bhakti as Reflected in Literature”	Professor K.K.N. Kurup, Director, Malabar Institute of Research and Development, Vatakara, Calicut- 673 101, Kerala	5.0
20.	March 13-15, 2018	Seminar on “Philosophical Foundations and Praxis of Communal Harmony: Revisiting its Success and Challenges”	Dr. Namita Nimbalkar, Department of Philosophy, University of Mumbai, Janeshwar Bhawan, Firsts Floor, Vidyanagar Campus, Santacruz (East), Mumbai- 400 098	5.0
21.	March 22-24, 2018	Conference on “Holistic Health and Wellness: Unifying Body, Mind and Spirit for Wellbeing”	Dr. Jugal Kishore, Head, Department of Community Medicine, VMMC and Safdarjung Hospital, New Delhi- 110 029	5.0

22.	March 26-28, 2018.	Seminar on "Tribal Community in India: Identity and Cultural Heritage"	Dr. Satish Kumar Ganjoo, Chair Professor, Tribal Studies, Central University of Himachal Pradesh, Dharmshala- 176 215	5.0
23.	March 27-29, 2018	Seminar on "Indian Culture & Sustainable Development for Solving Human Problems"	Dr. Ashok Bapna, Jaipuria Institute of Management, 1, Bambala Institutional Area, Pratap Nagar, Sanganer, Jaipur- 302 033	5.0
24.	March 28-30, 2018	Seminar on "The Integral Humanism of Pandit Deen Dayal Upadhyaya"	Dr. P. Milan Khangameha, Head, Department of Philosophy, Manipur University, Imphal- 795 003	5.0

ANNUAL SESSION OF PHILOSOPHY ASSOCIATIONS

Sl. No.	Date	Name of the Programme	Name of Director/ Place	Amount Sanctioned (in lakhs)
1.	October 9-11, 2017	34th Session of Maharashtra Tattvadanyan Parishad"	Dr. Shailja Khargade, Local Secretary, MTP, Principal, Vasantrao Naik Govt. Institute of Arts and Social Science College, Nagpur	0.5
2.	October 13-15, 2017	62nd Annual Conference of All India Philosophy Association (ABDP) on "A Philosophical Discourse on Character Building".	Professor A.D. Sharma, General Secretary, Akhil Bharatiya Darshan Parishad, Department of Philosophy, Dr. H.S. Gour Vishwavidyalaya, Sagar- 470 003, M.P.	2.0
3.	November 3-5, 2017	Seminar on "Ethics, Aesthetics and Religion in the Philosophy of Ludwig Wittgenstein"	Dr. Laimayum Bishwanath Sharma, Department of Philosophy, Manipur University, Imphal- 795 003	5.0
4.	November 25-26, 2017	40th Annual Conference of Darshnik Parshad Bihar	Professor Shyamal Kishor, General Secretary, Darshan Parishad Bihar, Department of Philosophy, T.P.S. College, Patna 800 001	0.5
5.	December 9-10, 2017	13th Conference of M.P. and C.G. Darshan Parishad on "Indian Philosophy and Purushartha System"	Professor Pradeep Khare, Secretary, Darshan Parishad (M.P. & C.G.), RV-72, Indus Garden, E-8, Extension, Gulmohar, Bhopal- 462 039	0.5

6.	December 15-17, 2017	11th Annual Conference of Bharatiya Mahila Darshanik ParishadTheme Subject: "Philosophy in 21st Century"	Dr. Raj Kumari Sinha, President, Bharatiya Mahila Darshinik Parishad, 3/K/20, Grihasti Harmu Housing Colony, Ranchi- 834 002	1.0
7.	January 3-4, 2018	An International Conference of Asian Philosophy Conference	Dr. Lalbhai D. Patel, Holistic Science Research Centre, Vitrag Vignan Charitable Research Foundation, Near Mahavide Teerth Dham, N.H.-8, Nansad Road, Kamrej Char Rasta, Surat- 394 185	10.0
8.	January 5-7, 2018	92nd Annual Session of Indian Philosophical Congress on "Indian Identity and Cultural Continuity"	Professor S. Panneerselvam, General Secretary, Indian Philosophical Congress, No.-6, Tiruppur Kumaran Street, (A-1), First Floor, Park View Apartments, Tambaram West, Chennai- 600 045	2.0
9.	January 23-24, 2018	30th Session of All Orissa Philosophy Association	Professor B.C Sahoo, General Secretary, All Orissa Philosophy Association, P.G. Department of Philosophy, Utkal University, Vani Vihar, Bhubaneswar- 751 004	0.5
10.	January 27-28, 2018	Annual Conference of Uttar Bharat Darshan Parishad	Professor Harishankar Upadhyaya, Department of Philosophy, University of Allahabad, Allahabad- 211 002	0.75

Workshops

Sl. No.	Date	Name of the Programme	Name of Director/ Place	Amount Sanctioned (in lakhs)
1.	July 13-17, 2017	Workshop on "Teaching Philosophy in the Indian Universities and Colleges"	ICPR Academic Centre, Lucknow	5.5
2.	July 19-25, 2017	Workshop on "The Science of Consciousness in the Light of the Upanishad and the Life Devine"	Dr. V. Ananda Reddy, Sri Aurobindo Centre for Advanced Research, 39, Vanniar Street, Vaithikkupam, Puducherry- 602 501	7.0

3.	October 1-31, 2017	Workshop on "Gurukula System of Teaching and Learning Experiment in the Phenomenology of Edmund Husserl"	Dr. V.C. Thomas, Sri Aurobindo Centre for Advanced Research, 39, Vanniar Street, Vaithikkupam, Puducherry- 602 501	424,710
4.	December 23-29, 2017	Workshop on "An Analytical Study of Aphorisms of Narada and Shandilya"	Dr. Surajmal Rao, Assistant Registrar, Maharshi Dayanand Sarswati University, Ajmer- 305 801. and Dr. N. Lakshmi Aiyar, Head, Department of Hindi, Central University of Rajasthan, Bandarsindri, N.H.-8, (Jaipur-Ajmer Highway), Teh.- Kishangarh- 305 801	7.0
5.	February 5-6, 2018	Workshop on "Trika Shaivism of Kashmir"	Director (A), ICPR Academic Centre, 3/9, Vipul Khand, Library Building, Gomti Nagar, Lucknow- 226 010	10.0
6.	May 6-12, 2018	Workshop on "Modern Physics Reality and Ancient Indian Wisdom"	Dr. Sisir Roy, T.V. Raman Pai Chair Professor, National Institute of Advanced Studies, IISC Campus, Bangalore- 560- 012	7.0

* ICPR organized workshop

ICPR PLENARY SESSIONS

Sl. No.	Date	Name of the Programme	Name of Director/ Place	Amount Sanctioned (in lakhs)
1.	September 14-15, 2017	Plenary Session of the Seminar on "Rethinking Contemporary Indian Polity" in National Political Science Conference, 2017	Dr. Shalini Saxena, Amity Institute of Social Sciences, Amity University, Sector-125, Noida- 201 313	1.0

INTERNATIONAL SEMINARS/WORKSHOPS/CONFERENCES

Sl. No.	Date	Name of the Programme	Name of Director/ Place	Amount Sanctioned (in lakhs)
1.	February 24-25, 2018	International Seminar on "Vasudhaiv Kutumbakum"	Dr. Manoj Sinha, Seminar Co-ordinator, Shaikshik	

			Foundation, 606/13, Krishna Gali No.- 9, Maujpur, Delhi- 110053	4.0
2.	June 17-26, 2017	International Summer School – Vyasa-Valmiki-Kalidasa Realizing the Spirit of Indian Culture Thorough their Creation"	Dr. Arundhati Sunder, Summer School at Chinmaya International Foundation, Adi Sankara Nilayam, Veliyand, Earnakulam-682 313, Kerala	8.0
3.	June 29-30, 2017	International Seminar on "Cultural Encounters and Confluences Between Indian and Korea"	Indian Council of Philosophical Research, New Delhi. (India International Centre, New Delhi).	5.0
4.	September, 7-9, 2017	Panel Discussion in International Conference on "Buddhism : Traditions, Ideologies and Dissent"	Dr. Anand Singh, Dean, School of Buddhist Studies & Civilization, Gautam Buddha University, Gautam Buddha Nagar, Greater Noida- 201 312	2.0
5.	October 25-26, 2017	International Seminar on "Spirituality in Hinduism and Islam"	India International Centre, New Delhi- 110 003	5.0
6.	January 27-29, 2018	International Conference on "Peace and Reconciliation: Respective from Religion & Philosophy"	Sh. Hari Prasad, Managing Trustee, Sri Vishnu Mohan Foundation, 7/15, New Giri Road, Chennai- 600 017	5.0

BRIEF REPORT OF ACADEMIC EVENTS

1. A three-day National seminar on "Navajyothisree Karunakara Guru: Paradigm shift in Indian Spiritual Discourse on Dharma" was held from 22-24 August 2017. The thrust of the seminar was on the paradigm shift in the practice of dharma as enunciated by Navajyothisree Karunakara Guru in the background of Sanathana dharma. The seminar was inaugurated by Professor Mark Juvenesmear, Professor of Sociology and Head, Global Studies, Barbara University, USA. In his key note address, Swami Navananma Jnana Thapaswi made an insightful examination and analysis of India's spiritual culture rooted

in Atmajnanam and guru-disciple tradition. Professor Panneer Selvam presented his paper on "Navajyothisree Karunakara Guru". He made a presentation from a philosopher's point of view and sought to place a guru's teaching in the trajectory of great gurus who have influenced the course of human history. Presenting her paper on Navajyothisree Karunakara Guru, Professor Sreekala M. Nair stated that many of the Guru's revelations required careful analysis and research. Professor Sebastian Velassery in his paper on Navjyothisree Karunakara Guru and Indian spiritual legacy sought to bring in several fundamental postulates on the nexus between dharma and yugadharma, human well-being and sustainability. Dr. K. Gopinathan Pillai in his presentation on the Revelatory Spirituality of Navajyothisree Karunakara Guru, pointed out that the Guru's teaching is a revelation on the unanswered riddles in spirituality and religion. Other presentations in the subsequent sessions focussed on various aspects of Indian culture, spirituality and social life, and how humanity should take cue from the life and teachings of great spiritual visionaries and lead a life accordingly. Swami Dharmananda Jnana Thapaswi delivered the valedictory address. There were 28 papers presented in the seminar. The discussion that ensued every session showed the depth of the matter presented and active participation of the delegates. The seminar was attended by 150 participants from various parts of India and from within Kerala.

2. The Santhigiri Ashram organized a conference on "Dharma- Ideal & Praxis in the Emerging Global Scenario" from 25 to 27 August 2017. The conference was remarkable in the sense that it was a get together of philosophers, spiritualists, scientists and people with life experiences. The conference was inaugurated by Minister of State for Agriculture, Shri Sundaran Bhagat. In his inaugural address, he made focused reference to the role of dharma and its proper practice to the healthy progress of any society. Professor S.R. Bhatt, Chairman, Indian Council of Philosophical Research in his presidential address brought in several fundamental issues that deserved focused attention of rulers, people and practitioners of religion and spirituality. Veneral Banagala Upathisa Thero, President of Sri Lankan Mahabodhi Society, Venerable Thic Tam Due, Associate Professor, Buddhist Research Institute, Vietnam were the chief guests in the

inaugural function. Swami Chaitanya Jnana Tapaswi, General Secretary Santhigiri Ashram, Dr. K. Gopinathan Pillai, Fellow, Santhigiri Research Foundation welcomed the gathering and Professor K. Rajashekaran Nair, Fellow, Santhigiri Research Foundation gave the vote of thanks. The following papers were presented in the conference:

- Professor David Peter Lawrence, Department of Philosophy and Religion, University of Chicago presented his paper on "Pluralistic Spirituality, Non-dual Saivism and the Evolution of Freedom".
- Professor Geo Lyong Lee, Sun Moon University, Korea presented his paper on "Conflict and Reconciliation between Individualism and Altruism from the Perspective of Hindu Dharma".
- Professor Sergey Parkhomov, Department of Indian Culture, St. Petersburg University, Russia presented his paper on, "Hindu Tantric Dharma from the Viewpoint of the "Mahanirvana-tantra".
- Professor Haiyan Shen, Professor (Dr.) of Buddhist Sudies, Department of Philosophy, Shangai, China presented his paper on "The Mind Embraces the Universe: The Practical Perspectives of Tiantai Zhiyi's Theory of Mind".
- Dr. Mathew Varghese, The Hajime Nakaura Estern Institute, Tokyo, Japan presented his paper on "Buddhist Act of Negation: the Silence of Buddha and Four-Value Logic".
- Professor (Dr.) Brikha H.S. Nasoraria, the University of Sydney presented his paper on "Protecting Human Soul from Defilement: Practical Approach to Spirituality in Mandacism".
- Professor Mohan Kharel, Religion and Philosophy for Peace Academy, Kathmandu, Nepal explaining the effects of karma presented his paper on "Understanding of Karmic and Reincarnation Principle for Developing Championship for Liberation".
- Ven. Dr. Moragollagama Uparathana, Head, Department of Pali, Buddhist and Pali University of Sri Lanka said that there is threefold-training in

Buddhist practice: morality, concentration and wisdom (Sila, Samadhi and Panna) and five regular precepts in Buddhist teachings.

- Ven. Dr. Witharandeniya Chandasiri Thero, Lecturer, Department of Pali, Buddhist and Pali University of Sri Lanka presented his paper on "Philosophical Recourse to Human Rights and beyond that with Reference to Buddha Dharma".
- Ven. Koggalle Wijitha, Senior Lecturer, Department of Pali and Buddhist Studies, University of Ruhuna, Matara, Sri Lanka stated through his paper titled "An Analysis on the Use of Sabbasava Sutta as a Theory in Buddhist Psychotherapy" that Buddhism is a philosophy as well as psychology and it emphasizes 'mind' in depth as cannot be seen in other philosophy or religion.
- Ven. Dr. Lenagala Siriniwasa Thero, Head, Department of Sanskrit, Buddhist and Pali University of Sri Lanka presented his paper on "A Critical Study of Wisdom as Depicted in Astasahasrika Prajnaparamita with Reference to the Philosophy of Nagarjuna" and explored the philosophy of emptiness.
- Professor J.S. Rajput, Educationist examined the evolution of Sanatna Dharma, its transmission upto the householder, and its relevance in the contemporary context in his paper "Sanatna Dharma in Social-Cultural Realm of People's Life".
- Dr. Kiran Gopakumar Rajalekshmi, Dean, Middle East College, Sultanate of Oman (Gurusthanam: Beyond the Ideal and Praxis of Dharma) discussed the ontological objectivity of Dharma.
- Professor Sisir Roy, T.V. Raman Pai, Chair Professor, National Institute of Advanced Studies, IISC Campus, Bangalore talked about the concept of quantum vacuum.
- Professor Uttam Pati, School of Biotechnology, Jawaharlal Nehru University, New Delhi presented his paper "Transcending the Cycle of Actions and Reactions.
- Professor Sujata Miri retired Professor of Philosophy and Dean of the School of Education and Humanities of North Eastern Hill University presented her

paper on "Spirituality and Tribal Religions".

- Professor Balaganpathi Devarakonda, University of Delhi presented paper on "Role of Guru as an Interpreter of Dharma".

The Global Spiritual Conclave provided a common platform for the confluence of scientist of spiritual persuasion, spiritual and religion heads and social scientists. More than 70 well-known national and international scholars from the USA, Germany, China, South Korea, Australia, Japan, Sri Lanka and Nepal participated in the conclave.

3. The 11th Annual National Conference on Bharatiya Mahila Darshanik Parishad was organized between 15 and 17 December 2017 at Moolji Jaitha College, Jalgaon, Maharashtra on the theme "Philosophy in 21st Century". The inaugural function was attended by 1) Adv. P.B. Patil, Vice President, KCE Society and President of Session; 2) Professor Dr. Rajaneesh Kumar Shukla, Member Secretary, ICPR and Chief Guest; 3) Professor Dr. Jatashankar, President, ABDP and Special invitee; 4) Professor Ramji Singh, Keynote Speaker, Ex-Vice Chancellor, Singhania University and Freedom Fighter; 5) Professor Ramesh Chandra Sinha, Chief Editor, *Darshanika Trimasika* (quarterly journal), Retired Head, Department of Philosophy, Patna University and Guest of Honour; 6) Dr. Pooja Vyas, Director (Academic), ICPR, Lucknow and Guest of Honour; 7) Professor Rajkumari Sinha, President BMDP, Retired Professor Philosophy and Director, Women's Study Centre, Ranchi University, Ranchi; 9) Professor Dr. Uday D. Kulkarni, Principal, Moolji Jathia College; 10) Dr. Rajni Sinha, Head, Department of Philosophy, M.J. College and Organizing Secretary. Dr. Rajkumari Sinha and Dr. Chhaya Rai made their welcome address on behalf of BMDP. Dr. U.D. Kulkarni, Principal, made his welcome address on behalf of M.J. College. Subsequently, distinguished speakers were introduced to the audience by Dr. Rajni Sinha, Organizing Secretary and Head, Department of Philosophy, M.J. College. Then the eminent guest speakers, Dr. Rajaneesh Kumar Shukla, Dr. Jatashankar, Dr. Ramesh Chandra Sinha presented their thought on the conference theme. The keynote address was delivered by Dr. Ramjee Singh, the octogenarian philosopher and freedom fighter. There were technical sessions and symposium conducted in our parallel

sessions on the conference sub-theme: 1) Indian Philosophy and Ethics; 2) Ontology and Epistemology; 3) Yoga Philosophy; and 4) Women Related Issue. Over 60 papers were presented in these sessions. There was an executive meeting of BMDP in the evening. Separate sessions on select topics were discussed among participating delegates after technical sessions in the evening. Professor Dr. Chhaya Rai, General President of the 11th National Conference of BMDP, also presented his thoughts on the conference theme. Dr. Vijay Srinath Kanchi presented the three days conference report. Principal Dr. V.R. Patil of Smt. G.G. Khadse College, Muktainagar delivered his presidential address in the valedictory function. The vote of thanks was delivered by Dr. Rajkumari Sinha on behalf of BMDP and by Dr. Rajni Sinha on behalf of Moolji Jaitha College.

4. National Seminar on "Multi-dimensional Contribution of Lokamanya Tilak to Indology and Applied Philosophy" organized by ICPR was held at K.J. Somaiya Bharatiya Sanskirti Peetham, Mumbai during 3 to 5 December 2017. The seminar was inaugurated by Sarsanghachalak Dr. Mohan ji Bhagwat. The inaugural programme was well attended and among the attendees there were various authorities, speakers, faculty, students and guests. Sarasanghchalak Dr. Mohan ji Bhagwat gave the inaugural address in which he said, "The History of Indian Revolution is incomplete without considering the contribution of the Lokmanya Tilak. He was the leader who realised the significance of creating political awareness in the masses and took efforts in the director to motivate common people to actively contribute to the fight for freedom.

   To awaken the society stuck in lethargy and passiveness, Lokmanya Tilak chose the medium of Dharma and reiterated the theory of Karmayoga from Bhagavadgita. He encouraged people to shift the thought process from individualistic happiness to social welfare.

   Lokmanya Tilak had a multifaceted persona due to his scholarship in Mathematics, Sanskrit and Astronomy, his consistent quest in research and extra-ordinary expertise in journalism. He focused all his potential on the process of purifying the traditions and making Indian education system stronger to cope

with the various challenges. He put forth the new perspectives of analysis and interpretation of the Vedas and other philosophical texts which rejuvenated the identity of Indian society in the field of research."

The inaugural address was followed by the key-note address by Professor S.R. Bhatt, Chairman of the Indian Council of Philosophical Research. All the speeches emphasized the importance of discussing the teachings of Lokamanya Tilak and its relevance in our contemporary times. Professor Rajaneesh Kumar Shukla, Member Secretary of the Indian Council of Philosophical Research gave the vote of thanks.

A total of 15 papers were presented and they covered almost every aspect of the multi-dimensional teachings of Tilak. The following is the list of speakers, their designation, and the title of their papers:

1. Professor (Dr.) B.N. Narahari Achar, Professor Emeritus, University of Memphis, USA presented a paper on "Astronomy (with the aid of Planetarium software) as a Research Tool in Indology with Special Reference to Lokamanya Tilak".

2. Shri Suresh Bhave, Author and Independent Research Scholar, Pune presented a paper on "The Origin of the Vedas: Modern Archaeological Findings-Lokamanya Tilak's Research".

3. Dr. Sushim Dueby, Programme Officer, Indian Council of Philosophical Research, New Delhi presented a paper on "Lokamanya Tilak's Views on the Philosophy of Upanisads".

4. Dr. Mariano Iturbe, Adjunct Professor, K.J. Somaiya Bharatiya Sanskriti Peetham, Mumbai presented a paper on "Lokamanya Tilak and Socrates: A Comparative Study".

5. Shri Dilip Karambelkar, Chairman, Maharashtra Rajya Marathi Vishvakosha Nirmiti Mandal, Managing Editor, Vivek Media Group presented a paper on "Niskama Karma Yoga of Lokamanya Tilak-its Application in RSS and Results".

6. Dr. Meenal Katarnikar, Associate Professor, Department of Philosophy, University of Mumbai presented a paper on "Hermeneutical Study of Gitarahasya".

7. Professor Dr. Malhar Kulkarni, Professor of Sanskrit, Department of Humanities and Social Sciences, Indian Institute of Technology, Mumbai presented a paper on "Insights from Lokamanya Tilak's Comments on the Brahmasutra".

8. Dr. Manali Londhe, Associate Professor, Department of Philosophy, S.K. Somaiya College of Arts, Science and Commerce, Mumbai presented a paper on "Lokamanya Tilak's Contribution for the Social Well-being: Lokasamgraha".

9. Professor (Dr.) S.M. Michael, Former Head, Department of Sociology, University of Mumbai presented a paper on "Dialogue on 'The Vision of Lokamanya Tilak' on Indian Nationalism".

10. Professor Ashok Modak, National Research Professor, Ministry of Human Resource Development, Government of India presented a paper on "Gitarahasya: A Fountainhead of Integral Humanism".

11. Shri Rudraksha Sakrikar, Assistant Professor in Sanskrit, K.J. Somaiya Bharatiya Sanskriti Peetham, Mumbai presented a paper on "Critical Analysis of Lokamanya Tilak's View on the Missing Verse of Sankhyakarika".

12. Dr. Balram Shukla, Assistant Professor in Sanskrit, University of Delhi presented a paper on "Lokamanya Tilak's Views on the Antiquity of Vedas".

13. Professor Dr. G.U. Thite, Former Head, Department of Sanskrit, University of Pune presented a paper on "Lokamanya Tilak and Sanskrit".

14. Dr. Shrinivas Tilak, Independent Researcher, Toronto, Canada presented a paper on "125 Years of Sarvajanik Ganesotsava: a legacy of Lokamanya Tilak".

15. Dr. Sharmila Vikar, Associate Professor, Department of Philosophy, University of Mumbai presented a paper on "From National Education to

International Mindedness in Education: Revisiting Lokamanya Tilak's Views on Education".

The last session of the paper presentation ended with the concluding address by Professor Ashok Modak, in which he said,

Indian Philosophy believes in spiral circles where individual is connected with family, village, national and so on with the same thread. It lays emphasis upon the balance between individual as well as the broader circles around him with the special focus on principles such as empathy, compassion and commitment to global values.

It is certainly a positive development that the entire world is taking note of spiritual humanism propounded by Indian Culture. Indian ethos is being appreciated globally as a means to achieve social harmony.

5. National Seminar on "Need and Relevance of Philosophical Books" was organized by International Book Festival Committee, Kerala and conducted by the ICPR from 8 to 10 December 2017. The programme was inaugurated by Dr. K.S. Radhakrishnan, former Chairman Kerala Public Service Commission and former Vice Chancellor (Sri Sankaracharya Sanskrit University, Kalady).

   Dr. Sreekala Nair (HOD Sankaracharya Sanskrit University, Kalady), Dr. Sushim Dubey (Programme Officer, ICPR) and Dr. Fr. Paul Thelakkattu gave research paper presentation in the seminar. The programme was conducted in the main venue. In the second venue at 3.30 p.m. the book "*M.K. Harikumarinte Sidhanthagal*" was released. Writer Sri Ponnian Chandran and Artist Gayathri were in the discussion.

   Kumari Malvika Sunil gave a 'Mohiniyattam' recital. On 9 December 2017 at 10.30 a.m. paper presentation was held at the main venue. Dr. Sreeekala Nair presented a paper and spoke on the subject. Dr. G. Prasadkumar, Chief reporter, *Mathrubhumi news*, Chennai; G. Anand Raj, Associated Professor; and T. Satishan, Journalist, also participated in the discussion. At 3.30 p.m. panel discussion on "Retelling and Reinterpretation of Indian Epics" took place. The session was moderated by Adv. M. Sasisankar where famous novelist Sri Anand Neelakandan

and writer R. Prassannakumar presented their views.

At 4.30 p.m. Dr. Gopinath Panangad Malayalam, writer, interviewed Padmasree Professor M. Leelavathy, one of the most famous and senior Malayalam writers. At 5.30 p.m. Sri E.M. Haridas interviewed Sri Ahmmed Kabir M.L.A.

6. A three-day national seminar, sponsored by the ICPR, on “Vulnerability Vs. Sustainability: Revisiting the Tribal Life and Culture” was held on 1-3 July 2017 in Wynand and Attapadi in Kerala. Inaugurating the seminar, Professor Bhatt said that the ICPR has been organizing such events across India on tribal life, culture and religion with the objective of bringing attention to these areas. He made observation that tribal life and culture are among the proudest symbols of India’s heritage. Tribal artist, crafts, languages, religious beliefs, scientific ideas, agriculture technology, architectural designs and medical practices have had a profound impact on India’s past history and constitute major components of the composite culture of India. Shri Balakrishnan, MLA, Sultan Bathery, made an evaluation of tribal schemes and government initiatives to alleviate poverty and rehabilitation as well as providing employment to the tribes in Kerala. Rev. Dr. Bishop Joseph Mar Thomas, Malankara Catholic Batery Diosis spoke on destituteness and marginalization of the voiceless people of forest dwellers. Swami Ananda Jyothi Jnana Thapaswi, in charge, Santhigiri Ashram, Wyand Branch spoke on the historical reasons of polarization of people into mainland and forest dwellers, and how we can jointly strive towards the elevation and upliftment of the tribal people in Wynand and Attapady. Presenting the keynote address, Professor S.N. Chaudhry, Department of Sociology, Barakatullah University, Bhopal illustrated the national scenario of tribal life and culture and the struggle of the tribal people to protect and preserve their culture and life. Dr. R. Dirar, Former Project Officer, Japan Government Project on Attappadi, presented his paper on “Adivasi Life – A Lesson in Environment and Culture”. He pointed out the important milestones in the life and vanishing culture of the tribes in Attapady. Dr. Rajiv Bhatt, Public Health Expert, Delhi made a rich presentation on the tribal health care system and tribal medicine. K. Rajasekharan Nayar, Chief Fellow, Santhigiri Social Research Institute, presented his paper on “Syncretic Holism with Respect to Illness Episodes”. Dr. Vijay Kumari K., Asst.

Professor, All Saints' College, Thiruvanthapuram presented a paper on "Practices of Discrimination and Subjugation of Koragas of Wynad and Kasargod in Kerala". Dr. Sudhir Dingh made a presentation on the challenges that tribes all over India have been facing. Dr. Baiju K.K. made presentation on Democratic Decentralized Participatory Governance: Analysis of Institutional Interactions of Local Communities and Self Governing Bodies of Western Ghats, Kerala. The valedictory session was chaired by Professor S.R. Bhatt and the valedictory address was delivered by Dr. V. Balakrishnan, Director M.S. Swaminathan Institute, Wynad.

7. The conference "Asian Perspectives on Holistic Modes of Thinking and ways of Living" was organized by the Holistic Science Research Centre (an institution established and managed by Vitrag Vignan Charitable Research Foundation), Surat, in collaboration with the Indian Council of Philosophical Research, New Delhi from 3 to 4 January 2018. There were four plenary sessions for invited speakers of Asian and Western countries and three parallel sessions for the registered participants. In addition to this, a special plenary session on "Flow of Philosophical Thoughts between India and Far Eastern Countries – Historical Perspectives" was organized with the co-sponsorship by Sri Ramanuja Mission Trust, Chennai. The Chief Guest was Shri O.P. Kohli, Hon'ble Governor, State of Gujarat, Dr. Ali Dehgahi, Cultural Counsellor, Embassy of Islamic Republic of Iran, New Delhi was the Guest of Honour. The inaugural session was chaired by Professor S.R. Bhatt, Chairman, ICPR, New Delhi and co-chaired by Shri Vasantbhai U. Patel, Founder Trustee, VVCRF. Dr. Balaganapathy D., Professor of Delhi University, and also the General Secretary of Asian Philosophy Conference explained the theme of the conference. Hon'ble Governor Shri O.P. Kohli mentioned "The world is considered as one Family (Vasudhaiva Kutumbakami). Asian ways of thinking as oneness of all would provide solutions to the global problems. The beliefs of Indian Culture to take everyone along will eliminate the gap between the East and West". Professor Marzenna Jakubczak, Poland, discussed about the issue of psychological agency in the context of Indian Philosophy with reference of Samkhya-Yoga tradition. Professor G. Mishra, Madras University, opined that philosophy must always be experimental without

predetermined limits. Professor G.D. Samanpala, Sri Lanka, discussed the relationship between the natural ways of thinking and Asian science with special reference to Buddhist Philosophy, Hindu Philosophy, Materialism, Jain Philosophy, Ayurveda and Astrology. Professor Lysenko Victoria, Moscow deliberated on the importance and significance of the part–whole relative in the Vedic tradition. In his paper (read by Mr. Ramitrth Patel) Dr. Radha Krishnan, President, HSCRF, Oak Ridge, Tennessee, USA, discussed that being biologically human, one has the capacity and potential to become divine. Professor Do Tha Ha, Vietnam, stated about the importance of Mother Goddess or Dao Mau as the incarnation of nature goddess (16th Century in Vietnam) as it is recognized by UNESCO. Professor Ravichandran Moorthy, Malaysia, discussed about the Chettys, a hybrid community that emerged from intermarriages between the Hindu traders and local Malays, Chinese, Javanese and Bataks. Professor Tang Mingjun, elaborated some basic features of Asian tradition of Buddhist logic and its relation to the Indian Tradition. Dr. Rajendrakumar Dabee, Mauritius, discussed about the contribution of India to the cultural and religious practices in Mauritius. Professor Geo Lyong Lee, South Korea, mentioned suffering as a starting point of discovering the world within. Ven Dr. Thich Tam Duc, Vietnam, mentioned that the uncertainty in the World witness a growth in the material world whereas a decrease of moral world. Swami Shaileshanand, Aptaputra of Dada Bhagawan, Surat presented Dada's view on this topic. Professor Chirapat Prapandvidya, Thailan, presented valuable information about the study of the philosophical thoughts mentioned in the literately evidences of Sanskrit inscriptions enlisted since 3rd century CE to achieve eternal happiness. A book was published containing the Abstracts of various 90 papers received for the Asian Philosophy Conference and a complimentary copy was given to all the 300 participants.

8. Society for Social Empowerment, New Delhi at Forestry College, Ponnampet, Kodagu, Karnataka organized a three-day national seminar on "Coorg Tribe: A Distinct Narrative of Tribal Worldview" from 17th to 19th January 2018. Dr. Looke Kumar, Seminar Coordinator introduced the theme at the inaugural session. She stated that the Coorg tribe is distinct from other tribal groups due to

gamut of reasons. She stressed that this community is the natural protector of forest and as a result huge green lush forest is sustainable in this district. Dr. M. Jadeyegowda, first Soliga tribe to do a Ph.D. and currently working as Assistant Professor at College of Forestry, Ponnampet, Kodagu, elaborated many facets of Coorg tribe. Professor Siddalinga Swamy, Coordinator, State Higher Education Quality Cell, Karnataka and Chief Guests Mrs. Pankaja, Zilla Panchayat Member Kodagu, Mr. Prakash, Taluk Panchayath Member, Virajpet as well as special guests Dr. Daniel, University of Mysore and Professor Rajni Jairam, Jain University, Bengaluru were present. Professor Siddalinga Swamy, Director, Higher Education Quality Cell, Karnataka argued about protecting the heritage of the forest tribes in Coorg. Mrs. Pankaja, Zila Parishad member (Coorg Tribe) categorized the tribes of Coorg into tribes living in village, colonies and forest. She said that they have different types of land system. Mr. Prakash, Panchyat Samiti member (Coorg Tribe) pointed out the policy implementation problem and opined that the government after understanding the community's point of view will be able to implement properly gamut of governmental schemes. Dr. Daniel M. University of Mysore focused on socio-culture and religious life of Coorg tribes. Professor Rajani Jairam, Jain University, Bangalore stated that dharma actually means what was, what is and what can be done. So it directly relates to the sustainability of an issue. Professor S.N. Choudhury, Baraktullah University, Bhopal, Dr. Sumati N., Mysore University, Dr. Saji Varghese, NEHU Shillong, Dr. Suresh R., University of Kerala, Dr. Chandshekher Ram, University of Delhi, Dr. Marula Siddih Patel, ASI, Government of India, Mysore, Dr. Jay Kumar, University of Mysore and Dr. Aanant P., Madurai Kamraj University also spoke in this session. The third session had eight papers presented by Professor Amualya Tripathi, Bahrampur University, Mr. Harinakshi, Faculty of MSW, Department of Studies in Social Work, Jnana Kaveri, PG Centre of Bangalore University, Kodagu, Professor S.R. Murty, Andhra University, Dr. Guru Pandita, Mysore University, Dr. Manoj Kumar, Kalicut University, Dr. Looke Kumari, University of Delhi, Dr. R.N. Hegde, Karnataka Agricultural University, Shimoga and Dr. Sumit Jha, Pondicherry Central University . The participants visited two nearby villages of the Coorg tribe. On the third and final day of the seminar , the fifth session before lunch had nine papers presented by Professor

Gopinath Pillai, Shantigiri Research Foundation, Trivandrum, Professor Shivanand, University of Mysore, Dr. Sbu Thomas, Calicut University, Dr. Sudhir Singh, University of Delhi, Dr. Namrata, Vetinery Doctor, Kodagu district, Dr. R.N. Kencharaddi, University of Agricultural and Horticultural Sciences, Shivamogga, College of Forestry, Ponnampet, Kodagu, Karnataka, Dr. Appaji Gowda, Tribal Research Institute, Mysore, Dr. Ramesh, University of Manglore and Dr. Sumit Kumar, Pondicherry Central University. The valedictory session was chaired by Professor Rajnai Jairam, Dean, Jain University, Bangalore. Professor. C. Basavraj, Vice-Chancellor, University of Mysore was the Chief Guest of the session. Professor Jairam stressed that Coorg tribe is unique by all counts and we must protect their distinctiveness.

9. The All Orissa Philosophy Association organized its 30th annual conference on 23 and 24 January 2018 at Rama Devi Women's University, Bhubaneswar. On 23 January the conference was inaugurated by Chief Guest, Professor Dr. Padmaja Mishra, Vice-chancellor, Rama Devi Women's University. Sh. Rabinarayan Das, IAS (Retd.) Hon'ble Advisor, Planning Board Odisha was invited as Guest of Honour. In his deliberation, he highlighted the relevance of philosophy in every field of our life. Dr. Sitanshu Kumar Dash, Chairman P.G. Council, Rama Devi Women's University and Chairman Reception Committee gave welcome address. Professor Ganes Prasad Das, executive Vice-President, introduced the guests on dias. Dr. Bhaskar Chandra Sahoo, General Secretary highlighted the activities of the association. Professor P.K. Mohapatra, Advisor of the association gave a brief introductory speech on the theme.

   The *Journal of AOPA* was released on this occasion . The Association felicitated Professor Neelamani Sahoo, Dr. Gayadhar Panda, Dr. Durgamadhab Praharj, Dr. Darani Ranjan Satapathy and Dr. Shiva Prasad Chattopadhyaya for their lifetime contribution to the teaching and research in Philosophy.

   The Association organized two essay competitions among post-graduate and under-graduate students of philosophy. One was under the name of late Professor Ganeswar Mishra on the topic "Pragmatism and Humanism". The second essay competiton under the name of Professor S.K. Chottopadhya was on Integral

Monism of Sri Aurobindo. The best essay prizes were awarded to the winners by Chief guest Professor Padmaja Mishra. Professor Sarat Chandra Panigrahi, former Professor Utkal University delivered General President's lecture on the topic "Lord Jagannath-Symbol of Synthesis and Humanism". Professor S.K. Mohanty, the executive president of the association, gave his presidential remark. Lastly, Basant Kumar Das, Head of the Department of Philosophy, Rama Devi Women's University and local Secretary offered the vote of thanks.

10. The Third Annual Conference on Peace and Reconciliation 2018 began on 27 January 2018 at 3.00 p.m. at Emerald Hall, Acord Metropolitan Hotel, in Chennai. Swami Shri Hariprasad, Managing trustee of Sri Vishnu Mohan Foundation welcomed the gathering. Sri Moosa Raza, I.A.S. briefed about the functions of the Foundation on academic and religious fields. Professor S.R. Bhatt, Chairman, ICPR, New Delhi presented the theme note and trajectory of the conference. In his address, Professor Bhatt reaffirmed the need to define secularism that best suits the Indian context. This was followed by brief addresses by the two guests of honour, Mrs. Krongkanit Rakcharoen, Consul-General, Royal Thai Consulate, Chennai and Sri Arvind Menon, New Delhi. In his special message, Hazrat Maulana Dr. Kalbe Sadiq, Vice President of All India Muslim Personal Law Board, recollected the contributions of the previous two peace conferences. Haji Syed Salman Chishty, in his spiritual address, highlighted the similarities between Sufism, particularly the Chishty movement, and Bhakti cult in India. Keynote address was delivered by Dr. K.S. Radhakrishnan, Former Chairman, Kerala Public Service Commission. Professor Sreekala M. Nair, Dean Faculty of Arts and Social Sciences, Sree Sankaracharya University of Sanskrit rendered the vote of thanks. Father (Dr.) Thomas Menamparambil delivered the valedictory address. The Peace Conference Resolution was also read out and was passed at the conference. Shri Ashok Bapna delivered a special address and Swami Shrihariprasad, Managing trustee, Sri Vishnu Mohan Foundation rendered the vote of thanks.

11. An ICPR sponsored two-day national seminar on "Traditional Value: Its Relevance in the Era of Globalization with Special Reference to North-east India" organized by Department of Philosophy, B.N. College, Dhubri, 2018 was held at

B.N. College, Dhubri on 9 and 10 February, 2018. The inaugural session was presided over by Dr Dhruba Chakrabortty, Principal, B.N. College. Mr Mir Sahadat Ali, President of B.N. College, Governing Body was the Chief Guest. Professor Nilima Sarma, Former Professor, Department of Philosophy, Gauhati University was the keynote speaker and Dr. Jagadish Patgiri, Associate Professor, Department of Philosophy, Cotton University, Dr. Padmadhar Choudhury, Assistant Professor, CSP, Dibrugarh University, Dr. Prahlad Basumatry, Dy. Registrar, Bodoland University, dignified the occasion as resource persons of the seminar. Distinguished academicians of the district were also present in the inaugural meeting. Dr. Dhruba Chakraborty, Principle of the college welcomed the distinguished guests and participants. Professor Nilima Sharma, Former Professor, Department of Philosophy, Gauhati University in her keynote address discussed about the concept of value both from traditional and from modern point of view. The session ended with the vote of thanks offered by Miss Namita Pawagam, Assistant Professor, Department of Philosophy, B.N. College. Five technical sessions were held during the two-day programme, where 15 papers relating to the main theme and sub-themes were presented by the scholars like Dr. Jagadish Patgiri, Associate Professor, Department of Philosophy, Gauhati University, Dr. Padmadhar Choudhury, Assistant Professor, CSP, Dibrugarh University, Dr. Prahlad Basumatary, Dy. Registrar, Bodoland University, Sandipa Biswas, Department of Philosophy, Bilasipara College, Dr. Dipendra Kumar Adhikary, Former HOD of Assamese, B.N. College, Mrs. Nabanita Devi, Department. of Philosophy, B.N. College, Namita Pawagam, Department of Philosophy, B.N. College, Naba Pallab Newar, Department of Philosophy, Barpeta Girls College, Dr. Mausumi Bhattacharjee, HOD of Sanskrit, Ipsita Chakraborty, Department of Philosophy, Bilasipara College, Yasmin Nasim Parvin Research, Abu Zafar Ahmed, Department of Philosophy, Sapatgram College, Zeney Ali Sheikh, Department of Philosophy, A.R. College, Mrs. Pallabi Bora, Assistant Professor Dbubri Law College.

Rapporteurs Miss Namita Pawegam, Miss Yasmin Nasima Parvin and Naba Pallab Newar presented their reports after the completion of the sessions. Naba Pallab Newar and Miss Yasmin Nasima Parvin gave technical support to various

technical sessions of the seminar. In the valedictory session, certificates were distributed to the participants by Dr. Dhruba Chakraborty, Principal, B.N. College. The seminar ended with the vote of thanks by Yasmin Nasima Parvin.

12. A three-day national seminar on "Morality and Politics: The Perspective of Jayprakash Narayan" was organised by Jagjeevan Ram Chair, Department of PMIR, Patna University and Department of Political Science, Patna Women's College, Patna University from 26 to 28 February, 2018 to deliberate upon the contributions of Jayprakash Narayan in shaping modern India. The Guest of Honour of the inaugural programme were Professor R.C. Sinha, Former Head, P.G. Department of Philosophy, Professor Rash Bihari Prasad Singh, Vice Chancellor, Patna University, Swami Sukhanand Jee, R.K. Mission, Father Robert Attikal, S.J. Tarumitra and Sri Birendra Kumar, Ex-MLA. The keynote address was delivered by Professor Jata Shankar, President, Akhil Bharatiya Darshan Prishad. The programme was presided over by Dr. Sister Marie Jessie AC, Principal, Patna Women's College. Professor Sanjay Paswan, Former Union Minister, Government of India and coordinator of the seminar introduced the focal theme in his opening address. He said it is imperative at this critical juncture to try to bring changes in the attitudinal and behavioural patterns of both the individual and the society where the Jayprakash Narayan's ideal of a corruption free politics no longer appears unrealizable. The key note speaker, Professor Jata Shankar highlighted the prevailing political scenario that ignores political morality and ethics. Professor R.C. Sinha, Former Head, P.G. Department of Philosophy highlighted the relation between politics, ethics and democracy. Professor Rash Bihari Prasad Singh, Vice Chancellor, Patna University, elaborated on the decline of morality in Indian politics. In plenary session I, Professor Poonam Singh, Head, Department of Philosophy, Patna Univesity spoke about the relevance of morality in politics. In plenary session II, Professor Dilip Mohanta, Vice Chancellor, Sanskrit University, Kolkata opened the session stating that *darshan* is a holistic approach to life. If morality is reduced from *darshan*, the end product is consumerism and self-centrism. Professor Nirmal Singh, Department of Political Science, Nagpur University in his key note address said that his intimacy with Jay Prakash Narayan taught him numerous things which till date

guide him. Professor Balram Tiwary, Former Head, PG Department of Hindi, Patna University was the Chairperson of Technical Session II . The key note address was delivered by Sri Krishna Kant Ojha, Editor, Sawatwa. Professor R.C. Sinha, Former Head, PG Department of Philosophy, Patna University, and Member Secretary ICPR chaired Technical Session III. Keynote address was given by Professor Sangit Ragi, Department of Political Science, Delhi University, Delhi. The valedictory function was held on 28 February 2018 in the Open Stage Hall. Sri Tathagat Roy, Honourable Governor of Tripura was the Chief Guest of the valedictory function. In his address he talked about morality and Machiavelli. He also said that politics is the art of the possible. A good number of papers were presented covering almost all aspects of the subject which were theoretical as well as applied.

13. A three-day ICPR national seminar on "Philosophy of Acharya Vinoba Bhave" was held from 5-7 February 2018 at Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha. Dr. Geeta Mehta welcomed every one explaining the theme of the seminar. Dr. Shambu Joshi was the co-ordinator. He also read the messages from Professor Girishwar Mishra, V.C. of the University and Professor S.R. Bhatt, President, ICPR. Shri Balvijayi gave very good introduction of Vinobaji's journey from Brahajigyasa to Brahmanirvana. The message of Vinobaji is Samyayoga and how he achieved it during his life span. Professor Ramji Singh gave keynote address and showed Gandhi and Vinoba as continuumand that Gandhi himself had said that Vinoba is ahead than him in spirituality. Vinoba had discussed theoretically and practiced accordingly all the three points of philosophy namely, *Jiva*, *Jagat* and *Isvara*. Dr. Sharmila Virkar from Mumbai University, presented a paper on 'Shita Praon & Vinoba'. Professor Nanda Kishore Acharya highlighted on "Vinoba: Ahinsa ki Tattva-mimansa". He emphasized on the book *Swaraj Shastra* written by Acharya Vinoba Bhave. Shri Gautam Bajaj spoke on *Ashram Samkalpana* of Vinoba and explained the purpose of the six ashrams started by Vinoba. He said that the whole life of Vinobaji was in search of non-violence, therefore, Bhoodan, Gramdan follows from it. Ms. Radha Bhatt from Uttarakhand, working for Chipko and save the Ganga, presented her views about Vinoba and women. Former Vice-chancellor

of Gujarat Vidyapeeth, Professor Sudarshan Iyengar presented his views on Vinoba's contribution to Gandhian ideal of education. Professor Chandrakant Ragit talked about "Vinoba Bhave as a modern saint". He talked about "unity of knowledge, action and devotion in the life of Acharya Vinoba Bhave". Ms. Pravina Desai of Brahma Vidya Mandir presented her paper on "Vinoba's exposition of the Bhagvad Gita". Dr. Geeta Mehta presented her paper on "Metaphysical bases of Vinoba Bhave's Philosophy" and discussed about Vinoba's exposition of Brahiman, Jagat and Jiva. Professor Rodrick Chureh presented his views on *Rishi Kheti and Kanchan-mukti* (living without money). Dr. Shambu Joshi presented his paper on "*Vinoba ki Shram Drishti*". In total, 24 papers were presented by invited research scholars and 17 papers were presented by other scholars.

14. A three-day national seminar on the theme, "Philosophy of Love in Sufism and Bhakti as Reflected in Literature" was organized by the Indian Council of Philosophical Research at the Department of Malayalam, Malabar Christian College, Calicut on 8, 9, and 10 March 2018. The seminar was inaugurated by Dr. K. Mohammed Basheer, Vice-Chancellor of the University of Calicut. He highlighted the significance of the seminar regarding the reconstruction of the Indian society with communal harmony, spiritual moorings and religious tolerance. The inaugural session was welcomed by Dr. Sreejith, HOD of Malayam, Malabar Christian College, and was presided over by Dr. Godwin Samraj, Principal of the college. Rev. Roys Manoj Victor, Bishop, CSI Diocese of Calicut spoke that all religions have contributed to *bhakti* as absolute love to God and a study of comparative religion is a force of unification for morality and modesty. Dr. K.K.N. Kurup said that the Indian Literature has been based on the two religious forces of Sufism and Bhakti. Professor Sreekala Nair said that philosophy, culture and religion are not watertight compartments. Technical session was chaired by Dr. K. Gopalankutty, Former HOD, Department of History, University of Calicut. Dr. Sridevi, Visiting Professor, Kalamandalam presented her paper titled "Krishnanattam, Ashtapathiyattam, Krihnabhakti Cult in Kerala". Dr. Neelakantan and Professor E. Ismail also presented papers on "Bhakti – The Divine Love in Narayaneeyam of Melpathur" and "Assimilation and

Accommodation: The Content and Ideology of Sufism in its Nature and Practice", respectively. The valedictory session was presided over by Dr. Sreejith in which Dr. Kurup, the Seminar Director, explained the continuity of ideas and ideology of the seminar among the youth and academic community.

15. A one-month Gurukula Workshop on "Phenomenology of Edmund Husserl" was held at Sri Aurobindo Centre for Advanced Research (SARC), Pondicherry, jointly conducted by Centre for Phenomenological Studies (CPS) and SARC from 1 to 31 October 2017. The programme of one month foundation course on phenomenology started on Monday 02.10.2017. Rev. Mathews, Satyanilayam, Chennai gave the welcome speech. He welcomed Professor Anandha Reddy, Director, SARC, who hosted the programme. The guests included Shivanad Dev, Associated Professor, Department of Psychology, Pondicherry University, Pondicherry and Professor Thomas, the coordinator of the programme. Professor Thomas also introduced Yogacharya who would be teaching Yoga classes and Yoga therapy to the participants throughout the one-month long programme. He suggested the participants to discuss with him in order to clarify and get treatment on various health pains including back pain, etc. The inaugural address was given by Professor Shivanand Dev, Department of Psychology, Pondicherry Central University. He explained how psychology has been taken by phenomenology as a latest trend. Professor Reddy gave his speech regarding the gurukula system. The vote of thanks was given by Dr. James Kurian.

    In the valedictory session, SARC personnel Deepashikha Deedi chaired the session. Professor Thomas and Director, Dr. Ananda Redy were in the dias. Deepashikha Deedi gave away the certificates to the participants. She also delivered a speech talking about the teaching of the Mother. Dr. Robert gave his valedictory remarks that it was very exciting to be in this foundation course, especially with its spiritual background of Shri Aurobindo Institution. Dr. C.V. Babu gave the vote of thanks.

16. The national seminar organized by Jaipuria Institute of Management, Jaipur under the patronage of the Indian Council of Philosophical Research on "Indian Culture and Sustainable Development for Solving Human Problems" began with

a heart-warming welcome by Dr. Prema Jain, Associate Professor, Jaipuria Institute of Management, Jaipur, on 27 March 2018. The welcome note was extended by Dr. Prabha Pankaj, Director, Jaipuria Institute of Management, Jaipur. Swami Hariprasad Ji, Head, Sri Vishnu Mohan Foundation, Chennai emphasized on the four pillars of Indian Culture which provide meaning to life. These include dharma, ahimsa, satya and purity of motive. The overview of the theme of the seminar was delivered by Professor Ashok Bapna, Honorary Professor, MNIT Jaipur. He was also the coordinator. Swami Padam Prakash quoted Vivekananda, "Youth are not Useless, Youth are Used Less". Swami ji stressed upon spirituality being the creativity of a personality. Padma Bhushan V.S. Vyas, Chief Guest, highlighted the two vital values propagated by the scriptures and Indian culture: veneration of nature and control over wants. Professor S.R. Bhatt, Chairman, ICPR, initiated his address by emphasizing on holistic development, the development of physical, mental, intellectual and spiritual aspects of the world as a whole. The seminar witnessed a galaxy of eminent scholars and experts from the field of Indian culture, philosophy, economics and religions. Some of the prominent dignitaries who deliberated included Dr. Devarshi Kala Nath Shastri (Sanskrit Scholar), Professor Dayanand Bhargava (and well-known Vedic Scholar), Professor Suraj Jacob (economist and CEO, Vidya Bhawan Society, Udaipur), Dr. Narayan Hegde (Managing Trustee, Nature Cure Ashram; Trustee, Bhartiya Agro Industries Foundation-BAIF), Professor Aruna Gopinath (President, Saluting her Endeavour); President, All Malaysia Malayalee Association (AMMA) Foundation), Professor K.B. Kothari (former Senior Adviser, UNICEF and Managing Trustee of Pratham Rajasthan), Kamal Singh (Executive Director, UN Global Compact Network India). The three days of the seminar had 12 plenary sessions where 30 papers were presented. At the end of the session, Dr. Prabhat Pankaj, Director, Jaipuria Institute of Management, Jaipur proposed a vote of thanks.

17. A two-day international conference on "Vasudhaiva Kutumbakam" (Whole world is One Family) was held on 24–25 February 2018 at New Delhi Municipal Corporation Convention Centre, New Delhi. This conference was organized by Shaishik Foundation in association with Aryabhatta College, University of Delhi.

The inaugural session of the conference was held on 24 February 2018 in the presence of Honourable Cabinet Minister Ms. Uma Bharti, Minister for Drinking Water and Sanitation, Government in India, Physician and Surgeon Professor K. Narabari, Chairman Shaikshik Foundation, Professor J.P. Singhal Chairman (AVRSM), Shri Mahendra Kapoor Sangathan Mantri, AVRSM and Organizing Secretary of the conference Dr. Manoj Sinha, Principal, Aryabhatta College, University of Delhi. Dr. J.P. Singhal, All India Chairman, AVRSM welcomed all dignitaries and participants. Dr. Singhal suggested that philosophy of non-absolutism should be adopted for which philosophy of reconciliation has to be adopted. The philosophy of tolerance has to be assured, and sense of satisfaction and happiness has to be perceived. The Chief Guest of the inaugural session Honourable Cabinet Minister of Drinking Water and Sanitation, Ms. Uma Bharti in her address indicated that for true Vasudhaiva Kutumbakam one has to realize that without embracing the values of both East and West, this dream of universal family will remain a distant delusion. In the plenary session held on 24 February 2018, Professor Shekhar Dutta, former Honourable Governor of the State of Chhattisgarh, was the Chairperson. The keynote speaker of the session was Professor Balram Singh, University of Massachusetts at Dartmouth, USA. In his deliberation, Professor Balram Singh viewed that micro to macro oneness is a basis of Vasudhaiva Kutumbakam if we are able to live without family and can care for them only then we can live with others and rest of the planet.

In the Technical Session-I, on 24 February 2018, Professor Sushma Yadav, Member UGC, Delhi said that everyone’s welfare should be everyone’s concern and for this nation and society as one has to be established. Dr. Rupesh Chouhan declared Vasudhaiva Kutumbakam as legacy of Indian culture. In his views, the realization that Brahma resides in all living creatures is Vasudhaiva Kutumbakam.

In the valedictory session, Shri Bupendra Yadav, Member of Parliament, delivered a special address while Professor Anirudh Despande, eminent academician, gave the chief guest address. They both highlighted the importance of global peace and underlined that without global peace, equality cannot not be established. The cardinal values of Vasudhev Kutumbham are the same. Therefore it is the

onus of all of us to act as facilitators. At the end, Dr. Manoj Sinha, Principal and coordinator of the seminar expressed his heartily appreciation to the Indian Council of Philosophical Research for sponsoring the event.

18. The Indian Council of Philosophical Research, New Delhi organized two days national seminar on 8 and 9 February 2018 at Dept. of Philosophy, University of North Bengal on the "Philosophy of Bipin Chandra Pal". All the departments, centres and constituent colleges and other universities within the state were intimated and invited to the programme. Approximately, 150 participants attended the programme. The programme started with the traditional lamp lighting ceremony and inaugural speeches. Professor S.R. Bhatt, ICPR Chairman was the Chief Guest. The Welcome Address was given by, Dr. Anirban Mukherjee, HOD. The inaugural session was closed with a vote of thanks by Dr. N. Ramthing. The first academic session was chaired by Professor S.R. Bhatt. Professor Sanyal, Former Professor of Jadavpur University presented her lecture titled "Bipin Chandra Pal and Aurobindo Ghosh: When the Twain had met". Her talk opened up a new horizon regarding the nationalist struggle of India. Her talk was followed by a lecture titled "Political Savaraj & Beyond: Bipin Chandra Pal in Retrospect" given by N.R. Chakraborty, Dean, Faculty of Arts, Rabindra Bharati University. After the lunch break, a second academic session followed. In that session two lectures were presented. Professor Geeta Ramana, Head, Department of Philosophy, University of Mumbai delivered her talk on "Philosophy, Tradition & Culture in KCB (1875-1949) and BCP (1858-1932)". Besides that Smt. Pampa Roy Chowdhury, Department of Philosophy, P.D. Women's College presented her lecture titled "Bipin Chandra Pal: Father of Revolutionary Thoughts". Both the speakers narrated their point of view. In the interactive session, Ph.D. Scholar, Smt. Priyanka Basak and fourth semester post graduate student, Sri Subhankar Poddar presented their paper. The question and answer session was part of this session.

    On the second day the first academic session started with Professor Amitabha Dasgupta's paper on "Religion as Ethical Practice: Bipin Chandra Pal's idea of a National Project". Two more papers were presented at the same academic session chaired by Professor Raghunath Ghosh. The papers presenters were Dr.

Laxmikanta Padhi, Department of Philosophy, NBU and Professor Dyutish Chakraborty, Department of Political Science, NBU. After the lunch break, the second academic session followed. In that session, Professor Dilip Mahonto, Department of Philosophy, University of Calcutta presented a paper on "Bipin Chandra Pal on the Models of Civilization": Hinduism Vs European". This session was chaired by Professor Amitabha Dasgupta. The session ended with Professor Raghunath Ghosh's paper. In that session certificates were distributed and the seminar coordinators, Professor Raghunath Ghosh and Professor Debika Saha delivered their overall impressions on the two days national seminar. The session was chaired by Dr. Nirmal Kumar Roy. Lastly vote of thanks was offered by Professor Debika Saha.

19. भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद् का 62वो वार्षिक अधिवेशन जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर; राजस्थान में दिनांक 13–15 अक्टूबर, 2017 तक सम्पन्न हुआ। जिसमें लगभग भारतवर्ष के विभिन्न भागों से लगभग 350 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस अधिवेशन के अन्तर्गत दो संगोष्ठियों, पांच विभागीय पत्र–वाचन तथा विशिष्ट व्याख्यान के तहत् करीब 150 आलेख पढ़े गये। इस सारस्वत आयोजन का चिन्तनधारा का विषय 'चरित्र–निर्माण' था। दिनांक 13.10.2017 को 11.30 बजे उद्घाटन सत्र का आयोजन शारदा हाल प्रथम तल पर आयोजन किया गया, जिसमें माननीय विश्व गुरू महामंडलेश्वर परमहंस स्वामी महेश्वरानंद पुरी जी, प्रो. धर्म चन्द जैन, प्रो. जटाशंकर, प्रो.अम्बिकादत्त वर्मा, प्रो. अवतार लाल मीणा एंव 62वां अधिवेशन के सभापति प्रो. आई. एन.सिन्हा द्वारा उपलब्ध किये गये आलेख का वाचन किया गया। भोजनोपरान्त द्वितीय सत्र का आयोजन शारदा हांल, प्रथम तल पर आयोजित किया गया जिसका विषय 'पूर्णवाद् और वेदान्त परम्परा' में डॉ. शैलेश कुमार सिंह, डां. राम बहादुर शुक्ल, डॉ. सुजीत कुमार पाण्डेय, डां. हरिदत त्रिपाठी, डॉ. शरद पारलकर, डॉ. सत्यनारायण अबोती, डॉ. अम्बिकादत शर्मा ने अपना–अपना आलेख प्रस्तुत किया। वही संगोष्ठी का दूसरा विषय 'नारीवादः प्राच्य एवं पाश्चात्य' मूंदडा पूंगलिया हाल, में 3.30 बजे से प्रारंभ हुआ। इस संगोष्ठी की अध्यक्षता प्रो.रामजी सिंह ने की। इस विषय पर डॉ. सुधा चौधरी, डॉ. शोभादेश पाण्डेय, डॉ. शिवनंदन झा, डॉ. शिवपरसन सिंह, डॉ. अनिता ने अपना शोधालेख प्रस्तुत कियां संध्या 5.30 बजे से धनराज राठी हांल में कार्यकारिणी की बैठक सम्पन्न हुआं। दिनांक 14.10.2017 को प्रातः 10 बजे से पांचों विभागों एंव अधिवेशन की चिंतनधारा चरित्र निर्माण पर समानान्तर सत्रों में आलेख वाचन प्रारंभ हुआ। तर्कशास्त्र और ज्ञानमीमांसा विभाग की अध यक्षता डॉ. भरत कुमार तिवारी, नीती दर्शन विभाग की अध्यक्षता डॉ. राज कुमारी सिन्हा, धर्म मीमांसा विभाग की अध्यक्षता डॉ. मुरली मनोहर पाठक, तत्वमीमांसा विभाग की अध्यक्षता डॉ. श्रीप्रकाश

पाण्डेय, समाज दर्शन विभाग की अध्यक्षता डॉ. बी.एन.ओझा, चरित्र निर्माण विभाग की अध्यक्षता डॉ. चन्द्रशेखर के कुशल नेतृत्व में सम्पन्न हुआ। उक्त सभी विभागों में अत्यन्त रोचक एवं गंभीर आलेख प्रस्तुत किये गये। दो समानान्तर सत्रों में संध्या 3.00 बजे से व्याख्यानमालाओं का आयोजन किया गया, जिसमें डॉ. रमाशंकर श्रीवास्तव तुलनात्मक धर्म विज्ञान व्याख्यान, स्व. चम्पादेवी व्याख्यान, प्रो. सगंमलाल पाण्डये स्मृति व्याख्यान, स्वामी प्रणवानंद तुलनात्मक दर्शन व्याख्यान, महर्षि दयानन्द व्याखयान स्वामी नारायण सेश्वर वेदांत व्याख्यान, प्रो. पाण्डेय ब्रहोश्वर विद्यार्थी स्मृति व्याख्यान एंव अंबालाल मूलजी भाई पटेल सर्वागीण जीवन विज्ञान दर्शन व्याख्यान का आयोजन किया गया। दिनांक 15.10.2017 को दर्शन एंव भ्रमण का कार्यक्रम प्रातः 7.45 बजे से प्रारंभ हुआ तथा स्वामी महेश्वरानंद पुरी जी के आश्रम जाडन, पाली में ज्ञान संसद का आयोजन 11.00 बजे से प्रारंभ हुआ। वही 2.00 बजे से समापन सत्र का भी आयोजन किया किया, जिसमें विभिन्न पुरस्कार की घोषणा करते हुए उत्कृष्ट आलेखों के प्रस्तोताओं को पुरस्कृत भी किया गया। तीन दिनों तक चलने वाले इस ज्ञानयज्ञ में विद्वत् जनों ने अपनी–अपनी आहुतियों दीं, सभी ने विभिन्न सत्रों में विचार–मंथन किया, इसके लिए परिषद् की ओर से मंत्री डॉ. श्यामल किशोर ने धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अधि ावेशन की एक सबसे बडी विशेषता यह रही कि इसमें विभिन्न शोध–पत्रों पर अच्छा विमर्श हुआ। बहरहाल, समापन सत्र में विचार–मंथन से निकले कुछ चुने हुए उत्कृष्ट आलेखों को पुरस्कृत किया गया।

VI. PROJECTS

Under its scheme for projects, the ICPR provides financial grants for projects to institutions and individual scholars on the basis of merit of their proposals, which are invited throughout the year. The proposals are put up for assessment on a quarterly basis. The evaluation reports are kept in Research Project Committee (RPC) for final approval and then the financial grants are provided to the grantee as per the terms and conditions to carry out the projects. Sometimes, proposals are also directly evaluated by RPC. In some cases, the ICPR also commissions some specific projects, if competent body approves the same. The manuscripts of the projects are put up for evaluation and, subsequently, for possible publication.

In 2017/18, the following projects were granted financial assistance:

S. No.	Name	Title	Amount (in lakh)
1.	Manish Kumar Jha	Engineering Education: An Exploratory Study	**1.0**
2.	Dr. Anupam Yadav	Epistemology Revisited: Postmodern Discourses, Alternative Forms of Cognition and Interdisciplinarity of Knowledge	**2.0**
3.	Dr. Shuddhatam Prakash Jain	Aaradhana Samuchchaya written by Muni Ravichandra	**1.0**
4.	Dr. Mithan Das	Social Justice: A Comparative Analysis of Ambedkar and Jhankavis	**1.70**
5.	Mrs. Sonu Kapila	Sikh Ethics in Guru Nanak's Bani: Relevance in Present Time	**2.0**
6.	Professor Ghulam Mustafa Khawaja	The Concept of Bondage and Liberation in Kashmir Saivism & Saiva Siddhanta: A Comparative Analytical Study	**3.0**
7.	Dr. Sharda Nain	Gandhi, Ambedkar and the issue of Dalits in Modern India	**2.0**
8.	Dr. Radha R. Sharma	A Study of Ancient Concepts, Faiths and Spiritual Traditions and their Application in Management	**5.0**

From 2016/17, the following projects were continued:

S.No.	Name	Title
1.	Dr. Radhey Shyam Mishra	Vyakaranavedanta-Bhimatma Vimarshah
2.	Dr. Kuheli Biswas	On the works of Acharya Brajendra Nath Seal in the Light of Philosophy & Mathematics
3.	Dr. Naresh Kumar Ambastha	Santhal Cultural & Religion
4.	Dr. Veeranayana	Kannada Translation of Advaita Siddhi
5.	Dr. Sumi Vasudevan	The Changing Cultural Landscape of the Tribal Settlements in way and Attapady: A

		Philosophical Inquiry
6.	Dr. Sangeetha Menon	Beyond Casual Structures: Consciousness and Self Reflection in Kashmir Saivism
7.	Dr. K. S. Kannan	The Philosophy of Anand Coomaraswamy
8.	Prof. Samani Kusumpragya	पञ्चकपाभाष्य हस्तप्रतियाँः सम्पादन एवं अनुवाद
9.	Dr. Aditya Gupta	Advaita, Dharma and National Political Discourse
10.	Dr. Surabhi Verma	A Study relating Consciousness and Spiritual intelligence with Spl. Reference to Kashmir Saivism
11.	Dr. B. Sandeep Balakrishna	Dr. D.V. Gundappa's Life and Legacy as a Philosopher
12.	Dr Sudha Choudhary	Understanding Tribal Life: Some Philosophical Dimensions.
13.	Dr. Samani Shashi Prajna	दृष्टान्त कोश
14.	Prof. Harishchandra Mishra	भक्ति कालीन काव्य में दर्शन की लोकानविति
15.	Samani Him Prajna	Hindi Translation of 4 Sanskrit Commentaries of Acharadev
16.	Dr. Surendra Singh Pokharna	A Comparative Study of Concept of Consciousness in Science and Jain Philosophy
17.	Dr. Merina Islam	A fresh Look into Ek Sarana Nam Dharana, Sankardeva and the Social Role of Neo Vaishnavism in Assam
18.	Dr. Arjun Bharadwaj	A Comparative Study of the Governing Philosophies underlying Ancient Indian and Greek Theatres with Special Reference to Bharata and Aristotic
19.	Dr. Yogesh Kumar Jain	Puran Kosh of Medieval Time
20.	Professor Kantilal Das	Wittegenstein on Religious and Religious Experience
21.	Dr. Kuldip Kumar Dhiman	Trikasasana in Saivagama: the Philosophy of Upayas

Projects – Continued from Previous Years

Sl. No	Name	Title of the Project
1.	Dr. Geeta Manaktala	Theory of Meaning: A Comparative Study of Wittgenstein and Nagarjuna
2.	Ms Dolly Jain	महाभारत में वर्णित विविध गीताओं का दार्शनिक अध्ययन
3.	Dr. Vanlaltanpuia	Overcoming the Metaphysics of consciousness: A new entry into the paradigm of being in Heideggerian Ontological Phenomenology.
4.	Dr. Manjari Chakrabarty	The Epistemic character of material culture
5.	Dr. Arup Jyoti Sarma	Kant's Moral Faith
6.	Dr. Sarita Kar	Ethical Leadership: A Study of MacIntyre and Levinas
7.	Dr. Rekha Ojha	Alternative to Imprisonment in India: An Ethical Perspective
8.	Dr. Jhadeswar Ghosh	Climate Change and Disaster Management: Philosophical Approaches
9	Dr. Sivshankar Mishra	1. Maharshi Agasthya virachit 'Agasthya Samhita' Hindi Bhashaanuvad 2. The Atomic Science in Indian Philosophy
10	Dr. Roshan Ara	Role of Aesthetics in Sufi Persian Tradition with Special Reference to Seyyed Hossein Nasr
11	Dr. Navin Kumar Srivastav	A Comparative Study of Jain Yoga as Depicted in Yogadrasti-samuccaya and Jnanarnavah
12	Dr. Rana Purushottam	Philosophical and Scientific Models of Understanding Consciousness based on Sutta-pitaka
13	Dr. Rahul Kumar Singh	अनेकान्तवाद प्रवेश

VII. ICPR FELLOWS' MEET AND ORIENTATION PROGRAMME

The ICPR Fellows' Meet and Orientation Programme is intended to give a chance to the Fellows of ICPR to interact with senior scholars and renowned resource persons on topics of which they were working. The programme comprises Orientation Lectures by experts and consultation with them. Moreover, the current Fellows' get an opportunity to share their experiences and difficulties about their research work and receive feedback.

In 2017/18, the ICPR Fellows' Meet was organized in November 13-14, 2017 and the ICPR Orientation Programme was organized in March 6-7, 2018. Both the programmes were organized at Gurusharananda Ashram, Raman Reti, Mathura (U.P.). Around Fellows attended the ICPR Fellows' Meet and ICPR Orientation Programme, respectively.

Professor Jatashankar, Professor R.C.Sinha, Professor D.N.Yadav, Professor X.P.Mao, Professor Samani Chaitnya Pragya, Professor Mangla Chinchore, Professor Dr. Arun Mishra along with Professor S.R.Bhatt, Chairman, ICPR and Professor Rajaneesh Kumar Shukla, Member Secretary, ICPR were present in these and guided the Fellows in the programme.

The following ICPR Fellows attended the Fellows' Meet programme and gave their presentation on the topic of their research:

Category	Name	Topic	Fellow
GEN	Abha Tripathi	मानवमूल्य के सन्दर्भ में वैज्ञानिक दृष्टिकोण : एक दार्शनिक गवेषणा	JRF
OBC	Saroj Yadav	मनुष्य की नियति एवं स्वतंत्रता की अस्तित्ववादी अवधारणाः एक आलोचनात्मक अध्ययन	JRF
GEN	Panu Sharma	The Vedanta Philosophy of Narayana Guru and its Relevance to the Contemporary Society	JRF
GEN	Gurpreet Kaur	An Epistemological Study of SabdaPramana with Special Reference to Purva-Mimamsa and Nyaya Schools of Thought	JRF
GEN	Barun Kumar Choubey	Mahatama Gandhi Ke Naitik Darshan Ka Ek Samikshatamak Adhayayan	JRF

GEN	Mansha Pandey	नागार्जुन एवं शंकराचार्य के दर्शन में संवृत्ति की अवधारणा : एक तुलनात्मक अध्ययन	JRF
GEN	Rakesh S	Matter-Spirit Integrality in Sri Aurobindo's Integral Yoga	JRF
GEN	Sheel Kamal Chaurasia	An Analysis of the Concept of 'Detachment' in Indian and Western Philosophy	JRF
SC	Manju Verma	संत रैदास के धार्मिक–सामाजिक दर्शन का समीक्षात्मक अनुशीलन	JRF
GEN	Shagufta Jafri	Social Philosophy of SantKabir: A Critical Study	JRF
SC	Vijay Kumar	बौद्ध दर्शन के विकास में डॉ. अम्बेडकर का योगदान	JRF
OBC	Kalpana Behera	A Study of Sri Ramaraya Kavi's Vedanta Sangraha	JRF
GEN	ArifaAra Begum	The Ethics of Kants and the Teachings of the Bhagavadgita- A Comparative Study	JRF
OBC	Chandra Kishor	काश्मीरशैवदर्शनस्य साम्प्रदायपरम्परापरिशीलनम्	JRF
OBC	Tejram Pal	Gandhi Darshan Ke Samdarshi Nitishastra Ke Ekadash Aadhar (Ek Samikshatamak Adhyayan)	JRF
ST	Ramesh Dheeravath	17th Century Theories of Substance-Those of Descartes, Spinoza and Leibniz: A Comparative Analysis of Metaphysical Approch	JRF
OBC	Pooja	गण्डव्यूहसूत्रस्य समीक्षात्मकमध्ययनम्	JRF
OBC	Pano Kumari	वेदान्तदर्शन में परमसत्ता का विचार (शंकर, रामानुज, मध्व, निम्बार्क एवं वल्लभ के दर्शन के विशेष संदर्भ में)	JRF
OBC	Zoya Nigar	The Place of Reason and Revelation in Islamic Philosophy	JRF
OBC	Ravishankar Kumar	वैदिक एवं समकालीन अध्यात्मवाद : एक समीक्षात्मक अध्ययन	JRF
OBC	Anjali Barman	स्वामी विवेकानंद महात्मागाँधी एवं सर्वपल्ली राधाकृष्णन के धर्म विषयक चिंतन की वर्तमान समस्याओं के परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिता	JRF
OBC	Varsha Chaurasiya	स्वामी योगानंद का दर्शन–एक अनुशीलन	JRF

OBC	Avadesh Kumar	कबीरपंथ के विकास में पारख मार्ग की भूमिका	**JRF**
GEN	Jan Mohammad Lone	Concept of God and World in Ramanuja and Sirhindi: A Comparative Study	**JRF**
GEN	Prem Lata	विश्वेश्वरकृतायाः अष्टावक्रगीताटीकायाः अध्यात्मप्र दीपिकायाः पाठसमीक्षात्मकंसम्पादनंदार्शनिकमध्ययनच्च	**JRF**
GEN	Shashikant Mishra	हिन्दस्वराज के संदर्भ में सामाजिक–राजनीतिक परिवर्तनो ंका समीक्षात्मक अनुशीलन	**JRF**
GEN	Deepak Kumar Pandey	दिनकार्याः गुणनिरुपणस्य समीक्षणम्	**JRF**
GEN	Surinder Kumar Sharma	विज्ञानभिक्षुकृत योगवार्त्तिककासमीक्षात्मक अध्ययन	**JRF**
GEN	Shradha Kumari	महायान की साधनापद्धति : एक दार्शनिक अध्ययन	**JRF**
GEN	Navneet Sharma	योगसाधनोपायों का सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक परिशीलन (पातंच्जल योगसूत्र के विशिष्ट सन्दर्भ में)	**JRF**
GEN	Anjana E.P.	Environmental Ethics- Interpretive Prospects of Sāmkhya Yoga and Buddhism	**JRF**
OBC	Sarla Sahu	The Tendency of Synthesis between Materialism and Spiritualism in the Contemporary Indian Thought with Reference to Shri Aurobindo and Osho: A Comparative Study	**JRF**
OBC	Reeshma E K	Machine Intelligence and the Nature of Consciousness: An Analytic Study	**JRF**
GEN	Jai Shankar Singh	आधुनिक सन्दर्भ में तंत्र दर्शन की मूल्य मीमांसा*	**GF**
GEN	JayantUpadhyay	भारतीय दर्शन में वाक्यार्थ प्रविधि	**GF**
GEN	Satya Narayan Devlia	पुरुषार्थव्यवस्था एवं उसका समसामयिक औचित्य	**GF**
GEN	Ishwar Singh	Concept of Human Nature and Philosophy of Education: A Study with Special Reference to Aurobindo, Krishnamurti and Tagore	**GF**
GEN	Rajeev Kumar Saraogi	Integral Human Philosophy: Modern Circumstances and Scientific Research Born in Perspective of the Worldview	**GF**

OBC	Jahira Khatun	*आधुनिक शिक्षा पाठ्यक्रमो में नैतिक मूल्यों का स्वरूप, महत्व एवं अपेक्षित परिणाममूलक चुनौतियाँ तथा समाधान*	GF
OBC	Akyana Padmaja	Ethical Values of Bhagavad Gita and their Relevance to Contemporary Society	GF
SC	Mousmi Solanki	*मानवकल्याण के लिए धर्म एवं पर्यावरण*	GF
SC	Shaligram Ahirbar	*आधुनिक भारतीय चिन्तन में नव्यवेदान्त : एक समालोचनात्मक अध्ययन (विवेकानंद एवं रामतीर्थ के विशेष संदर्भमें)*	GF

VIII. PUBLICATION

Publication of volumes in philosophy and its allied discipline of study is one of the prominent activities of the ICPR. The ICPR considers the manuscripts produced by its projects, fellowships, seminars and workshops apart from the theme taken for publication by its Research Project Committee. Under its publication programme, the ICPR has revived Dissemination of Knowledge Series and one monograph has been published under this:

(A) ICPR Dissemination of Knowledge Series:

1. ***Indian Spirituality: Theory and Praxis*** by Professor S.R. Bhatt, ISBN - 978-81-89963-08-8

Forthcoming Titles

1. **"Gangesh and Induction in Navya Nyaya"** by H.E. Mr. Jan Luykx - ISBN 978-81-89963-17-6
2. **"न्याय शास्त्रा प्रमाण – लक्षण : स्वरुप एवम् परिस्कार"** डॉ. अरुण मिश्रा द्वारा – आईएसबीएन 978–81–89963–15–6
3. **"Integral Humanism of Pt. Deen Dayal Upadhyaya"** by Professor Ashok Modak - ISBN 978-81-89963-16-6

(B) The 83rd Research Project Committee also approved the publication of five volumes

prepared by Dr. Sushim Dubey, Programme Officer, ICPR during his more than eight years of service to the ICPR under "A Survey on Study and Research in Philosophy in India" series.

1. *History, Development and Status of Philosophy in Indian Universities*, ISBN978-81-89963-10-1
2. *Doctoral Research in Indian Universities*, ISBN 978-81-89963-11-8
3. *Indian Council of Philosophical Research - History and Works* (1981-2013) – ISBN 978-81-89963-12-5
4. *Synthesis of JICPR (Journal of India of Philosophical Research)* – ISBN 978-81-89963-13-2
5. *Teachers & Scholars - Including Abroad in Indian Philosophy*– ISBN 978-81-89963-14-9

(C) *Journal of Indian Council of Philosophical Research*

The ICPR continued to publish its *Journal of Indian Council of Philosophical Research* during the year under report. The volumes brought out are

1. JICPR Volume 34, Number 1 (Jan to April 2017)
2. JICPR Volume 34, Number 2 (May to August 2017)
3. JICPR Volume 34, Number 3 (September to December 2017)

IX. ICPR FOUNDATION DAY CELEBRATION

The ICPR Foundation Day Lecture Programme was organized on 7-8 March 2018. As per the record, the formation of the Indian Council of Philosophical Research took place with its registration under Societies of Registration Act XXI of 1860 on 08 March 1977. The ICPR Foundation Day Lecture Programme was organized on 07-08 March 2018 at Karshni Udasina Ashram, Raman Reti, Mathura on 07 March 2018 and at Delhi office on 08 March 2018.

Prior to this celebration, a series of programme were conducted. These included national seminar on “Ananda Mimamsa” 4-5 March 2018, ICPR Fellow Orientation Programme on 6 March 2018. These programmes were held in Shri Udasina Karshni Ashram, Raman Reti, Mathura. Therefore, the opening programme of ICPR Foundation Day was held at this venue among the ICPR Fellows (Junior Research Fellow, General Fellow, Senior Fellows), the ICPR’s Members, invited participants of seminar on “Ananda Mimamsa”.

Professor Brij Bihari Kumar, Chairman, ICSSR and Professor Arvind P. Jamkhedakar, Chairman, Indian Council of Historical Research, New Delhi were invited as special guest and to deliver Foundation Day Lecture. Professor S.R. Bhatt presided over the programme and this was the first occasion that all the three Chairmans of the Councils got together to celebrate the occasion.

The Foundation Day Lecture Programme started at 11:00 a.m. with lightening of the lamp at conference room of Karshni Ashram. Professor Rajaneesh Kumar Shukla, Member Secretary of the Indian Council of Philosophical Research delivered the welcome address. He highlighted the importance of Indian Council of Philosophical Research, its establishment and its role in making Philosophy in higher education as per ICPR aims and objectives. Dr. Mercy Helen, Director (P&R) then gave a factual accounts towards establishment of ICPR as an organization established primarily for the preservation of pristine glory of Indian Philosophy in our country.

Professor Braj Bihari Kumar, Chairman, ICSSR delivered the Foundation Day lecture. He highlighted the points towards society, philosophy and efficacious role of social sciences with their meeting and melting points with philosophy. Professor Arvind P.Jamkhedkar spoke on the ancient philosophy and Sanskrit which is the basis of Indian Culture and may be traced back in other subjects. He talked about the oldness of Samkhya Philosophy and its historical impact on other systems. Professor S.R.Bhatt, in his presidential address, spoke in details about the important aspects of Philosophy and the works of Indian Council of Philosophical Research.

X. LECTURES BY INTERNATIONAL SCHOLARS AS ICPR VISITING PROFESSORS (OVERSEAS)

With the aim to acquaint Indian scholars with the recent thoughts of leading philosophers as well as to provide opportunities for interaction with them, every year the ICPR organizes national lectures by professors and eminent scholars from India and abroad. Under this scheme, each invited scholar delivers a series of three lectures at least in three to four different universities in India. The following visiting professors delivered the lectures in different places:

Visiting Professor (overseas):

1. Professor Professor Zhen Liu in Central University of Tibetan Studies, Sarnath, Varanasi; BHU, Varanasi; Delhi University, Delhi; Magadh University, Bodh Gaya; University of Pune, Pune

Detail Statement of Lecture Programme of Visiting Professor (Overseas) for 2017/18

S. No.	Name of Lecturer	Name of University	Topic of the Lecture	Date	Amount Paid (Rs)
1.	**Professor Zhen Liu (Overseas)**	Professor Atashee Chatterjee Nee Sinha, Head, Department of Philosophy, Jadavpur University, Kolkata- 700 032		October 26-28, 2017	35,000
2.	- do -	Prof. B.R. Yadav, Head, Department of Philosophy, Magadh University, Bodh Gaya- 824 234	The Maitreyavyakran (in satak form) Evidence for Culture Exchange between China and India	October 31, 2017	35,000/-
3.	- do -	Professor Geshe Ngawang Samten, Vice Chancellor, Central University of Tibetan Studies, Sarnath, Varanasi- 221 007		November 1-5, 2017	35,000
4.	- do -	Professor Balaganapathi Devarakonda, Professor of Philosophy, Department of	The Maitreyavyakarana (in Saaka form) as Evidence for Cultural		

	Philosophy, Delhi University, Delhi- 110 007	Exchange between China and India.	November 07, 2017	35,000
5. - do -	Professor Ravindra Ambadas Muley, Professor in Sanskrit, Centre of Advanced Study in Sanskrit, University of Pune, Ganesh Khinda, Pune- 411 007	Hastika Ksyesutra An Early Mahayana Text.	November 13, 2017	35,000
6. - do -	Dr. Kripa Shankar, Professor & Head, Department of Philosophy & Religion, Banaras Hindu University, Varanasi- 221 005	Some Reflections on an early Mahayana Text. Hastikaksyasutra.	November 03, 2017	35,000
7. - do -	Professor Bindu Puri, Chairperson, Centre of Philosophy, School of Social Sciences, Jawahar Lal Nehru University, New Delhi- 110 067	Some Reflections on an early, Mahayana Buddhist Text Hastikaksyasutra.	November 08, 2017	35,000

BRIEF REPORT OF ACADEMIC EVENTS

1. A lecture by Professor Liu Zhen from Fudan University, China was organized on 31 October 2017 on the topic, "The Maitreyavyakaran (in satak form) Evidence for Culture Exchange between China and India" in the Department of Philosophy, M.U., Bodh Gaya. It was presided over by Professor Qamar Ahsan, Vice-Chancellor, M.U. Bodh Gaya and more than 200 participants belonging to faculty member of different departments, academicians, research scholars, students of different departments including philosophy, and some other social activists and educationists of repute.

2. Lecture programme by Professor Liu Zhen, National Institute for Advanced Humanistic Studies, Director Gandhi Centre, Fudan University, Shanghai, China was held at Department of Philosophy, University of Delhi, Delhi on 7 November 2017. The topic of the lecture was "The Maitreyavyakarana (in Sataka form) as Evidence for Cultural Exchange between China and India". Professor Liu started his talk explaining that the Maitreyavyakarana in Sataka form represents the last phase of the vyakarana serial within the Buddhist literary tradition concerning the figure of 'Maitreya'. In his lecture, Professor Liu discussed the

"Sutra of Rebirth into the (Tusita) heaven". This Sutra preached by the Buddha of Observing Bodhisattva Maitreya's rebirth into the Tusita Heaven". He asserted that while this Sutra is a popular donating/votive object, it is also reasonable that *Maitreyavyakarana* has been written under the name of a Chinese monk. It has only non-Mahayana elements but had been classified as a Hinayana Sutra. According to him, Chinese Buddhist tried to reclassify it into Mahayana section. After such insightful lecture there was an interactive session where the audience participated enthusiastically. The session was wrapped up by Professor Balaganapathi Devarakonda who extended Vote of Thanks to the speaker as well as audience.

3. The Centre for Philosophy, Jawaharlal Nehru University hosted an annual invited lecture organized at the centre. The lecture was delivered by Professor Zhen Liu, Visiting Professor (overseas) ICPR from Fudan University, Shanghai, China. The topic of the lecture was "Some Reflections on an early Mahayana Text Hastikaksya sutra". The lecture was delivered on 8 November 2017 at the committee room of the Centre for Philosophy. The lecture was chaired by Professor Bindu Puri, Chairperson of the Centre for Philosophy. The lecture was attended by a large number of students and faculty members of the Centre was well as invited guests from other institutions in Delhi (such as the Department of Philosophy, Delhi University and Senior Retired Professor of Philosophy). Professor Zhen Liu discussed the "Hastikaksyasutra" which in English means "The sutra on the Elephant's Armpit". The scholar attempted to translate and discuss a newly published Sanskrit fragment of "Hastikaksyasutra" and compare it to its corresponding Chinese and Tibetan translations. During the lecture the speaker examined five versions of this sutra in four languages. He concluded that across the different translations, the metaphor of the power of the elephant remained the primary focus of the text. This metaphor was meant to indicate both the power of this text and the power to be gained by sentient beings who could understand this text. The lecture was followed by a thought provoking and philosophically interesting discussion.

4. In collaboration with the Indian Council of Philosophical Research, Department of Philosophy, Savitribai Phule University, Pune organized ICPR Visiting

Professor (overseas) lecture programme. Professor Zhen Liu, Fudan University, Centre for Gandhian and Indian Studies, Shanghai, China delivered his lecture as ICPR Visiting Professor on 13 November 2017. The programme was chaired by Professor Mahesh Ashok Deokar, HOD, Department of Pali and coordinated by Dr. Mohit Tandon, Department of Philosophy, University of Pune. The venue of the programme was Barlingay Seminar Hall, Department of Philosophy, Ambedkar Bhawan, SPPU. Professor Zhen attempted both to transliterate and translate a newly published Sanskrit fragment of the *Hastikaksyasutra* and compare it to its corresponding Chinese and Tibetan translations. In analysing the Chinese and Tibetan versions, his paper suggested that the content and structure of this text shed some light on the early development of *Mahayana sutra.* After the lecture, academicians raised that important question about the importance of Sanskrit for philosophy. As well as some of the scholars spoke about Buddhism's terminology. The session was highly informative and interesting.

5. Under the scheme "Annual Visiting Professor (Indian) of ICPR", Professor Ravi Gomatam, Director of Semantic Information Sciences & Technology, Berkeley, delivered two lectures on 1 June 2017 at Department of Philosophy, Madras University, Chennai. Professor G. Mishra introduced the speaker and spoke about the outlines of the topics to be dealt with.

Professor Gomatam answered the questions and comments raised by the participants. In the second lecture titled "Science and Reality: Foundational Problems", Professor Gomatam discussed how modern science began in the west with primacy of Mathematics. There was good number of interventions from the audience, consisting of professors, scientists, and ISKCON as well as interested public. Professor Mishra gave a summary of both the lectures and also thanked Professor Gomatam for delivering the lecture at University of Madras. He also thanked the ICPR for the opportunity given to him to organize this event.

XI. LECTURES BY NATIONAL SCHOLARS AS ICPR VISITING PROFESSORS (INDIAN)

S. No.	Name of Lecturer	Name of University	Topic of the Lecture	Date	Amount Paid (Rs)
8.	**Professor Shakuntala Bora (Indian)**	Dr. Nirmal Kumar Roy, Head, Department of Philosophy, North Bengal University, Raja Rammohanpur, Darjileeing- 734 013, W.B.	Dharma: An Analysis in Mokshadharma.	November 08, 2017	35,000
9.	- do -	Prof. Surineni Indira, Associate Professor, Head, Department of Philosophy, Pondicherry University, Puducherry-605 014	Philosophy of Bhagavadgita	January 28, 2018	35,000
10.	- do -	Dr. S. Venkatesh, Chairman, Department of Studies in Philosophy, University of Mysore, Manasa Gangotri, Mysure- 570 006, Karnataka	Philosophy of Jiddu Krishnamurti	March 26, 2018	35,000
11.	**Professor Ambika Datta Sharma**	Indian Council of Philosophical Research, 3/9, Vipul Khand, Gomti Nagar, Lucknow- 226 001	Gandhi, Marks and Heidegger on the Critique of Modern Civilization	December 06, 2017	35,000
12.	- do -	Professor Ram Nath Jha, Head, Special Centre for Sanskrit Studies, J.N.U., New Delhi- 110 017		August, 2017	35,000/-
13.	- do -	Professor Rishi Kant Pandey, Head, Department of Philosophy, University of Allahabad, Allahabad- 211 002, U.P.		September 2017	35,000

OTHERS

S. No.	Name of Lecturer	Name of University	Topic of the Lecture	Date	Amount Paid (Rs)
14.	**Professor Hirosih Marui(Overseas)**	Professor Balaganapathi Devarakonda, Professor of Philosophy, Department of	Did Jayanta Bhatt know the six system of Indian Philosophy ?		

		Philosophy, Delhi University, Delhi- 110 007		November 11, 2017	10,000
17.	**Madam Lushi Gust**	Director (Academic), Indian Council of Philosophical Research, 3/9, Vipul Khand, Gomti Nagar, Lucknow- 226 001 **(International Yoga Day, 2017).**	योग विषयक राष्ट्रीय कार्यशाला – सामन्जस्य तथा शांति के लिए योग. Yoga for Harmony and Peace	June 21, 2017	25,000

BRIEF REPORT OF ACADEMIC EVENTS

1. The Department of Philosophy, University of North Bengal organized a special lecture on "Philosophy of Mahabharata (Moksadharma)" on 8 November 2017, sponsored by the Indian Council of Philosophical Research, New Delhi. The lecture programme brought together more than hundred students, scholars and faculty of the Department of Philosophy. The speaker was Professor Shakuntala Bora of Department of Philosophy, Gauhati University, Annual Visiting Professor (Indian), ICPR, New Delhi. The topic of the lecture was Dharma: An Analysis in Moksadharma. The learned speaker critically analysed what Mahabharata considered dharma. She concluded her lecture by saying that dharma can be understood as virtue so long as no better word come forward to replace it or as long as we do not come across instances where it would be add to replace dharma with it.

2. On 28 November 2017, a lecture was organized by the ICPR, New Delhi at the Department of Philosophy, University of Delhi. The lecture was given by Professor Hiroshi Marui, Professor at Department of Indian Philosophy and Buddhist Studies, Graduate School of Humanities and Sociology, the University of Tokyo, Japan on the subject of "Did Bhatta Jayanta Know the Six Systems of Indian Philosophy?" Professor Marui posed the question, did Bhatta Jayanta, a Kashmiri Naiyayika scholar belonging to the 9th century, knew the Six Systems of Indian Philosophy? In this question lied the genesis of his entire talk, for Professor Marui wanted to contrast the Six Vaidika Systems of Indian Philosophy, namely, *Nyaya, Vaisesika*, *Samkhya*, *Yoga*, *Mimamsa* and *Vedanta* known as *Saddarsana* with several

other sets of six *Darsanas* found in various texts consisting of a combination of *Vaidika* Systems (which are *Nyaya*, *Vaisesika*, *Samkhya*, and sometimes *Mimamsa*) and *Avaidika* Systems (Buddhist view, Jain view and sometimes even *Carvaka*-view). Through his paper, he attempted to challenge the family-established general account of Systems of Indian Thought that have existed since olden times. However, Professor Marui points out that another Set of Systems comprising both *Vaidika* and *Avaidika* systems seems to be older than the firmly established former. After the lecture, there was an interacting session where the audience participated enthusiastically. This was followed by Professor S.R. Bhatt giving this feedback on the talk. The session ended by Professor Balaganpathi Devarakonda giving the Vote of Thanks to the speaker as well as audience.

XII. WORLD PHILOSOPHY DAY

The UNESCO had declared the third week of November as "International Philosophy Day" to commemorate the birthday of Socrates. Accordingly, the ICPR sent circulars to all Departments of Philosophy to celebrate the day by organizing a lecture progamme or a symposium or a seminar or a panel discussion or any other programme. The following institutions celebrated the day in a befitting manner with financial assistance of Rs 20,000 from the ICPR during 2017/18.

SELECTED PROPOSALS FOR CELEBRATION OF WORLD PHILOSOPHY DAY, 2017

S. No.	Name & Address	Topic	Date
1.	Dr. Arupjyoti Choudhury, Dean Academic, Department of Philosophy, School of Social Sciences, Krishna Kanta Handiqui State Open University, Housefed Complex, Dispur, Last Gate, Guwahati- 781 006	Philosophizing on the Environment by Professor Sauravpran Goswami.	December 29, 2017

2. N. Sridhar, Assistant Professor, Department of Sanskrit, SCSVMV University, Enathur, Kanchipuram, Tamilnadu – 631561	1. Vedantasara by Dr. Mani Dravid Sastri 2. Sankhyakarika by Dr. K.E. Dharaneedharan	January 31, 2018
3. Dr. G. Jayamanikya Shastri, Associate Professor, Department of Nyaya Darshan, Shri Jagannth Sanskrit Vishvavidyalaya, Shri Vikas, Puri – 752003	दीपिकायां हेत्वाभा सलक्षणविवेक. – प्रो0 कमलेश मिश्र	March 13, 2018
4. Dr. Dayamoy Maji, TIC & Assistant Professor of Philosophy, Bankura University, Main Campus (Beside NH-60), Bankura Block – II, P.O.: Purandarpur, Dist. Bankura – 722155	* State Level Seminar on "Philosophy of Language: Indian and Western" 1. Indian Philosophy of Language – Professor Pradyot Kumar Mandal1. Religion Language in the Western Philosophical Perspective – Professor Sirajul Islam 2. Western Philosophy of Language – Dr. Tafajol Hossain 3. Nyaya Theory of Language – Dr. Dipayan Pattanayak4.	January 15, 2018
5. Dr. Jyotsna Saha, Department of Philosophy, University of Gour Banga P.O. Mokdumpur, Dist. Malda - 732103	One-day National Symposium on "Philosophy of Man and Environment". 1. Can Man go beyond Anthropo-centrism? : A Discourse from Indian Philosophical Perspectives on Environment by Professor Uma Chattopadhyaya. 2. Man and Environment: The Spiritual Angle by Professor Sibnath Sarma	December 19, 2017
6. Dr. Patitapaban Das, Department of Philosophy, Ravenshaw University, Cuttack- 753 003, Odisha.	Man & Environment : A study inthe Light of Buddhist Ethics by Dr. Tapan Kumar De	January 30, 2018

7.	Dr. P. Balachandran, Associate Professor & Head, School of Philosophy, Tamil University, Thanjavur – 613010 Tamil Nadu, India	1. One day seminar on "Philosophy of Man and Environment" A. Philosophy of Man and Environment by Dr. S. Rajendran. B. Philosophy of Tamil Siddhaas by Dr. T.N. Ganapathi	February 07, 2018
8.	Dr. Namita Nimbalkar, Associate Professor, Department of Philosophy, University of Mumbai, Jnaneshwar Bhawan, First Floor Vidyanagari Campus, Santacruz (East) Mumbai- 400 098	One day symposium on "Comparing the Traditions of Sri Vaishnavisim and Vallabha Vedanta"	December 1, 2017
9.	Dr. Dipayan Pattanayak, Associate Professor & Ms. Rubai Saha, Assistant Professor, Department of Philosophy, Jadavpur University, Darshan Bhvan, Kolkatta – 700032, West Bengal	One-day state-level seminar on "Comparative and Critical Study of the Philosophical Systems". 1. Critical reflection on the Philosophy of Professor Pranab Kumar Sen by Professor Nirmalya Narayan Chakraborty 2. The Concept of Caitanya in Nyaya Philosophy by Professor Srilekha Dutta.	November 18, 2017
10.	Shri Ashish R Sangle, Assistant Professor,Department of PhilosophyAmbedkar Bhavan, Savitribai Phule Pune University, Ganesh Khind Road, Pune-411007	Ancient Indian Political Thoughtsin Arthashastra by Professor Subhada Joshi	February 05, 2018
11.	Dr. E. Ravi Kumar, Assistant Professor & Head Dept. of Saiva Siddhanta Philosophy, Madurai Kamraj University, Madurai – 625021, Tamil Nadu	Seminar on "Human Values and Professional Ethics". 1. Human Values by Dr. S. Seshuraja. 2. Medical Ethics by Dr. Arul Arasau. 3. Ethics of Teachers by Dr. C. Premkumar	March 23, 2018
12.	Professor Bindu Puri, Chairperson, Jawaharlal Nehru University School of Social SciencesCentre for		March

	PhilosophyNew Delhi – 110067		01, 2018
13.	Dr. Radhika Mohan Pathak, Assistant Professor, NMU's Pratap Center of Philosophy Amalner, Dist. Jalgaon,- 425 401, Mahrashtra.	1. World Philosophy: Nature and Development by Dr. A.N. Mali. 2. संत साहित्याद्वारे मूल्य शिक्षण – कालाची गरज––डॉ0 सौ. अनुराधा सुधीर कुलकर्णी. 3. सध्याची शिक्षण पद्धति कुलकामी ठरत आहे का.––सौ. हेमलता जगन्नाथनवेट. 4. जीवन मूल्यापासून विद्यार्थी दूर जात आहेत काय.– कमर शंकरराव सोनवणे. 5. वर्तमान शिक्षण पद्धति कुचकामी ठरत आहे का .– पूजा राजूकोली.	March 06, 2018
14.	Dr. Siby K. George, Associate Professor, Department of Humanities and Social Sciences (HSS), Indian Institute of Technology Bombay, Powai, Mumbai- 400 076, Maharashtra	Theme: Philosophy and Every-dayness. 1. Feminist Art and the Every day: Rethinking the Political by Dr. Kanchana Mahadevan. 2. Living Life Care – Fully Recognition, Circumspection, Benediction by Dr. Keith D'Souza.	November 17, 2017
15.	Professor Kanchan Saxena, Head, Department of Philosophy, University of Lucknow, Lucknow- 226 007	Self Respect as a Basic Mark of Morality by Professor R.R. Verma	November 15, 2017
16.	Prof. Pardeep Kumar, Head, Department of Philosophy, Punjabi University, Pataiala- 147 002, Punjab	Relevance and Significance of Philosophy in Everyday Life. – Professor Sataya. P. Gautam	November 16, 2017
17.	Dr. Bhupendra Chandra Das, Professor, Department of Philosophy and the Life-World, Vidyasagar University, Midnapore, PS-Kotwali, Paschim Medinipur, West Bengal-771102	State Level Seminar on "Philosophy, Science and Technology" 1. Philosophy, Science & Techno-logy by Professor N.N. Chakraborty 2. The Philosophy of Science. by Professor A.K. Mishra	December 21, 2017
18.	Dr. Kuheli Biswas, Assistant Professor, Department of Philosophy, University of	One-day national seminar on "Theories of Truth and Knowledge" 1. Language, Cognition, World and	

	Kalyani, Kalyani, Nadia, Dist. Nadia- 741 235, India	Meaning : Some Problems by Professor Probal Kumar Sen. 2. A Plea for Philosophy by Professor Gopal Chandra Khan	February 27, 2018
19.	Dr. Bhikhari Ram Yadav, Head, P.G. Department of Philosophy, Magadh University, Bodh Gaya-824 234	विषय : वर्तमान चुनौतियां एवं सांस्कृतिक मूल्य.	March 31, 2018
20.	Dr. Nirmal Kumar RoyHead, Department of Philosophy University of North Bengal PO North Bengal University Raja Rammohunpur, Dt. Darjeeling,Best Bengal - 734013	The Theories of Truth and Knowledge: A Study in Linkages by Professor Manjulika Ghosh	November 16, 2017
21.	Professor Anil Kumar Tiwari Asst. ProfessorDepartment of Philosophy & Culture Shri Mata Vaishno Devi University, Katra, Jammu & Kashmir – 182320	1. "Basic Values Embodied in Indian Culture and Their Relevance to National Reconstruction" by Dr. Anil Kumar Tiwari 2. Social Cultural Issues in India and their Relevance to National Renovation by Dr. Ravi Kuamr 3. The Grammar of Secularising by Dr. Anil Kumar Tiwari 4. Comparison and Peaceful Co-existence by A. Bernstein 5. Humans Rights by Dr. Sumanta Sharma	December 14, 2017
22.	Professor Kedar Nath Sharma, Department of Sanskrit, University of Jammu, Jammu	1. Basic Values in Indian Culture 2. to National Reconstruction by Dr. Anil Tiwari	November 16, 2017

1. The Department of Philosophy, Punjabi University, Patiala celebrated World Philosophy Day with great enthusiasm by organizing a special lecture on this occasion on 16 November 2017 in the Senate Hall of the University. The theme of the lecture was "Relevance and Significance of Philosophy of Everyday Life". Professor Satyapal Gautam, Former Vice-chancellor, Jyotiba Phule Rohilkhand University, Bareilly (UP) was the main speaker at the function. Dr. Jatinder Kumar, Assistant Professor, Department of Philosophy welcomed the dignitaries

on the dais as well as the audience. Professor Gurdip Singh Batra, Dean Research, Punjabi University, Patiala presided over the function. Professor Gautam, the chief speaker said, “Philosophy deals with making the obvious more obvious. It relates to conceptual investigation of various ideas or thoughts to find meaning in life through argumentation than narration that happens to be the domain of literature”. Dr. G.S. Batra, Dean Research, in his presidential address said philosophical thoughts should be directed towards attaining a human face that could help solve various critical and complex societal problems. Dr. Praminder Kaur, Assistant Professor, Department of Philosophy, presented the vote of thanks to all who contributed significantly to make this programme a success.

2. The Department of Philosophy, University of North Bengal observed World Philosophy Day on 16 November, 2017, sponsored by Indian Philosophical Research, New Delhi and University of North Bengal. The programme was conducted in three parts. In the Inaugural session. Dean of Arts, Conference and Law, Dean of Science, Head of the Department, North Bengal University. After the welcome address by HOD, both the Dean presented their speech.

   After a short break the main academic session started. Professor Manjulika Ghosh delivered her speech on “The Theories of Truth and Knowledge” and the session was chaired by Professor Debika Saha. At the end of the talk, students and faculty took part actively in the discussion.

   After the lunch break, academic session again resumed. Extempore speech and debate contests by students and scholars were the main attractions of the programme. After the contest, prizes were distributed by the teachers of the department. The day ended with vote of thanks to all the participants and the sponsoring authorities.

3. Department of Philosophy, MMD College celebrated World Philosophy Day sponsored by the ICPR on 16 November 2017. The programme consisted of an invited one-day lecture and bringing out of the departmental magazine of the Department of Philosophy, MMD College. The programme was presided by Dr. Thaiu Mog, Principal-in charge, MMDC and inaugurated by Shri Apan Dutta, Advocate, Sabroom Bar Council who was also the Chief lecturer of the

programme. Dr. Sucharita Chaudhuri, HOD, Department of Philosophy in her welcome address briefed the aims and objectives of the observance. Sri Subir Basak, Secretary, Teachers' Council addressed the gathering focusing on the importance of cultivating rational thinking, especially among the youth of the society. Sri Apan Dutta, Advocate, Sabroom Bar Council discussed the role of the youth in maintaining discipline and order in social life. He also emphasized on the participation of the young generation in social works as far as practicable. Dr. Thaiu Mog, in his presidential address, expressed great pleasure for being part of a world-wide observance. Besides, he suggested the students to be very logical in very action of life.

4. On 18 November 2017, Pranab Kumar Sen Memorial Award Ceremony and an ICPR sponsored one-day state-level seminar on "Comparative and Critical Study of the Philosophical Systems" was organized to commemorate World Philosophy Day. It was organized at Darshan Bhavan, Department of Philosophy, Jadavpur University. The programme was inaugurated by the Head of the Department of Philosophy, Jadavpur University who delivered a welcome address. The song of Philosophy was sung by Professor Gangadhar Kar and his team. Next, an introduction to the award was given by the dignitaries. Professor Sadhan Chakraborty, Hon'ble Vice Chancellor of Kazi Nazrul University spoke on Late professor Pranab Kumar Sen. The Pranab Kumar Sen Memorial Award was conferred to two candidates: Ms. Annie Mukherjee and Ms. Nandini Kar who are toppers in M.A. first and second semester examinations jointly. Professor Nirmalya Narayan Chakravorty, Professor of Philosophy and Dean, Faculty of Arts, Rabindra Bharati University delivered the lecture on late Professor Sen's philosophy, science and ideology. The session was chaired by Professor Madhabendranath Mitra, former Professor of Philosophy, Jadavpur University. In the post-tea session, Professor Srilekha Datta, former Professor of Philosophy, Jadavpur University delivered a lecture on "A Critical Appraisal on Nyaya Theory of Consciousness". This session was chaired by Professor Tapan Kumar Chakraborty, former Professor of Philosophy, Jadavpur University. In the post-lunch session, Professor Priyambada Sarkar of the University of Calcutta delivered a lecture on Rabindranath and Wittgenstein. This session was chaired

by Professor Shefali Moitra former Professor of Philosophy, Jadavpur University. The programme ended with a vote of thanks by Dr. Dipayan Pattanayak and Smt. Rubai Saha.

5. The Department of Philosophy and the Life-world, Vidyasagar University, Midnapore, West Bengal organized state-level seminar on "Philosophy, Science and Technology" held on 21 December 2017. The seminar was organized under the celebration of the World Philosophy Day 2017. Professor Subreta Kumar De, Dean Post-Graduate Studies of Science, Vidyasagar University was the Chairperson. The welcome address was given by Dr. Papia Gupta, Head, Department of Philosophy and Life-world, Vidyasagar University. The vote of thanks was given by Dr. Tapan Kumar De, Associate Professor, Department of Philosophy and the Life World, Vidyasagar University. The department took an initiative to plant saplings as a part of the inauguration, to kindle environmental awareness in the students of university. Sapling a plant became an active part as well as a custom of any inaugural ceremony of Vidyasagar University. Professor Ajay Kumar Mishra, Professor, Department of Chemistry and Chemical Technology, Vidyasagar University spoke on "The Philosophy on Science". Professor Nirmalya Narayan Chakraborty, Department of Philosophy and Dean, Faculty of Arts, Rabindra Bharati University delivered his lecture on "Philosophy, Science and Technology". This was followed by question-answer session.

6. The Department of Philosophy, University of Gour Banga organized a national symposium on "Philosophy of Man and Environment" in accordance of celebrating the World Philosophy Day on 19 December 2017. The World Philosophy Day celebration started with welcoming the resource persons Professor Sibnath Sarma and Professor Uma Chattopadhyaya and the IQAC Director of the University Professor Amit Bhattacharya. Dr. Jhadeswar Ghosh, Head of the Philosophy Department, UGB welcomed the resource persons and teachers from different disciplines and colleges. He laid focus on the significance of the World Philosophy Day that is recognized by the UNESCO. He also appreciated the ICPR for extending financial support. In the first academic session, Professor Uma Chattopadhyay (Formerly, Calcutta University) delivered her scholarly speech on "Can Man go beyond Anthropocentrism?: A Discourse

from Indian Philosophical Perspectives on Environment" In the second academic session, Professor Sibnath Sarma (formerly, Gauwhati University) in his presentation delivered a speech on "Man and Environment: the Spiritual Angle". The faculty members of other departments of university, teachers from colleges, and the students participated by giving opinion on the lectures, asking questions, and the faculty members of the host department also gave their philosophical views in the entire discussion. Dr. Jyotsna Saha, Associate Professor and Coordinator of the symposium, offered vote of thanks at the end.

7. The World Philosophy Day 2017 was celebrated in the Department of Philosophy, Ravenshaw University on 30 January 2018 sponsored by the Indian Council of Philosophical Research, New Delhi with a one-day national seminar on "Contemporary Relevance of Buddhist Ethics". Professor Ishan Kumar Patro, Honorable Vice-Chancellor, Ravenshaw University; Professor Prafulla Kumar Mohaptra, Former Head, Department of Philosophy, Utkal University, Vani Vihar, Bhubaneswar; Professor Tapan De, Department of Philosophy and Religion, Vidyasagar University, West Benal; Dr. Manoj Kumar Panda, Presidency University, Kolkata; Dr. Atreyee Mukherjee, Department of Philosophy, West Bengal State University, Kolkata were the dignitaries present on the ocassion. Also present were teachers from different universities and colleges as well as different departments of Ravenshaw University, scholars, researchers and students from various institutes and centres in the event. The welcome address was delivered by Dr. R.C. Majhi, Department of Philosophy. Dr. Patitapaban Das (Head) explicated the theme of the seminar topic which was a short but thought provoking. Professor P.K. Mohapatra, the keynote speaker, said that in Buddhist thought the central issue in life is neither philosophical in the sense of resolving ultimate mysteries nor religious in the sense of workshop, grace and salvation. Professor Ishan Kumar Patro, Vice Chancellor, Ravenshaw University, and the president of the seminar, talked about the relevance of Buddhist philosophy in the 21st century. Professor Tapan Kumar De delivered his lecture on "Man and Environment: a Study in the Light of Buddhist Ethics". Dr. Atreyee Mukherjee talked about "Analysing Buddhist Concept of Karun vis-a-vis Empathy". Dr. Manoj Kumar Panda delivered his talk on "Experience, Ethical

Agency and the Act of Theorizing". Dr. Pragyanparamita Mohapatra spoke on "What we ought to be? Ethical significance of Buddha's Teachings". The programme was brought to an end by thanks from Dr. Nandini Mishra, Department of Philosophy.

8. The Department of Sanskrit & Indian Culture of Sri Chandrasekharendra Saraswathi Viswa Mahavidyalaya (SCSVMV – Deemed to be University) celebrated the World Philosophy Day with the financial support of the ICPR. On this occasion, a workshop on "Vedantasara and Sankhyakarika" was organized by the department. Dr. Mani Dravid Sastri, Madras Sanskrit College, Chennai was Chief Guest for the occasion. Professor V.S. Vishnu Potty, Hon'ble Vice-chancellor, SCSVMV gave the presidential address and Professor G. Srinivasu, Registrar, SCSVMV and Professor S. Ramakrishna Pisipaty, Dean, Faculty of Sanskrit & Indian Culture felicitated the gathering. Dr. Debajyoti Jena, Head, Department of Sanskrit & Indian Culture welcomed the guests and the participants. The workshop had four sessions, discussing the texts *Vedantasara* and *Sankhyakarika* in two sessions each. In the forenoon, discussions over *Vedantasara* was held. Dr. Mani Dravid Sastri, expert in Vedantasara (the text for the beginners in Advaita Vedanta Philosophy, authored by Sadananda) explained the topics in brief. In the afternoon, Dr. K.E. Dharaneedharan, Associate Professor, Department of Sanskrit, Pondicherry University was the expert for Sankhyakarika. At end of the each sessions, question and answer session was organised. Dr. N. Sridhar, Assistant Professor, Department of Sanskrit & Indian Culture was the coordinator for the programme.

9. World Philosophical Day was organized in Department of Philosophy, Savitribai Phule Pune University on 5 February 2018. The theme for the function was "Ancient Indian Political Thoughts". Professor Shubhada Joshi (Director, Chanakya International Institute of Leadrship Studies, University of Mumbai, Mumbai) and Professor Sadanand More (Former Head, Department of Philosophy, SPPU) were invited on the occasion. The programme was attended by eminent persons including Professor Pradeep Kokhale, Professor Mangala Chindore, Professor K.C. Rauta, Professor Lata Chhatre and others. Professor Shubhada Joshi spoke on "Political Thoughts in Arthashastra". She spoke about

developing leadership qualities that can be essential from family level up to international level with the help of Arthashastra studies. The Chairperson, Professor Sadanand More delivered remarks on Joshi's talk and spoke on how political thought are found in other schools and texts of ancient times. In the event, students and faculties of department from Savitribai Phule Pune University and other departments another university were present.

10. World Philosophical Day was jointly celebrated with full of energy on 6 March 2018 with the Indian Council of Philosophical Research, New Delhi at Pratap Centre of Philosophy Amalner Maharashtra. Dr. D.S. Suryawanshi (Principal, Vidyavardhini College, Dhule) and Jyoti Rane (Principal, Pratap College, Amalner) were the Chief Guests for the programme. Dr. A.N. Mali and Dr. Arunadha Kulkarni were main speakers of the programme. The honorary Director of Pratap Centre of Philosophy, Dr. S.R. Choudhari was the Chairman of the inauguration function. Dr. Archana Degaonkar, HOD, Department of Social Sciences, North Maharashtra University, Jalagon and Dr. Radhia Mohan Pathak, Assistant Professor organized the programme. Dr. D.S. Suryawanshi gave the presidential speech and focussed on the tradition of "Guru-Shishya" in our culture. Dr. Jyothi Rane deliberated on the importance of "Guru-Shishya" in our culture. Dr. Jyoti Rane highlighted the importance of "Philosophy and Language" in her speech.

11. The Department of Philosophy, University of Kalyani, organized an ICPR-sponsored one-day national seminar on "Theories of Truth and Knowledge" to celebrate "World Philosophy Day" at Vidyasagar Sabhagriha, University of Kalyani, Administrative Building, Ground Floor on 27 February 2018. The keynote address was delivered by Professor Prabal Kumar Sen, Former Professor, Department of Philosophy, Calcutta University. In the second academic session, Professor Gopal Chandra Khan, Former Professor, Department of Philosophy, Burdwan University delivered a lecture on "A Plea for Philosophy" in which he discussed the usefulness and relevance of Philosophy. In the third academic session, Professor B.K. Swain, Retd. Professor, Department of Sanskrit, Puri Jagannath University delivered a lecture on "Philosophy and its Dimension". The fourth academic session consisted of paper presentation. In this session

various teachers and research scholars presented their paper. The seminar ended with a vote of thanks.

XIII. PERIODIC LECTURES

The ICPR organizes periodical lectures every year by different colleges and universities for the promotion of philosophy among the young students of different cities of India on a low cost budget. During 2017/18, the ICPR gave financial assistance of Rs.10,000 to each college/institute for organizing periodical lectures in different places. The details are as follows:

S. No.	Name & Address	Topic	Date
1.	Dr. Anupam Jash, Head, Department of Philosophy, Bankura Christian College, Bankura, West Bengal - 722 101	1. Realism and the Principle of Bivalence by Professor Mamta Bandhopadhyay 2. Ecology and Environmental Consciousness from the Perspective of Buddhist Tradition by Dr. Samar Kr. Mandal	March 14, 2018
2.	Dr. (Maj) Madan Mohan Das, Associate Professor & Head Department of Philosophy, Salipur Autonomous College, Salipur - 754 202	1. Environmental Ethics: An Overview. by Dr. Harish Chandra Sahoo 2. Professional Ethics of Doctors by Dr. Bibhu Prasad Patra	January 18, 2018
3.	Dr. Purnima Das, Assistant Professor Maynaguri College, Maynaguri, Jalpaiguri, West Bengal– 735224	1. Role of Language in Logic by Professor Kantilal Das 2. The Concept of Lakshana in Nyaya Philosophy by Professor Raghunath Gosh	February 12, 2018 to March 10, 2018
4.	Dr. Harishchandra Sahoo HOD Philosophy B.J.B. (A) College Bhubaneswar, Pin: 751014	1. Environmental Ethics by Professor S.K. Mohanty 2. Inter-Religious Harmony and Peace by Professor Dhaneswar Sahoo	

	3. Business Ethics & CSR by Dr. Sudhir Kumar Das	January 15, 2018
5. Dr. R.K. Behera, Associate Professor, Head, Department of Philosophy, Patkai Christian College (Autonomous), Chumukedima, Nagaland- 797 103	"Relevance of Philosophy and Role of Philosopher". 1. Gandhi's Philosophy of Ahimsa by Dr. Anjan Krmar Behera 2. Human Advancement and Ecological Concern: A Perspective from the Philosophy of Deep Ecology by Dr. Policarp Xalxo 3. Preventing Suicide: Ethics, Programmes and Practices by Dr. C.P. Anto	February 20, 2018, December 26, 2018, and March 8, 2018
6. Dr. Nirankush Chakraborty, Assistant Professor & HOD Dept. of Philosophy, Gazole Mahavidyalaya, Malda, W.B.	1. Gandhian Conception of Non-violence and its Relevance to Environmental Crisis by Dr. Jhadeswar Ghosh 2. The Concept of Ahimsa in Indian Tradition by Professor Raghunath Ghosh	March 16, 2018
7. Mrs. Suman Mahajan, Associate Professor, Department of Philosophy, MCM DAV College for Women, Sector – 36/A, Chandigarh- 160 036.	1. Environmental Ethics of Individual and Collective Responsibility to Save the Planet Earth by Professor Pitam Singh.	January 18, 2018
8. Dr. Mohin Mohammad, Department of Philosophy, Christ College, Cuttack-753 008	1. World Peace and Inter religious Harmony by Professor Dhaneswar Sahoo 2. Is Wittgenstein Paradoxical ? by Neelamani Sahoo 3. The Pre-Socratics: A Mode of Philosophical Inquiry by Dr. Sachindra Paul	February 9, 2018
9. Dr. Amita Pandey, Associate Professor, Iswar Saran Degree College, Allahabad University, Allahabad- 211 004	1. धर्म निरपेक्षता पर प्रो0 संगम लाल पाण्डेय का दृष्टिकोण. – प्रो0 जगत पाल. 2. कश्मीर समस्या का नैतिक एवं दार्शनिक दृष्टिकोण. – प्रो0 एच.के. शर्मा. 3. श्रीमद्भगवद्गीता का दार्शनिक दृष्टिकोण. – प्रो0 जटा शंकर तिवारी.	January 19, 25, 2018 and February 08, 2018

10.	Dr. Uma Maheshwari Shankar, Vice Principal & Head, Department of Philosophy, S.I.E.S. College of Arts, Science & Commerce, 83/84, 106 & 107, Jain Society, Sion (West), Mumbai- 400 022.	1. Episteme and Wisdom: Dimensions of Knowledge in Indian Tradition by Dr. Meenal Katarikar 2. Kautilya's Arthashastra – Rediscovering the Philosophical Dimension by Dr. Radhakrishnan Pillai 3. Alanpur and Aesthetics: A Confluence by Dr. Radha Kumar 4. Philosophical Cancelling – A Blueprint to do Philosophy by Dr. Suchitra Naik	January 08 and January 18, 2018 and February 01 and February 15, 2018
11.	Dr. Bharat Malakar, Assistant Professor & Head,Department of Philosophy, Mahishadal Girls College, Under Vidyasagar University, VIII-Rangibasan, Dist – Purba Medinipur, West Bengal – 721628	1. Russell on Transformation of Language by Professor Tapan Kr. De 2. The Indian Theories on the Method of Determining Sentence – Meaning by Dr. Mainak Pal	December 22, 2017
12.	Major Dr. Manmeet Kaur Sodhi, HOD., Department of Philosophy, Navyug Kanya Mahavidyalaya, Rajendra Nagar, Lucknow-	1. Problem of Evil by Professor Rakesh Chandra 2. Role of Women in History by Dr. Yogesh Praveen	February 16, 2018
13.	Dr. R. Lekshmi, Assistant Professor of Philosophy Govt. College for Women, Thiruvananthapuram, pin – 695014.	1. Animal Rights and Welfare and its Ethical Implications with Special Reference to Peter Singer by Dr. Prabhu 2. Paradoxes: The Acid Test for Truth by Dr. E. Rajeevan 3. Philosophical Paradigms of the Disabled by Dr. Savitha A.R.	December 18, 2017, January 12, 2018 and February 12, 2018
14.	Dr. Niranjan Haloi, Head, Department of Philosophy,D.K.D. College, Dergaon, Dist. Golaghat (Assam), Pin – 785614	1. Relevance of the Teachings of the Bhagavadgita in the Present Day Context by Dr. Girish Baruah	February 19, 2018
15.	Dr. Rajni Sinha, Head Dept. of Philosophy, K.C.E. Society's Moolji Jaitha College, Jalgaon (M.S.) - 425002	Sartre's Concept of Self by Dr. Vaijayanti Belsere सार्त्रची स्व ची संकल्पना.	February 28, 2018

16.	Dr. Chetna Gupta, Assistant Professor, Department of Philosophy, Shyama Prasad Mukherji College for Women, Road No: 57, West Punjabi Bagh, New Delhi – 110026	1. Place of Philosophy in Counselling by Professor Balaganapathi Devarkonda 2. Complexities and Conflicts within the Purusartha Scheme: Searching for Resolutions by Professor H.S. Prasad	March 16, 2018
17.	Dr. Sudhanshu Shekhar, Assistant Professor, Department of Philosophy, T.P. College Madhepura, Bihar 852113	1. धर्मनिपेक्षता की अवधारणा – डॉ प्रभु नारायण मंडल 2. घार्मिक सहिष्णुता एंव सर्वधर्म समभाव – डॉ नरेश कुमार अम्बष्ट 3. वेंदाती समाजवाद – डॉ. जटाशंकर 4. सीमांत नैतिक और सामाजिक न्याय	March 20-21, 2018
18.	Dr. Rama Rani, Convener & Head, Department of Philosophy, C.M.P. College, Mahatma Gandhi Marg, Allahabad – 211002	1. Religious Practices: A Critical Examination by Professor Rishi Kant Pandey 2. Gandhi and Marx: A Comparative Study by Professor H.S. Upadhyaya 3. Philosophy of Yoga by Professor Jata Shankar.	January 18, January 25, January 29, 2018
19.	Dr. (Mrs.) Rekha Yadav, Department of Philosophy, Samrat Prithvi Raj Chouhan Govt. College Ajmer, Maharshi Dayanand Saraswati University, Ajmer	1. भारतीय दर्शन के पाठन की भारतीय पद्धति एवं देशज आधुनिकता. – प्रो0 अम्बिका दत्त शर्मा. 2. बौद्ध दर्शन के प्रस्थानों के सैद्धान्तिक मतभेद और एकवाक्यता के मूलभूत सूत्र. – प्रो0 अम्बिका दत्त शर्मा.	January 20, 2018
20.	Dr. S. Manikandan, Aghurchand Manmull Jain College, Department of Philosophy, Meenambakkam, Chennai – 600114	1. Environment and Religion by Dr. S Krishnan 2. Jainism in the Contemporary World by Dr. B. Umapathi Jain. 3. Philosophy: Methods and Practice by Dr. R. Murali.	February 08, 2018
21.	Dr. Bijaya Kumar Nayak, Lecturer in Philosophy,Department of Philosophy and Critical Thinking.U.N.(AUTO), College of Science And Technology, Prachunana Pitha, Adaspurm Cuttack, Odisha – 754011	1. The Human Ecology and Philosophical Concern by by Dr. Bijayananada Kar 2. On the Jaina View of Karma by Dr. Namita Kar. 3. A Note on Plato's Philosophy of Mathematics	November

		by Dr. Sachindra Raul	16, 2017
22.	Dr. Tripti Dhar, Head, Assistant Professor in Philosophy,Vivekananda College, 269, Diamond Harbour Road, Thakurpukur, Kolkar–700063	"Status of Women in Buddhism" 1. Evolutionary Concepts of Buddhist Emancipation and Women: A Study from Pali Literature by Professor Aiswarya Biswas. 2. Status of Woman in Buddhism an Overview by Bhikkhu Sumanapal	January 30, 2018
23.	Dr. Soumya R.V., Assistant. Professor, Department of Philosophy, S.N. College, Cherthala	Topic: Practical Implications of Indian Philolsophy 1. Revisiting Practical Aspects of Indian Philosophy by Dr. Unnikrishnan P. 2. Practical Implications of Heterodox Systems in India by Dr. Radharani P. 3. Doing Philosophy: Traditions in India by Dr. Gasper K.J.	February 19, 2018, February 27, 2018 and March 02, 2018
24.	Mrs. Nibedita Bezboruah, Associate Professor, HOD, Philosophy, J.B. College, (Autonomous), Jorhat, Assam – 785001	Relevance of the Philosophy of Gandhi in the Present Society by Professor Manisha Baruah	March 17, 2018
25.	Dr. Lakshman Patra, HOD Philosophy, Department of Philosophy, V.D. (AUTO) College, Jeypore, Korapot	Topic : Value Education 1. Concept and Objectives of Value Education. by Professor Ratanakar Gajendra. 2. Value Education: Eastern and Western by Professor Amulya Mahapatra.	February 28, 2018
26.	Dr. Nrusingha Charan Samantory, Sr. Lecturer –Philosophy, S.V.M.(A) College, Jagatsinghpur, Odisha- 754 103	1. Intergral Yoga of Sri Aurbindo by Dr. H.C. Sahoo 2. Swami Vivekananda on Practical Vedantaby Dr. B.K. Das 3. Action, Freedom and Responsi-bility from the perspectives of Bhagwad Gita by Sri. B.N. Nayak	March 20, 2018
27.	Dr. Narmada Kumari Parida, Assistant Professor in Philosophy, Shailabala Women's Autonomous College, P.O. Buxi Buzar, Cuttack – 753001	1. Value, Normativity and Natural World by Dr. Manoj Kumar Panda. 2. Value in Environment by Professor Saroj Kumar Mohanty	January 05, 2018

28.	Dr. Rajinder Kaur, Assistant Professor Philosophy, Pt. Mohan Lal SD College for Women, Kahnuwan Road, Gurdaspur-143 521	Seminar on "Imbibing of Moral Values: Need of the Hour" by Dr. Neeraj Kr. Sharma, Dr. Manvinder Singh, Dr. Pawan Kumar	February 24, 2018
29.	Dr. Jayanti P.Sahoo, (Convener) Assistant Professor, Department of Philosophy, Janki Devi Memorial College, University of Delhi, Sir Ganga Ram Hospital Marg, Rajinder Nagar, New Delhi – 110060	1. Reason, Religion and Dharma by Dr. Rakesh Chandra 2. Jagannath Consciousness by Dr. Chinmayee Satpathy	September 22, 2017 and February 22, 2018
30.	Dr. Abha Holkar, Department of Philosophy, Mata Jeejabai Govt. P.G. College, Indore	1. बौद्धिक अहिंसा का सिद्धांत. – अनेकान्तवाद. – डॉ0 विमला जैन 2. बुद्ध और बौद्ध दर्शन. – डा0 सूर्यप्रकाश व्यास	March 31, 2018
31.	Dr. Khundongbam Gokulchandra Singh, Department of Philosophy, D.M. College of Arts, Imphal – 795001	1. The Aesthetic Mysticism of Manipuri Vaishnavism by Professor Lokeshdrajit Singh 2. Kant's Copernican Revolution in Epistemology by Dr. A. Dorendra Singh	March 10, 2018
32.	Dr. Kalyani Sarangi, Lecturer-in-Philosophy GOP, Puri- 752110,	1. Environmental Ethics: What, Why and How by Professor S.K. Mohanty 2. Sri Aurovindo's Vision of Now Earth by Dr. H. Sahoo 3. Man & Environment by Sri P.K. Panda	February 08, 2018
33.	Sri Bhupen Hazarikaa, HOD, Department of Philosophy, Kherajkhat College,P: Deotola, Dist: Lakhimpur, Assam	Philosophy for Life by Dr. Bornali Rorah	March 12, 2018
34.	Dr. Ashima Khanikar, Assistant Professor, Department of Philosophy, Amguri College, Amguri, Sivasagar, Assam - 785 680	1. Social and Political Philosophy by Dr. Panchami Bhattacharjee 2. Ethics of Human Rights by Dr. Sumitra Purkayastha	March 27, 2018
35.	Dr. K. Subramanian, Assistant Professor, Saraswathi Narayanan College, Madurai – 625022	1. Economic Ideas of Thiruvalluvar by Dr. E. Ravi Kumar 2. Gandhian Philosophy and Economic Development by	

		Dr. S. Venkatachalam 3. The Economics of Social Responsibility by Mrs. C. Umamaheswari	January 24, 2018
36.	Dr. Gurjit Singh Mann, HOD, Department of Philosophy, Govt. Rajindra College, Bathinda, Punjab 151 001	1. Man's Existence and Creativity: Some Reflections in the Light of Aesthetics by Dr. Sivani Sharma. 2. शोर से संगीत की ओर. —— डा0 रविन्द्र पुरी	March 20, 2018
37.	Dr. Kailash Chandra Moharana, Department of Philosophy, Balugaon College, Balugaon, Dist. Khorda, Odisha 752 030	1. Jnana, Dana and Tapa as Model of Karma in Bhagavad Gita by Professor Raj Kishore Sahoo 2. Existence – Its "How" and "Why" in Integral Idealism — An Appraisal by Professor Ramakanta Nanda	December13, 2017
38.	Smt. Mamta Jana (Rahaman) HOD, Department of Philosophy, Midnapore College (Autonomous) P.O- Midnapore, Dt. Paschim Medinipur, West Bengal, 721101	1. Buddhist Ethics and Morality: A Brief Sketch by Dr. Papaya Gupta 2. Why We Should Think for Others: A Critical Estimate of Utilitarianism by Dr. Dipayan Pattanayak	February 13, 2018
39.	Dr. R. Indira, Assistant Professor, Department of Philosophy Poomphuar College (Autonomous) Melaiyur, Tamil Nadu 609107	1. An Idealistic View of Life by Dr. S. Thangaraju 2. An Impact of Modern Indian Philosophy on Social Changes by Dr. J. Thirumal 3. The Philosophy of Ramanuja by Dr. E. Ravi Kumar	March 15, 2018
40.	Dr. Arun Garg, Assistant Professor, P.G. Department of Philosophy, Gaya College, Gaya 823001	1. Sub – Altern Morality by Professor R.C. Sinha 2. Women's Economic Empowerment: An Imperative for Economic Growth by Professor Punam Singh.	February 06, 2018
41.	Dr. Sucharita Chaudhuri, Associate Professor,Department of Philosophy, Michael Madhusudan Dutta College (MMDC), P.O. Sabroom, South Tripura,799145	1. Role of Youth in Maintaning order in Life. by Sh. Tapan Dutta	November 16, 2017

42.	Dr. Asongpou, Assistant Professor, Department of Philosophy, Arya Mahila P.G. College, Chetganj, Varanasi	1. Knowledge in Indian Philosophy by Professor Sachidananda Mishra 2. Seven Social Sins According to Gandhi. by Professor R.P. Dwivedi 3. Vedant Sahitya by Professor Sudhakar Mishra 4. Nyaya Darshan Ke Siddhant by Professor Rampujan Pandey	February 16, 2018 and March 14, 2018
43.	Dr. Prasenjit Bera, Assistant Professor, Department of Philosophy, Aghore Kamini Prakash Chandra Mahavidyalaya, Subhas Nagar, Bengai, Dist. Hooghly, West Bengal	1. Schools of Indian Philosophy and their Contributions by Dr. Dipayan Pattanayak. 2. The Different Systems of Indian Philosophy and their Interrelation by Dr. Ratna Dutta Sharma	February 06, 2018
44.	Mrs. Anu Kandhari, Assistant Professor, Department of Philosophy, Hindu College, Amritsar- 143 001	Lecture on "Relevance of Ethics in Modern Times.". by Dr. Anita Menon., Dr. Manvinder Singh, Dr. Mohabat Singh.	February 27, 2018

1. The Department of Philosophy, U.N. Auto College of SC. and Tech., Adarspur, Cuttak organized periodic lecture programme sponsored by the ICPR on the auspicious occasion of the observance of the World Philosophy Day 2017 on 16 November 2017 under the Chairmanship of Dr. Ganesh Prasad Das, Formerly Professor & Head, PG Department of Philosophy, Utkal University. Three eminent scholars, Dr. Bijayananda Kar, Formerly Reader in Philosophy, Kamala Nehru Women's College, Bhubaneswar delivered lectures on "The Human Ecology and Philosophical Concern", "A Note on Plato's Philosophy of Mathematics", and "The Jain View of Karma", respectively. Professor D. Singh, Principal of the College inaugurated the programme by lighting the lamp. Sri Bijaya Kumar Nayak, Head of the Department delivered welcome speech to the august gathering and Mrs. Charulata Das, a faculty member on behalf of department proposed a vote of thanks to the chair and expressed her gratitude to the ICPR for financial help.

2. ICPR sponsored periodical lecture was held in the Department of Philosophy, Balugaon College on 13 December 2017 under the Chairmanship of Dr. Prasanta

Kumar Acharya, Principal. Professor Raja Kishore Sahoo, former HOD Philosophy and Principal, R.C. College, Gadamanitri and Professor Ramakanta Nanda, Former HOD Philosophy, Godavaris Mahavidyalaya graced the occasion as speakers. The theme paper was presented by Professor Purna Chandra Dash, HOD, Philosophy. Professor R.K. Sahoo, the Chief Speaker of the programme, spoke on Jnana, Dana and Tapa and models of Karma in Bhagavat Gita. Professor R.K. Nanda elaborated on "Existence-It's How and Why in Integral Idealism - an Appraisal". The vote of thanks was offered by Dr. K. Ch. Moharana. Another lecture was held on 5 February 2018 in which Sh. Bhagirathi Mohapatra delivered his speech on the Philosophy of Sri Aurobindo. In both the programmes, students and teachers of nearby college participated.

3. The Philosophy department of Pt. Mohan Lal S.D. College for Women, Gurdaspur organized a seminar on "Imbibing of Moral Values: Need of the Hour" sponsored by the Indian Council of Philosophical Research held on 24 February 2018. In this event, Dr. Manvinder Singh, Department of Guru Nanak Studies, GNDU Amritsar, Dr. Pawan Kumar, Assistant Professor in Guru Nanak Studies, GNDU Amritsar and Mr. Neeraj Kumar Sharma (Assistant Professor in Philosophy), BUC College, Batala were the resource persons. Dr. Manvinder Singh motivated the students to inculcate moral values which is essential nowadays. Dr. Pawan Kumar stated that Indian culture and tradition is the most precious heritage. Dr. Neeraj Kumar talked about philosophical analysis which is conceptual and critical in nature. He further elaborated the term "moral" which means manner, character or proper behaviour. Ms. Rajinder (Assistant Professor in Philosophy) thanked the guest who gave their valuable time to the students in imparting knowledge regarding moral values.

4. A lecture was organized by Department of Philosophy on 28 February 2018 at Moolji Jaitha College, Jalgaon (Maharashtra), to promote philosophical thoughts among students and also to popularize the subject in general. Professor (Dr.) Vaijayanti Belsare, Professor & Head, Department of Philosophy, S.P. College, Pune University, Pune was invited to deliver a guest lecture on the topic, "Sartre's Concept of Self". The speaker was introduced to the audience by Dr. Rajni Sinha, Head, Department of Philosophy. The programme was attended by well over

100 audiences that comprised of students faculty members of various departments of the college in both pre- and post-lunch sessions. Students presented papers in the post-lunch session. It was followed by prize distribution to students who presented good papers.

5. The Department of Philosophy, Government College for Women, Thiruvananthapuram organized periodical lecture programme sponsored by the Indian Council of Philosophical Research, New Delhi on 18 December 2017 at Seminar Hall, Government College for Women, Thiruvananthapuram. The resource person for the lecture was Dr. Prabhu V., Associate Professor, Department of Humanities and Social Sciences, IIT Guwahati, Assam. Dr. R. Lekshmi, HOD, Department of Philosophy welcomed the resource person as well as the participants. Dr. G. Vijayalekshmi, Principal, Government College for Women, Thiruvananthapuram, in her inaugural address said such events are organized so that students are exposed to greater avenues in their academic pursuits. "Animal Rights and Welfare and its Ethical Implications with Special Reference to Peter Singer" was the theme for the lecture. The programme was well attended by students and faculty from Department of Philosophy, University of Kerala, University College, Thiruvananthapuram as well as from Government College for Women, Thiruvananthapuram. Dr. L. Vijai, Department of Philosophy gave the vote of thanks.

6. Periodical lecture on "Environment and Human Values" was organized by Shailabala Women's (Auto) College on 5 January 2018 and sponsored by the ICPR. The welcome address was given by Dr. Kadambini Das (Principal). Smt. Madhulita Sahoo introduced the guests and Mrs. Narmada Kumari Parida, HOD, Department of Philosophy, presentated the theme of the lecture. Dr. Manoj Kumar Panda, speaker of the programme, spoke on "Value, Normativity and Natural World". Professor Saroj Kumar Mohanty spoke on "Value in Environment". The Vote of Thanks was delivered by Smt. Narmada Kumar Parida of the college.

7. The periodical lecture programme was held on 8 January 2018. It was delivered by Dr. Radha Kumar, Associate Professor, Department of Ancient History, Culture and Archaeology St. Xavier's College, Mumbai. The focus was on Indian

aesthetics, with regard to "Alampur and Aesthetics - A Confluence". Dr. Radha interestingly engaged the students through music and dance.

The second lecture on 18 January 2018 was addressed by Dr. Radhakrishnan Pillai, Joint Director of CIII, University of Mumbai, on "Kautily's Arthashastra-Rediscovering the Philosophical Dimension". It provided a glimpse into Chanakya's life and emphasized on textual study.

The third lecture on 1 February 2018, delivered by Dr. Meenal Katarnikar, Associate Professor, Department of Philosophy, University of Mumbai, on "Episteme and Wisdom: Dimensions of Knowledge in Indian Tradition", presented an objective understanding in seeking knowledge and its active role in understanding metaphysics in all the schools of Indian epistemology.

The fourth lecture on 15 February 2018 was given by Dr. Suchitra Naik, Principal, Joshi Bedekar College, Thane, on "Philosophical Counselling-A Blueprint to do Philosophy". She introduced it as an upcoming career option by explaining the application of classical philosophy and its relationship with psychology.

Colleagues, undergraduate and post graduate students too attended these lectures. The periodical lecture series give the students an opportunity to engage in philosophical discourses with eminent scholars that resulted as a resourceful learning experience.

8. The Department of Philosophy, B.J.B. Autonomous College, Bhubaneswar organized a periodical lecture programme sponsored by ICPR, New Delhi on 15 January 2018 in the College Hall. At the very outset, the Principal of the college, Dr. Prasanna Kumar Mohanty inaugurated the seminar and extended warm welcome to the Philosophy teacher-participants coming from different parts of the state, students, faculty members of sister departments and invited dignitaries to the seminar. Dr. Harischandra Sahoo, HOD, Philosophy introduced the theme of the topics and gave a formal introduction of the speakers. Professor Saroj Kumar Mohanty, former professor and HOD, Philosophy, Utkal University, Bhubaneswar while delivering on the topic 'Environmental Ethics' discussed the limitations of anthropocentric, bio-centric and econ-centric views. All these

views are inadequate. Hence, a holistic approach to environmental ethics is required to restore, protect and conserve the entire biotic community. Dr. Sudhir Kumar Das delivered a talk in "Business-Ethics and CSR". He highlighted that a good business should be based on morality. The corporate sector has certain duties and responsibilities towards the development of society. Professor Dhaneswar Sahoo delivered a talk on "Interreligious Harmony and Peace". He advocated in favour of the possibility of a real society based on secularism, rational and humanistic outlook. At the end of the lecture, there was a question-answer session to clarify the doubts. Dr. Rita Pati, Vice-Principal extended a formal vote of thanks to all participants.

9. The Department of Philosophy and Economics, Meher Chand Mahajan DAV College for Women, Chandigarh organized a lecture by Professor Pritam Singh on 18 January 2018. He is a distinguished Professor of Economics at Oxford Brookes Business School, Headington Campus, Oxford. Professor Pritam Singh discussed his paper titled "Environmental Ethics of Individual and Collective Responsibility to Save the Planet Earth".

   The Principal of the College, Dr. Nisha Bhargava presided the function. She appreciated the joint effort of the Department of Economics and Philosophy in organizing the function and thanked the ICPR for the financial support. The lecture was attended by students, faculty members of this college as well as from different colleges.

10. Department of Philosophy of Salipur Autonomous College, Salipur organized a periodical lecture on "Environmental Ethics" on 18 January 2018. It was delivered by Dr. Harish Chandra Sahoo, Associate Professor in Philosophy of B.J.B. Autonomous College, Bhubaneswar. In his speech, he clarified in detail the notion of "environment" as well as "ethics". For him, environmental ethics plays the vital role for such modern society. He spoke about three different approaches of environmental ethics such as bio-centrism, anthropocentrism and eco-centrism. Out of them the eco-centrism approach is the noble one and should be adopted. Then he clarified the doubts raised by students. In the afternoon session, another periodical lecture was delivered by Dr. Bidhu Prasad Patra, Professor in XIBM,

Bhubaneswar on "Professional Ethics", especially medical ethics. In his speech, he enlightened the proper relationship between doctor and Patient. He discussed in detail about three types of views on this matter, such as paternalism, individualism and the reciprocal view. Out of them the reciprocal view is more ethical and should be adopted in all cases. Then he clarified the doubts raised by students.

11. Post Graduate and Research Department of Economics, Saraswathi Narayanan College, Madurai organized an ICPR sponsored one-day periodical lecture on "Economic Thoughts of Thiruvalluvar, Gandhian Philosophy and Economic Development, Economics of Social Responsibility and Ethics" on 24 January 2018. Mr. M. Jeyakumar, Associate Professor and Head, Department of Economics welcomed the gathering. Dr. M. Kannan, Principal, in his inaugural address outlined the significance of the principle of trusteeship and sarvodaya. He appreciated Department of Economics for having chosen the topic which is more relevant in the era of global economy. Dr. S. Venkatachalam in his keynote address pointed out that there is an urgent need to practise the economic philosophy of Mahatma Gandhi to arrest the present trend of westernization of Indian culture. Dr. E. Ravikumar spoke on the economic ideas of Thruvalluvar. He stated that economic ideas expounded in Thirukkural are comprehensive and complete. Dr. K. Subramanian, the Organizing Secretary, proposed a vote of thanks.

12. An ICPR-sponsored periodic lecture on 30 January 2018 was organized by Department of Philosophy, Vivekananda College, Thakurpukur, Kolkata on "The Status of Women in Buddhism". Professor Dr. Aiswarya Biswas, Head of the Department of Buddhist Studies, Calcutta University, Kolkata delivered a lecture on "Evolutionary Concepts of Buddhist Emancipation and Women: A Study from Pali Literature" while Dr. Subhasis Barua (sumanapal Bhikkhu), Professor, Pali Department, Calcutta University, delivered a lecture on, "The Status of Women in Buddhism: An Overview". Near about 100 students from the Department of Philosophy along with faculty members of other departments and research scholars participated in the lecture series. The academic co-ordinator of the college, Dr. Arvind Pan, delivered the welcome address to the audience. Professor

Pragya Bhattacharya introduced the eminent speakers to the audience. Dr. Tripti Dhar, Head of the department and coordinator of the programme, pointed out the relevance of the topic in the present scenario and also highlighted why such kinds of lecture series are needed for the understanding and development of the students of this college who are mainly first-generation learners. Dr. Dhar delivered vote of thanks and expressed her gratitude towards the ICPR for its financial support to organize such a type of discussion by eminent speakers on such an important and pertinent topic.

13. Department of Philosophy, Gaya College, Gaya organized a periodic lecture programme sponsored by the Indian Council of Philosophical Research, New Delhi on 6 February 2018 at Munshi Premchand Sabhagaar of Gaya College, Gaya. The Chief Guest of the programme was Vice Chancellor of Magadh University, Bodh Gaya, Professor (Dr.) Qamar Ahsan and Guest of Honors were Vice Chancellor Professor (Dr.) K.N. Paswan in absentia and Registrar Professor (Dr.) Shailesh Kumar Singh in absentia. The invited speakers were Professor (Dr.) Ramesh Chandra Sinha, Former Head, Department of Philosophy, Patna University, Patna and Professor (Dr.) Punam Singh, Head, Department of Philosophy, Patna University, Patna. Also present on the dias during the programme were Professor (Dr.) B.R. Yadav, Head, Department of Philosophy, Magadh University, Bodh Gaya; Professor (Dr.) D.K. Sinha, Principal, Gaya College, Gaya and Professor (Dr.) Shashi Singh, Head, Department of Philosophy, Gaya College, Gaya. Dr. Shashi Singh, Head, Department of Philosophy introduced the themes of lectures to the audience and guest. Vice Chancellor of Magadh University, Bodh Gaya, Professor (Dr.) Qamar Ahsan addressed the audience and presented his views and also motivated the students for excelling in their respective fields. This was followed by Lecture presentation by the first speaker Professor (Dr.) Ramesh Chandra Sinha, Former Head, Department of Philosophy, Patna University, Patna. He spoke on the theme "Marginal Morality and Modern Ethical Problems". This was followed by a lecture by Professor (Dr.) Punam Singh, Head, Department of Philosophy, Patna University, Patna. She spoke on the theme of "Women Power: An Essential Element of Economic Growth". These lectures were followed by a Question and Answer session by

students and faculty members of other departments. In the end, Professor (Dr.) B.R. Yadav, Head, Department of Philosophy, Magadh University, Bodh Gaya presented his views and Professor (Dr.) Gautam Kumar Sinha, Department of Philosophy, Gaya College, Gaya presented a formal vote of thanks.

14. The Department of Philosophy, Midnapore College (Autonomous) organized periodical lecture sponsored by the ICPR on 13 February 2018 to enrich the knowledge of the students both Honours and General in the subject of Philosophy. Dr. Dipayan Pattanayak, Associate Professor of Philosophy, Jadavpur University was invited as Resource Person for the said programme. Dr. Papaya Gupta delivered a lecture on "Buddhist Ethics and Morality: A Brief Sketch". She tried to make the students understand that the five major rules for conduct (Pancha-Shilla) for sramana prepared by the Buddha are still relevant in present time to live in the society peacefully. At the end of the lecture, she interacted with students. Dr. Dipayan Pattanayak gave a lecture titled "Why We Should Think for Others: A Critical Estimate of Utilitarianism". He explained lucidly to the student that they have some duties and responsibilities for the society as they born and brought up there. Dr. Gopal Chandra Bera, Principal, Midnapore College; Dr. Sudhamoy Ghosh, Morning-in-Charge; Professor Sudhindranath Bag, HOD of Political Science; Professor Satya Ranjan Ghosh, Department of History were present in the programme. All the faculties of Philosophy, 120 students and M. Phil students (Jadavpur University) attended the programme.

15. The ICPR-sponsored Periodical Programme 2017 organized by Department of Philosophy, D.K.D. College, Dergaon was held on 15 February 2018 in J.N. Hazarika Memorial Conference Hall of the college. The programme was initiated by Mr. Niranjan Haloi, HOD Department of Philosophy with the brief explanation about the programme. Dr. Girish Baruah participated as the resource person and the programme was chaired by Dr. Punyeswar Bora, Retired Principal D.K.D. College, Dergaon. Mr. N.C. Das, additional Vice-Principal of the college, delivered the welcome address. Mr. N. Haloi introduced the resource person. Dr. Baruah gave a brief account about the *Bhagavada Gita*, regarding its origin and development. Dr. Boruah asserted that *Gita*'s concept of Swadharma is an eternal value for all the people. It teaches man how to perform one's own duty

for the sake of duty. Dr. Boruah's lecture was followed by lively interaction with students and the faculty members who raised a few pertinent questions. Dr. Bitopan Bora (student), Niranjan Haloi, Abul Kalam took part in the interaction. Bodheswar Kakati, Vaishnavite scholar and President, D.K.D. College Governing Body, was the special guest on the occasion and appreciated the organizer for selecting such an interesting topic. Also thanked was the ICPR for granting financial assistance. Chairperson Dr. Punyeswar Bora, Retd. Principal, D.K.D. College, also appreciated the endeavour briefs on the importance and relevance of *Gita*'s teaching.

16. The Department of Philosophy, Arya Mahila P.G. College organized ICPR-sponsored Lecture Series 2017-18 on 14 and 16 March 2018. There were four lectures delivered by prominent personalities from different institutes. Lectures were attended by teachers from different departments of the college and about 150 students. After every lecture, questions and discussions were taken up. On 16 February 2018, the first lecture was given by Professor Sacchidanand Mishra, Department of Philosophy and Religion, B.H.U on "Knowledge in Indian Philosophy" and Professor R.P. Dwivedi, Centre for Gandhian Studies, Mahatma Gandhi Kashi Vidyapeeth, delivered a lecture on "Seven Social Sins According to Gandhi". The other two lectures were held on 14 March 2018. Professor Sudhakar Mishra, Ex-Head, Department of Vedant, Sampurnanand Sanskrit University, Varanasi spoke on "Vedanta Sahitya" and Professor Rampujan Pandey, HOD, Department of Nyaya – Vaiseshika, Sapurnanand Sanskrit University, Varanasi delivered a lecture on the topic "Nyaya Darshan Ke Siddhant".

17. The Hindu College, Amritsar organized ICPR-sponsored Periodical Lectures on 27 February 2018 titled "Relevance of Ethics in Modern Times". Professor Anu Kandhari gave the introduction of the theme and welcomed the respected guest. Dr. Manvinder Singh (Senior Assistant Professor) and Dr. Mohabat Singh (Assistant Professor), Department of Guru Nanak Studies, Guru Nanak Dev University; Dr. Anita Menon, Principal, D.A.V. College of Education for Women, Amritsar; Dr. Vipan Kumar, Head, Department of Philosophy and Dr. Kuldeep Singh Arya, Head, Department of Sanskrit attended the lecture. Around 120

students were present in the auditorium. Principal, Dr. P.K. Sharma honoured all the esteemed guests. The first speaker was Dr. Manvinder Singh, who enlightened the meaning, definitions of ethics and its relevance for youth. The second speaker was Dr. Mohabat Singh who enlightened on the nature of ethics and inspired the students that the main aim of education is to modify the behaviour of individual and to become better citizen and the main function of ethics is to find the proper standard of human conduct. The third speaker was Dr. Anita Menon, Principal, D.A.V. College of Education for Women, Amritsar. She motivated the students to apply the moral values in practical life and this is possible by inner transformation of man's attitude towards life. At last Principal, Hindu college, Dr. P.K. Sharma thanked to all the esteemed scholars and inspired students that the philosophy of good conduct means the complete integration of self, that is co-ordination of ideal and practice in the present life.

18. Department of Philosophy, Sree Narayana College, Cherthala, Alappuzha organized a periodical lecture programme sponsored by the Indian Council of Philosophical Research, New Delhi and was held on 19 February 2018. The title of the lecture series was "Practical Implications of Indian Philosophy". The resource person for the first lecture was Dr. Unnikrishnan P., Assistant Professor, Department of Philosophy, Sree Sankaracharya University of Sanskrit, Kalady. The venue chosen for the lectures was Guruvarom Seminar Hall, Sree Narayana College, Cherthala. Dr. Soumya R.V., HOD, Department of Philosophy welcomed the resource person as well as the participants. The topic chosen by Dr. Unnikrishnan P. was "Revisiting the Practical Aspects on Indian Philosophy". He concluded by saying the stress to be speculative and practical while dealing with the notions of Indian Philosophy.

    The second topic chosen for lecture by Dr. Radharani P. was "Practical Implications of Heterodox Systems in India". Though the title includes the expression heterodox systems, she limited the scope of her lecture to practical implications of Jainism. In the talk, she elaborated about the way of the metaphysical and epistemological theories of Jainism. A video of 45 minutes length incorporating the three Heterodox systems, namely, Charvaka, Jainism and Buddhism made the audience easy to catch the way these philosophical

concepts can be understood from its practical outlook. Mrs. Jayalekshmi Amma S., Faculty, Department of Philosophy proposed vote of thanks of the programme.

The third lecture selected by Dr. Gasper K.J. for his lecture was “Doing Philosophy: Traditions in India”. The programme started with the welcome speech of Dr. Soumya R.V., Head, Department of Philosophy. The lecture emphasized the ways philosophy can be understood, practiced and made others practised. The lecture gave a clear picture on the possibility of philosophy as an academic discipline in a global level.

19. Professor Raghunath Ghosh, Professor Emeritus of Philosophy, University of North Bengal, delivered a lecture on “The Concept of Laksana in Nyaya Philosophy” in Maynaguri College on 10 March 2018 and Professor Kantilal Das, Professor of Philosophy, University of North Bengal delivered a lecture on ‘Role of Language in Logic’ in Maynaguri College on 12 February 2018. At the outset, Professor Susmita Pandit, Teacher-in Charge, Maynaguri College, delivered her welcome address. The lecture programme was attended by large number of students and teachers of the college. Professor Raghunath Ghosh discussed on the value of implied meaning of a word or a sentence and its utility in our life and day-to-day communication. Professor Kantilal Das, Professor of Philosophy, University of North Bengal in his lecture explained the importance of language in logic.

20. The Philosophy Department, D.M. College of Arts, Imphal organized a Periodical Lecture sponsored by the Indian Council of Philosophical Research on 10 March 2018 at College IQACA Auditorium. The principal of the College, Shri Saragajit Khundrakpam was the Chief Guest and Dr. Kh. Gokulchandra Singh, Head of the Department of Philosophy was the President of the function. The periodical lecture was delivered by two eminent scholars. The first lecture was given by Dr. A. Dorendra Singh, Retd. Principal, D.M. College of Arts, Imphal and presently working as Guest faculty, Department of Philosophy, Manipur University, Canchipur, on “Kant’s Copernican Revolution in Epistemology”. He gave a brief background of Kant’s life and works in general and discussed Kant’s epistemology.

The second lecture was given by Professor S. Lokendrajit Singh, Retd. Professor of Philosophy and Dean of Humanities, Manipur University on "The Aesthetic Mysticism of Manipuri Vaisnavism". The vaisnavite tradition of Manipur is quite different from the Vaisnavism of the other parts of the country. He began his lecture from the Western tradition of theology and mysticism, particularly that of Soren Kierkegaard and later connected it with that of the mysticism of Manipuri Vaisnavism. The programme was concluded with a vote of thanks by N. Rajen Singh, Associate Professor, Department of Philosophy.

21. Department of Philosophy, Kherajkhat College, Lakhimpur, Assam in collaboration of IQAC, Kherajkhat College organized a periodical lecture programme, sponsored by the Indian Council of Philosophical Research, at Kherajkhat College Conference Hall held on 12 March 2018. Before starting the programme, floral tribute was given to Mahatma Gandhi, Sarvepalli Radhakrishnan and Swami Vivekananda in remembrance of their contribution to Indian Philosophy. The programme began with the lighting of the lamp by Dr. Hemchandra Goswami, Ex-Principal, Kherajkhat College. In his short speech, Dr. Hemchandra Goswami mainly pointed out that the intellectual exercise of philosophy, reading, writing, listening and talking to others, were not simply for the sake of gaining more knowledge, but applying this knowledge too. The inaugural address was delivered by Dr. Kalpana Goswami, Principal, Kherajkhat College. In her address, she focused on the philosophical approach of our life and urged all for a better philosophical sense. Mr. Bhupen Hazarika, Head, Department of Philosophy, Kharajkhat College rendered the welcome address. Dr. Bornali Borah, Assistant Professor, North Lakhimpur College (Autonomous) delivered speech on a specific topic on "Philosophy for Life". Dr. Dilip Kr. Bhuyan offered illuminating speech as the chair-person. He remarked that a philosophic system is an integrated view of existence. It is a study that seeks to understand the mysteries of existence and reality. The Chairperson distributed the certificates amongst the participants in the Valedictory function. Finally, the day long programme came to an end with vote of thanks rendered by Dr. Tilika Baruah.

22. Department of Philosophy of Bankura Christian College, West Bengal, organized a one-day periodical lecture programme on the theme "Some Main Problems of

Indian and Western Philosophy" held on 14 March 2018 and sponsored by the ICPR. Dr. Anupam Jash, Head of the Department of Philosophy, Bankura Christian College and Organizing Secretary of this programme, welcomed the distinguished speakers, guests and also briefly introduced the theme of the programme. Dr. Fatik Baran Mandal, Principal, Bankura Christian College, and Chairman of the programme and Professor Mamta Bandyopadhyaya, Former Professor, University of Burdwan and Chief Guest and Resource Person of the programme, lit the lamp and formally inaugurated the seminar. Professor Bandyopadhyaya described the relevance and importance of studying philosophy and its various aspects, problems, and prospects. Dr. Samar Kumar Mandal, Associate Professor, Department of Philosophy, Jadavpur University delivered his speech and elaborated the main theme of the periodic lecture programme. Dr. Kalyan Banerjee, Head, Department of Philosophy, Bankura University also took part in this discussion. A fruitful discussion occurred with the questions asked by the students and participants.

23. PG & Research Department of Philosophy, Religion & Culture, Poompuhar College (Autonomous), Melaiyur, Tamil Nadu organized periodical lecture, sponsored by the ICPR, on 15 March 2018. The lecture was commenced by honourable Principal of Poompuhar College. The Head of the Department of Tamil was felicitated. The resource persons presented their lectures on "An Idealistic View of Life, Impact of Modern Indian Philosophy on Social Changes and the Philosophy of Ramanuja." Finally, the programme ended with National Anthem.

24. Philosophy and Psychology Association of Goverment Rajindra College organized an ICPR-sponsored periodical lecture on 20 March 2018. Principal Mukesh Kumar Aggarwal presided over the function, Dr. Shivani Sharma (Associate Professor) Panjab University, Chandigarh and Dr. Ravinder Puri (Associate Professor) National College, Sirsa were the resource persons. Dr. Gurjit Mann, HOD, Department of Philosophy introduced the theme of the lecture. He expressed his concern on the declining moral values in the present society. Principal Mukesh Kumar Aggarwal encouraged the students to learn from such programmes and imbibe valuable ideas.

Dr. Shivani Sharma speaking on the topic, "Man's Existence and Creativity: Some Reflections in the Light of Aesthetics" told that there are three aspects of existence, i.e. cognitive, conative and affective.

Dr. Ravinder Puri's topic was "Shor se Sangeet ki Aor". Dr. Puri said that all human beings are either noise or music. People who are noise give rise to feelings of fear, anxiety, hatred and anger in others' mind, while those who are music give rise to feelings of life, confidence and affection.

More than 200 students were present. The students expressed their enthusiasm by asking question from the resource persons.

25. The periodical lecture on "Social and Political Philosophy" was held on 27 March 2018 at Department of Philosophy & IQACA, Amguri College, Amguru. The coordinator and resource person of the periodical lecture was Mrs. Ashima Khanikar, Assistant Professor, Department of Philosophy, J.B. College, Jorhat. She stated that in the present-day context, social and political philosophy is very important topic. She also thanks the organizer and the college for organizing a periodical lecture on the topic. Dr. Sumita Purakashtya, Associate Professor, Department of Philosophy, J.B. College, Jorhat delivered her speech on the issue of "Human Rights". She discussed about the origin and development of the Human Rights movement (first generation, second generation and third generation). The vote of thanks was proposed by Dr. Sahidul Ahmed, Assistant Professor, Department of Education.

    The Department of Philosophy, Gazole Mahavidyalaya, Gazole, Malda, organized ICPR-sponsored periodical lecture on 16 March 2018. Dr. Nirankush Chakraborty, Head, Department of Philosophy introduced the speakers Professor Raghunath Ghosh, Department of Philosophy, North Bengal University, Darjeeling, West Bengal and Dr. Jhadeswar Ghosh, Associate Professor, Department of Philosophy, University of Gour Banga, Malda, West Bengal. He pointed out that such kind of events is the need of the hour and students should be given proper guidance and motivation in the concerned subject. Dr. Md. Shamsul Haque, Principal, Gazole Mahavidyalaya, presided over the inaugural session of the programme. Dr. Jhadeswar Ghosh, delivered his lecture on the

theme "Gandhian Conception of Non-violence and its Relevance to Environmental Crises". Professor Raghunath Ghosh delivered his lecture on the theme "The Concept of Ahimsa in Indian Tradition". At the end of the programme, Dr. Nirankush Chakraborty proposed the vote of thanks and indicated that the ICPR-sponsored periodical lecture is a significant step to teach and familiarize basic themes of the subject through the experts of reputation.

XIV. BOOK GRANT 2017/18

The following applicants for the ICPR Book Grant 2017/18 have been considered for the grant. The books are granted for the purpose of being accessed and used in the library of the respective institutions of the grantees and not for private possession.

Sl. No.	Name and Address Grantees of the Book Grant 2017/18
1.	The Teacher-in-Charge, Samuktala Sidhu Kanhu College, PO: Samuktala, Dist. Alipurduar WB - 736206
2	Principal, MCM DAV College for Women, Sector-36-A, Chandigarh
3.	Assistant Director, Central Institute of Indian Languages, M/o Human Resource Development Goverment of India Department of Higher Education Manasagangotri Mysore-570 006
4	Principal, Rangachahi College MajuliAssam
5	Principal, Udalguri College PO. Udalguri, Dist.-Udalguri Assam-784509
6.	Principal, Women College Tinsukia-786125, Assam
7.	Principal-in-Charge, Cachar College, Trunk Road, Silchar-788001
8	Principal, Amrita School of Arts & Sciences, Amrita Vishwa Vidyapeetham Amritapuri Campus, Clappana, P.O. Kollam-690 525
9.	Teacher-in-Charge, Maynaguri College, P.O.-Maynaguri Dist.-Jalpaiguri, WB - 735224

10 The Registrar, Rajiv Gandhi National University of Law, Sidhuwal, Bhadson Road, Patiala-147 006

11. The Principal, Burdwan Raj College Aftab House, Frazer Avenue P.O. & Dist. Burdwan-713104

12. The Principal, Siliguri College Siliguri Para Dist. Darjeeling, WB -734001

13. The Principal, Midnapore College (Autonomous) Midnapore, Paschim Medinipur West Bengal-721101

14. The Principal (Acting), Satyawati College (Eve), University of Delhi, Ashok Vihar, Delhi-52

15 The Principal, Sambhu Nath College, P.O.- Labpur, Birbhim, West Bengal-731303

16 The Principal, Eliezer Jordan Memorial College, Leh-194101

17. The Registrar, Dev Sanskriti Vishwavidyalaya, Haridwar

XV. INTERNATIONAL COLLABORATION

Under this initiative, collaborations with four countries are under process:

U.S.A. - Council for Research in Values and Philosophy, Washington DC. USA

P.R.China - Centre for Gandhian and Indian Studies, Fudan University, Peoples Republic of China

P.R.China - Collaborations with School of Social Sciences, Shanghai University, Peoples Republic of China

Vietnam - Vietnam Buddhist University, HCMC, Vietnam

IRAN – Institute for Research in Philosophy

XVI. ICPR LIFE TIME ACHIEVEMENT AWARD 2017/18

During the year under report, the ICPR conferred the Life Time Achievement Award to Shri Yashdev Shalya, Distinguished Scholar of the country for his achievements and contributions to Philosophy.

ICPR Life Time Achievement Award program was organized on 15 February 2018 at Seminar Hall, Centre of Advanced Study in Philosophy, Rajasthan University, Jaipur. The programme started on 11:00 am by lighting the lamp. Welcome address was delivered by Professor A.V.Singh, Head of the Department of P.G Studies & Research in Philosophy, Rajasthan University. Professor R.K.Kothari, Vice-chancellor of Rajasthan University presided over the programme. Citation in honor of Shri Yashdev Shalya was read on behalf of the ICPR by Professor Rajaneesh Kumar Shukla, Member Secretary, ICPR and presented to Shri Yashdev Shalya by Professor S.R.Bhatt, Chairman, ICPR, Vice Chancellor, Rajasthan University along with award money cheque of Rs. One Lakh. Professsor R.K.Kothari, while addressing the gathering, invited young scholars and teachers to get inspiration from the distinguished academic contributions of Shri Yashdev Shalya. Professor S.R.Bhatt spoke about significant contributions of Shri Yashdev Shalya and befitment of awarding him. Professor A.D.Sharma, who was invited as special guest, spoke about his long academic association with Shri Yashdev Shalya and the letter's distinguished achievements in the field of Philosophy, particularly original writings in Hindi.

The programme was attended by a number of senior professors and colleagues of Shri Shalya. The spoke about his brilliant memory, style and significant contributions in the field of Philosophy. Professor B.Pahi, Professor Yogesh Jain, Professor R.K.Sharma, Professor Kusum Jain (all former Heads of the Department of Philosophy, Rajasthan

University) shared about Shree Shalya's academic excellence. Faculty members from other departments and nearby colleges were also present on the occasion. Shri Shalya, addressing the gathering on the occasion, thanked Professor S. R. Bhatt, Professor R.K.Shukla and members of the ICPR for conferring this award to him. The programme was also attended by family members of Shri Shalya. The programme ended by vote of thanks proposed by Dr. Sushim Dubey, Programme Officer, ICPR.

(Citation)

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्

समग्र जीवनोपलब्धि सम्मान 2017–18

प्रशस्ति–पत्र

श्री यशदेव शल्य भारत के दार्शनिकों में अनन्यतम चिन्तक हैं। भारत में भारतीयता के मूल से जुड़े दार्शनिक के रूप में आपकी पहचान समकालीन दार्शनिक जगत् में आपको विशिष्ट स्थान प्रदान करती है।

दार्शनिक प्रतिभा के पारावार श्री शल्य एक ऐसे विचारक हैं जो स्वातन्त्योत्तर भारतीय दर्शन को पश्चिम के दार्शनिक प्रभामण्डल से मुक्त कर उसे भारत की पारम्परिक दार्शनिक परम्परा में रूपायित करते हैं। भारतीय दार्शनिक दृष्टि का समकालीन परिप्रेक्ष्य में उपवृंहण करते हुए समकालीन दार्शनिक चिन्तन को भाषिक स्वराज प्रदान करने वाले मूलान्वेषी और विशिष्टातिशय से युक्त एक चिन्तक के रूप में आपने दर्शन और अनुषङ्गी विद्यास्थानों को आपने गंभीरता से प्रभावित एवं परिष्कृत किया है। भारत की वैचारिकी को राष्ट्रभाषा 'हिन्दी' के राजपथ पर अग्रसर करते हुये आपने जो दार्शनिक स्थापनायें की हैं वह न केवल एक अनुपम बौद्धिक सम्पदा हैं बल्कि पाश्चात्य विचारों के अन्तराय से सींची हुई समसामयिक औपनिवेशिक भारतीयता का अपवाद भी हैं। आपके लिये 'दर्शन' ज्ञान की अन्यान्य विधाओं की तरह कोई विषयमूलक–व्यवस्था नहीं बल्कि ज्ञान का एक आत्मोन्मुख व्यापार है जो निरन्तर अपने आरंभ बिन्दु से प्रारंभ कर उसी पर लौटता है। दर्शन के स्वरूप विषयक इसी व्यावर्तक अन्तर्दृष्टि को आत्मसात् करते हुये आपने मानवीय स्तर पर आत्मचेतन हुई चेतना की प्रत्यङ्मुख और पराङ्मुख अभिवृत्ति को अपने दार्शनिक अध्यावसाय का प्रस्थान–बिन्दु बनाया है। प्रख्यात चिन्तक एवं शल्य जी के समकालिक प्रो. गोविन्दचन्द्र पाण्डे जी के अनुसार "शल्य जी के दर्शन का केन्द्र चौतन्य की सर्जकता का गम्भीर विवेचन है जो मानवीय सर्जकता की विवेचना में पूरी तरह से चरितार्थ होता है और संस्कृति–विमर्श को एक ठोस दार्शनिक आधार देता है"।

26 जून 1928 को आपका जन्म फरीदकोट, पंजाब में हुआ। आधी–अधूरी आपकी प्रारंभिक शिक्षा गुरूकुल पद्धति से हुई। कुछ दिनों तक आप हाईस्कूल में हिन्दी के अध्यापक भी रहे और तब स्वाध्यायी तौर पर आपकी

अभिरुचि हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में रही। 1951 में प्रकाशित 'पंत का काव्य और युग' नामक पुस्तक आपकी इसी अभिरुचि की फलश्रुति है। तत्पश्चात् दर्शन के क्षेत्र में आपका पदार्पण एक प्रायोजित संयोगवश हुआ और वह अप्रतिम संयोग एक स्वतंत्र दर्शन–प्रस्थान के विभिन्न कल्प एवं सोपानों से गुजरते हुये अपनी भवितव्यता को अद्यतन 'चिदद्वैतवाद' के रूप में चरितार्थ करता है। आपकी दर्शन–साधना जिन पुस्तकों के माध्यम से वाग्–विग्रहित हुई है उनमें मनस्तत्त्व (1957), *दार्शनिक विश्लेषण* (1961), *ज्ञान और सत्* (1967), *संस्कृतिः मानव कर्तृत्व की व्याख्या* (1969), *विषय और आत्म* (1972), *चिद्–विमर्श* (1986), *सत्ताविषयक अन्वीक्षा* (1987), *नागार्जुन कृत मध्यमकशास्त्र और विग्रहव्यावर्तनीः युक्तिपरीक्षा एवं सिद्धान्त विमर्श* (1990), *समाजः दार्शनिक परिशीलन* (1992), *मूल्य–तत्त्च मीमांसा* (1994), *युग चिन्तन एवं साहित्य चिन्तन* (1998), *मुख्य भारतीय एवं पाश्चात्य चिन्तन धाराएँ* (1999), *तत्त्व–चिन्तन* (2003), *काव्य–विमर्श* (2003), *समसामयिक चिन्ताएँ* (2004) और *चित् की आत्मगवेषणा* (2009) इत्यादि प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त आपने *अनुभववाद* (1960), *समकालीन दार्शनिक समस्याएँ* (1966) और *समकालीन पाश्चात्य दर्शन* (1970) जैसी अति गम्भीर पुस्तकों का सम्पादन भी किया है। अपने सघन चिन्तन और सृजनात्मक लेखन के साथ–साथ आप विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं जैसे *दार्शनिक त्रैमासिक, दर्शन समीक्षा, तत्त्व चिन्तन* और *उन्मीलन* इत्यादि के संस्थापक एवं सम्पादक भी रहे। आपने **अखिल भारतीय दर्शन परिषद्** और **दर्शन प्रतिष्ठान** जैसी सस्थाओं की स्थापना एवं लम्बे समय तक उनका संचालन भी किया है। विश्वविद्यालयीय शिक्षा की किसी भी उपाधि से वियुक्त रहने के बावजूद आपको पंजाब विश्वविद्यालय ने 'विजिटिंग फैलो' (1978), **भारतीय दार्शनिक अनुसंधान** परिषद् ने 'वरिष्ठ फैलो (1983–1986), **भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद् ने** 'वरिष्ठ फैलो (1988–1990), और पुनः **भारतीय दार्शनिक अनुसन्धान परिषद् ने 'वरिष्ठ फैलो** (1991–1993) बनाकर सम्मानित किया है। आप **हिन्दी समिति,** उत्तर–प्रदेश द्वारा डॉ भगवानदास पुरस्कार (1962), **अखिल भारतीय दर्शन परिषद् द्वारा स्वामी प्रणवानन्द दर्शन पुरस्कार** (1988), बिड़ला फाउण्डेशन द्वारा शंकर पुरस्कार (1995), **हिन्दी साहित्य सम्मेलन,** प्रयाग द्वारा *मंगलाप्रसाद पुरस्कार* (2002), **राष्ट्रभाषा प्रचार समिति,** मध्य–प्रदेश द्वारा *नरेश मेहता स्मृति वाङ्मय पुरस्कार* (2003), **भारतीय ज्ञानपीठ** द्वारा *मूर्तिदेवी पुरस्कार* (2004) एवं **अखिल भारतीय दर्शन परिषद्** द्वारा *आजीवन परिलब्धि पुरस्कार* (2017) से पुरस्कृत भी हुये हैं।

अर्द्ध शताब्दी से भी अधिक की आपकी अनवरत् दर्शन–साधना आज एक स्वतंत्र और सम्पूर्ण दार्शनिक–तंत्र का रूप ग्रहण कर लिया है। आत्मचेतन चित् की आत्मव्यवधान–निवारक पुरुषार्थ–साधना के रूप में दर्शन, धर्म, नीति, साहित्य, समाज, संस्कृति, इतिहास, कला और यहाँ तक कि मनुष्य की वैज्ञानिक प्रवृत्ति की व्याख्या ही आपके चिदद्वैतवादी दार्शनिक चिन्तन का पार्यन्तिक स्वरूप है। राष्ट्रभाषा 'हिन्दी' के माध्यम से आपने भारतीय दार्शनिक चिन्तन को जैसा उत्कर्ष प्रदान किया है वह किसी विचार–परम्परा को उसका पुरुषार्थ प्रदान करने जैसा है। एक संस्थापक भारतीय दार्शनिक के रूप में आप भारतीय चिन्तन की उस गौरवशाली परम्परा के अंगभूत माने जा सकते हैं जिसके लिये 'मुनिनां उत्तरोत्तर प्रामाण्यम' कहा जाता है। एतदर्थ आज दिनांक 15 फरवरी 2018 को भारतीय दार्शनिक अनुसन्धान परिषद् (अन्तर्गत् मानव संसाधन मंत्रालय, भारत सरकार) नई दिल्ली श्री यशदेव शल्य को समग्र जीवनोपलब्धि सम्मान प्रदान करते हुये हर्षाभिभूत है।

XVII. ACADEMIC CENTRE, LUCKNOW (PROGRAMMES AND ACTIVITIES)

Workshop on "Teaching Philosophy in the Indian Universities and Colleges" 13 July to 17 July 2017

The primary purpose of the workshop was to discuss the need for revisiting and revamping of the current philosophical curriculum in universities as well as colleges in India. The teachers of Philosophy have the responsibility in making the curriculum practical, feasible, useful and relevant for the student community. It is necessary that the philosophical courses be in accordance to the present historical, cultural and political needs. Keeping this in mind, the workshop was organized to update the syllabus both at the graduate and at the postgraduate levels. The workshop emphasized that philosophy must be more applicable to the human society and stressed on the Indian philosophical tradition and its relevance in the present historical, social and cultural context. It was suggested that 50 percent of the syllabus reflect on the Ancient Indian philosophical tradition and culture.

The workshop was conducted for 5 days and a total of 16 papers were presented in the workshop. Professor Paneer Selvam was the Coordinator for the Workshop. Scholars of eminence from different parts of the country were invited. All the papers of the resources persons were received in advance and circulated to all. Besides the presentation of papers, two panel discussion on "How to make Philosophy more Relevant?" and "Guidelines Preparing Syllabus for UG and PG" were conducted. Resource persons also shared their inputs in detail.

Professor S.R. Bhatt, Chairman of the ICPR pointed out we are responsible for the present status of philosophy. He said that at present philosophy is cut off from social problems. He also emphasized that the academicians have social responsibility towards the young generation. He pointed out that in Asian countries such as South Korea and China, the courses reflect their own philosophical traditions. He also remarked that in China, Marxism for example, has been reinterpreted in the context of Confucianism.

In this workshop, the contribution of Professor R. Balasubramanian was remembered

and his paper, "The Philosophy for Liberation" was presented and discussed. Professor S.R. Bhatt read out Professor R. Balasubramanian's article and highlighting his significant contribution, paid a fitting tribute to late Professor R. Balasubramanian's legacy. Some of the basic principles of curriculum discussed were: (1) experience centrality, (2) goal-oriented value scheme, (3) culture embeddedness, and (4) a holistic and integrated approach. All these principles were debated in detail by all the resource persons under the guidance of Professor S.R. Bhatt.

Based on the above thrust area, a distinction between (1) core papers (2) elective papers were made and identified as follows:

Core papers

Logic and Scientific Method

Ethics (General and Applied)

Social and Political Philosophy

Value Theory

Metaphysics

Epistemology

Elective papers

Philosophy of Law

Philosophy of Education

Peace Studies and Harmony

Gender Sensitivity

Philosophy of Religion

Aesthetics

Philosophy of Mind/Consciousness

Philosophy of Language

Philosophy of Culture

The workshop discussed all the matters pertaining to the preparation of the syllabus and the inputs of the resource persons gave right direction.

जैन तर्कभाषा पर कार्यशाला

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्, लखनऊ परिसर में दिनांक 3.4.2018 से 12.4.2018 तक आयोजित दस दिवसीय कार्यशाला का उद्घाटन दिनांक 3.4.2018 को प्रातः 10 बजे से आरम्भ हुआ। भारतीय दर्शनिक अनुसंधान परिषद् के अध्यक्ष प्रो0 एस0 आर0 भट्ट ने इस कार्यक्रम की अध्यक्षता की। प्रो0 भट्ट जी ने जैन तर्कभाषा का महत्व बतलाते हुए मूल ग्रंथ का मंगलाचरण तथा इसी ग्रथ का आरम्भिक विषय प्रमाण का मूल ग्रंथ के आधार पर प्रतिपादन् कर के इस कार्यशाला का शुभारम्भ किया।

कार्यशाला के संयोजक प्रो0 फूलचन्द जैन प्रेमी, वाराणसी में कार्यशाला के महत्व, जैन तर्क शास्त्र और उनके आचार्यों की सुदीर्घ परम्परा का परिचय देते हुए जैन तर्कभाषा पर आयोजित इस कार्यशाला हेतु प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कार्यशाला के संयोजक ने अपने वक्तव्य में कहा कि प्राचीन भारतीय विद्याओं में तर्क शास्त्र का अपना विशेष महत्व है। इसे आन्वीक्षिकी, न्यायविद्या, हेतुविद्या या हेतुवाद और न्यायशास्त्र भी कहा जाता है। वस्तुतः भारतीय मनीषा में तर्क या हेतु को वही तक प्रश्रय या महत्व दिया जाता है, जहॉ तक वह शास्त्र का समर्थक है। क्योंकि भारतीय प्रमाणशास्त्र में आगम अर्थात् शास्त्रीय तथ्यों (प्रमाणों) का महत्वपूर्ण स्थान है। इसीलिए भारत की प्राचीन वैदिक, जैन एवं बौद्ध–इन तीनों दार्शनिक परम्पराओं में तर्कविद्या की महत्ता प्राचीनकाल से ही रही है।

आगे जैन तर्कभाषा का महत्व प्रतिपादित करने हुए आपने कहा कि संस्कृत भाषा में रचित जैन न्याय शास्त्रों की सुदीर्घ समृद्ध परम्परा में 'जैनतर्क भाषा' और इसके कर्ता यशस्वी विद्वान् उपाध्याय यशोविजय (17 वीं शती) का जैन न्यायविद्या के लिए बहुमूल्य अवदान का हम ससम्मान स्मरण करते हैं, जिन्होंने अनेक भारतीय न्याय शास्त्रियों द्वारा अपनी–अपनी परम्परा के न्याय शास्त्रों को नव्यन्याय में प्रस्तुत करने की चुनौती स्वीकार करते हुए, जैनन्याय को भी यहा कुछ–कुछ नव्यन्याय शैली में प्रस्तुत करने हेतु ''जैन तर्कभाषा' नामक ग्रन्थ का श्रेष्ठता के साथ प्रणयन किया।

जैन तर्कभाषा जैसे महत्वपूर्ण ग्रंथ पर इस प्रकार कार्यशाला के आयोजन की परिकल्पना प्रो0 एस0 आर0 भट्ट जी ने बहुत पहले से की थी जिसे यहॉ डॉ0 पूजा व्यास जी के प्रयासों से सम्पन्न किया जा सका।

इस कार्यशाला में सम्पूर्ण देश के प्रायः प्रमुख क्षेत्रों के विद्वान् प्रतिभागियों ने सम्मिलित होकर मूल संस्कृत भाषा में निबन्ध जैन तर्कभाषा जैसे प्रौढ एवं मूल ग्रंथ का गहन अध्ययन बाहर से पधारे विषय विशेषज्ञ विद्वानों द्वारा किया गया।

इस कार्यशाला में मूल ग्रंथ का अध्यापन कराने हेतु देश के अनेक श्रेष्ठ विद्वानों ने अपनी सहभागिता से इसे उच्चतम् सफलता पूर्वक सम्पन्न कराने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इनमे प्रमुख है– (1) प्रो0 एस0 आर0 भट्ट, नई दिल्ली (2) प्रो0 फूलचन्द जैन प्रेमी, वाराणसी, (3) प्रो0 जितेन्द्र भाई भाह, अहमदाबाद, (4) प्रो0 धर्मचन्द्र जैन, जोधपुर (5) प्रो0 वीर

सागर जैन, नई दिल्ली, (6) प्रो0 विजय कुमार जैन, लखनऊ (7) प्रो0 रामपूजन पाण्डेय, वाराणसी, (8) प्रो0 अनेकान्त कुमार जैन, नई दिल्ली प्रमुख है।

विद्वानों द्वारा मूल ग्रंथ के विषयों के अध्यापन कार्य का विवरण

(1) प्रो0 जितेन्द्रभाई शाह ने दिनांक 3 अप्रैल, 2018 से 5 अप्रैल, 2018 तक प्रस्तुत मूल शास्त्र में आधार पंक्तिशः एवं शब्दशः ग्रंथकार के भावों को स्पष्ट करते हुए जैन तर्क शास्त्र का इतिहास जैन तर्कभाषा में प्रमाण प्रत्यक्ष परोक्ष प्रमाण का अध्ययन कराया।

(2) प्रो0 अनेकान्त कुमार जैन ने दिनांक 3 अप्रैल, 2018 से 6 अप्रैल, 2018 तक प्रस्तुत मूल शास्त्र में आधार पंक्तिशः एवं शब्दशः ग्रंथकार के भावों को स्पष्ट करते हुए जैन तर्कभाशा में नये द्रवयार्थिक पर्यायार्थिक नैगम संग्रह व्यवहार ऋजुसूत्र, शब्द समभीरूड, एवंभूत निश्रय ववहार, नयाभास का अध्ययन कराया।

(3) प्रो0 फूलचन्द जैन प्रेमी ने दिनांक 6 अप्रैल, 2018 को प्रस्तुत मूल शास्त्र में आधार पंक्तिशः एवं शब्दशः ग्रंथकार के भावों को स्पष्ट करते हुए जैन तर्कभाषा की ज्ञान मीमांसा का अध्ययन कराया।

(4) प्रो0 धर्मचन्द्र जैन ने दिनांक 7 अप्रैल, 2018 से 10 अप्रैल, 2018 तक प्रस्तुत मूल शास्त्र में आधार पंक्तिशः एवं शब्दशः ग्रंथकार के भावों को स्पष्ट करते हुए जैन तर्कभाषा में अनुमान प्रमाण, हेतुवाद, सप्तभंगी नय का अध्ययन कराया।

(5) प्रो0 विजय कुमार जैन ने दिनांक 7 अप्रैल, 2018 को प्रस्तुत मूल शास्त्र में आधार पंक्तिशः एवं शब्दशः ग्रंथकार के भावों को स्पष्ट करते हुए मतिज्ञान अवग्रह आदि भेद का अध्ययन कराया।

(6) प्रो0 रामपूजन पाण्डेय ने दिनांक 9 अप्रैल, 2018 से 12 अप्रैल, 2018 तक प्रस्तुत मूल शास्त्र में आधार पंक्तिशः एवं शब्दशः ग्रंथकार के भावों को स्पष्ट करते हुए जैन तर्कभाषा में हेत्वाभास–1 स्मृति प्रत्यभिज्ञान तर्क आगम प्रमाण का अध्ययन कराया।

(7) प्रो0 वीर सागर जैन ने दिनांक 10 अप्रैल, 2018 से 12 अप्रैल, 2018 तक प्रस्तुत मूल शास्त्र में आधार पंक्तिशः एवं शब्दशः ग्रंथकार के भावों को स्पष्ट करते हुए जैन तर्कभाषा में निक्षेप नाम, स्थापना द्रव्य, भाव का अध्ययन कराया।

Report of Essay Competition-cum-Young Scholars' Seminar 2016/17
On
Indian Identity and Cultural Continuity

Academic Centre of ICPR, Lucknow, conducted an Essay Competition-cum-Young

Scholars' Seminar – 2016/17 during 11–13 April 2017 along with the function of Young Philosopher prize – 2016. The seminar was approved in 79th RPC minutes item No.4. On 24 October 2016 the announcement of event done and the last date of receiving essays was decided as 30 November 2016. Later it was extended to 30 December 2016. The initial date of the event was set as 15–17 March 2017, but due to some exigencies, was postponed and conducted during 11–13 April 2017.

On 'Indian Identity and Cultural Continuity', 35 essays were received from scholars across the country. They were evaluated by Professor K.C. Pandey and former Professor O.P. Pandey from Lucknow University. They, along with Professor Bhuvan Chandel and Professor U.S. Bist, were also the judges on the presentations of scholars while Professor R.P.Srivastava, one of the judges, could not attend the programme. They each shortly addressed the participants on the theme of the completion and pronounced the terms and conditions of the presentation.

Each presentations was followed by interactions by fellow participants. The judges gave individual marks based on the strength of the theme, way of presentation, use of examples, anecdotes, pictures, lucidity of presentations. Logical coherence, oratorical spirit and the manner of interaction were also assesed. Individual marks given by the judges were added with the scores obtained by the scholars on their scripted essays. The following participants were declared as First, Second and Third.

First Prize	Ms. Shruti Sharma, Delhi
Second Prize	Ms. Mrudula V.V., Kerala
Third Prize	Ms. Nidhi R. Teke, Maharashtra

The First prize was Rs 25,000, Second prize was 20,000 and Third prize was Rs.15,000. The prize amounts were handed over with certificates. All the participants were also given participation-cum-presentation certificates.

Report of Debate and Quiz Competition

The Academic Centre of ICPR along with Rashtriya Sanskrit Sansthan, Lucknow had organized a quiz-cum-debate competition for Graduate and Postgraduate students on

28 November 2017 at the Sanskrit Sansthan auditorium. Dr. Shreesh Dev Pujari, General Secretary of Sanskrit Bharti was the Chief Guest of the programme and Acharya Vachaspati Mishra was the special invitee. Dr. Pooja Vyas, Director (A) ICPR and Professor Vijay Kumar Jain, Principal, Rashtriya Sanskrit Sansthan were also present. The winner of the quiz competition was Anand Prakash Pathak (First), Samas Rai (Second) and Ankit Shukla (Third). The winners of the debate competition were Sh. Mangru Prasad Verma and Sh. Belwal. They all received cash prizes.

Dr. Shreesh Dev was of the opinion that philosophy should be popularized among the youth of today as they are blindly copying western culture. He also said that Philosophy is important for scientific development. Dr. Vachaspati Mishra, in his lecture, informed that the computer technology was inspired by the Panini. The programme was concluded after vote of thanks proposed by Dr. Pawan Kumar Dixit.

Workshop on *Maṇikaṇa*

4 October 2017 to 10 October 2017

Under the auspices of the Indian Council of Philosophical Research, a workshop on *Manikaṇa* was held on 4 October 2017. Professor Sachchidanand Mishra, also the coordinator, inaugurated the workshop. Following Indian tradition, *Maṅgalācarana* was chanted to formally set the ball rolling. Dr. Pooja Vyas introduced and welcomed warmly the dignitaries. Professor Rajaneesh Kumar Shukla, Member Secretary of the ICPR was present in the inaugural session of the workshop. Professor Vashishtha Tripathi, the chief guest of this session, captured the attention of all the participants with his vibrancy. Professor A. K. Kalia, formerly Vice Chancellor of Sampurnanand Sanskrit Vishvavidyalay, Varanasi presided over the session. Scholars of *Nyāya*, *Navya-nyāya*, *Viśiṣṭādvaita*, Vedanta and Vyākaraṇa schools were present. In his inaugural address, Professor Rajaneesh Shukla threw light on the tradition of *Sutra*s, *Bhāsya*s, *Vārttika*s and *Pravesh Grantha*s. Moreover, *Maṇikaṇa* is seen as a *pravesh grantha*. Professor Vashishtha Tripathi said about *Maṇikaṇa*'s place in the tradition of Navya-Nyāya. Thereafter, Professor S. Mishra, in his keynote address, spelled out the tradition of *Nyāya* as well as new version of this tradition. Professor A. K. Kalia, in his presidential address, informed the participants that *Nyāya* has secured its place in *Vidya-sthānas*.

Below is the list of topics extensively discussed during seven days of the workshop.

On *Maṅgalavāda*— Professor Ram Kishor Tripathi

On *Prāmāṇyavāda* — Professor Vashishtha Tripathi

Sannikarṣavāda — Professor Vashishtha Tripathi

Pramālakṣaṇavāda and *Anyathākhyātivāda* — Professor Ram Kishore Tripathi

Pratyakṣavāda— Professor Ram Kishore Tripathi

Anumāna Parikṣeda— Professor Hare Ram Tripathi

Vyāpti, vyāpti-grahopāya—Professor H. R. Tripathi

Tarkaprakaraṇa and *Upādhiprakaraṇa* — Professor H. R. Tripathi

Hetu-prabheda — Professor H. R. Tripathi

Pakcatā-prakaraṇa, parāmarśa-prakaraṇa, arthāpatti-prakaraṇa and parārthānumāna — Professor Sachchidanand Mishra

Upamāna Pariccheda, Śaktivāda — Professor P. K. Mukhopadhyay

Śāabda Pariccheda — Professor P. K. Mukhopadhyay

Śabda-prāmāṇyavāda, yogyatāvāda and ākāṅkṣāvāda — Professor P. K. Mukhopadhyay

Dhātuvāda, ākhyātśakti-vāda and *Moksavāda* — Professor Sachchidanand Mishra

Vidhivhda, Apūrvavāda — Professor P. K. Mukhopadhyay

Āsattivāda, tātparyavāda, Śabdasaktivāda — Professor P. K. Mukhopadhyay

On *Maṅgalavāda,* Professor Ram Kishor Tripathi spoke on various issues related to *maṅgalācarana.* What is the relevance of *maṅgalācaraṇa*? Why do scholars begin a *śāstra* with *maṅgalācarana?* Is it a part of the *śāstra*? If yes, why do scholars consider this as a part of the text?

As described in tradition, *maṅgala-padārtha* is auspicious. Some scholars take this as *īṣta-smaraṇa*. Then, in which sense it is moot point, it was to be made apparent here. **On**

Prāmāṇyavāda,* Professor Vashishtha Tripathi discussed** "Is there any measure of *Vighna?*" "Can *Upādhi* be *avacchedaka*?" were asked to Professor Mishra. He answered this in detail elaborating upon the notions of *upādhi*s and *kāraṇatā-avacchedaka*. He made some points on *viśeṣaka* and *prakāraka* with examples of *rajat-raṅgayoḥ* and *raṅga-rajatayoḥ*. **On *Pramālakcaṣavāda* and *Anyathākhyātivāda*, Professor Ram Kishore Tripathi discussed** over *pramā*, *pramātva* etc: what is *pramg*? What is *pramāṇa*? All *vyavahāras* are *jñānādhīna*. He also discussed ***Pratyakcavāda. On Anumāna Parikceda, **Professor Hare Ram Tripathi** from Sarva-Darshan Vibhgga, Lal Bahadur Shastri Vidyapeeth, New Delhi lectured and elaborated the concept. He also discussed ***Vyāpti Prakaraṇa, Tarkaprakaraṇa*** and ***Upādhiprakaraṇa, Hetu-prabheda*** of the text. Professor Sachchidanand Mishra discussed ***Pakcatā-prakaraṇa, parāmarśa-prakaraṇa, arthgpatti-prakaraṇa*** and ***parārthānumāna*** of the text. Professor Piyush Kant Dixit delivered his discourse on *hetvābhāsa*. He also discussed three types of *vyabhiṣāra*: *sādhāraṇa*, *asādhāraṇa* and *anupasaṁhāri*. Each of these three were defined following the text. This session ran unhurriedly and esoterically in nygya system's specialized language. An interaction session with Professor S. R. Bhatt, Chairperson of the ICPR was also organized. Professor Bhatt interacted with Dr. Satyamurti on *karaṇa* and *kāraṇa* and other participants of the workshop over the *Nyaya.* Professor Bhatt informed the participants about the discussion of *karaṇa* in Jayanta Bhatta's Nyāya-Mañjari. On ***Upamāna Pariccheda, Śaktivāda, Śabda-prāmāṇyavāda, yogyatāvāda and ākāṅkṣāvāda,*** **Professor P. K. Mukhopadhyay** delivered the lecture. Professor P. K. Mukhopadhyay started the reading of the *Upamāna pariccheda.* At the concluding day each participant were asked to give his/her presentation.

WORKSHOP ON RUDOLF CARNAP'S MEANING AND NECESSITY 17 MARCH TO 23 MARCH 2018

A seven-day workshop was organized from 17 March to 23 March 2018 at the ICPR Academic Center, Lucknow. The Workshop aimed to orient student and scholars in developing thoughts in Rudolf Carnap's *Meaning and Necessity*. The inaugural session commenced with the recitation of Saraswati Vandana by Professor K.C. Pandey, advisor of the workshop. Dr. Pooja Vyas, Director of ICPR, welcomed all delegates. The workshop's inaugural lecture was given by Professor Mamta Bandopadhyaya who

explained and elaborated 'how and why' about the text (*Meaning and Necessity*). This was followed by a brief introduction by Professor P.K. Khare, the coordinator of the workshop. This session was preside over by Professor D.N.Yadav Gorakhpur University Gorakhpur. The second session started with the lecture of Professor Mihir K.Chakraborty. He began his lecture by giving a standard definition of modal logic as a place which is associated with necessity, possibility, unpossibility etc. Here, he attempted to establish that truth is not an absolute but a relatives term referring to a possible world. Professor Mamta Bandhopadhya delivered her lecture on "The Method of The Name –Relation". She talked about the three components of language and the relation between linguistic expressions and objects/entities/themes. This name relation was elucidated with reference to four philosophers: G. Frege, Alonzo Church, Bertrand Russell, and W.V.O. Quine. Later on, she talked about Frege's distinction of complete and incomplete expressions, definite and indefinite descriptions. Pandey spoke on Carnap's paper *Empiricism, Semantic & Ontology*. Referring to this seminal paper of Carnap, Professor Pandey talked about the issues in meaning, signification and supposition. He also talked about historical background of Logical Positivism, Vienna Circle and Rejection of Metaphysics with special reference to Wittgenstein. Professor T. Hossain delivered lecture on modal logic of R.Carnap's "Meaning and Necessity". In this section, he dealt with the topic "What is logic" and described three types of logic: [1] Aristotelian Logic, [2] Traditional Logic, and [3] Modern Logic. Carnap described modal logic as the theory of modalities, namely, necessity, contingency, possibility, impossibility, etc. According to Hossain, to clarify each modal concept, we have to correlate each modal concept with corresponding semantical concept.

Professor K.L. Das's lecture was on Chapter 1 of Carnap's *Meaning & Necessity*. In this section, Logical Positivism deny the relevance of emotive meaning. Distinctions between intension/extension, demotation/cannotation, sense/reference are made. There are two important concepts: Property and Class. He discussed some points such as individual concepts, individual predicate, individual variables and so on. Professor R.C. Pradhan delivered lecture on the problem of meaning and necessity from contemporary prospective. According to Professor Pradhan, semantic language could be divided into two parts: (1) formal language semantic and (2) natural language. On the last day, **valedictory session was held**. Professor Khare presented the brief report of the workshop

for all seven days. Professor R.C. Pradhan delivered Valedictory Address. He emphasized on the role of philosophy in shaping the mind of the society.

Seven-day ICPR Workshop on
"Delineating Postmodernism through Indian Philosophy"
01-07 May 2017

The second half of the 20th century, and especially the last 20 years, has been variously referred to as post-industrial, post-metaphysical, post-structuralist, post-age and, finally, post-modern. This mÈlange of terms reflects a shared but brooding sense of an end, or at least, the decline of "some monolithic structure" that has/had been reigning supreme in the west for several centuries. What is this "post" that is emerging? Is this only a transition? And how far is it possible to look at such a transition from the perspectives of Indian philosophy? These are some of the precise questions that probably led to the ICPR's idea behind organizing a 7-day workshop on "Delineating Postmodernism through Indian Philosophy".

The workshop started on 1 May 2017 with the inaugural session attended by Professor S.R. Bhatt, Chairman (ICPR), Professor Rajaneesh Shukla, Member Secretary (ICPR), Professor O. P. Pandey, Professor R. P. Singh, Professor Panner Selvam, Professor R. C. Sinha. The inaugural address and introductory speech were followed by a detailed introduction to the theme, objectives and expectations of this workshop by Dr Prashant Shukla, the coordinator/director of the workshop.

Professor R.P. Singh from Jawaharlal Nehru University, New Delhi delineated issues like what it means to be rational, European modernity, the central issues of modernity, key indicators of modernity, etc. He expounded terms such as traditions and modernity, pre-modernity and modernity in India, modernization of Indian tradition and unfulfilled promise of European modernity, etc. Finally, the day was called off with a basic but clear understanding of what postmodernism means and how to look at it from the Indian perspective.

Next dat, Professor Panner Selvam from University of Madras started his session with **Hermeneutics of Postmodernism**. He discussed the role of historicity, culture and tradition in constructing a text and making it dynamic in nature. Professor Panner

Selvam focused on **evaluating Indian philosophy from the postmodern perspective**. He explained what we mean by Indian tradition, shift in Indian philosophy, the three myths of Indian philosophy by Professor Daya Krishna, the spiritual and transcendental concept by Professor Rajendra Prasad, etc.

Professor R.C. Sinha discussed themes of **Culture and Contexts** and **Critical and Comparative Analysis of Indian Schools of Thoughts.** He discussed in detail what it means to philosophize, the aim of doing philosophy, and what we expect from Indian philosophy in this postmodern world. Dr Alok Tandon discussed on the topic **Postmodernism and Science**. Professor Rakesh Chandra spoke on **Richard Rorty and Postmodernism**. Through some text-readings of selected paragraphs from *The Linguistic Turn*, *Achieving Our Country and Take Care of Freedom and Truth will Take Care of Itself*, he clarified postmodern position as understood from an analytic philosopher's perspective. Professor Sanjay Shukla from Ewing Christian College, Allahabad spoke on **Metaphysico-Epistemological and Ethical Issues in Postmodernity**. He discussed some of the very prominent issues in postmodernism like dialectic of enlightenment, subject-centered reason, inter-subjective patterns and human-freedom used frequently in the world of postmodern thinkers. Professor Balaganapathi Devarakonda from Delhi University took the theme of **Postmodernism and Indian Historiography** where he made a threadbare analysis of Indian history and historiography and how history is understood with different perspectives. He made a detailed exposition of distinctions between different understanding of Indian philosophy and the parameters involved in it. Professor Debashish Guha from University of Allahabad spoke on **Delineating Postmodern Applied Ethics**. The last session ended with the **Concluding Remarks** by Coordinator of the Workshop Dr Prashant Shukla and **Distribution of Certificates** to all participants.

Two Day ICPR National Seminar on
Contextualism in Contemporary Epistemology
26-27 March 2018

A two-day National Seminar on "Contextualism in Contemporary Epistemology" was held at the ICPR Academic Centre, Lucknow from 26 to 27 March 2018. Professor Sreekala Nair, coordinator of the seminar, presented an exhaustive exposition of central theme and related issues. She clarified the distinction between "substantive" and "semantic"

contextualism and emphasized that the focus of the seminar is on attributor contextualism and not on other varieties of contextualism. She also pointed out the two main difficulties associated with this position, whether to treat contextualism as part of epistemology or philosophy of language and whether it robs knowledge of its claims of objectivity.

In his presidential address, Professor Paneer Selvam emphasized the need to decontextualise the context as context is never fixed. Drawing insights from "radical contextualism" of Gaddamer and Ricour's "two ways of understanding", he talked about the postponement of meaning as more meanings emerge from the context. He also pointed out the divide between analytic and continental philosophers in this respect.

Professor Rakesh Chandra, giving the keynote address, raised various questions/issues related with the theme of the seminar. He questioned as to where to place the context, within interpretation or within the context of the sentence? He also put the question, whether the rules of inference are also context sensitive? Taking the side of analytical philosophers, he pointed out that context sensitivity is there in Frege but that is not to be treated as psychologism because that may imply private language and sollipicism, which he feared. Professor Chandra also pointed out various issues related to gender, dalit, race, and class discourses where understanding of context is important. But here he advised to stick to good old distinction between the context of discovery and the context of justification. He ended his address highlighting the problems we face adopting contextualism, especially in the case of religious statements.

First session of the seminar was chaired by Dr. Alok Tandon, in which two papers were presented. The first one titled "Context specific knowledge construction in the social constructivist position of Richard Rorty" was presented by Dr. C. Prem Kumar, wherein he delineated the contours of social constructivism in detail to emphasize the value inclusive, transactional, dialogical nature of social reality which needs a different methodology as participant/member of the community to give space to numerous voices. Taking recourse to Richard Rorty's approach, he questioned foundationalism of modern knowledge, rejected the notion of objectivity and emphasized the role of interlocutors, conversation and hermeneutic circle in knowledge construction. Dr. Prashant Shukla raised the question of limits of lived experience and Professor Paneerselvam pointed to

the danger of ethno-centricism in Dr. Kumar's paper. In his presidential remarks, Dr. Alok Tandon raised the question of the status of scientific knowledge and can it be treated at par with other forms of knowledge? Second paper of the first session was presented by Dr. Sreejith K.K. titled 'Saving the Virtue Epistemology of Sosa from the Dilemma: Accommodating Testimonial Knowledge without the Ghost of Gettier'.

The second session was chaired by Professor Prajit K. Basu, in which two papers were presented. In her paper, titled "Contextualism in Knowledge Attribution", Dr. Shymashree Bhattacharya discussed scepticism concerning knowledge where the claim is that we cannot have any knowledge and cannot know any sort of truth, so the issues are regarding our justification to believe in propositions of past, future, physical world and other minds. She concluded that the contextualists can assume a sceptic friendly version of contextualism leaving it an open question as to whether the sceptic actually succeeds in raising the epistemic standard. The second paper in this session was presented by Dr. Ayesha Gautam titled "An Enquiry into the Contextualist Approach to Virtue Epistemology". She talked about virtue reliabilism and virtue responsibilism and raised the issue "whether the challenge advanced against standard version of contextualism can be used against the contextual approach to virtue epistemology or not?"

Third session of the first day was chaired by Professor Rakesh Chandra and two papers were presented in it. In the first paper titled "Contextualism, Objectivity and Science", Professor Prajit K. Basu elaborated upon the seven ways to differentiate between science and techno-science. Attempt of science is to describe the world, whereas techno-science tries to refigure the world. Scientific theories are not unified, monolithic entities and they are not the whole of science. Theories have diverse interpretations involving diverse kinds of extra-theoretical assumptions. Thus, there cannot be any grand unified theory of contextualism, he posited. He also talked about ignorance, uncertainty and risks involved in techno-science and answered many questions raised by the participants on the subject. Last paper of the day was presented by Dr. Varbi Roy, titled "Helen Longino's Critical Contextual Empiricism: An Explanation".

Fourth session, held on the second day, was chaired by Professor Prajit K. Basu, in which Professor Paneerselvam presented his paper titled "Gadamer's Approach to Radical Contextualism and Occasion Sensitivity". Focussing on the work of Gadamer, he

emphasized the tri-unity of understanding, interpretation and application in contextual understanding. Accordingly, language is a medium of hermeneutical experience, it is not merely the study of words and sentences, rather a discourse that is open ended. Such radical contextualism, according to him, gives space to talk about social problems, which is not available in analytical framework.

Fifth session was presided by Dr. Prem Kumar Immanuel and two papers were presented in it. In her paper titled "What is Wrong with Contextualism", Professor Sreekala Nair gave detailed historical background of the different versions of contextualism but confined her discussion on contextualism that functions as a semantic thesis, "attributor contextualism". To sum up her arguments, she said knowledge attribution depends on causal explanations and causal explanations are sensitive to context. This in turn means that the truth value of a knowledge attribution sways with the salience of explanations chosen by the attributors. In the second paper presented by Dr. Padmadhar Chaudhari, titled "Re-contextualisation of Context: Context Sensitivity from an Ethical Perspective", he tried to justify contextuality in Aristotle's virtue ethics. He raised the question "what is the role moral agent plays in moral contextualism?"

Sixth session was chaired by Professor Rajendra Prasad and three papers were presented in it. In the first one, titled "Knowledge Context and Space for Reasons", Dr. Manoj Panda started with two questions: how can we have knowledge about the external world? and how can we place our knowledge in the space of reasons?. Questioning the efficacy of attributor contextualism to meet skeptical challenge successfully, he suggested supplementing contextualist account with McDowell's critique of interiorization of the space of reasons. Thus, McDowellian epistemology is better than attributor contextualism. In the second presentation, Dr. Prashant Shukla, in his paper tited "Contextualist Doubt in Habermas: A Critical Exposition", referred to Habermas's new book, *Truth and Justification* where he has talked about epistemological question of realism and ontological questions of naturalism and concluded that there is an internal connection between truth and objectivity at two different levels, action and discourse. There is a single context which is the objective world. The third and last paper was presented by Sabina P.S. In her paper titled "Justifying Logical Pluralism: The Contextualist Approach", she defined logical pluralism as plurality of logical values, its value depending on its consequences. Her conclusion was that though some critics argue that logical pluralism suffers from

"collapse" problem, her contention was that contextualists can solve this problem.

Last session was the valedictory session, in which Professor Rajendra Prasad gave the valedictory address. He pointed towards the relevance of the theme of the seminar in the context of the growing skeptical atmosphere against objectivity and analytical philosophy. In the end, Professor Sreekala Nair gave the vote of thanks.

WORKSHOP ON KANT'S POLITICAL THOUGHT ON PERPETUAL PEACE 15 JANUARY TO 24 JANUARY 2018

A ten-day workshop was organized for M.A., MPhil, and Ph.D Scholars from 15 to 24 January 2018 at the ICPR Academic Center, Lucknow. The workshop aimed to orient students and scholars in developing thoughts on Kant's political thoughts on perpetual peace that can be employed in the field of Philosophy and Social Sciences. The course endeavoured to ensure interactions between participants and experts.

The ten days of workshop remained precisely on the principles of conceptual clarity, progression, analysis, contemporary relevance of each section, and discussion among the participants and the experts.

In the inaugural session, Professor K.C. Pandey presented a brief introduction to workshop. What motivated Kant to write his essay was the signing of Treaty of Basel (1795) between Prussia and revolutionary France. He talked about many issues pertaining to the idea of perpetual peace. Professor S. Roy delivered brief introduction to Kant's political thought on perpetual peace. Professor Roy spoke on the context in threefold sense. Philosophy is a system of reason, man, and it is this very system of reason this perpetual peace has a definite position. Kant establishes perpetual peace as an ideal of mankind, i.e. perpetual peace is an ideal. In this particular essay, he meant the realization of logical geography in the philosophical system. Kant published in 1746 *Thoughts on the True Estimation of Living Forces.* He was having revolutionary thought but in his time German language was not very much developed to perpetuate his revolutionary thoughts. Inspite of all these difficulties, there is an advantage of explaining and understanding Kant's Philosophy. Professor Roy delivered lecture on towards federation of free states. Kant speaks of towards the federation of free states in order to maintain perpetual peace.

Kant was inspired by French Revolution. Kant's immediate interest was the Peace of Basel in 1499 and he could not confine himself. He was not in favour of these two wars. He was of the view that our aim must be permanent peace and suspension of hostility. According to him, nation is the highest authority through which desires of citizens are derived. Kant speaks of seizing war. We must take lessons from wars and try to extract from revolutions.

Professor K.C. Pandey summarized the lecture as what was the impact of American Civil War and French Revolution on Kant's perpetual peace. Liberty, Equality, and Fraternity was the main concern for Kant's perpetual peace and are utmost important for humanity, and these thoughts were enshrined in Constitution. Will of people is source of all justice. Justice in itself a dubitable concept in philosophical arena.

Professor R.P. Singh from JNU, New Delhi delivered lecture on Section II (Three Definitive Articles). In this section, he dealt with the satirical inscription on a Dutch innskeeper's sign upon which a burial ground was painted. Professor Singh discussed basic concepts of war and peace, the key words were: grave, instinctive, natural, piracy, conscious, civilization, republican, trifurcation of power, freedom laws, league of nation, hospitality, hostility, disposition. Dr. T. Hossain delivered his lecture on "First Supplement of the Guarantee for Perpetual Peace (nature as guarantee of peace) (Part II). Professor Shukla read text on second supplement: Secret Article For Perpetual Peace and explained it. Professor K.L. Das discussed that distinction between moral laws and constitutional laws can be made. Moral law compared to constitutional laws is primary in the sense that it is the very basis on which constitutional laws are constructed. On the other hand, constitutional law is the secondary as it is based on the foundation of moral laws. Ideals should always be revered and should be tried for the attainment even if we are quite aware of the fact that it can never be achieved or attained fully. One should always strive for ideals because ideals are perfect in nature and we seek perfection. The valedictory session was held on the last day of the workshop in which Professor K.C. Pandey introduced chief guest Professor D.N. Yadav and Professor Rajaneesh Shukla, Member Secretary, ICPR. Professor D.N. Yadav presented a valedictory speech in which he took account in all the views of Kant's political thoughts. He threw light on Kant's political thought and compared it to social contract theories. Professor Rajneesh Shukla discussed on applied philosophy and democratic setup world order. He was of the view

that by approaching pragmatic perspective peace cannot be established. With the distribution of certificates to participants the workshop came to an end.

Report of
Annual Lecture on "Gandhi , Marx & Heidegger on the Critique of Modern Civilization"

An annual lecture programme was organized by the ICPR and the lecture was delivered by Professor Ambika Datt Sharma of Dr. Hari Singh Gaur University, Sagar, at Academic Centre, Lucknow on 6 December 2017. Many scholars from Lucknow as well as from nearby cities participated in this lecture. Professor Rajaneesh Kumar Shukla, Member Secretary, graced the occasion. The welcome speech was delivered by Dr. Pooja Vyas, Director ICPR.

त्रिक शैविज्म ऑफ काश्मीर– लेवल 3 वर्कशाप (फेज 2)
अभिनवगुप्तकृत ईश्वरप्रत्यभिज्ञा विमर्शिनी ज्ञानाधिकार : 5–8 आह्निक
रिपोर्ट

भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद द्वारा, लखनऊ केन्द्र के तत्त्वावधान में प्रत्यभिज्ञा दर्शन जो कि त्रिक शैविज्म का प्रमाणमीमांसीय सम्प्रदाय है, के विषय में इस विषय के अधिकारी विद्वान् प्रो. नवजीवन रस्तोगी के निर्देशन और संयोजन में 15 फरवरी से 28 फरवरी तक एक चौदह दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला आचार्य उत्पलदेव के ग्रंथ ईश्वरप्रत्यभिज्ञाकारिका पर प्रत्यभिज्ञा सम्प्रदाय के प्रतिष्ठित विद्वान् अभिनवगुप्त की टीका ईश्वर प्रत्यभिज्ञा विमर्शिनी के अध्ययन की चार वर्षीय परियोजना के अंतर्गत तीन वर्षीय कार्यक्रम के फेज दो के रूप में आयोजित की गयी। यह कार्यशाला विगत वर्षों–2011, 2012, 2016 में सम्पन्न हुईं कार्यशालाओं के ही क्रम में आयोजित की गयी । इस कार्यशाला में कश्मीर से लेकर केरल तक के विविध क्षेत्रों से आये लगभग चालीस प्रतिभागियों ने भाग लिया जिनकी इस दर्शन में विशेष रुचि है और जिन्होंने किसी न किसी रूप में इस चिंतन से अपने को जोड़े रखा है।

इस कार्यशाला के दौरान इस ग्रंथ के ज्ञानाधिकार के पाँचवें से लेकर आठवें आह्निक तक का पंक्ति वाचन पद्धति अपनाते हुये शास्त्रीय विधि से अध्यापन किया गया। यह विमर्शिनी टीका उत्पल की कारिकाओं का विशद व्याख्यान है और तांत्रिक परम्परा में विकसित कश्मीर शैव चिंतन को तार्किक आधार पर प्रतिष्ठित कर आचार्य उत्पल और अभिनवगुप्त को यौक्तिक– तत्त्वमीमांसक के रूप में स्थापित करती है। यह पूरा ग्रंथ परार्थानुमान की शैली में लिखा

गया ग्रंथ है जिसमें आद्योपांत निगमनात्मक शैली में विविध पूर्वपक्षों को लेकर उनका युक्तिपूर्वक खण्डन करते हुये अपने सम्प्रदाय की प्रस्थापनाओं को प्रस्तुत किया गया है।

इस कार्यशाला में मूल ग्रंथ के अध्ययन के अतिरिक्त ग्रंथ में आये सिद्धांतों के सम्यक ग्रहण के लिये आवश्यक विषयों पर उन विषयों से सम्बद्ध अधिकारी विद्वानों के व्याख्यान भी आयोजित किये गये। इस कार्यशाला का प्रारम्भ प्रतिदिन सुश्री शालिनी माथुर के द्वारा अभिनवगुप्त के स्तोत्रों के संगीतमय पाठ से हुआ और प्रतिदिन की शास्त्र चर्चा का संक्षिप्त विवरण नित्य कार्यक्रम के अंत में डा. मीरा रस्तोगी के द्वारा प्रस्तुत किया गया। प्रतिभागियों के परस्पर विचार विमर्श के लिये प्रतिदिन एक घंटे का सत्र मध्याह्न भोजन के बाद रखा गया जिससे वे परस्पर चर्चा कर इस शास्त्र की मूल धारणाओं का सम्यक् ग्रहण कर सकें।

इस कार्यशाला का मुख्य प्रयोजन था नयी पीढ़ी को शास्त्रों के स्वरूप तथा विषय प्रस्तुति की विशिष्ट प्रणाली से परिचित कराना जिससे वे सम्प्रदाय के मूल सिद्धांतों से मौलिक रूप से परिचित हो सकें, साथ ही भारतीय दर्शन के उभरते हुये युवा चिंतकों का सही मार्गदर्शन हो कर उनको आगे विचार मंथन हेतु प्रोत्साहित किया जा सके।

इस कार्यशाला के प्रथम सत्र में सर्वप्रथम इस कार्यशाला के निर्देशक प्रो. नवजीवन रस्तोगी ने इस कार्यशाला के प्रयोजन और विषय से प्रतिभागियों को परिचित कराया। उसके बाद आपने आचार्य अभिनवगुप्त के व्यक्तित्व के विविध पक्षों का उल्लेख करते हुये बताया कि यद्यपि अभिनवगुप्त को साहित्यशास्त्री के रूप में विशेष ख्याति प्राप्त हुई है, एक योगी, साधक और रहस्यवित् के रूप में भी उनकी चर्चा मिलती है पर एक सशक्त दार्शनिक के रूप में उनको उतनी प्रतिष्ठा अभी तक प्राप्त नहीं हो सकी है जिसके वह अधिकारी हैं। इस कार्यशाला का लक्ष्य उनके उसी रूप को सबके सामने लाना हैय साथ ही शास्त्र ज्ञान बौद्ध अज्ञान का निवारक है, इस दृष्टि से भी इस कार्यशाला की उपयोगिता हैय गुरु शिष्य परम्परा के उच्छिन्न हो जाने से शास्त्र चिंतन आगे विकसित नहीं हो पा रहा है, अतः शास्त्र संरक्षण की दिशा में भी यह एक कदम है। इसके बाद आपने इस आगम परम्परा के शास्त्र के अध्ययन की क्या शैली होनी चाहिये, इस पर चर्चा की और बताया कि किसी शास्त्र ग्रंथ का अध्ययन परम्परा से सम्बद्ध करते हुये ही किया जाना चाहियेय उसकी वाचन की, लेखन की शैली पर विशेष ध्यान देना चाहियेय शास्त्राध्ययन के लिये आवश्यक वाक्यशास्त्र, प्रमाणशास्त्र, पदशास्त्र के ज्ञान को भी उस शास्त्र विशेष के संदर्भ में ही रख कर प्रयोग किया जाना चाहिये।

द्वितीय सत्र में पुनः प्रो. नवजीवन रस्तोगी ने विषय को आगे बढाते हुये इस ग्रंथ की विशिष्टताओं का परिचय दिया। आपने इस प्रत्यभिज्ञा शास्त्र के अंतर्गत गृहीत पाँच ग्रंथों के स्वरूप से सबको परिचित कराते हुये बताया कि यह प्रत्यभिज्ञाचिंतन इन ग्रंथों के अतिरिक्त धाराओं से भी प्रवर्तित दिखायी देता है, एक ओर उत्पल के अपने शिष्य रामकण्ठ

द्वारा स्पंद कारिकाओं पर प्रस्तुत स्पंद विवृति टीका में प्रत्यभिज्ञा सिद्धांतों का पर्याप्त प्रयोग उपलब्ध होता है, दूसरी ओर एक अन्य रामकण्ठ द्वारा गीता की सर्वतोभद्र नामक टीका में प्रस्तुत ज्ञान क्रिया समुच्चय पर भी इस प्रत्यभिज्ञा चिंतन की स्पष्ट छाप दिखायी देती है। इसके अतिरिक्त आचार्य उत्पल अपनी अन्य रचनाओं में भी इन प्रत्यभिज्ञा सिद्धांतों को आगे बढाते दिखते हैं। आपने बताया कि यह चिंतन सोमानंद के माध्यम से र्त्यम्बक परम्परा से जुडता हुआ वर्तमान समय तक किसी न किसी रूप में प्रवर्तित रहा है। इसके बाद आपने इस शास्त्र के वर्गीकरण के विविध ा आधारों का परिचय दिया। आपने यह भी बताया कि इस ग्रंथ में अनेक स्थलों पर प्राप्त 'अन्ये तु' आदि वाक्यांशों से यह स्पष्ट है कि इस शास्त्र की व्याख्या की अन्य समानांतर परम्परायें भी विद्यमान थीं। साथ ही उल्लेखों से यह भी स्पष्ट है कि इस शास्त्र के पाठ में भी तंत्रालोक के टीकाकार के समय तक आते– आते कई परिवर्तन हुये हैं । इसके बाद आपने अभिनवगुप्त की विशिष्ट व्याख्या शैली से सभी प्रतिभागियों को परिचित कराया। उसके बाद आपने इससे पहले की कार्यशाला में अध्ययन किये गये चार आह्निकों की विषयवस्तु का संक्षिप्त परिचय दिया।

कार्यशाला के दूसरे दिन के प्रथम सत्र में प्रो. रस्तोगी ने पाँचवें आह्निक का अध्यापन प्रारम्भ करते हुये बताया कि यह सम्प्रदाय प्रत्ययवादी चिंतन के विशिष्ट प्ररूप को प्रस्तुत करता है अतः यहाँ की शब्दावली को समझना बहुत आवश्यक है क्यों कि यहाँ कई धारणाओं का विविध स्तरों पर अलग अलग अभिप्राय में प्रयोग मिलता है। जैसे यहाँ ज्ञान शब्द का कई स्तरों– ज्ञानमीमांसीय, तत्त्वमीमांसीय, ज्ञान प्रक्रिया, प्रत्यक्ष अनुभव आदि के रूप में प्रयोग किया गया है। आपने बताया कि प्रकाश विमर्श की जिस शब्दावली में यहाँ सत् के स्वरूप को परिभाषित किया गया है वह शब्दावली परम्परा से गृहीत है। यह प्रकाश शब्द विज्ञानाद्वैत और शब्दाद्वैत में समान रूप से प्रयुक्त है पर यह सम्प्रदाय इस धारणा को वहाँ से ग्रहण कर भी अपनी विशिष्ट दृष्टि से विकसित करता है। अखण्ड चौतन्य जो सतत गतिशील है, ही यहाँ परमसत् है। समस्त जगत् उसी से विकसित होता है। वह स्वतंत्र गतिशील चेतना जिस रूप में चयन करती है उसी रूप में भासित होती है । चेतना के इसी व्यापार विशेष को बताता है प्रकाश शब्द। यही भासन सत्ता है । इस सत्ता के परिघटन के बिना विमर्शन व्यापार प्रवृत्त नहीं हो सकता अतः पहले प्रकाश पक्ष को तथा उसके व्यापार को स्पष्ट करना आवश्यक है। इस तरह ज्ञानात्मक चेतना प्रकाश है और ज्ञान की क्रियात्मक चेतना विमर्श है। इस प्रकाश तत्त्व का विवेचन यहाँ कई स्तरों पर किया गया है दृ प्रकाश अर्थ का स्वरूप है, प्रकाश प्रमाता का स्वरूप है, प्रकाश ज्ञाता, ज्ञान और ज्ञेय तीनों का स्वरूप है। पर इससे प्रकाश के अपने स्वरूप में कभी कोई भेद नहीं घटित होता, इसी कारण यह अखण्ड तथा एक है जिसे महाप्रकाश भी कह कर बताया गया है। सारी सृष्टि प्रकाश रूप है । यह प्रकाश ही भावाभावव्यवस्था का निर्धारक है।आपने बताया कि ज्ञान शक्ति से पूर्व स्मृतिशक्ति का विवेचन आवश्यक है क्यों कि स्मृति के माध्यम से ही विषय का पूर्ण स्वरूप प्रकाशित होता है अन्यथा वस्तु के दर्शन मात्र से किसी भी लोक व्यवहार की सिद्धि नहीं हो सकती।

कार्यशाला के दूसरे दिन के अपराह्न के सत्र में वाराणसी से आये प्रो. कमलेशदत्त त्रिपाठी ने बताया कि भारत में शास्त्र की दो तरह की परम्परायें हैं– श्रुतिप्रधान और लिखित। पश्चिमी जगत् में भी इसकी चर्चा प्राप्त होती है पर इन दोनों दृष्टियों में मुख्य भेद यह है कि जहाँ पश्चिम में एक टेक्स्ट को लेकर उपलब्ध विविध पांडुलिपियों के आधार पर उसके रूप को परिशोधित कर एक मानक रूप प्रस्तुत कर अपनी– अपनी समझ के अनुसार उसका अध्ययन किया जाता है जिससे उनके अध्ययन में उन विद्वानों के अपने प्रतिमान ही उस टेक्स्ट पर आरोपित हो जाते हैं और उस टेक्स्ट की अपनी मूल दृष्टि कहीं छिप जाती है, वहीं भारतीय चिंतन का यह वैशिष्ट्य है कि यहाँ टेक्स्ट को पूर्वपरम्पराओं तथा सहगामी परम्पराओं के संदर्भ में रख कर ही अध्ययन किया जाता है ।

प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा ने दो सत्रों में दो व्याख्यान दिये। प्रथम व्याख्यान में उन्होंने बाह्यार्थानुमेयवाद को आधार बना कर विज्ञानवाद तथा प्रत्यभिज्ञा आचार्यों ने जिन युक्तियों को प्रस्तुत कर अपने– अपने मत की स्थापना की है, उनसे सबको परिचित करवाया। आपने अपने व्याख्यान में यह रेखांकित करने का प्रयास किया कि शिवदृष्टि में आचार्य सोमानंद की उक्ति दृ 'घटो मदात्मना वेत्ति वेद्म्यहं वा घटात्मना' के आधार पर प्रस्तुत 'सर्वं सर्वात्मकम्' की विचारधारा का ही परिनिष्ठित रूप प्रत्यभिज्ञा चिंतकों के द्वारा विकसित यौक्तिक मीमांसा में परिलक्षित होता है। अपने दूसरे व्याख्यान में उन्होंने अपोहवाद के सिद्धांत को लेकर बौद्ध चिंतन तथा प्रत्यभिज्ञा सिद्धांत के मध्य के भेद को रेखांकित करने का प्रयास किया।

बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से आये भारतीय न्याय शास्त्र व तर्कमीमांसा के विशिष्ट विद्वान प्रो.सच्चिदानन्द मिश्र ने दो सत्रों में प्रस्तुत अपने दो व्याख्यानों में भारतीय वस्तुवादी चिन्तन के विविध रूपों को प्रस्तुत कर उसके सन्दर्भ में इस प्रत्यभिज्ञा चिन्तन को प्रस्तुत करने का प्रयास किया।

दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष एवं भर्तृहरि के चिन्तन के समर्थ विद्वान प्रो. मिथिलेश चतुर्वेदी ने एक सत्र में अपने वक्तव्य में भर्तृहरि की मान्यताओं से हम सभी को परिचित कराया। आपने बताया कि काश्मीर शिवाद्वयवादी आचार्य अभिनवगुप्त भर्तृहरि को अत्यन्त श्रद्धा व सम्मान से उद्धृत कर यह संकेत करते हैं कि भर्तृहरि के शब्दाद्वयवाद से प्रत्यभिज्ञा चिन्तन पर्याप्त प्रभावित है और उनसे बीज रूप में कई मान्यताओं को ग्रहण कर उन्हें अपनी दृष्टि से आगे बढाता है, यद्यपि सोमानन्द शिवदृष्टि में एक आह्निक में शब्दाद्वयवाद की मान्यताओं की प्रखर आलोचना करते हैं । इस तरह परम्परा में एक अन्तर्विरोध दिखाई देता है जिसका विश्लेषण आवश्यक है

एक अन्य सत्र में दिल्ली विश्वविद्यालय से ही आये डा. बलराम शुक्ला ने संस्कृत शास्त्राध्ययन में व्याकरण सिद्धान्तों का कैसे उपयोग होता है, इसको इस ईश्वरप्रत्यभिज्ञाविमर्शिनी में अभिनवगुप्त के द्वारा प्रस्तुत प्रयोगों के आधार पर स्थापित करने का प्रयास।

प्रो. नवजीवन रस्तोगी ने अपने सात सत्रों में इस ईश्वरप्रत्यभिज्ञाविमर्शिनी ग्रंथ के पाँचवे आह्निक में विवेचित विषय का

शब्दशः पङक्तिवाचन पद्धति से प्रतिपादन किया । इस आह्निक में 21 कारिकायें हैं जिनमें इस सम्प्रदाय की आधार भूत मीमांसा को स्थापित किया गया है।

वैष्णव देवी विश्वविद्यालय, जम्मू से आये डा. वरुण कुमार त्रिपाठी ने अपने तीन सत्रों में इस ग्रन्थ के छठे आह्निक का अभिप्राय शास्त्रीय ढ़ंग से प्रतिपादित करने की चेष्टा की । उन्होंने अपने तर्कशास्त्र के विशिष्ट ज्ञान से इस सम्प्रदाय की मान्यताओं को परख कर उनके पुष्ट स्वरूप को सबके सम्मुख रखा और बताया कि भारतीय तथा पश्चिमी दोनों ही परम्पराओं में इस सम्प्रदाय जैसा चिन्तन का उत्कर्ष अन्यत्र कहीं दिखाई नहीं देता ।

उसके बाद चार सत्रों में लखनऊ विश्वविद्यालय, संस्कृत विभाग की पूर्व प्राध्यापिका डा. मीरा रस्तोगी ने इस ग्रन्थ के सातवें आह्निक के विषय का शास्त्रशः प्रतिपादन किया । इस आह्निक में उन स्मृति, ज्ञान, अपोहन शक्तियों के के एक आश्रय की स्थापना की गयी है और उसे प्रतिभा कह कर प्रस्तुत करते हुये भी माहेश्वर्ययुक्त प्रमातृतत्त्व के रूप में उपस्थापित किया गया है ।

अन्तिम सत्र समापन सत्र के रूप में आयोजित हुआ जिसमें सबसे पहले डा. मीरा रस्तोगी ने पूरी कार्यशाला के इतिवृत्त की संक्षिप्त रिपोर्ट प्रस्तुत की। तदुपरान्त प्रो.नवजीवन रस्तोगी ने अपने समापन वक्तव्य में कहा कि आज यह चिंतन परम्परा उच्छेद के स्तर पर पहुँच रही है, वर्तमान समय में न तो विश्वविद्यालयों में दर्शन विभागों में इसे पाठ्यक्रम का अंग बनाया गया है, न ही स्वतंत्र रूप से ही अध्येता इसके अध्ययन में रुचि लेते दिखायी दे रहे हैं। भारतीय दर्शन शास्त्र के इतिहास ग्रंथों में जिस विभाजक दृष्टि का आश्रय लेकर वर्गीकरण प्रस्तुत किये गये हैं , उनमें भी अभिनवगुप्त के इस चिंतन को खोज पाना अति दुर्लभ है। अतः आज हमारा बहुत बड़ा दायित्व है कि हम इसके अध्ययन की ओर लोगों को आकृष्ट कर उनमें इसको जानने की रुचि जगायें जिससे इस चिंतन की दुर्लभ विधा को सुरक्षित रखा जा सके।

इसके बाद भारतीय अनुसंधान परिषद् के सदस्य सचिव, प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने कहा कि यह प्रचलित छह दर्शन परम्पराओं का वर्गीकरण भ्रामक है और पाश्चात्य परम्परा के प्रभाव में स्वीकार किया गया है। भारतीय चिंतन में छह दृष्टियों का उल्लेख था षड् दर्शनों का नहीं। त्रिक चिंतन चिंतन का शिखर है जिसे आज लगभग विस्मृत कर दिया गया है । किसी परम्परा को बनाये रखने के लिये जिस निस्पृह चिंतन की, समर्पित व्यक्तित्व की, एकांतिक निष्ठाभाव की आवश्यकता होती है आज की पीढी में उसका पर्याप्त अभाव दिखायी देता है अतः आज हमारा दायित्व और बढ जाता है। आज बहुत आवश्यक है कि हम अपनी दुर्लभ ज्ञान परम्पराओं को सुरक्षित करने के लिये यथासंभव प्रयास करें और अपने सांस्कृतिक मूल्यों की रक्षा हेतु कटिबद्ध हो तत्पर रहें।

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस

21 जून 2017

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद एवं राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान (मानित विश्वविद्यालय) के संयुक्त तत्त्वावधान में गोमती नगर, लखनऊ परिसर में 21.6.2017 को मनाया गया। कार्यक्रम के प्रथम चरण में प्रातः 7 बजे योगाभ्यास सत्र हुआ। इसमें लन्दन की सुश्री लूसी गेस्ट के कुशल निर्देशन में यह सम्पन्न हुआ। इसमें वर्षा के बावजूद संस्थान एवं दर्शन परिषद के सदस्यों एवं अन्य नगर के गणमान्य नागरिक उपस्थित हुए। द्वितीय सत्र कार्यशाला एवं परिचर्चा सत्र में सुश्री लूसी गेस्ट, (सचिव चन्द्रमौलि फाउण्डेशन वाराणसी) ने ही योग के विविध पक्षों पर अपना विशिष्ट उद्बोधन दिया। जिसमें योग के कारण ही आज भारत को विश्वगुरु बतलाया तथा कहा कि योग से ही आज विश्व की समस्याएं सुलझाई जा सकती हैं। राष्ट्रीय कार्यशाला–सामंजस्य तथा शांति के लिए योग विषय पर बीज व्याख्यान देते हुए आई.सी.पी.आर. के सचिव सदस्य प्रो. रजनीश शुक्ल ने योग के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डाला तथा वर्तमान परिस्थितियों में प्रासंगिक बतलाया। लखनऊ वि.वि. के कला संकायाध्यक्ष प्रो. पी. सी. मिश्र ने वर्तमान में समस्याओं को दूर करने के लिए योग को कारगर बतलाया।

प्रो. रामलखन पाण्डेय ने वर्तमान स्थिति में भी शास्त्रों को प्रमाण बतलाया। राज्यपाल के कानूनी सलाहकार श्री एस. एस. उपाध्याय ने योग पर और शोध की आवश्यकता बतलायी, जिससे चिकित्सा के क्षेत्र में और अधिक प्रामाणिक बनाया जा सके। सभा की अध्यक्षता करते हुए प्रो. विजय कुमार जैन (प्राचार्य) ने भारतीय संस्कृति में योग को सूर्य के समान सबके लिए उपयोगी बतलाया तथा जैनधर्म/बौद्धधर्म एवं पतंजलि के योग में समानता पर प्रकाश डालते हुए ध्यान एवं योग विविध पक्षों को प्रासंगिक बतलाई।

योग चिकित्सा सत्र– तृतीय सत्र में ब्रह्मकुमारी स्वर्णलता ने योग का महत्व बतलाते हुए क्रोध को शमन करने के लिए योग को उपयोगी बतलाया। प्रो. लोकमान्य मिश्र अध्यक्ष शिक्षाशास्त्र विभाग के अध्यक्ष ने कहा कि योग 'स्वास्थ्य' के लिए तो आवश्यक है ही भारतीय संस्कृति भी उजागर होती है। निरोगी रहने के लिए पाठ्यक्रम में भी इसे सम्मिलित करने की आवश्यकता है।

संभाषण प्रतियोगिता में संस्थान के 20 शोधछात्रों ने 'जीवन के विविध आयामों में योग का महत्व' विषय पर अपने विचार रखे। निर्णायक श्री आर. के. राठौर ने भी योग के महत्व पर प्रकाश डाला। आई.सी.पी.आर. ने भी योग के महत्व पर प्रकाश डाला। आई.सी.पी.आर. की निदेशक डॉ. पूजा व्यास ने योग दिवस की पूरी संकल्पना का महत्व बतलाया। इस अवसर पर प्रतियोगियों को पुरस्कृत भी किया गया।

समन्वयक श्री पवन कुमार ने सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन करते हुए कार्यक्रम में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई तथा परिसर एवं अनुसंधान परिषद के सभी सदस्यों ने इसमें उत्साह से भाग लिया।

समापन सत्र में कार्यक्रम के उपलब्धियों का वर्णन करते हुए डॉ. गुरुचरण सिंह नेगी ने कार्यक्रम का संचालन किया।

Report of Third Study Circle on

Concept of Human Rights in Hinduism

Initiator: Dr. Pawan Kumar Yadav

23 June 2017 at 3:00 PM at Academic Centre

The study circle on Concept of Human Right in Hinduism was conducted on 23 June 2017 at 3:00 PM at ICPR Academic Centre. Dr. Pawan Kumar Yadav was the initiator of the programme. Among the participants who graced the occasion was Professor Navjeevan Rastogi.

Dr. Yadav initiated the presentation by informing that the rights of human being is not entirely modern nor western as there are references of civil rights in ***Rigveda*** also. In ***Mahabharata*** also there was concept of dharma rights. But in ***Arthashastra,*** the rights of civil and legal rights was first formulated which also included economic rights. The basic human rights were incorporated in ***Smritis*** and ***Puranas.***

Dr. Yadav also quoted and talked about the fundamental rights of the Indian constitution. He also gave reference of Article 17 through which untouchability is abolished. He also discussed about the duties mentioned in Hindu dharamshastra. The right of happiness, right of equality, right of education, right of religion, right of protection, right of treatment, right to justice, etc. with reference to Hindu scriptures and Indian Constitution were discussed at length. The discussion on the paper also took place.

Report of the Fourth Study Circle

Bhartiya Darshano mein Satya ke Avdharana
Initiator: Professor Vijay Kumar Jain
31 July 2017 at 3:00 PM at

Rashtriya Sanskrit Sansthan, Lucknow Campus

The Fourth Study Circle was organized on 31 July 2017 at Rashtriya Sanskrit Sansthan and its principal Professor Vijay Kumar Jain was the initiator of the study circle. The

topic was *Bhartiya Darshano mein satya ke avadharana*. The programme started at 3:00 PM. Many scholars and professors were present in the lecture including Professor Rajendra Parsad, Professor Navjivan Rastogi, Dr. Pavan Dixit (Director (A) of the ICPR), among others. Dr. Pooja Vyas welcomed the guests. Professor Jain initiated his presentation by saying that *Bhartiya darshan* always placed truth (*satya*) on high place. According to Veda, sweet truth always wins the enemies, no vices can suppress the person who is speaking truth. According to Shanti parva, *Satya* is the prestige of *swarga*.

In Jain sect, *Satya* in *Syadvad* and *Anekantawad* is discussed at length. In Buddha darshan, lies are discouraged. In short all forms of Bharatiya Darshan were discussed in the light of *Satya*.

The programme was concluded after discussion by many scholars and the vote of thanks was given by Dr. Pavan Dixit.

Report of the 5th Study Circle

The Spirit of Yoga
Initiator: Professor Kanchan Saxena
HOD, Department of Philosophy, Lucknow University
28 August 2017 at 3:00 PM at
Seminar room of Department of Philosophy, L.U. Campus

The 5th Study Circle was organized at Department of Philosophy, L.U. on 28 August 2017. The initiator was Professor Kanchan Saxena, HOD, Department of Philosophy. She spoke about the spirit of Yoga. She elaborated her topic by discussing the importance of Yoga in daily life and dealing with mental, physical, and emotional problems. The problems related to work place, study, etc. can be dealt with not only through physical but also mental yoga.

Teachers and scholars of the university apart from Dr. Alok Tandon were also present in the lecture and actively participated in the discussion along with other participants. The introduction was given by Professor Rakesh Chandra and the vote of thanks, on behalf of the ICPR, was given by Dr. Pooja Vyas, Director ICPR.

Report on 6th Study Circle Programme

On
The Concept of Good Teacher in Philosophy
Initiator: Professor Rajendra Prasad
22 September 2017

The study circle on *The Concept of Good Teacher in Philosophy* was conducted on 22 September 2017 between 3.00 PM and 5.00 PM at the ICPR academic centre, where Professor Rajendra Prasad was the initiator of the programme. Among the participants, Professor K. C. Pandey from Lucknow University also present on the occasion.

Professor Prasad pondered over the tradition of teacher-student relationship and has degenerated in recent time. The transaction of knowledgehas been reduced to transaction of any other commodity. Consumerism has crept in and into philosophy too. Earlier, only the brightest mind would opt for philosophy, but things are not the same anymore.

Professor Pandey in his interaction, ruminated on compelling conditions of teachers, not only by administration and society, but also by the teaching community itself. Groupism, fixation and dominating nature of senior teachers are more problematic than politics into students' community.

Professor Prasad spoke about curriculum design, question paper settings, customary meetings in the name of reforms, virtues of teachers who shaped the foundation of philosophy teaching.

Report on 7th Study Circle Programme

On
Bhagvatgita and Yoga Darshan
Initiator:D̃r. Vijay Kumar Karn

On 31 October 2017
at
Bhaurao Devras Seva Nyas, Lucknow

The ICPR study circle on *Bhagvatgita and Yoga Darshan* was conducted on 31 October

2017 between 3.00 PM to 5.00PM, at Bhaurao Devras Seva Nyas, Lucknow. Dr. Vijay Kumar Karn was the initiator of the circle. The programme attracted huge audience.

At the outset, Dr. Pooja Vyas, Director (A) welcomed the guests and briefed about the Study Circle Programme of the ICPR.

Dr. Karn introduced Yoga Darshana making a conceptual analysis of the word from 'Yuj' meaning to be connected or engaged or entangled. To be connected presupposes a detached or disconnected or disengaged or disentangled stage. In any of the forms, Yoga Darshan has both worldly and other-worldly benefits, in the way of Abhyudaya and Nihsreyas, and that too not only for the human beings, but also for the whole cosmos. Dr. Karn expounded this point with various examples from different scriptures for the audiences.

The epistemic models of experience, reasoning and scriptures for the yoga darshan were discussed. He explained how the worldly actions can be done with surrender to the God and in the yoga path without being deviated from yoga. Towards the end, he reflected upon raja yoga, yoga siddhis, and yoga bhrastas, and different aspects of samadhis.

Report of the 8th Study Circle

Return to Purity: Theoretical and Practical Approach to Yogasutra
Initiator: Dr. Ram Kishor
29 November 2017 at 3:00 PM at
Academic Centre, Lucknow

The Eighth Study Circle was organized at the Academic Centre of ICPR on 29 September 2017. The initiator was Dr. Ram Kishor. He discussed about the purity in theoretical and practical approach to Yogasutra, purity of not only individual but of the power of viewing also and vision as per knowledge. There are 8 types of practical yoga: *Yam, Niyam, Aasan, Pranayam, Pratyahar, Dharana, Dhyan and Samadhi.* Professor Rajendra Prasad and Professor Rakesh Chandra were present during the lecture.

]Report of the 9th Study Circle

Concept of Certainty in *On Certainty*
Initiator: Dr. Manjesh Kumar
22 December 2017 at 3:00 PM at
Department of Philosophy, Lucknow University

The Ninth Study Circle was organized at Department of Philosophy, Lucknow University. Professor Rakesh Chandra introduced the initiator Dr. Manjesh Kumar. He started his lecture by giving introduction of Ludwig Wittgenstein, mentioning that Wittgenstein was the most influential philosopher of the 20th century. Other contemporary philosophers, i.e. G.E. Moore and Bertend Russell were impressed by his thinking and personality. On Certainty is the most sustained discussion of the work of Wittgenstein and Moore. Dr. Manjesh very effectively presented his paper mentioning that Wittgenstein's earliest and last concern was: what does it mean to say something?

Professor Rajendra Prasad and other teachers of the department were present during the lecture, which was concluded after thanks giving by Dr. Kar on behalf of the ICPR.

Report of the 10th Study Circle

Why Modern Mind Finds it Difficult to Understand
Classical Indian Thinking
Initiator: Professor B.K.Agarwala
25 January 2018 at 3:00 PM at ICPR Academic Centre

Professor B.K. Agarwala delivered his lecture on the topic in the presence of Professor Navjeevan Rastogi, Dr.Pooja Vyas (Director A) and other scholars. The essence of the presentation was that it is impossible for the modern mind to understand the classical Indian thinking, unless one learns to think as per dharma of classical Indian thinking transcending the so-called laws of thought accepted by the modern mind such as law of identity, contradiction and excluded middle among others.

Report of the 11th Study Circle

Savitri Bai Phule Ka Shiksha Darshan: Nari Shiksha avam Nari Sashaktikaran
Initiator: Dr. Mamta Singh
27 February 2018 at 3:00 PM at ICPR Academic Centre

Dr. Mamta Singh is Assistant Professor in Department of Philosophy, Lucknow University presented her paper on the efforts made by Smt. Savitri Bhai Phoole and her husband Mahatma Jyoti Rao Phoole in the field of educating women's of the villages in the 19th century. Smt. Phoole also raised her voice against untouchability, blind faith, condition of women, etc. Her contribution towards women upliftment will always be remembered by the people of India.

Report of the12th Study Circle

Tagore: Visva Manah (The Universal Man)
Initiator: Professor Nupur Sen
22 March 2018 at 3:00 PM
Department of Education, Lucknow University

Professor Nupur Sen teaches in Department of Education presented the paper on Rabindra Nath Tagore as a Universal Man. According to Professor Sen, in Tagorian philosophy the Universal man is the ultimate reality and agrees with the cosmic vision of *Divine in Gita.* Philosophy of Tagore is inseparably related to human life, society, culture and history.

A large number of scholars and teachers were present during the lecture.

XVIII. हिंदी पखवाड़ा

परिषद् ने वर्ष 2017 के लिए हिंदी पखवाड़ा का आयोजन दिल्ली एवं लखनऊ कार्यालय में किया गया। यह पखवाडा परिषद के कर्मियों की भागीदारी के साथ 16–30 सितम्बर 2017 के बीच मनाया गया। पखवाड़े के अन्तर्गत कई

प्रतियोगितायों यथा अस्नातक और स्नातक निबंध प्रतियोगिता, एमटीएस के लिए सुलेख प्रतियोगिता, अहिन्दी प्रदेश भाशीय की सुलेख प्रतियोगिता, टिप्पणी एवं प्रारूप प्रतियोगिता, टंकण प्रतियोगिता, एवं कविता प्रतियोगिता आयोजित की गई। ये सभी प्रतियोगिताएं हिंदी में आयोजित की गई ।

सुश्री सुनीति शर्मा, निदेशक (राजभाषा) मानव संसाधन विकास मंत्रालय, सस्कृत अध्ययन केन्द्र, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली तथा श्री आशुतोष भट्नागर, जम्मू एवं कश्मीर अध्ययन केन्द्र, प्रवासी भवन, दीन दयाल उपाध्ययाय मार्ग ने कार्यक्रम की शोभा बढाई। सभी ने माना कि हिंदी के प्रोत्साहन की जरूरत है। हमें हिंदी को अपनाने के लिए दूसरो पर निर्भर नही रहना पड़ेगा शुरूआत स्वयं से ही करनी होगी। अभी राजभाषा को लेकर जो वातावरण है वह स्वर्णिम अवसर है। इस हमें लाभ उठाना चाहिए और हिंदी को रोजगार से जोड़ना चाहिए ताकि युवा इसकी तरफ आकर्षित हो ।

हिंदी पखवाडें में निम्नलिखित कर्मियों को पुरस्कार दे कर सम्मानित किया गया । जिनकी सूची इस प्रकार है ।

टिप्पण एवं प्रारूप

प्रथम पुरस्कार श्रीमती नीता वर्मा

द्वितीय पुरस्कार श्री सोनू राय

तृतीय पुरस्कार श्री देवेन्द्र कुमार

टंकण प्रतियोगिता

प्रथम पुरस्कार श्री राजेश धानिया

द्वितीय पुरस्कार श्री सोनू राय

तृतीय पुरस्कार श्री अनीश कुमार

सुलेख प्रतियोगिता, एमटीएस वर्ग के लिए

प्रथम पुरस्कार श्री अश्वनी कुमार मिश्र

द्वितीय पुरस्कार श्री रोहताश

तृतीय पुरस्कार श्री लाल बाबू मिश्रा

गैर–हिंदी प्रदेश के लिए सुलेख प्रतियोगिता

प्रथम पुरस्कार श्री मोहन दास

द्वितीय पुरस्कार डा0 मर्सी हेलन

तृतीय पुरस्कार श्रीमती वेदावल्ली

निबंध प्रतियोगिता

(सभी अस्नातक वर्ग के कर्मचारियों के लिए)

प्रथम पुरस्कार श्री गणेश चंद्र भट्ट

द्वितीय पुरस्कार श्री लाल बाबू

तृतीय पुरस्कार श्री रोहताश

निबंध प्रतियोगिता

(सभी स्नातक वर्ग के कर्मचारियों के लिए)

प्रथम पुरस्कार श्री सोनू राय

द्वितीय पुरस्कार श्री संदीप

तृतीय पुरस्कार श्री देवेन्द्र कुमार

कविता पाठ

प्रथम पुरस्कार श्री देवेन्द्र कुमार, हिंदी अनुवादक

द्वितीय पुरस्कार श्री अश्वनी कुमार

तृतीय पुरस्कार श्री सुशिम दुबे और श्री सुनील सब्बरवाल

हिंदी तिमाहीवार निबंध प्रतियोगिता

परिशद् के राजभाषा से संबंधित अन्य कार्याक्रमों के अन्तर्गत तिमाहीबार कार्यक्रम का आयोजन किया गया। अस्नातक और स्नातक वर्ग के लिए एक निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

दोनो वर्गो के प्रतिभागियों को अधिक से अधिक 700 शब्दों का एक निबंध लिखना था जिनका विषय इस प्रकार था।

अस्नातक वर्ग	1. राजभाषा में कार्य करना सरल या कठिन अथवा 2. भारतीय समाज में जातिवाद की भूमिका
स्नातक वर्ग	1. सरकारी कार्यालयों में हिंदी की स्थिति अथवा 2. जाति अधारित आरक्षण : सही या गलत

अगली तिमाहीबार के प्रतिभागियों को सुश्री सुनीति शर्मा के हाथों से पुरस्कृत किया गया ।

अस्नातक वर्ग प्रथम–श्री जगदेव सिंह, द्वितीय–श्री लाल बाबू

स्नातक वर्ग प्रथम–श्री राहुल रंजनद्वितीय–श्री विशाल एवं श्री एस.बी. सिंह तृतीय श्री सुनील कुमार

एक अन्य प्रतियोगिता ''कार्यालय कामकाज में हिंदी : समस्या एवं समाधान'' विषय पर तिमाहीबार निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें पुरस्कार की चार श्रेणी रखी गई। प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं सांत्वना प्रतियोगिता को भी जोड़ा गया। जो इस प्रकार है :

प्रथम	श्री राहुल रंजन	रु. 1000.00
द्वितीय	श्री रोहताश	750.00
तृतीय	श्री अश्वनी मिश्रा	500.00
सांत्वना	श्री सोनू राय	300.00
सांत्वना	श्री हरेन्दर	300.00

XIX. MEMBERS OF THE COUNCIL OF INDIAN COUNCIL OF ICPR (2016–2019) AS ON 31 MARCH 2018

Sr. No.	Name and Address	Nominee	E-mail
1.	Professor S.R. Bhatt Chairman ICPR New Delhi	Chairman, ICPR (since October 15)	21 srbhatt39@gmail.com
2.	Professor Rajaneesh Kumar Shukla Member Secretary, ICPR New Delhi	Member Secretary, ICPR	rksphilosophy@gmail.com
3.	Professor V. Kutumba Shastri Former Vice-Chancellor C/o Mrs. C. Sushama		

	1B003, Krishna Icon Apts Annasandrapalaya Vimanpura Post HAL Bangalore 560 017	MHRD	kutumba10@gmail.com
4.	Professor R.C. Sinha Former Head Department of Philosophy Patna University 201 Saptarishi Apartment Rajkishori Complex Kankarbagh Patna 800 020	MHRD	rcsinha22@gmail.com
5.	Professor Dharmanand Sharma House No.979, Sector-26, Panchkula, Haryana-134116, India	MHRD	dharmanandsharma@ gmail.com
6.	Professor Jatashankar Tiwari Former Head Department of Philosophy Allahabad University Allahabad 211002	MHRD	profjatashankar@ gmail.com
7.	Professor Kusum Jain 139, Muktanand Nagar Gopalpura Baypass Tonk Road Jaipur - 302 018	MHRD	kusumonnet@yahoo.com
8.	Professor Om Prakash Pandey Former Head Department of Sanskrit & Prakrit Languages B-1/4 Vikrant Khand Gomti Nagar - 226010 Lucknow	MHRD	profomprakash1949@ gmail.com
9.	Professor Hare Ram Tripathi Shri Lal Bahadur Shastri Rashtriya Sanskrit Vidyapeetha		

	B-4 Qutub Institutional Area Shaheed Jeet Singh Marg Katwaria Sarai New Delhi 110 016	MHRD	hrtripathi2014@gmail.com
10.	Professor Naresh Kumar Ambastha Head, Department of Philosophy PKRM College CMPF Colony Dhanbad 826004 Jharkhand	MHRD	nkambasta@yahoo.com
11.	Professor Rajaram Shukla Vice-Chancellor, Sampurnanand Sanskrit University, Varanasi - 221 001 Uttar Pradesh	MHRD	vc@ssvv.ac.in
12.	Professor S.R. Leela Former Professor & Head Department of Sanskrit NNMKRV College (affiliated to Bangalore University) Bangaluru. Correspondence Address: Dr. S.R. Leela Ex.MLC Govt. of Karnataka Managing Trustee, Abhinaya Bharti Res:#30, Dharini 1st Main, 3rd cross, K.E.B. Lay-Out Bengaluru - 560 085	MHRD	bharati_trust@yahoo.co.in srleela@mrinaal.com
13.	Professor X.P. Mao Department of Philosophy North-Eastern Hill University Umshing Mawkynroh Shillong 793 022 Meghalaya	MHRD	xavmao@gmail.com

14.	Professor Bhuvan Chandel F-9, SFS Flats, Sector-8, Jasola, New Delhi - 110 025	UGC	chandelbhuvan@ gmail.com
15.	Dr. Braj Bihari Kumar Chairman Indian Council of Social Science Research JNU Institutional Area Aruna Asaf Ali Marg New Delhi - 110 067	ICSSR	chairman@icssr.org
16.	Professor Arvind P. Jamkhedkar Chairman Indian Council of Historical Research 35 Ferozeshah Road New Delhi - 110 001	ICHR	chairman@ichr.ac.in
17.	Professor S.K. Sopory, FNA House No.584, Sector-14 Faridabad - 121007 Haryana	INSA	sopory@hotmail.com
18.	Secretary, Department of Secondary and Higher Education, Ministry of HRD, Shastri Bhavan, New Delhi-110001	MHRD	secy.dhe@nic.in
19.	Financial Advisor Department of Secondrary and Higher Education, Ministry of HRD Shastri Bhavan New Delhi	MHRD	Jsfa.edu@gov.in
20.	Professor U.S. Bist Village- Rithachaura, P.O. - Bhatkot Distt. - Almora Uttrakhand - 263656		

		Nominated	umraobist@gmail.com
21.	Professor S.K. Singh 1, University Quarters Khabra Road Muzaffarpur - 842001 Bihar	Nominated	sksingh_ipc@rediffmail.com
22.	Professor Sreekala Nair Professor & Head Department of Philosophy Sree Sankaracharya University of Sanskrit Kalady - 683 574 District Eranakulam Kerala	Nominated	sree_kala_nair@yahoo.com
23.	Professor Yajneshwar Shastri Vice-Chancellor, Sanchi University of Buddhist-Indic Studies, Barla, Vidisha-Raisen Road, NH-86 District-Raisen-464551, M.P. India	Nominated	yajnashastri48@yahoo.com
24.	Professor Tariq Islam Head Department of Philosophy Aligarh Muslim University Aligarh (UP)	Nominated by U.P. Govt	tariq43@gmail.com
25.	Professor D.N. Yadav Head Department of Philosophy Deen Dayal Upadhyaya Gorakhpur University, Gorakhpur (U.P.) - 273 009	Nominated by U.P. Govt	dny_prof@yahoo.com

XX. MEMBERS OF THE GOVERNING BODY (GB), ICPR

(2016 - 2019)

AS ON 31 MARCH 2018

Sr. No.	Name and Address	Nominee	E-mail
1.	Professor S.R. Bhatt Chairman ICPR New Delhi	Chairman, ICPR (since 21 October 15)	srbhatt39@gmail.com
2.	Professor. Rajaneesh Kumar Shukla Member Secretary, ICPR New Delhi	Member Secretary, ICPR	rksphilosophy@gmail.com
3.	Professor Kusum Jain 139, Muktanand Nagar Gopalpura Baypass Tonk Road Jaipur - 302 018	MHRD	kusumonnet@yahoo.com
4.	Professor V. Kutumba Shastri Former Vice-Chancellor C/o Mrs. C. Sushama 1B003, Krishna Icon Apts Annasandrapalaya Vimanpura Post HAL Bangalore 560 017	MHRD	kutumba10@gmail.com
5.	Professor R.C. Sinha Former Head Department of Philosophy Patna University 201 Saptarishi Apartment Rajkishori Complex Kankarbagh Patna 800 020	MHRD	rcsinha22@gmail.com
6.	Professor Jatashankar Tiwari Former Head Department of Philosophy		

	Allahabad University Allahabad 211002	MHRD	profjatashankar@gmail. com
7.	Professor Bhuvan Chandel F-9, SFS Flats, Sector-8, Jasola, New Delhi - 110 025	UGC	chandelbhuvan@gmail. com
8.	Professor S.K. Singh 1, University Quarters Khabra Road Muzaffarpurn-842001 Bihar	Nominated	sksingh_ipc@rediffmail. com
9.	Professor U.S. Bist Village- Rithachaura, P.O. - Bhatkot Distt. - Almora Uttrakhand - 263656	Nominated	umraobist@gmail.com
10.	Secretary, Department of Secondary and Higher Education, Ministry of HRD, Shastri Bhavan, New Delhi-110001	MHRD	secy.dhe@nic.in
11.	Financial Advisor Department of Secondary and Higher Education, Ministry of HRD, Shastri Bhavan, New Delhi-110001	MHRD	Jsfa.edu@gov.in
12.	Professor Tariq Islam Head Department of Philosophy Aligarh Muslim University Aligarh (UP)	Nominated by U.P. Govt	tariq43@gmail.com
13.	Professor D.N. Yadav Head, Department of Philosophy Deen Dayal Upadhyaya Gorakhpur University, Gorakhpur (U.P.) - 273 009	Nominated by U.P. Govt	dny_prof@yahoo.com

XXI. MEMBERS OF THE FINANCE COMMITTEE OF ICPR
(AS ON 31 MARCH 2018)

Sr. No.	Name and Address	Nominee	E-mail
1.	Professor. Rajaneesh Kumar Shukla Member Secretary, ICPR New Delhi	Member Secretary, ICPR	rksphilosophy@gmail.com
2.	Director (A&F), Indian Council of Philosophical Research, Darshan Bhawan 36, Tughlakabad Institutional Area, New Delhi - 110 062	Director (A&F), ICPR	sreekumaran@icpr.in
3.	Professor Bhuvan Chandel F-9, SFS Flats, Sector-8, Jasola, New Delhi - 110 025	UGC	chandelbhuvan@gmail.com
4.	Secretary, Department of Secondary and Higher Education, Ministry of HRD, Shastri Bhavan, New Delhi-110001	MHRD	secy.dhe@nic.in
5.	Financial Advisor Department of Secondrary and Higher Education, Ministry of HRD Shastri Bhavan New Delhi	MHRD	Jsfa.edu@gov.in

XXII. MEMBERS OF THE RESEARCH PROJECT COMMITTEE (RPC OF ICPR)
(2016-2019)
AS ON 31 MARCH 2018

Sr. No.	Name and Address	Nominee	E-mail
1.	Professor S.R. Bhatt Chairman ICPR New Delhi	Chairman, ICPR (since 21 October 15)	srbhatt39@gmail.com
2.	Professor. Rajaneesh Kumar Shukla Member Secretary, ICPR New Delhi	Member Secretary, ICPR	rksphilosophy@gmail.com
3.	Professor Dharmanand Sharma House No.979, Sector-26, Panchkula, Haryana-134116, India	MHRD	dharmanandsharma@ gmail.com
4.	Professor Rajaram Shukla Vice-Chancellor, Sampurnanand Sanskrit University, Varanasi - 221 001 Uttar Pradesh	MHRD	vc@ssvv.ac.in
5.	Professor X.P. Mao Department of Philosophy North-Eastern Hill University Umshing Mawkynroh Shillong 793 022 Meghalaya	MHRD	xavmao@gmail.com
6.	Professor Yajneshwar Shastri Vice-Chancellor, Sanchi University of Buddhist- Indic Studies, Barla, Vidisha-Raisen Road, NH-86 District-Raisen-464551, M.P.	Nominated	yajnashastri48@yahoo.com
7.	Professor Sreekala Nair Professor & Head		

	Department of Philosophy Sree Sankaracharya University of Sanskrit Kalady - 683 574 District Eranakulam, Kerla	Nominated	sree_kala_nair@ yahoo.com
8.	Professor S.R. Leela Former Professor & Head Department of Sanskrit NNMKRV College (affiliated to Bangalore University), Bangaluru. Correspondence Address: Dr. S.R. Leela, Ex.MLC Govt. of Karnataka Managing Trustee, Abhinaya Bharti, Res:#30, Dharini 1st Main, 3rd cross, K.E.B. Lay-Out Bengaluru - 560 085	MHRD	bharati_trust @yahoo.co.in srleela@ mrinaal.com
9.	Professor Dilip Kumar Mohanta Flat No.2 AL 2, Greenwood Nook 369/2, Kalitala Purbachal Road Kolkata - 700 078	Nominated	dkmphil@gmail.com
10.	Professor Bijayananda Kar Retired Professor of Philosophy AM/26, VSS Nagar Bhubaneswar Orissa - 751 004	Nominated	bkar.nkar@gmail.com
11.	Professor Samani Chaitanya Prajna Head, Deptt. of Jainology and Comparative Religion and Philosophy Executive Director Bhagawan Mahavir International Research Center Jain Vishva Bharati Institute Ladnun - 341 306	Nominated	cpragya108@gmail.com

XXIII. ANNUAL ACCOUNTS

ANNEXURE-A

BALANCE SHEET

INDIAN COUNCIL OF PHILOSOPHICAL RESEARCH
36, Tuglakabad Institutional Area, New Delhi - 110 062

BALANCE SHEET AS AT 31ST MARCH, 2018

(Amount in Rs.)

CAPITAL FUND & LIABILITIES	*SCHEDULE*	*AS AT 31.03.2018*	*AS AT 31.03.2017*
Capital Fund	1	63,951,896.13	44,286,866.15
Current Liabilities and Provisions	2	120,408,517.07	982,40,242.07
TOTAL		184,360,413.20	142,527,108.22
ASSETS			
Fixed Assets	3	16,308,194.57	7,884,876,.58
Current Assets, Loans & Advances	4	168,052,218.63	134,642,231.64
TOTAL		184,360,413.20	142,527,108.22

Sd/-
(SREEKUMARAN S.)
Director(A&F)

Sd/-
(DR. R.K. SHUKLA)
Member Secretary

PLACE : NEW DELHI
DATE : 30.06.2018

ANNEXURE-B

INCOME & EXPENDITURE ACCOUNT

INDIAN COUNCIL OF PHILOSOPHICAL RESEARCH

36, Tuglakabad Institutional Area, New Delhi - 110 062

(Amount in Rs.)

INCOME AND EXPENDITURE ACCOUNT FOR THE YEAR 2017-2018

INCOME	*SCHEDULE*	*AS AT 31.03.2018*	*AS AT 31.03.2017*	
			Plan	*Non-Plan*
Grant received	5	181,708,000.00	55,326,700.00	91,997,700.00
Income from Royalty, Publication etc.	6	236,510.49	609,475.00	141,859.39
Fees/Subscription Received	7	381,000.00	70,000.00	520,000.00
Interest Earned	8	676,231.00	28,055.00	3,412,379.00
Other Income	9	9,211,708.00	20,022.00	211,837.00
Increase/(Decrease in in stock)	10	-	-	-
TOTAL (A)		**192,213,449.49**	**56,054,252.00**	**96,283,775.39**
EXPENDITURE				
Salary & Non Salary Compnent exp.	11	76,200,937.00	-	56,819,444.00
Other Administrative Expenses etc.,	12	91,206,359.50	50,168,114.98	40,088,603.00
Depreciation	3	5,141,123.01	7,404,148.00	-
TOTAL (B)		**172,548,419.51**	**57,572,262.98**	**96,908,047.00**
Excess of Income/(Expenditure) (A -B)		**19,665,029.98**	**(1,518,010.98)**	**(624,271.61)**
Balance being Surplus/(Deficit)				
Carried to Capital Fund		**19,665,029.98**	**(1,518,010.98)**	**(624,271.61)**

Sd/-
(SREEKUMARAN S.)
Director (A&F)

Sd/-
(DR. R.K. SHUKLA)
Member Secretary

PLACE : NEW DELHI
DATE : 30.06.2018

ANNEXURE-C

SCHEDULES

INDIAN COUNCIL OF PHILOSOPHICAL RESEARCH 36, Tuglakabad Institutional Area, New Delhi - 110 062 (Amount in Rs.)		
SCHEDULES 1 TO 4 ATTACHED TO & FORMING PART OF BALANCE SHEET		
SCHEDULES	*YEAR ENDED*	*YEAR ENDED*
	31.03.2018	*31.03.2017*
SCHEDULE 1		
CAPITAL FUND		
Opening Balance	44,286,866.15	44,308,370.74
Add: Additions during the year	–	2,120,778.00
Less: Deductions during the year	_	–
Add/(Deduct) : Balance of net income/(Expenditure)		
transferred from the Income and Expenditure Account	19,665,029.98	(2,142,282.59)
Balance at the year-End	63,951,896.13	44,286,866.15
SCHEDULE 2		
CURRENT LIABILITIES & PROVISIONS		
A. CURRENT LIABILITIES		
1. Sundry Creditors: Group-H	-	43,407,038.07
1) H-I(A-10) Sundry Creditors-ST Capital	700,000.00	-
2) H-I(A-1) Sundry Creditors-Salary	8,585,430.00	-
3) H-I (A-2) Sundry Creditors (Pensioners)	-	-
4) H-I(A-3) Sundry Creditors- Non Salary	72,110.00	-
5) H-I(A-4) Sundry Creditors- General	32,588,099.07	-
6) H-I(A-5) Sundry Creditors- Capital	5,524,055.00	-
7) H-I(A-6) Sundry Creditors -SC General	4,036,329.00	-

8) H-I(A-7) Sundry Creditors-SC Capital	1,500,000.00	-
9) H-I(A-8) Sundry Creditors -SC Salary	4,388.00	-
10) H-I(A-9) Sundry Creditors- ST General	4,078,750.00	-
2. Group-I Provision		
1) J-I(A-1) Provision for Pay & Allowances	8,822,164.00	8,112,488.00
2) J-I(B-1) Provision for Gratuity	33,615,584.00	27,424,651.00
3) J-I(B-3) Provision for Leave Encashment During LTC	18,231,869.00	16,630,177.00
4) J-I(C-2) Provision for CPF	32,757.00	6,847.00
5) J-I(C-1) Provision for GPF	426,698.00	373,117.00
6) J-I(C-3) Provision for LIC-GSLIS	1,774.00	2,389.00
7) J-I(C-4) Provision for LIC-SSS	10,301.00	2,638.00
8) J-I(C-5) Provision for OTA	1,436.00	6,068.00
9) J-I(C-9) Provision for Monthly Pension & Other Pensioners	539,778.00	490,904.00
10) J-I (C-10) Provision For Other remittances	9,104.00	6,942.00
11) Security Deposit	-	12,600.00
12) J-I (F-1) Provision for Others Fellowship	214,460.00	214,460.00
13) J-I (G-2) Provision for NPF	44,909.00	31,100.00
14) J-I (G-1) Others Provision	1,319,866.00	1,420,722.00
15) J-I (E-3) Provision for Telephone	-	21,615.00
Group -N		
1) O-I(A-2) Income Tax (Contractors)	23,215.00	76,486.00
2) O-I(A-3) Income Tax (Professionals)	15,937.00	-
3) O-I(B-1) Group Insuracne Scheme (GSLIS)	400.00	-
4) O-I(D-3) Other Remittances	9,104.00	-
TOTAL	**120,408,517.07**	**98,163,756.07**

SCHEDULE 4		
CURRENT ASSETS, LOANS & ADVANCES		
A. CURRENT ASSETS:		
1. Stock in Hand		
(At cost as taken, valued and certified by the Council) Stock of ICPR Publications	6,291,441.00	6,291,441.00
Stock of JICPR Journals	445,250.00	445,250.00
TOTAL "A"	**6,736,691.00**	**6,736,691.00**
2. Sundry Debtors		
a) Debts outstanding for a period exceeding Six Months	372,502.00	372,502.00
b) Other Debts	-	-
3. Cash Balance in Hand		
a) Cash in Hand	8,139.62	12,900.62
b) Imprest Balance with Lucknow Office	13,927.00	13,927.00
4. Bank Balances:		
With Scheduled Banks:		
a) Savings Account		
i) With State Bank of Patiala S.B. A/c No.32319	4,965,469.71	4,217,562.21
ii) With Canara Bank S.B. A/c No.16377	96,240,115.29	66,054,975.80
iii) With Oriental Bank oc Commerce-S.B. A/c No.	431,081.00	328,460.00
TOTAL "B"	**102,031,234.62**	**71,000,327.63**
TOTAL "A + B" = "C"	**108,767,925.62**	**77,737,018.63**

B. LOANS, ADVANCES AND OTHER ASSETS		
1. Advances recoverable in cash or in kind or for value to be received		
i) Other Advance		
a) Advance for Academic Programs	-	-
-Advance for Academic Programs (Prior to Mar'02)	5,884,811.01	5,884,811.01
-Advance for Academic Programs(April'02 to Mar'17)	30,606,451.00	26,255,268.00
-Advance for Academic Programs (For the year)	9,561,983.00	15,082,410.00
b) Advance to Employees		
-Old year Advance to Employees	80,053.00	70,523.00
-Advance to Employees (For the year)	50,900.00	70,580.00
c) Contingency Advance		
-Old year Contingency Advance	684,920.00	684,920.00
-Contingency advance (For the year)	-	-
d) Advance -Others		
-Advance - Others (April'02 to Mar'17)	6,984,390.00	6,080,287.00
-Advance -Others (For the year)	-	-
e) Deposit with CPWD-Lucknow	-	-
f) Deposit with CPWD-Delhi	3,279,397.00	689,375.00
g) Deposit with Telephone Authorities	124,945.00	125,445.00
h) Deposit with BSES	348,365.00	348,365.00

i) Deposit for Fuel	10,000.00	10,000.00
j) Prepaid Expenses	1,623,169.00	1,603,229.00
k) NPF	44,909.00	-
l) Security Deposit Refundable	-	-
m) Accured Interest		
TOTAL "D"	**59,284,293.01**	**56,905,213.01**
TOTAL (C+D)	**168,052,218.63**	**134,642,231.64**

Sd/-
(SREEKUMARAN S.)
Director(A&F)

Sd/-
(DR. R.K. SHUKLA)
Member Secretary

PLACE : NEW DELHI
DATE : 30.06.2018

SCHEDULE 3

FIXED ASSETS

DESCRIPTION	*GROSS BLOCK*				*DEPRECIATION*				*NET BLOCK*	
	As at 31.03.2017	**Additions**	**Deductions during the year**	**As at 31.03.2018**	**As at 31.03.2017**	**For the year**	**Deductions during the year**	**As at 31.03.2018**	**As at 31.03.2018**	**As at 31.03.2017**
1. Land	733,770.20	-	-	733,770.20	-	-	-	-	733,770.20	733,770.20
2. Building	9,709,600.00	-	-	9,709,600.00	7,524,064.41	88,057.31	-	7,612,121.72	2,097,478.28	2,185,535.59
3. Machinery & Equipment	4,695,074.60	-	-	4,695,074.60	3,513,456.11	211,719.13	-	3,725,175.24	969,899.36	1,181,618.49
4. Vehicles	2,282,906.21	-	-	2,282,906.21	1,611,656.49	202,056.85	-	1,813,713.34	469,192.87	671,249.72
5. Furniture & Fixtures	9,080,588.37	76,101.00	-	9,156,689.37	7,899,069.41	403,102.51	-	8,302,171.91	854,517.46	1,181,518.96
6. Office Equipment	11,115,624.83	1,997,402.00	-	13,113,026.83	10,069,428.64	615,060.83	-	10,684,489.46	2,428,537.37	1,046,196.19
7. Computer/peripherals	6,146,684.50	901,080.00	-	7,047,764.50	6,025,353.61	111,142.67	-	6,136,496.28	911,268.22	121,330.89
8. Electric Installation	1,384,193.53	25,488.00	-	1,409,681.53	1,320,919.04	42,994.95	-	1,363,913.99	45,767.54	63,274.49
9. Library Books/Periodicals	70,450,414.92	9,023,370.00	-	79,473,784.92	69,853,750.28	3,466,988.75	-	73,320,739.03	6,153,046.29	596,665.04
10. Tubewells & Water supply	408,123.00	-	-	408,123.00	304,406.00	-	-	304,406.00	103,717.00	103,717.00
WIP										
1. Camara	-	1,541,000.00	-	1,541,000.00	-	-	-	-	1,541,000.00	-
TOTAL	**116,006,980.16**	**13,564,441.00**	**-**	**129,571,421.16**	**108,122,103.98**	**5,141,123.01**	**-**	**113,263,226.99**	**16,308,194.57**	**7,884,876.98**

INDIAN COUNCIL OF PHILOSOPHICAL RESEARCH
36, Tuglakabad Institutional Area, New Delhi - 110 062

(Amount in Rs.)

SCHEDULES 5 TO 12 ATTACHED TO & FORMING PART OF INCOME & EXPENDITURE ACCOUNT

SCHEDULES	YEAR ENDED	YEAR ENDED 31.03.2017	
	31.03.2018	Plan	Non-Plan
SCHEDULE 5			
Group - A			
Grant Received			
K-I			
Central Government			
1) K-I(A-4) Grand Received From (MHRD) Plan- General	65,814,100.00	40,026,700.00	-
2) K-I(A-5) Grant Received From (MHRD) Plan Capital	16,637,200.00	3,487,500.00	-
3) K-I(A-6) Grants Received From (MHRD) Plan General SC	4,205,600.00	7,200,000.00	-
4) K-I(A-7) Grants Received From (MHRD) Plan Capital SC	1,558,100.00	675,000.00	-
5) K-I(A-9) Grants Received From (MHRD) Plan General ST	1,440,000.00	3,600,000.00	-
6) K-I(A-10) Grants Received From (MHRD) Plan Capital ST	770,300.00	337,500.00	-
7) K-I(A-3) Grant Received From(MHRD) Non Plan Salary	2,150,000.00	-	70,687,700.00
8) K-I(A-2) Grant Recd. From (MHRD)-Non Salary Pension	540,000.00	-	21,310,000.00
9) K-I(A-11) Grants Received From MHRD- ST Salary	3,320,100.00	-	-
10) K-I(A-1) Grant Received From(MHRD) - Salary	77,752,700.00	-	-
11) K-I(A-8) Grants Received From MHRD- SC Salary	7,519,900.00	-	-
Total	**181,708,000.00**	**55,326,700.00**	**91,997,700.00**
SCHEDULE 6			
K-IV			
1) K-IV(A-1) Sales Proceeds (Publication)-Book	127,947.49	609,475.00	141,859.39
2) K-IV(A-2) Sales Proceeds (Royalty) Journals	108,563.00	-	-
Total	**236,510.49**	**609,475.00**	**141,859.39**

SCHEDULES	YEAR ENDED	YEAR ENDED 31.03.2017	
	31.03.2018	Plan	Non-Plan
SCHEDULE 7			
K-V			
1) K-V(A-1) Life Membership-JICPR	380,000.00	70,000.00	520,000.00
2) K-V(A-3) Library Borrowing Membership Fee	1,000.00	-	-
Total	**381,000.00**	**70,000.00**	**520,000.00**
SCHEDULE 8			
K-VI			
1) K-VI(B) Misc.Receipts Intt. on Saving and Deposits	676,231.00	28,055.00	3,113,379.00
2) K-VI(E) Misc.Receipts-Guest House charges	-	-	299,000.00
Total	**676,231.00**	**28,055.00**	**3,412,379.00**
SCHEDULE 9			
K-VI			
1) B-III(A) Leave Salary Contributions	151,806.00	-	11,557.00
2) B-III(B) Pension Contribution	57,555.00	-	20,752.00
3) K-VI(A-1) Misc. Receipts-Reprography Services	33,210.00	-	28,503.00
4) K-VI(A-2) Misc. Receipts- Unserviceable/obsolete	6,483.00	-	1,900.00
5) K-VI(B-1) Misc. Receipts Interest on Advance to Empl	16,254.00	-	22,059.00
6) K-VI(C-2) Misc. Receipts Others	7,448,638.00	20,022.00	118,116.00
7) K-VI(E-1) Sale of Fellowship Forms	119,000.00	-	8,950.00
8) K-VI(F-1) Sale Proceeds Against Obselete (Capital)	158,000.00	-	-
9) K-VI(L) Misc. Receipt- Rent for conference room	5,000.00	-	-
10) G-I(C-4) Prior Period Adjustments General	729,371.00	-	-
11) G-I(C-6) Prior Period Adjustments- SC General	482,609.00	-	-
12) G-I(D-3) Prior Period Adjustments- Academic lucknow	3,782.00	-	-
Total	**9,211,708.00**	**20,022.00**	**211,837.00**

SCHEDULES	YEAR ENDED	YEAR ENDED 31.03.2017	
	31.03.2018	Plan	Non-Plan
SCHEDULE 10			
Increase / Decrease in stock			
a) Closing Stock			
-Stock of ICPR Publications	6,291,441.00	-	6,291,441.00
-Stock of JICPR Journals	445,250.00	-	445,250.00
Total	**6,736,691.00**	**-**	**6,736,691.00**
a) Opening Stock			
-Stock of ICPR Publications	6,291,441.00	-	6,291,441.00
-Stock of JICPR Journals	445,250.00	-	445,250.00
Total	**6,736,691.00**	**-**	**6,736,691.00**
Increase / (Decrease) in stock	-	-	-
SCHEDULE 11			
Group-A			
A-I			
Salary Components			
1) A-I(A) Pay & Allowances to Officers and Staff	42,389,303.00	-	42,163,270.00
2) A-I(B) Gratuity	9,972,047.00	-	2,872,703.00
3) A-I(C) Leave Encashment	3,628,306.00	-	2,949,601.00
4) A-I(D) Pension Commutation	4,832,158.00	-	2,009,927.00
5) A-I(E) OTA	4,561.00	-	23,503.00
6) A-I(J) Leave Encashment During LTC	135,422.00	-	181,112.00
7) A-I(H) Bonus	317,768.00	-	542,892.00
8) A-I(I) Consultation Charges	1,468,417.00	-	-
9) A-I(K) Chinldrens education fund	123,927.00	-	36,000.00

SCHEDULES	YEAR ENDED	YEAR ENDED 31.03.2017	
	31.03.2018	Plan	Non-Plan
A-II			
1) A-II(A) Pay & Allowances to Officers and Staff-SC	6,601,916.00	-	-
2) A-II(E) Over Time Allowances-SC	4,262.00	-	-
3) A-II((J) Childrens Educational Allowance- SC	61,762.00	-	-
Group-B			
Non Salary Pension	-	-	-
B-I			
1) B-I(A) Pension & Pensionery Befefits	5,845,255.00	-	4,678,101.00
B-II			
1) B-II(A) Employer's Contribution to CPF	219,240.00	-	40,926.00
2) B-II(B) Interest on Employer' Contribution to CPF	-	-	3,274.00
3) B-II(E) Employer's Contribution to NPF	571,326.00	-	1,318,135.00
4) B-II(F) Employer's Contributions to NPS (SC)	25,267.00	-	-
B-III			
1) B-III(A) Leave Salary Contribution	-	-	-
2) B-III(B) Pension Contribution	-	-	-
Total	***76,200,937.00***	**-**	**56,819,444.00**
SCHEDULE 12			
GROUP-C			
C-I			
1) C-I(A) Travelling Allowances to Officers	238,378.00	-	209,523.00
2) C-I(B) Travelling Allowances to Staff	172,972.00	-	96,130.00
3) C-I(C) Conveyance	18,155.00	-	17,856.00

SCHEDULES	YEAR ENDED	YEAR ENDED 31.03.2017	
	31.03.2018	Plan	Non-Plan
C-II			
1) C-II(A) Medical Insurance Premium	2,035,709.00	1,243,254.00	-
2) C-II(B) Other Medical Exp.	-	-	-
C-III			
1) C-III(A) Leave Travel Concession	188,437.00	-	236,048.00
C-IV			
1) C-IV(A) Advertisements	201,657.00	-	42,231.00
C-V			
1) C-V(A) Statutory Audit Fee	131,285.00	-	37,520.00
2) C-V(B)- Internal Audit Fee	91,868.00	-	89,885.00
C-VI			
1) C-VI(A) Electricity Charges (New Delhi)	1,220,240.00	-	1,225,200.00
2) C-VI(B) Electricity Charges Lucknow	424,146.00	-	430,662.00
3) C-VI(C) Water Charges (New Delhi)	92,850.00	-	90,520.00
4) C-VI(D) Water Charges (Lucknow)	19,541.00	-	17,718.00
C-VII			
1) C-VII(A) Staff Car Running Exp.-(DLC-1993)	10,622.00	-	94,572.00
2) C-VII(D) Staff Car Running Exp. -(DL/3C-0989)	160,917.00	-	109,156.00
3) C-VII(B) Staff Car Repair & Maint.(DL-1993)	4,976.00	-	141,411.00
4) C-VII(E) Staff Car Repair & Maint. Exp (0989)	88,137.00	-	46,951.00
5) C-VII(C) Staff Car Insuracne (DL-1993)	3,652.00	-	7,430.00
6) C-VII(F) Staff Car Insurance Exp.(DL/3CBM-0989)	10,982.00	-	9,545.00

SCHEDULES	YEAR ENDED	YEAR ENDED 31.03.2017	
	31.03.2018	Plan	Non-Plan
7) C-VII(G) Staff Car Running Exp (9503)	133,456.00	-	66,562.00
8) C-VII(H) Staff Car Maint. Repair Exp New Delhi	-	-	33,039.00
9) C-VII(H) Staff Car Repair/Maint (DL-3C-9503)	22,910.00	-	-
10) C-VII(I) Staff Car Insurance Exp (DL3C-9503)	6,609.00	-	-
C-VIII			
1) C-VIII(A) Stationery Expenses -(New Delhi)	360,881.00	-	407,351.00
2) C-VIII(B) Stationery Expenses (LKO)	30,851.00	-	34,866.00
3) C-VIII(C) Printing Expenses	55,261.00	-	-
4) C-VIII(D) Computer Consumable & Accessioer of ND	76,264.00	-	120,204.00
5) C-VIII(E) Computer Consumable & Accessories LKO	3,500.00	-	8,925.00
C-IX			
1) C-IX(A) Postage & Courier (New Delhi)	53,339.00	-	50,363.00
2) C-IX(B) Postage & Courier (Lucknow)	1,190.00	-	15,000.00
C-X			
1) C-X(A) Repair & Maint. of Office Equipment (ND)	92,428.00	-	142,178.00
2) C-X(B) Repair & Maint. Office Equipment (LKO)	3,300.00	-	26,004.00
3) C-X(C) AMC Charges of Office Equipment (ND)	619,683.00	522,431.00	12,584.00
4) C-X(D) AMC Charges of Office Equipments (LKO)	234,375.00	134,439.00	12,296.00
C-XI			
1) C-XI(A) Telephone Charges-29901550	97,080.00	-	114,416.00
2) C-XI(B) Telephone Charges-29964758- Fax-CM Office	4,980.00	-	6,786.00
3) C-XI(B) Telephone Charges-29964750-CM Office	10,267.00	-	-
4) C-XI(C) Telephone Charges-Mobil (MS)	1,624.00	-	9,814.00

SCHEDULES	YEAR ENDED	YEAR ENDED 31.03.2017	
	31.03.2018	Plan	Non-Plan
5) C-XI(D) Telephone Charges Chairman Mobile	30,822.00	-	12,727.00
6) C-XI(E) Telephone Charges-Chairman Mobile	-	-	30,182.00
7) C-XI(F) Telephone Charges-Director (P&R)	9,879.00	-	10,842.00
8) C-XI(I) Telephone Charges-9810223396-	6,013.00	-	21,195.00
9) C-XI(G) Telephone Charges No.-8004922772 (Mobile)	12,384.00	-	-
10) C-XI(L) Tel. Charges 29961262 Dir & P&R	9,765.00	-	-
11) C-XI(J) Telephone Charges-2395349-(Lucknow)	3,934.00	-	9,135.00
C-XII			
1) C-XII(C) Guest House Related Expenses	-	203,226.00	-
2) C-XII(A) Rent ICPR Lucknow	67,500.00	-	270,000.00
C-XIII			
1) C-XIII(A) Liveries (ND)	-	-	23,850.00
2) C-XIII(B) Liveries(LKO)	-	-	12,693.00
C-XIV			
1) C-XIV(A) Contingencies (Misc Exp. of ND)	585,802.00	-	590,754.00
2) C-XIV(B) Contingencies (Misc. Exp. of Lko)	152,956.00	7,078.00	45,189.00
3) C-XIV(C) Repair & Maintenance of Building	553,668.00	12,750.00	-
4) C-XIV(D) Repair & Maintenance of Building	-	6,170.00	-
5) C-XIV(E) Property Tax	155,258.00	-	155,258.00
6) C-XIV(F) Ground Rent to DDA	17,589.00	-	17,589.00
7) C-XIV(G) Staff Training Fee	64,105.00	-	49,229.00
8) C-XIV(H) Staff Welfare Expenses	26,000.00	-	25,124.00
9) C-XIV(I) Security Charges	2,080,483.00	1,174,107.00	-
10)C-XIV(J) Other Expense	-	-	416,143.00

SCHEDULES	*YEAR ENDED*	*YEAR ENDED 31.03.2017*	
	31.03.2018	*Plan*	*Non-Plan*
C-XV			
1) C-XV(A) Website Expenses	55,365.00	-	56,079.00
2) C-XV(B) Internet Connection Delhi-29964751	48,971.00	-	56,176.00
3) C-XV(C) Internet Charges-2392636 (Lko)	54,336.00	-	60,329.00
C-XVI			
1) C-XVI(A) Horticulture Exp. Delhi Office	14,585.00	-	8,370.00
2) C-XVI(B) Horticulture Exp. LKO Office	6,440.00	-	-
C-XVII			
1) C-XVII(B) Running Exp of Genset LKO	-	-	5,380.00
2) C-XVII(C) CPWD-Electric/Fire/Maint.of ICPR,ND office	447,198.00	49,709.00	32,200.00
C-XVIII			
1) C-XVIII(A) Legal Charges	-	543,500.00	-
2) C-XVIII(B) Professional Charges	237,869.00	1,243,330.00	-
3) C-XVIII(C) Wages	*1,000.00*	-	4,690.00
C-XIX			
1) C-XIX (A) Annual Subscription to IIC	87,000.00	-	-
2) C-XIX (B) FISP/SICI Membership	-	-	99,041.00
3) C-XIX(C) Bank Charges	13,366.50	577.60	8,482.00
C-XX			
1) C-XX(A) Hospitality to Official Guests/Non	46,043.00	-	29,247.00

SCHEDULES	YEAR ENDED 31.03.2018	YEAR ENDED 31.03.2017 Plan	Non-Plan
C-XXI			
1) C-XXI(A) TA to Council Committee Members	69,932.00	209,968.00	-
2) C-XXI (B)- Hospitality to Council Committee Memb.	-	61,959.00	-
3) C-XXI(C) Sitting Fee to Council committee members	32,000.00	66,000.00	-
4) C-XXI(F) Sitting Fee to Governing Body	60,462.00	161,861.00	
5) C-XXI(D) TA to Governing Body	202,428.00	36,000.00	-
6) C-XXI(E) Hospitality to GB Members	94,999.00	63,893.00	-
7) C-XXI(G) TA to RPC Meeting	338,812.00	403,019.00	-
8) C-XXI(H) Hospitality to RPC Members	33,310.00	129,097.00	-
9) C-XXI(I) Sitting Fee RPC Member	50,000.00	56,000.00	-
10) C-XXI(J) TA to Finance Committee Meeting	19,353.00	2,949.00	-
11) C-XXI(K) Hospitality to Finance Committee Meeting	11,613.00	8,580.00	-
12) C-XXI(L) Sitting Fee to Finance Committee Meeting	10,000.00	6,000.00	
13) C-XXI(M) TA to Other Committee Member	93,035.00	118,843.00	-
14) C-XXI(N) Hospitality to Other Committee Memb.	14,422.00	56,507.00	-
15) C-XXI(O) Sitting Fee to Other Commttee Members	64,000.00	17,000.00	-
16) C-XXI(P) TA to Non-Official Members	27,823.00	-	-
17) C-XXI(Q) Hospitality to Non Official Members	-	1,987.00	-
C-XXII			
1) C-XXII(A) Sundry balances W/off	17,420.00	-	-
Group-D			
D-I			
1) D-I(A) National Fellowships	575,296.00	-	1,455,728.00
2) D-I(B) Senior Fellowships	3,130,600.00	-	2,247,142.00
3) D-I(C) General Fellowhips	6,399,967.00	-	6,562,853.00
4) D-I(D) Junior Research Fellowships	15,886,198.00	306,000.00	23,554,427.00
5) D-I(F) Other Expenses of Fellowhips	540,338.00	-	255,803.00

SCHEDULES	YEAR ENDED	YEAR ENDED 31.03.2017	
	31.03.2018	Plan	Non-Plan
6) D-I(G) Fellows Orientation Meet	-	10,000.00	-
D-II			
1) D-II(A) ICPR Organised Seminars	15,528,722.00	10,202,435.00	-
2) D-II(B) Conference	900,000.00	317.00	-
3) D-II(C) Workshops	4,620,816.00	4,944,264.00	-
4) D-II(D) International Conferences	806,082.00	400,000.00	-
5) D-II(E) Review Meets/fellow's Meet	355,502.00	27,665.00	-
6) D-II(G) Colloquia	-	9,000.00	-
7) D-II(H) Other Academic Expenses	104,884.00	-	-
8) D-II(I) Asian Philosophy Congress	-	31,210.00	-
9) D-II(J) Gandhi Rama Seminar/Conference	-	776,700.00	-
D-IV			
1) D-IV(A) Grants for Seminar	6,872,257.00	7,362,788.00	-
2) D-IV(B) Grants for Workshop	2,941,070.00	1,206,000.00	-
3) D-IV(C) Grant for Conference/Annual Sessions	1,100,000.00	525,000.00	-
D-V			
1) D-V(A) Travel Grant	-	73,475.00	-
2) D-V(B) Other Expenses on Travel Grant	-	16,541.00	-
D-VI			
1) D-VI(A) Exhibition/Publicity	6,815.00	-	-
2) D-VI(B) Book Fair	90,767.00	60,000.00	-
D-VII			
1) D-VII(A) Lectures-National	480,045.00	288,257.00	-

SCHEDULES	YEAR ENDED 31.03.2018	YEAR ENDED 31.03.2017 Plan	Non-Plan
2) D-VII(B) Lectures-International	393,077.00	727,460.00	-
3) D-VII(C) Lectures- Periodical	1,021,814.00	924,292.00	-
D-VIII			
1) D-VIII(A) International Collaborations & Academic Linkage	699,507.00	96,086.38	-
D-IX			
1) D-IX(A) Life Achievement Awards	163,000.00	190,000.00	-
2) D-IX(B) Best Book Award	3,000.00	-	-
3) D-IX(C) Young Philosophers Award	-	15,918.00	-
4) D-IX(D) Project/Translation Project	4,716,105.00	1,000,000.00	-
5) D-IX(E) Project -Others	-	160,332.00	-
6) D-IX(E) ICPR Special Programmes- Others	54,788.00	-	-
	-	-	
D-X	-	-	-
1) D-X(A) Project/Translation Project	102,600.00	993,604.00	-
2) D-X(C) Book Grant	2,200,000.00	39,048.00	-
3) D-X(D) Other Special Programme	124,493.00	63,255.00	-
D-XI SC			
1) D-XI(A) Fellowships SC	2,543,748.00	2,642,625.00	-
2) D-XI(A1)Fellowships General (NER)	-	1,371,450.00	-
3) D-XI(B) Seminar/conferences SC	1,943,725.00	1,705,000.00	-
4) D-XI(E) Grant for other academic expenses-ST	-	200.00	-
5) D-XI(E) Grants for Other Academic Expenses-SC	10,976.00	-	-
6) D-XI(C) Lectuers-SC	50,000.00	40,000.00	-
7) D-XI(D) Workshop & Refersher Course SC	890,401.00	700,000.00	-
8) D-XI(D) Workshop & Refersher Course ST	-	2,026,063.00	-

SCHEDULES	*YEAR ENDED*	*YEAR ENDED 31.03.2017*	
	31.03.2018	*Plan*	*Non-Plan*
9) D-XI(C) Lectures- ST	-	10,000.00	-
D-XII ST			
1) D-XII(A) Fellowships ST	633,865.00	1,137,800.00	-
2) D-XII(B) Seminar/conferences General-ST	1,900,000.00	1,211,515.00	-
D-XIII			
1) D-XIII(D) Other Academic programme (NER)	26,000.00	1,755,253.00	-
Group-E			
E-I			
1) E-I(B) Production Expenses	41,698.00	-	-
2) E-I(B)) Honorarium	61,000.00	3,000.00	-
3) E-I(D) Publication payment to Co-publishers	-	16,093.00	-
4) E-I(E) Payment to Distributors	-	-	-
5) E-I(E) Other Expenses of News Letter/Annual Report	-	194,498.00	-
E-II			
2) E-II(A) Production Expenses	-	208,820.00	-
3) E-II(B) Editorial Expenses	233,741.00	155,916.00	-
4) E-II(E) Other Expenses	203,000.00	-	-
	91,206,359.50	**50,168,114.98**	**40,088,603.00**

ANNEXURE-D

STATEMENT OF RECEIPTS & PAYMENTS

INDIAN COUNCIL OF PHILOSOPHICAL RESEARCH

36, Tuglakabad Institutional Area, New Delhi - 110 062

RECEIPTS & PAYMENTS ACCOUNT FOR THE YEAR ENDED MARCH 31ST, 2018

(Amount in Rs.)

Receipts	Year Ended	Year Ended 31.03.2017		Payments	Year Ended	Year Ended 31.03.2017	
	31.03.2018	Plan	Non-Plan		31.03.2018	Plan	Non-Plan
I. Opening Balances:				I. Expenses:			
a) Cash in Hand				Group-A			
1) Cash in Hand	26,827.62	53.00	2,693.62	**Salary Components**			
2) Imprest Balance	-	-	13,927.00	1) A-I(A) Pay & Allowances to Officers			
				and Staff	23,041,748.00	-	22,512,382.00
				2) A-I(B) Gratuity	625,778.00	-	-
				3) A-I(C) Leave Encashment	151,894.00	-	-
				4) A-I(D) Pension Commutation	4,832,158.00	-	2,009,927.00
b) Bank Balances				5) A-I(E) OTA	4,358.00	-	17,435.00
1) In Savings Accounts	70,600,998.01	26,140,987.49	28,781,573.11	6) A-I(H) Bonus	317,768.00	-	542,892.00
				7) A-I(H) Consultation charges	1,321,574.00	-	-
				8) A-I(J) Leave Encashment During LTC	135,422.00	-	167,087.00
				9) A-I(K) Children Education Allowance	123,927.00	-	36,000.00
Group-B							
1) B-I(A) Pension & Pensionery Benefits	-	-	-	**A-II**			
2) B-II(E) Employer contribution to NPS	45,436.00	-	-	1) A-II(A) Pay & Allowances to Officers			
3) B-II(F) Employer contribution				and Staff-SC	4,954,660.00	-	-
to NPS (SC)	2,090.00	-	-	2) A-II(E) OTA-SC	3,029.00	-	-
4) B-III(A) Leave Salary Contributions	151,806.00	-	11,557.00	3) A-II(J) Children Education Allowance-SC	61,762.00	-	-
5) B-III(B) Pension Contribution	113,848.00	-	20,752.00	**Group-B**			
Group C				1) B-I(A) Pension & Pensionery Befefits	5,251,544.00	-	4,167,563.00
1) C-VI (B) Eletricity charges (Lucknow)	50,742.00	-	-	2) B-II(A) Employer's contribution to CPF	208,330.00	-	40,926.00
				3) B-II(B) Interest on Employer's			
				contribution to CPF	-	-	3,274.00
Group D				4) B-II(E) Employe's contribution to NPF	574,047.00	-	287,035.00
1) D-I (D) Junior research fellowship	17,600.00	-	-	5) B-II(F) Employe's contribution to NPF (SC)	25,163.00	-	-
2) D-II (A) ICPR orgainsed seminars	60,044.00	-	-	6) B-III(B) Pension Contribution	56,293.00	-	-
3) D-IV (A) Grants for seminars	35,541.00	-	-				
4) D-VI (B) Books fair expenses	35,000.00	-	-	**Group-C**			
5) D-VII (C) Lectures-Peridical	32,140.00	-	-	**C-I**			
6) D-VIII (A) International collaboration							
& Academic	11,602.00	-	-	1) C-I(A) Travelling Allowances to Officers	170,888.00	-	196,782.00
7) D-XI (A) Fellowship- SC	4,400.00	-	-	2) C-I(B) Travelling Allowances to Staff	172,972.00	-	96,130.00
				3) C-I(C) Conveyance	18,155.00	-	17,856.00
Group D							
1) E-I (B) Honorarium	3,000.00			**C-II**			
				1) C-II(A) Medical Insurance premium	581,273.00	521,971.00	-
Group-G							
G-1				**C-III**			
1) G-I(C-1) Prior Period Adjustment-							
Salary-Non-plan	-	-	293,666.00	1) C-III(A) Leave Travel Concession	119,370.00	-	103,888.00
2) G-I(C-3) Prior Period Adjustment-							
Non Salary	-	-	80,725.00				

Receipts	Year Ended	Year Ended 31.03.2017		Payments	Year Ended	Year Ended 31.03.2017	
	31.03.2018	Plan	Non-Plan		31.03.2018	Plan	Non-Plan
3) G-I(C-4) Prior Period Adjustment- General	109,428.00	824,602.00	-	**C-IV**			
4) G-I(D-3) Prior Period Adjsutment: Academic Lucknow	3,782.00	-	-	1) C-IV(A) Advertisements	175,585.00	-	42,231.00
5) G-I(C-6) Prior Period Adjustment: Gerneral SC	-	334,496.00	-				
6) G-I(K) Prior Period Adjustments : Plan - NER	-	261,684.00	-	**C-V**			
				1) C-V(A) Statutory Audit Fee	131,285.00	-	37,520.00
				2) C-V(B)- Internal Audit Fee	82,681.00	-	80,897.00
	-	-	-				
Group-H				**C-VI**			
1) H-I(A-4) Sundry Creditors - General	70,600.00	-	-	1) C-VI(A) Electricity Charges (New Delhi)	1,148,130.00	-	1,156,190.00
				2) C-VI(B) Electricity Charges Lucknow	419,673.00	-	429,462.00
Group-I				3) C-VI(C) Water Charges (New Delhi)	92,850.00	-	90,520.00
				4) C-VI(D) Water Charges (Lucknow)	19,541.00	-	16,619.00
Group-J							
Grant from Government of India				**C-VII**			
1)K-I(A-1) Grant Received From(MHRD) Salary	77,752,700.00	-	70,687,700.00	1) C-VII(A) Staff Car Running Exp.-(DLC-1993)	10,622.00	-	85,423.00
2)K-I(A-2) Grant Received From(MHRD) Salary-pension	540,000.00	-	21,310,000.00	2) C-VII(B) Staff Car Repair & Maint Exp.- (DLC-1993)	4,976.00	-	138,583.00
3) K-I(A-3) Grand Received From (MHRD) Non Salary	2,150,000.00	-	-	3) C-VII(C) Staff Car Insuracne (DL-1993)	-	-	4,340.00
4)K-I(A-4) Grand Received From (MHRD) General	65,814,100.00	40,026,700.00	-	4) C-VII(D) Staff Car Running Exp. -(DL/3C-0989)	144,917.00	-	101,545.00
5)K-I(A-5) Grant Received From (MHRD) Capital	16,637,200.00	3,487,500.00	-	5) C-VII(E) Staff Car Repair & Maint. Exp (0989)	86,375.00	-	46,034.00
6)K-I(A-6) Grants Received From (MHRD) General SC	4,205,600.00	7,875,000.00	-	6) C-VII(F) Staff Car Insurance Exp.(DL/3CBM-0989)	9,200.00	-	8,380.00
7)K-I(A-7) Grants Received From (MHRD) Capital SC	1,558,100.00	-	-	7) C-VII(G) Staff Car Running Exp. (9503)	133,456.00	-	56,625.00
8)K-I(A-8) Grants Received From (MHRD) Salary SC	7,519,900.00	-	-	8) C-VII(H) Staff Car Maint. Repair Exp New Delhi	22,910.00	-	33,039.00
9)K-I(A-9) Grants Received From (MHRD) General ST	1,440,000.00	3,937,500.00	-	9) C-VII(I) Staff Car Maint. Insurance Exp	6,609.00	-	-
10) K-I(A-10) Grants Received From (MHRD) Capital ST	770,300.00	-	-				
11) K-I(A-11) Grants Received From (MHRD) Salary ST	3,320,100.00	-	-	**C-VIII**			
				1)C-VIII(A) Stationery Expenses -(New Delhi)	359,583.00	-	407,351.00
Income from ICPR Publication & Journals				2) C-VIII(B) Stationery Expenses (LKO)	30,851.00	-	31,931.00
1) K-IV(A-1) Sales Proceeds & Royalty-Book	127,947.49	9,235.00	141,859.39	3) C-VIII(C) Printing Expenses	55,261.00	-	-
2) K-IV(A-2) Sales Proceeds & Royalty-Journal	108,563.00	-	-	4) C-VIII(D) Computer Consumable & Accessioer of ND	76,264.00	-	119,884.00
3) K-V(A-1) Life Membership-JICPR	45,000.00	-	40,000.00	5) C-VIII(E) Computer Consumable & Accessories LKO	3,500.00	-	5,925.00
4) K-V(A-3) Library borrowing membership fees	1,000.00	-	-				
5) K-VI(A-1) Misc Receipts- Reprography Service	33,210.00	-	28,503.00	**C-IX**			
6) K-VI(A-2) Misc. Receipts- Unserviceable/ obsolete	4,790.00	-	-	1) C-IX(A) Postage & Courier (New Delhi)	53,339.00	-	50,363.00

Receipts	Year Ended 31.03.2018	Year Ended 31.03.2017 Plan	Year Ended 31.03.2017 Non-Plan	Payments	Year Ended 31.03.2018	Year Ended 31.03.2017 Plan	Year Ended 31.03.2017 Non-Plan
7) K-VI(B-1) Misc. Receipts Interest on Advance to Empl	-	-	135.00	2) C-IX(B) Postage & Courier (Lucknow)	1,190.00	-	15,000.00
8) K-VI(B-2-6) Misc.Receipts Intt. on Saving and Deposits	4,126,335.00	28,055.00	3,113,379.00				
9) K-VI(C-1) Misc.Receipts-Guest House charges	-	-	287,000.00	**C-X**			
10) K-VI(C-2) Misc. Receipts Others	64,436,381.00	22.00	109,104.00	1) C-X(A) Repair & Maint. of Office Equipment (ND)	91,764.00	-	142,178.00
11) K-VI(E-1) Sale of Fellowship Forms	119,000.00	-	8,950.00	2) C-X(B) Repair & Maint. Office Equipment (LKO)	3,300.00	-	26,004.00
12) K-VI(F-1) Sale proceeds against obselete	158,000.00	-	-	3) C-X(C) AMC Charges of Office Equipment (ND)	559,900.00	512,574.00	-
13) K-VI(H-2) Misc.Receipts-Rent of conference room	5,000.00	-	-	4) C-X(D) AMC Charges of Office Equipments (LKO)	215,056.00	134,439.00	-
Group-K				**C-XI**			
Advance for Academic Programs				1) C-XI(A) Telephone Charges-29901550	97,080.00	-	105,664.00
1) L-V(G-1) Advance-Other Academic Purpose (Delh)	68,408.00	-	-	2) C-XI(B) Fax of Chairman's office	-	-	6,119.00
2) L-V(G-2) Advance Other Academic Purpose (LKO)	295,346.00	-	-	3) C-XI(B) Telephone Charges-29964758(CM)	4,980.00	-	-
	-	-	-	4) C-XI(C) Telephone Charges-29964750(MS)	10,267.00	-	8,745.00
Advance-Others	-	-	-	5) C-XI(D) Telephone Charges-Mobile (MS)	1,624.00	-	11,718.00
1) L-VI(A-1) Advance-Contingency(Misc)	5,002.00	-	-	6) C-XI(E) Telephone Charges Chairman Mobile	30,822.00	-	28,679.00
2) L-VI(A-2) Advance-Imprest	1,733.00	-	-	7) C-XI(F) Telephone Charges-Director(P&R) Mobile	9,879.00	-	9,991.00
3) L-VI(A-3) Advance-Others	411.00	-	-	8) C-XI(G) Telephone Charges No.-8004922772	12,384.00	-	-
4) L-VI(A-5) Adm. Advance- Lucknow	3,096.00	-	-	(Mobile)			
			-	9) C-XI(I) Telephone Charges-9810223396-	6,013.00	-	16,605.00
			-	10)C-XI(J) Telephone Charges-2395349-(Lucknow)	3,934.00	-	8,117.00
Security & Deposits	-	-	-	11)C-XI(L) Telephone Charges-29961262 Dir & P&R	9,265.00	-	-
1) L-VII(A-1) Deposit with CPWD	800,000.00	-	-				
2) L-VII(E) Security-Fuel	-	-	-	**C-XII**			
			-	1) C-XII (A) Rent ICPR Lucknow	-	-	-
			-	2) C-XII (C) Guest House Related Exp.	-	1,32,903.00	-
				C-XIII			
				1) C-XIII (A) Liveries (ND)	-	-	23,850.00
				2) C-XIII (B) Liveries (LKD)	-	-	12,693.00
Sundry Debotrs				**C-XIV**			
1) L-VII(A) Sundry Debtors	-	-	-	1) C-XIV(A) Contingencies (Misc Exp. of ND)	546,820.00	-	544,694.00
				2) C-XIV(B) Contingencies (Misc. Exp. of Lko)	152,512.00	7,078.00	36,464.00
Group-L				3) C-XIV (C) Repair & Maint. of Building-Delhi	542,658.00	12,750.00	-
1) M-I(A-1) Adjustment-Seminar, Workshop	-	214,100.00	-	4) C-XIV (D) Repair & Maint. of Building-LKO	-	6,170.00	-
2) M-I(A-2) Adjustment-Refresher Courses	116,275.00	-	-	5) C-XIV(D) Property Tax	155,258.00	-	155,258.00
4) M-I(G-1) Adjustment-Other			-	6) C-XIV(E) Ground Rent to DDA	17,589.00	-	17,589.00
Academic-(Delh)	2,620.00	212,009.00	-	7) C-XIV(F) Staff Training programme	64,105.00	-	49,229.00
5) M-I(G-2) Adjustment-Other			-	8) C-XIV(G) Staff Welfare Expenses	-	-	1,124.00
Academic-LKO	1,360,940.00	1,880,254.00	-	9) C-XIV(I) Security Services	2,039,739.00	1,150,624.00	-
6) M-II(A-1) Adjustment-Old year				10)C-XIV(J) Other Expense	-	-	6,169.00
Festival Advance	-	-	2,700.00				
11) M-III(A-2) Adjustment- Contingency	216.00	131,793.00	-				
11) M-III(A-3) Adjustment- Other	6,932.00	-	-				
11) M-III(A-5) Adjustment- Administrative (Lucknow)	1,593.00						

Receipts	Year Ended	Year Ended 31.03.2017	
	31.03.2018	Plan	Non-Plan
Group-M			
1) N-III(C) Adjustment-Telephone Security	-	-	-
Group-N			
1) O-1(A-2) Income Tax-Contractor	38,020.00	-	-
2) O-1(B-1) LIC-GSLIS	100,303.00	-	-
3) O-1(B-2) LIC-SSS	90.00	-	-
4) O-1(B-3) Accidental insurance premium	633.00	-	-
5) O-1(D-3)- Other remittances	9,104.00	-	-
6) O-1(D-4) New Pension Scheme	47,526.00	-	-
Other Receipts:			
1) TA to Officers & staff	-	-	-
2) Provision for Pay & Allowances	-	-	-

Payments	Year Ended	Year Ended 31.03.2017	
	31.03.2018	Plan	Non-Plan
C-XIX			
1) C-XIX (B) FISP/SICI Membership	-	-	13,166.00
2) C-XIX(C) Bank Cahrges	13,366.50	577.60	8,482.00
C-XV			
1) C-XV(A) Website Expenses	49,660.00	-	50,569.00
2) C-XV(B) Internet Connection Delhi-29964751	48,971.00	-	51,463.00
3) C-XV(C) Internet Charges-2392636 (Lko)	54,336.00	-	55,949.00
C-XVI			
1) C-XVI(A) Horticulture Exp. Delhi Office	8,890.00	-	7,790.00
2) C-XVI(A) Horticulture Exp. LKO	6,440.00	-	-
C-XVII			
1) C-XVII(A) Running Exp of Genset- ND			
2) C-XVII(B) Running Exp of Genset LKO	-	-	5,380.00
3) C-XVII(C) CPWD (Electric/Civil/ Fire maintenance	-	49,709.00	32,200.00
C-XVIII			
1) C-XVIII(A) Legal Charges	-	489,500.00	-
2) C-XVIII(B) Professional Charges	225,588.00	1,095,613.00	-
3) C-XVIII(C) Wages	1,000.00	-	4,690.00
C-XX			
1) C-XX(A) Hospitality to Official Guests/Non	43,516.00	-	25,247.00
C-XXI			
1) C-XXI(A) TA to Council Committee Members	69,932.00	32,211.00	-
2) C-XXI (B)- Hospitality to Council Committee Memb.	-	28,922.00	-
3) C-XXI(C) Sitting Fee	32,000.00	32,000.00	-
4) C-XXI(D) TA to Governing Body	202,322.00	18,000.00	-
5) C-XXI(E) Hospitality to GB Members	93,694.00	44,610.00	-
6) C-XXI(F) Sitting Fee to Governing Body	60,462.00	85,354.00	-
7) C-XXI(G) TA to RPC Meeting	338,501.00	171,663.00	-
8) C-XXI(H) Hospitality to RPC Members	33,019.00	91,995.00	-
9) C-XXI(I) Sitting Fee RPC Member	50,000.00	24,000.00	-
10) C-XXI(J) TA to Finance Committee Meeting	19,290.00	1,849.00	-
11) C-XXI(K) Hospitality to Finance Committe Meeting	11,613.00	8,580.00	-
12) C-XXI(L) Sitting Fee Finance Committe Members	10,000.00	4,000.00	-
13) C-XXI(M) TA to Other Committee Members	93,035.00	16,038.00	-
14) C-XXI(N) Hospitality to Other Committee Memb.	14,170.00	16,246.00	-
15) C-XXI(O) Sitting Fee to Other Commttee Members	64,000.00	5,000.00	-
16) C-XXI(P) TA to Non-Official Members	27,823.00	-	-
17) C-XXI(Q) Hospitality to Non Official Members	-	1,947.00	-
Group-D			
1) D-I(A) National Fellowships	542,296.00	-	1,017,428.00
2) D-I(B) Senior Fellowship	2,422,000.00	-	2,161,142.00
3) D-I(C) General Fellowships	5,261,302.00	-	4,652,419.00

Receipts	Year Ended 31.03.2018	Year Ended 31.03.2017 Plan	Year Ended 31.03.2017 Non-Plan	Payments	Year Ended 31.03.2018	Year Ended 31.03.2017 Plan	Year Ended 31.03.2017 Non-Plan
				4) D-I(D) Junior Research Fellowships	12,250,138.00	306,000.00	16,348,919.00
				5) D-I(F) Other Exp. of Fellowships	535,984.00	-	127,719.00
				6) D-I(G) Fellows Orientation Meet	-	10,000.00	-
				D-II			
				1) D-II(A) ICPR Organised Seminars	4,353,172.00	7,152,418.00	-
				2) D-II(B)- Conference	900,000.00	317.00	-
				3) D-II(C) Workshops	765,320.00	2,218,656.00	-
				4) D-II(D) International Conference	603,864.00	400,000.00	-
				5) D-II(E) Review Meets/fellow's Meet	-	14,440.00	-
				6) D-II(G) Colloquia	-	-	
				7) D-II(H) Other academic Expenses	104,884.00		
				8) D-II(I) Asian Philiosophy Congress	-	31,210.00	
				9) D-II(J) Gandhi Rama Seminar / Conference	-	-	-
				D-III			
				D-IV			
				1) D-IV(A) Grants for Seminar	6,903,747.00	5,139,497.00	-
				2) D-IV(B) Grants for Workshop	2,292,710.00	450,000.00	-
				3) D-IV(C) Grants for all academic programme Gen-ST	-	225,000.00	-
				4) D-IV(C) Grant for Conference/ Annual Sessions	787,500.00	-	-
				D-V			
				1) D-V(A) Travel Grant	-	73,475.00	-
				2) D-V(B) Other Expenses on Travel Grant	-	16,541.00	-
				D-VI			
				1) D-VI(A) Exhibition/Publicity	6,815.00	-	-
				2) D-VI(B) Bookfair	102,722.00	60,000.00	-
				D-VII			
				1) D-VII(A) Lectures-National	418,944.00	284,436.00	-
				2) D-VII(B) Lectures-International	367,884.00	725,950.00	-
				3) D-VII(C) Lectures- Periodical	1,053,954.00	924,292.00	-
				D-VIII			
				1) D-VIII(A) International Collaborations & Academic	261,704.00	76,021.38	-
				D-IX			
				ICPR Special Programmes:			
				1) D-IX(A) Life achievement award	163,000.00	190,000.00	-
				2) D-IX(B) Best Book award	3,000.00	-	-
				3) D-IX(C) Young Philosophers Award	-	15,918.00	-
				4) D-IX(D) Project/Translation Project	1,616,105.00	1,000,000.00	-
				5) D-IX(E) Project- Others	54,475.00	2,084.00	-
				D-X			
				1) D-X(A) Grants for Project/translation Project	97,600.00	386,604.00	-
				2) D-X(D) Other Special Programme	34,521.00	30,960.00	-

Receipts	Year Ended 31.03.2018	Year Ended 31.03.2017 Plan	Year Ended 31.03.2017 Non-Plan	Payments	Year Ended 31.03.2018	Year Ended 31.03.2017 Plan	Year Ended 31.03.2017 Non-Plan
				3) D-X(C) Book Grant	-	-	-
				D-XI(NER)			
				1) D-XI(A) Fellowship General NER	-	874,600.00	-
				2) D-XI(D) Other Academic Programmes NER	-	1,755,253.00	-
				D-XI(SC)			
				1) D-XI(A) Fellowships SC	2,032,994.00	2,105,800.00	-
				2) D-XI(B) Seminar/conferences SC	1,260,000.00	1,035,000.00	-
				3) D-XI(C) Lectuers-SC	50,000.00	40,000.00	-
				4) D-XI(D) Workshop & Refresher Course - SC	716,345.00	970,000.00	-
				D-XII(ST)			
				1) D-XII(A) Fellowships-ST	535,115.00	1,100,200.00	-
				2) D-XII(B) Seminar/conference-ST	1,400,000.00	911,515.00	-
				3) D-XII(C) Lectures-ST	-	10,000.00	-
				4) D-XII(E) Grant for Other Academic Expenses-ST	-	200.00	-
				D-XIII			
				1) D-XIII(D) Other academic programme	26,000.00	-	-
				E-I			
				Publication Expenses:	-	-	-
				1) E-I(A) Production Expenses	40,864.00	-	-
				2) E-I(B) Honurarium	64,000.00	3,000.00	-
				3) E-I(D) Publication payment to Co-Publishers	-	16,093.00	-
				4) E-I(E) Payment to Distributors	-	-	-
				5) E-I(F) Other Expenses of New Letter/ Annul Report	-	188,791.00	-
				E-II			
				JICPR Expenses:			
				1) E-II(A) Production Expenses	-	204,644.00	-
				2) E-II(B) Editorial Expenses	138,838.00	105,916.00	-
				3) E-II(E) Other Expenses	199,000.00	-	-
				Group -G			
				1) G-I(C-4) Prior Period Adjustment- General	12,495.00	-	-
				2) G-I(D-3) Prior Period Adjustment - Academic (Lucknow)	-	-	-
				Group -F			
				1) F-I(B) Building	-	-	-
				2) F-I(C) Vehicles	-	34,853.00	-
				3) F-I(D) Furniture & Fixture	76,101.00	-	-
				4) F-I(E) Office Equipment	531,012.00	5,751.00	-
				5) F-I(F) Computers,Printer & Peripherals	881,230.00	36,674.00	-
				6) F-I(G) Eletrical Installment	25,488.00	-	-
				7) F-I(H) Library Books	2,795.00	317.00	-
				8) F-I(I) Library-Periodicals	735.00	-	-
				9) F-I(L) Fixed Assets (Software)	19,850.00	-	-
				10) F-I(L) Other Fixed Assets	1,466,390.00		

Receipts	Year Ended 31.03.2018	Year Ended 31.03.2017 Plan	Year Ended 31.03.2017 Non-Plan	Payments	Year Ended 31.03.2018	Year Ended 31.03.2017 Plan	Year Ended 31.03.2017 Non-Plan
				Group- H			
				1) H-I(A) Sundry Creditors	-	3,321,035.00	140,197.00
				2) H-I(A-1) Sundry Creditors- Salary	10,162,783.00	-	-
				3) H-I(A-2) Sundry Creditors- Pensioners	-	-	-
				4) H-I(A-3) Sundry Creditors- Non Salary	31,068.00	-	-
				5) H-I(A-4) Sundry Creditors- General	6,816,650.00	-	-
				6) H-I(A-5) Sundry Creditors- Capital	555,945.00	-	-
				7) H-I(A-6) Sundry Creditors- SC General	1,887,291.00	-	-
				8) H-I(A-9) Sundry Creditors- ST General	17,600.00	-	-
				9) H-I(B-2) Sundry Creditors (Retd.) Beneifts	146,672.00	-	-
				Group- I			
				Provisions:			
				1) J-I(A-1) Provision for Pay & Allowances	2,308,574.00	-	3,393,438.00
				2) J-I(B-1) Provision for Gratuity	3,155,336.00	-	4,417,193.00
				3) J-I(B-3) Provision for Leave Encashment During LTC	1,874,720.00	-	3,206,587.00
				4) J-I(C-1) Provision for GPF	410,647.00	-	479,853.00
				5) J-I(C-2) Provision for CPF	-	-	23,202.00
				6) J-I(C-3) Provision for GSLIS	1,989.00	-	2,204.00
				7) J-I(C-4) Provision for LIC (SSS)	2,638.00	-	2,801.00
				8) J-I(C-5) Provision for OTA	6,068.00	-	1,477.00
				9) J-I(C-6) Provision for Children Education Fund	-	-	204,169.00
				10) J-I(C-9) Provision for Monthly Pensioners	415,880.00	-	309,683.00
				11) J-I(C-10) Provision for Other Remittances	6,942.00	-	7,700.00
				12) J-I(E-3) Provision for Telephone	21,615.00	-	-
				13)J-I(G-1) Other Provisions	-	-	36,540.00
				14)J-I(G-2) Provision for NPF	31,100.00	-	1,018,689.00
				Group -K			
				1. Advance for Academic Programs:			
				1) L-V(A-1) Advance-Seminar/Conference	83,000.00	-	-
				2) L-V(A-2) Advance Refresh Course / Workshop	-	700,000.00	-
				3) L-V(C-1) Advance International Collaboration	14,700.00		
				4) L-V(E-1) Advance -ICPR Special Programmes	-	902,500.00	-
				5) L-V(F-1) Advance-Academic Programmes-SC	-	1,900,458.00	-
				6) L-V(F-2) Advance-Academic Programmes-ST	-	778,500.00	-
				7) L-V(G-1) Advance-Other Academic Purpose (Delh)	990,061.00	881,820.00	125,932.00
				8) L-V(G-2) Advance Other Academic Purpose (LKO)	5,114,000.00	11,440,107.00	-
				9) L-V(O) Advance against provision	-	442,786.00	-
				2. Advance-Others:			
				1) L-IV(A-1) Advance-Festival	85,500.00	-	112,500.00
				1) L-IV(A-8) TA Advance	77,490.00	-	14,330.00
				2) L-IV(A-9) Advance-LTC	75,767.00	-	135,900.00
				3) L-V(F) Advance-Fellowship	-	-	-
				4) L-VI(A-1) Advance-Contigency	33,800.00	144,065.00	83,562.00
				5) L-VI(A-2) Advance-Imprest	85,000.00	-	53,551.00
				6) L-VI(A-3) Advance - Others	2,400.00	377,114.00	10,256.00
				7) L-VI(A-5) Advance -Lucknow Related Adminustrative	3,894,534.00	3,000,000.00	-
				8) L-VII(A-1) Deposit with CPWD	3,837,220.00	-	-

Receipts	Year Ended 31.03.2018	Year Ended 31.03.2017 Plan	Year Ended 31.03.2017 Non-Plan	Payments	Year Ended 31.03.2018	Year Ended 31.03.2017 Plan	Year Ended 31.03.2017 Non-Plan
				9) L-VII(A-5) Security-Fuel	15,000.00	-	15,000.00
				10)L-VIII(A-1) Prepaid Expense	1,621,163.00	1,502,911.00	98,578.00
				11)L-VIII(K) Security deposit refundable	-	-	-
				13) L-IV(F) Salary Advance	-	-	426,000.00
				Group -J			
				1) K-VI(B-3) Misc Receipt Interest in saving-Canara	3,051,730.00	-	-
				2) K-VI(B-6) Misc Receipt Interest in saving-Lucknow	398,374.00	-	-
				3) K-VI(C-2) Misc Receipt Other	62,985,609.00	-	-
				Group -M			
				Group -N			
				Remittances:			
				1) O-1(A) Income Tax	-	193,432.00	1,942,024.00
				2) O-1(A-2) Income Tax (Contractor)	207,188.00	-	-
				3) O-1(A-3) Income Tax (Professionals)	215,961.00	-	-
				4) O-1(A-4) Income Tax (Rent)	30,000.00	-	-
				1) O-1(A-5) Income Tax (Salary)	3,567,307.00	-	-
				2) O-1(B-1) LIC-GSLIS	120,357.00	-	25,570.00
				3) O-1(B-2) LIC-SSS	97,414.00	-	30,322.00
				5) O-I(I) NPF	-	-	287,035.00
				6) O-1(B-3)-Accidental Insurance premium	38,613.00	-	-
				4) O-1(C-1)-CPF	144,550.00	-	135,000.00
				8) O-I(C-2) General Provident Fund	4,758,244.00	-	4,500,026.00
				7) O-1(D-3)-Other remittances	99,535.00	-	87,100.00
				8) O-I(D-4) New Provident Fund	599,210.00	-	-
				V. Closing Balances:			
				a) Cash in Hand			
				1) Cash in Hand	8,139.62	9,711.00	3,189.62
				2) Imprest Balance	13,927.00	-	13,927.00
				b) Bank Balances			
				With Scheduled Banks:	-	-	-
				On Savings Accounts	101,636,666.00	25,940,801.51	44,660,196.50
TOTAL'A'	**325,106,359.12**	**85,363,990.49**	**124,934,224.12**	**TOTAL'B'**	**325,106,359.12**	**85,363,990.49**	**124,934,224.12**

Sd/-
(SREEKUMARAN S.)
Director(A&F)

Sd/-
(DR. R.K. SHUKLA)
Member Secretary

PLACE : NEW DELHI
DATE : 30.06.2018

INDIAN COUNCIL OF PHILOSOPHICAL RESEARCH
36, Tuglakabad Institutional Area, New Delhi - 110 062

GENERAL PROVIDENT FUND
BALANCE SHEET AS AT 31ST MARCH, 2018

LIABILITIES			ASSETS		
Particulars	*(Rs.)*	*(Rs.)*	*Particulars*	*(Rs.)*	*(Rs.)*
1	2	3	4	5	6
1. Subscription			**1. Fixed Deposit**		
Balance as on 01.04.2017	29,332,722.00		Closing Balance	29,700,000.00	
			Add: Accrued Interest	58,989.00	29,758,989.00
Add:					
Addition during the year 2017-18	5,408,891.00		2. **Special Deposit**		712,519.00
Interest on subscription	2,426,571.00				
	37,168,184.00		3. **Balance with Banks**		
			Indian Bank		6,292,229.99
Less:					
Refund/Withdrawl/ Advance and final settlement during the year	3,851,933.00		4. **Bank charges**	377.00	
Prior period adjustment	1,991,888.00	31,324,363.00	5. **TDS**		313,857.00
2. **Income Retained from Investment of GPF**					
Balance as on 01.04.2017	4,028,504.99				
Add:					
Interest on FDR	2,053,922.00				
Bank interest	105,865.00				
Prior period adjustment	1,991,888.00				
	8,180,179.99				
Less:					
Interest on Subscription	2,426,571.00	5,753,608.99			
Grand Total		**37,077,971.99**	**Grand Total**	**37,077,971.99**	

Sd/-
(SREEKUMARAN S.)
Director(A&F)

Sd/-
(DR. R.K. SHUKLA)
Member Secretary

PLACE : NEW DELHI
DATE : 30.06.2018

INDIAN COUNCIL OF PHILOSOPHICAL RESEARCH
36, Tuglakabad Institutional Area, New Delhi - 110 062

GENERAL PROVIDENT FUND
RECEIPTS & PAYMENTS FOR THE YEAR ENDED 31ST MARCH, 2018

LIABILITIES		*ASSETS*	
Particulars	*(Rs.)*	*Particulars*	*(Rs.)*
1	2	3	4
Opening Balance as on 01.04.2017	14,22,114.99	Refund/Withdrawls/Advance and final Settlement during the year	38,51,933.00
Subscription and refunds of advance	54,08,891.00		
		Addition to FDR	2,97,00,000.00
FDRs Matured	3,09,12,418.00		
		Bank Charges	957.00
Bank interest received on S.B. A/c	1,06,763.00		
		Closing Balance as on 31.03.17	
Interest received on Special Deposit	57,003.00	Indian Bank S.B. A/c	62,92,229.99
Interest received on FDR	19,37,930.00		
Grand Total	**3,98,45,119.99**	**Grand Total**	**3,98,45,119.99**

Sd/-
(SREEKUMARAN S.)
Director(A&F)

Sd/-
(DR. R.K. SHUKLA)
Member Secretary

PLACE : NEW DELHI
DATE : 30.06.2018

INDIAN COUNCIL OF PHILOSOPHICAL RESEARCH
36, Tuglakabad Institutional Area, New Delhi - 110 062

CONTRIBUTORY PROVIDENT FUND
BALANCE SHEET AS AT 31ST MARCH, 2018

LIABILITIES			*ASSETS*		
Particulars	*(Rs.)*	*(Rs.)*	*Particulars*	*(Rs.)*	*(Rs.)*
1	2	3	4	5	6
1. Subscription			**1. Fixed Deposit**		
Balance as on 01.04.2017	1,761,639.00		Balance as on 01.04.2017	-	
Add:			Less:		
Addition during the year	144,550.00		FDR matured During the year	-	-
Interest on subscription	40,140.00	-			
Less:	1,946,329.00		**2. Special Deposit**	59,844.00	
Refund/Final Withdrawal	1,796,872.00	149,457.00			
			3. Balance with Bank		
			Indian Bank	1,439,485.40	
			4. Bank charges	561.00	
2. Contribution			**5. TDS**	44,627.00	
Balance as on 01.04.2017	1,416,429.00				
Add:					
Employer's Share of Contribution	120,010.00				
Interest on contribution	32,998.00				
	1,569,437.00				
Less:					
Refund/Final Withdrawal	1,444,758.00	124,679.00			
3. Income Retained from Investment of CP Fund					
Balance as on 01.04.2017	1,251,348.40				
Add:					
Interest on Deposit & Savings A/c	90,521.00				
	1,341,869.40				
Less:					
Prior period adjustments	-				
Intt on Employee's subscription	40,140.00				
Intt on Employer's Contribution	32,998.00	1,268,731.40			
4. Prior Period Adjustment	1,650.00				
Grand Total		**1,544,517.40**	**Grand Total**	**1,544,517.40**	

Sd/-
(SREEKUMARAN S.)
Director(A&F)

Sd/-
(DR. R.K. SHUKLA)
Member Secretary

PLACE : NEW DELHI
DATE : 30.06.2018

INDIAN COUNCIL OF PHILOSOPHICAL RESEARCH
36, Tuglakabad Institutional Area, New Delhi - 110 062

CONTRIBUTORY PROVIDENT FUND
RECEIPTS & PAYMENTS FOR THE YEAR ENDED 31ST MARCH, 2018

RECEIPTS		PAYMENTS	
Particulars	(Rs.)	Particulars	(Rs.)
1	2	3	4
Opening Balance as on 01.04.17	4,326,034.40	Refund/Withdrawls/Advance and final Settlement during the year	3,241,630.00
Employee Subscription	144,550.00		
		Bank charges	70.00
Employer's share of contribution	120,010.00		
Bank interest on Savings A/c	86,159.00		
Interest on Special deposit	4,432.00		
Interest fixed deposit	-		
FDR Matured -		Closing Balance as on 31.03.18	1,439,485.40
Grand Total	**4,681,185.40**	**Grand Total**	**4,681,185.40**

Sd/-
(SREEKUMARAN S.)
Director(A&F)

Sd/-
(DR. R.K. SHUKLA)
Member Secretary

PLACE : NEW DELHI
DATE : 30.06.2018

INDIAN COUNCIL OF PHILOSOPHICAL RESEARCH

36, Tuglakabad Institutional Area, New Delhi - 110 062

NEW PENSION FUND

BALANCE SHEET AS AT 31ST MARCH, 2018

LIABILITIES			*ASSETS*	
Particulars	*(Rs.)*	*(Rs.)*	*Particulars*	*(Rs.)*
1	*2*	*3*	*4*	*5*
1. Subscription			**1. Balance with Bank**	
			Indian Bank	4,12,215.00
Balance as on 01.04.2017	3,95,394.00			
Add:			**2. Bank Charges**	163.00
Contribution during the year	1,01,219.00			
Interest on Saving A/c	16,984.00			
	5,13,597.00			
Less:				
Withdrawl/Payment/Adjustment	1,01,219.00			
		4,12,378.00		
Grand Total		**4,12,378.00**	**Grand Total**	**4,12,378.00**

Sd/-
(SREEKUMARAN S.)
Director(A&F)

Sd/-
(DR. R.K. SHUKLA)
Member Secretary

PLACE : NEW DELHI
DATE : 30.06.2018

INDIAN COUNCIL OF PHILOSOPHICAL RESEARCH
36, Tuglakabad Institutional Area, New Delhi - 110 062

NEW PENSION FUND
RECEIPTS & PAYMENTS FOR THE YEAR ENDED 31ST MARCH, 2018

RECEIPTS		*PAYMENTS*	
Particulars	*(Rs.)*	*Particulars*	*(Rs.)*
1	2	3	4
Opening Balance as on 01.04.17	3,95,263.00	Employee Subscription during the year	1,01,219.00
Employee subscription recieved	1,01,219.00	Employer's Contribution during the year	1,01,219.00
Employer's share of contribution	1,01,219.00	Bank Charges	32.00
Interest received on saving A/c	16,984.00	Closing Balance as on 31.03.17	4,12,215.00
Grand Total	**6,14,685.00**	**Grand Total**	**6,14,685.00**

Sd/-
(SREEKUMARAN S.)
Director(A&F)

Sd/-
(DR. R.K. SHUKLA)
Member Secretary

PLACE : NEW DELHI
DATE : 30.06.2018

INDIAN COUNCIL OF PHILOSOPHICAL RESEARCH
36, Tuglakabad Institutional Area, New Delhi - 110 062

BALANCE SHEET (FCRA) AS AT 31ST MARCH, 2018

LIABILITIES	As at 31.03.2018	ASSETS	As at 31.03.2018
Excess of income		Cash & Bank Balances	
(i) Upto the end of 31.03.2016	1,866.00	Cash at Bank as on 31.3.2017	
		(Canara Bank, Triveni Ph-II	
(ii) Net Income earned during the year	60.00	Sheikh Sarai, ND-FCRA A/C-16491)	1,926.00
TOTAL	1,926.00	TOTAL	1,926.00

Sd/-
(SREEKUMARAN S.)
Director(A&F)

Sd/-
(DR. R.K. SHUKLA)
Member Secretary

PLACE : NEW DELHI
DATE : 30.06.2018

INDIAN COUNCIL OF PHILOSOPHICAL RESEARCH
36, Tuglakabad Institutional Area, New Delhi - 110 062

RECEIPTS AND PAYMENTS (FCRA) FOR THE YEAR ENDED 31ST MARCH, 2018

RECEIPTS		*PAYMENTS*	
Particulars	*(Rs.)*	*Particulars*	*(Rs.)*
1	*2*	*3*	*4*
Opening Balance as on 1.4.2017	1,866.00	Closing Balance as on 31.03.18	1,926.00
Bank interest received on S.B. A/c	72.00	Bank Charges	12.00
Grand Total	1,938.00	Grand Total	1,938.00

Sd/-
(SREEKUMARAN S.)
Director(A&F)

Sd/-
(PROF. R.K. SHUKLA)
Member Secretary

PLACE : NEW DELHI
DATE : 30.06.2018

ANNEXURE-E

ACCOUNTING POLICIES

Significant Accounting Policies and Notes on Accounts of Indian Council of Philosophical Research, New Delhi

ACCOUNTING POLICIES

(i) Accounting Convention

The accounts of the ICPR are prepared under the historical cost convention and on accrual basis of accounting.

(ii) Fixed Assets and Depreciation

Fixed Assets are stated at cost. Depreciation is provided on the written down value of the assets, at the rates prescribed under the Income Tax Rules, 1961, as amended from time to time.

All fixed assets, furniture and fixtures purchased for less than Rs.2000/- each are provided in the year of purchase by providing 100% depreciation.

Depreciation is also provided on library books at the prescirbed rates. However, 100% depreciation is provicxed for the journals procured/subscribed by the Project during the year.

(iii) Stock of Publications

Publication work under process is valued on cost basis. Publication stock is valued on net realizable basis.

(iv) Retirement Benefits

Provision for payment of gratuity and leave encashment has been made on actuarial basis. Provision for pension will however be made on accrual basis.

(v) Provision for Bonus

Bonus is accounted for on cash basis.

(vi) Expenditure

Expenditure is, normally, accounted for on accrual basis.

(vii) Revenue Recognition

(a) The ICPR mainly depends on 100% grants from the Ministry of HRD, which has been taken into account on sanction basis.

(b) Over and above the grant, the ICPR is also having income from the sale of publications, sales from obsolete items, reprographic services etc. These are accounted for as and when right to receive such income is established.

(viii) Taxation

ICPR has not approached Income Tax Department for exemption on the presumption that no income has been earned by the ICPR as it is carying research work for which grant is received from the Government of India.

Sd/-	Sd/-
(SREEKUMARAN S.)	(PROF. R.K. SHUKLA)
Accounts Officer	Member Secretary

ANNEXURE-F

NOTES ON ACCOUNT

XXIII. NOTES OF ACCOUNTS

(Annexed to and forming part of the accounts for the year ending March 31, 2017)

(i) Stock of publication is considered at 50% of the market price. Publications of the ICPR are handled by various distributors/publishers on various terms and conditions. Accordingly publications of the ICPR are classified in three categories:

- Publications brought out by the ICPR by absorbing 100% production cost;
- Publications brought out by the ICPR on co-publication basis on agreement to share the production cost on 60:40 basis and to receive the sales-proceeds @40% of the cost price;
- Publications printed at publishers expenditure and processed by the ICPRhas not been taken into account.

As such the opening stock position of the ICPR publications has been taken in the final accounts in the following method and on the basis of the stock as on 2010-11 since further stock positions are not proviced for the purpose of balance sheet:

(i) The total cost price of the publications will be taken for stock purpose @ 50% of the sale price of the books;

Prior period adjustment made in the Books of Account during the year 2014-15 pertaining prior to financial year 2014-15 have been treated in the books as prior period income.

(ii) Balance Sheet and Receipt and Payment Account of GPF, CPF and NPF accounts have been prepared as per the Cash Book maintained by the Council. The balances reflected in the balance sheet and receipt and payment account as on 31.03.2016 are tallied with the broadsheet maintained by the council in case of GPF and CPF account.

(iii) Previous Year figures have been regrouped/recast wherever necessary in the account.

(iv) Cash in hand and Stock in Hand at the closing hours of 31st March 2016 as certified by the Council.

(v) Receipt & Payment Account

Following methodology has been followed in the preparation of Receipt Payment

and Income and Expenditure account regarding adjustment of loans and advances and expenditure incurred against academic and other advances.

(a) The gross payments made for advance for academic programs and other advances during the financial year are taken at payment side of receipt and payment account.

(b) The credit side of each advance account is treated as receipt and shown as such in the receipt and payment account. The expenses incurred against the advances are credited in the ledger to adjust the advance. Similarly the balance received over the above the expenses is also credited in the account.

(c) The balance outstanding in the advance account is asset and the same is shown in the Balance Sheet.

(d) The expenses incurred against the advances are booked under different expense heads viz., seminar, meeting etc. These expenses are shown in the Income and Expenditure account as expense.

(e) The adjustment of loans and advances is shown as receipt in Receipt and Payment account because expenses against these advances are shown under different expense head and taken in Income and Expenditure account as expense and in Receipt & Payment account also on the payment side.

(vi) Fixed assets installed and put to use have been certified by the Society and relied upon the auditors, being a technical matter.

Tax has not been deducted at source from provision for Pay & Allowances for the month of March'16 as the same is deducted when payment of Pay & Allowances is made. Also tax is not deducted from payment of fellowship to Editorial Fellows.

Sd/-	Sd/-
(SREEKUMARAN S.)	(PROF. R.K. SHUKLA)
Accounts Officer	Member Secretary

Separate Audit Report of the Comptroller & Auditor General of India on the Accounts of Indian Council of Philosophical Research for the year ended 31st March 2018.

We have audited the attached Balance Sheet of the Indian Council of Philosophical Research (ICPR) as at 31st March 2018 and the Income & Expenditure Account/Receipts & Payments Accounts for the year ended on the date under Section 20(1) of the comptroller & Auditor General's (Duties, Powers & Conditions of Service) Act, 1971, The Audit has been entrusted for the period up to 2017-18. These financial statements are the responsibility of the Indian Council of Philosophical Research's management. Our responsibility is to express an opinion on these financial statements based on our audit.

2. This separate Audit Report contains the comments of the Comptroller & Auditor General of India (CAG) on the accounting treatment only with regard to classification, conformity with the best accounting practices, accounting standards and disclosure norms, etc. Audit observations on financial transactions with regard to compliance with the Law, Rules & Regulations (Propriety and Regularity) and efficiency-cum-performance aspects, etc, if any, are reported through Inspection Reports / CAG's Audit Reports separately.

3. We have conducted out audit in accordance with auditing standards generally accepted in India. These standards require that we plan and perform the audit to obtain reasonable assurance about whether the financial statements are free from material misstatements. An audit includes examining on a test basis, evidences supporting the amounts and disclosure in the financial statements. An audit also includes assessing the accounting principles used and significant estimates made by management, as well as evaluating the overall presentation of financial statements. We believe that our audit provides a reasonable basis for our opinion.

4. Based on our audit, we report that:

   i) We have obtained all the information and explanations, which to the best of our knowledge and belief were necessary for the purpose of our audit;

   ii) the Balance sheet and Income and Expenditure Account/Receipts and Payments Account dealt with by this report have been drawn up in the format prescribed by the Government of India, Ministry of finance;

   iii) In our opinion, proper books of accounts and there relevant records have been maintained by the Indian Council of Philosophical Research as required in so far as it appears from our examination of such books.

   iv) We further report that:

A. Balance Sheet

A.1. Liabilities

A.1.1. Current Liabilities & Provisions (Schedule 2)-Rs. 12.04 Crores

The above do not include unutilised grant-in-aid of Rs. 2.53 crore resulting in understatement of Current Liabilities & Provision and overstatement of Capital Fund by Rs. 2.53 crore.

A.2. Assets

A.2.2. Current Assets, Loans & Advances (Schedule 4)- Rs. 16.80 crore

(i) The above include stock of ICPR Publication and JICPR Journal amounting to Rs. 67.37 lakh, which is in fact the vlaue of closing balance of publications for the year 2009-10 and not actual value of closing stock as on 31.3.2018. Though, an amount of Rs. 57.29 lakh was received against sale of publication and Rs. 71.37 lakh was expended under different heads for these publications since 2010-11, the value of closing stock has not been updated.

In view of the position explained above, audit is not able to verify the closing stock of ICPR publications and JICPR Journal shows in the acocounts and also not able to verify the income from publications shows in the Income & Expenditure Account.

(ii) The above include advance of Rs. 58.85 lakh for Academic Programme (Prior to March 2002) details of which are not available with the ICPR. In the absence of details these advances could not be verified in the audit.

B. Balance Sheet (General Provident Fund)

B.1. Investment

B.1.1 Investment of General Provident Fund were not made as per the pattern prescribed by the Government of India, Ministry of Finance vide notification no. F.No. 11/4/2013-PR dated 2.3.2015.

C. Grant-in-aid

The Council received grant-in-aid of Rs. 18.17 crore during the year from the Ministry of Human Resource Development out of which grant of Rs. 5.59 crore was received in March 2018. It has an unspent balance of Rs. 1.32 crore and own receipts of Rs. 0.52 crore. Out of the total funds of Rs. 20.01 crore, it utilized Rs. 17.48 crore leaving and unspent balance of Rs. 2.53 crore.

D. Management letter

Deficiencies which have not been included in the Audit Report have been brought to the notice of the Member Secretary, ICPR through a management letter issued separately for

remedial/corrective action.

5. Subject to our observation in the preceding paragraphs, we report that the Balance Sheet, Income and Expenditure Account and Receipts and Payments Accout dealt with by this report are in agreement with the books of accounts.

6. In our opinion and to the best of our information and according to the explanations given to us, the said financial statements, read together with the Accounting Policies and Notes on Accounts, and subject to Comment No.A.2.2(i) and A.2.2(ii) and other significant matters stated above and mentioned in Annexure to this Audit Report give a true and fair view in conformity with accounting principles generally accepted in India:

   a. In so far as it relates to the Balance Sheet of the state of affairs of the Indian Council of Philosophical Research as at 31st March 2018; and

   b. In so far as it relates to the Income and Expenditure Account of the deficit for the year ended on that date.

For and on behalf of the C&AG of India

Place: New Delhi — Addl. Dy. C&AG

10.01.2019 — Central Expenditure

Annexure to Separate Audit Report

1. Adequacy of internal audit system

- The Council has neither established its own internal audit wing nor it is being conducted by the Ministry.

2. Adequacy of internal control system

The internal control system requires furthr strengthening as:

- The Managements response to external audit objections is not effective as 38 paras pertaining to the period from 2002-03 to 2011-12 were outstanding on 31.3.2018
- Improper accounting of transactions relating to Publications.

3. System of physical verification of assets

- The physical verification of fixed assets of ICPR headquarters has been conducted upto 31.03.2018.
- Physical verification of library books and publication has been conducted upto 2016-17.

4. System of physical verification of inventory

- The physical verification of inventory of ICPR such as stationary & consumable has been done upto 2016-17

5. Regularity in payment of due

- As per accounts no payment over six months in respect of statutory dues was outstanding as on 31.03.2018.